गोरखपुर महोत्सव
आ रोह तमसो ज्योतिः
2020

मंथन

गोरखपुर

आकांक्षाओं एवं उपलब्धियों का मानचित्र

अवस्थापना | चिकित्सा-स्वास्थ्य | पत्रकारिता | पर्यटन | संचार-संपर्क
समाज | साहित्य-संस्कृति | शिक्षा | औद्योगिक विकास

मंथन

2020

सम्पादकः

राजवन्त राव

हर्ष कुमार सिन्हा

प्रकाशकः

महोत्सव समिति गोरखपुर

मंथन 2020

सर्वाधिकार : सुरक्षित

प्रकाशन वर्ष : जनवरी, 2020

अध्यक्ष आयोजन समिति :
जयन्त नार्लिकर, मण्डलायुक्त, गोरखपुर

उपाध्यक्ष आयोजन समिति :
के. विजयेन्द्र पाण्डियन, जिलाधिकारी, गोरखपुर

सचिव आयोजन समिति :
रविन्द्र कुमार, क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, गोरखपुर

सह-सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक मण्डल :
डॉ. रामप्यारे मिश्रा
डॉ. मणिन्द्र यादव
डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी

प्रकाशक :
महोत्सव समिति
गोरखपुर

मुद्रक :
मोती पेपर कनवर्टर्स, बेतियाहाता, गोरखपुर

Manthan-2020
Chief Editor : Prof. Rajawant Rao
Editor : Dr. Harsh Kumar Sinha

योगी आदित्यनाथ

e[; e=h
mUkj çn'k

लोक भवन,
लखनऊ-226001

संदेश

हमें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि दिनांक 11 से 13 जनवरी, 2020 तक 'गोरखपुर महोत्सव' का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रति वर्ष मंथन नाम से गोरखपुर के प्रबुद्ध वर्गों द्वारा एक वैचारिक विमर्श का आयोजन भी होता है तथा 'मंथन' नामक पत्रिका प्रकाशित की जाती है।

शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ के नाम पर बसा गोरखपुर जनपद उत्तर प्रदेश का प्रमुख जनपद है। धर्म और अध्यात्म के एक केन्द्र के रूप में गोरखपुर अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। सनातन हिन्दू धर्म से सम्बन्धित साहित्य के प्रचार-प्रसार का कार्य गीता प्रेस ने गोरखपुर से ही प्रारम्भ किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी गोरखपुर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

जनपदीय महोत्सव कला, साहित्य और संस्कृति के संरक्षण के साथ ही, स्थानीय प्रतिभाओं को अपना कौशल प्रदर्शित करने का मंच भी प्रदान करते हैं। ऐसे आयोजनों से सामाजिक सद्भाव व समरसता की भावना भी सुदृढ़ होती है। इसके दृष्टिगत 'गोरखपुर महोत्सव' का आयोजन सराहनीय है।

मेरा विश्वास है कि यह महोत्सव महायोगी गुरु गोरखनाथ, भगवान बुद्ध, तीर्थंकर महावीर एवं संत कबीर के सामाजिक समता एवं सर्वपंथ समभाव का सन्देश पूरे विश्व में प्रसारित करने में सहायक सिद्ध होगा।

'गोरखपुर महोत्सव' के अन्तर्गत 'मंथन' पत्रिका के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकानाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

जयन्त नार्लिकर
आई.ए.एस.
आयुक्त

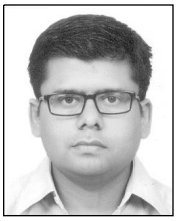

☎ (0551) 2335238 (O)
2336022 (R)
2338817 (Fax)

गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर
/अध्यक्ष महोत्सव समिति
अ.शा.प.स.
दिनांक 05-01-2020

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त हर्ष एवं सौभाग्य की बात है कि महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ की तपस्थली गोरखपुर को विश्व पटल पर स्थापित करने एवं यहाँ की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से लोगों को परिचित करने के लिये गोरखपुर महोत्सव-2020 का आयोजन दिनांक 11 जनवरी से 13 जनवरी, 2020 तक हो रहा है।

अनादि काल से गोरखपुर नाथ पंथ के प्रवर्तक महायोगी श्रीगोरक्षनाथ की पावन भूमि के रूप में अपनी पहचान स्थापित किये हुये है। इसी जनपद के बगल में सिद्धार्थनगर एवं जनपद कुशीनगर तथागत भगवान बुद्ध की तपस्थली रही है। तथागत भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण जनपद कुशीनगर में हुआ। गोरखपुर के बगल में संतकबीर की निर्वाण स्थली मगहर है। जनपद गोरखपुर स्वाधीनता संग्राम के दौरान चौरीचौरा काण्ड के लिये चर्चित रहा। इस प्रकार गोरखपुर की पावन भूमि अनेक सन्तों, महापुरुषों, क्रान्तिकारियों की तपस्थली एवं कर्मभूमि रही है। इन सब विभूतियों तथा यहाँ की कला एवं संस्कृति से अपने देश के भविष्य, यहाँ के युवाओं को परिचित कराने के लिये गोरखपुर महोत्सव एक अनूठा आयोजन है। इस आयोजन को अविस्मरणीय बनाने तथा इतिहास के पन्नों में इस आयोजन को सँजोने के लिये **'मंथन'** नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि **'मंथन'** पत्रिका अपने नाम के अनुरूप गोरखपुर जनपद के सर्वांगीण विकास के विविध आयामों पर प्रकाश डालते हुये अपनी उपादेयता सिद्ध करने में सफल होगी। इस पत्रिका के तृतीय अंक के प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामना एवं प्रकाशक मण्डल को बधाई देता हूँ।

जयन्त नार्लिकर
आयुक्त

स्वस्ति

'समाज, संस्कृतियों और संस्थाओं की प्रगति का एक ही सूत्र है-लक्ष्य निर्धारण, प्रभावी क्रियान्वयन और सतत मूल्याङ्कन'।

-वाल्टेयर

2014 के लोक सभा चुनाव के समय गोरखपुर की एक जनसभा में जब श्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्वांचल की दशा बदलने की बात कही थी उस समय लोगों को यह भाषण वैसा ही लगा था जैसा वे चुनाओं के समय प्रायः सभी नेताओं से सुनते हैं। लेकिन सरकार बनते ही एम्स और फर्टिलाइजर कारखाने जैसे वादों पर प्रभावी अमल होने के बाद वर्षों से राजनीतिक अभिभावकत्व की अनुपस्थिति से होने वाली उपेक्षा की मार सहते गोरखपुर में विकास की उम्मीदों को नये पंख लगने लगे। इसके बाद उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों के उपरान्त गोरक्षपीठाधीश्ध्वर योगी आदित्यनाथ को सूबे की कमान मिली तो इन पंखों ने तेजी से उड़ान भरना शुरू कर दिया।

वर्तमान में गोरखपुर में हो रहे विकास कार्य इस बात की आश्वस्ति जगाने के लिए पर्याप्त हैं कि आने वाले दिनों में यह शहर अपने संरचनात्मक सौन्दर्य और सुविधाओं के चलते देश के कुछ प्रमुख विकासमान नगरों में से एक बन जाएगा। शहर में एम्स, फर्टिलाइजर, मिनी सचिवालय, शहर के बीच से होकर गुजरने वाले तीन-तीन फोरलेन विकास की नई और प्रभावशाली पटकथा लिख रहे हैं।

प्रभावशाली इसलिए क्योंकि इस नये विकास का प्रारूप किसी एक क्षेत्र, एक परियोजना या एकरेखीय उद्देश्य तक ही सीमित न होकर बहुआयामी और विविधतापूर्ण है जिसमें एक साथ सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और जीर्णोद्धार की परियोजनाएं भी हैं और अवसंरचनात्मक विकास की उन्नत परियोजनाएं भी। सड़कों और राजमार्गों के विकास और विस्तार की परियोजनाएं भी हैं तो एक के बाद एक नये शहर के साथ वायु-संपर्क स्थापित करने की योजना भी शामिल है. चीनी मिलें, नए उद्योग, नए चिकित्सालय, नए महाविद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम। यह सब कुछ विकास के बहुआयामी और व्यापक प्रभावोत्पादकता वाले संकल्प का क्रियान्वयन है। पहली बार औद्योगिक विकास के लिए सन 2050 तक की रूपरेखा तैयार की जा रही है, जिससे नोएडा, ग्रेटर नोएडा के बाद सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र गोरखपुर में होगा।

इससे गोरखपुर का न सिर्फ औद्योगिक विकास होगा बल्कि पूर्वांचल के लोगों को बड़ी संख्या में रोजगार भी मिलेगा। इसी तरह पूर्वांचल लिंक एक्सप्रेस-वे के दोनों तरफ औद्योगिक

क्षेत्र विकसित करने से भी न सिर्फ गोरखपुर का तेजी से विकास होगा बल्कि बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा जिससे स्वाभाविक रूप से समृद्धि और विकास के लक्ष्य हासिल किये जा सकेंगे।

यह एक अजीब मगर दिलचस्प बात है कि हमारे देश में आमतौर पर विकास की प्राथमिकताएं तय करने से लेकर योजनायें बनाने और उसके क्रियान्वयन तक का सारा काम पूरी तरह से शासन-प्रशासन का दायित्व मान लिया जाता है. हालांकि 'नगरीय विकास' की अवधारणा के एक प्रमुख विचारक ब्रिटेन के भूगोलविद और कल्पनाशील नगर नियोजक पीटर ज्योफ्री हॉल का मानना है कि उन शहरों का विकास सर्वोत्तम ढंग से होता है जिसमें नागरिक आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति और प्रतिभागिता होती है, जहाँ विकास की परियोजनाओं की सतत निगरानी और मुल्यांकन की प्रक्रिया में जन भागीदारी होती है।

दो वर्ष पूर्व गोरखपुर महोत्सव के आयोजन के समय 'मंथन' शीर्षक एक विमर्श कार्यक्रम आयोजित करने और इसी शीर्षक से एक दस्तावेजी प्रकृति वाली पत्रिका प्रकाशित करने की योजना वस्तुतः ऐसे ही विचार से प्रेरित था।

लक्ष्य था कि विकास के मानचित्र को परिकल्पित करने से लेकर उसे क्रियान्वित करने तक की प्रक्रिया में सतत मूल्यांकन का घटक अवश्य शामिल रहे। तय किया गया कि पत्रिका में विभिन्न लेखों के माध्यम से अतीत से अब तक शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, पर्यावरण, संचार, उद्योग सहित विभिन्न क्षेत्रों में गोरखपुर के विकास का लेखाजोखा संकलित करने से लेकर भविष्य में तीव्र विकास के साथ आम आदमी की खुशहाली का रोडमैप क्या हो -इस बारे में गंभीर लेख हों।

इस संकल्पना से प्रेरित 'मंथन' का तीसरा संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में विकास की नयी इबारत लिखते शहर की एक वर्ष की प्रगति यात्रा को संकलित करने की कोशिश भी की गयी है और भविष्य की योजनाओं का खाका समझने का प्रयास भी किया गया है।

अल्प-समय सीमा के बाद भी अपने महत्वपूर्ण आलेखों के जरिये इस प्रयास को पूर्णता प्रदान करने वाले सभी विद्वान लेखकों के प्रति विनम्र आभार ज्ञापित करते हुए हम आशा करते हैं कि ये आलेख भविष्य की मूल्यांकन प्रक्रिया में एक कसौटी की भूमिका निभाएंगे।

राजवंत राव

हर्ष कुमार सिन्हा

मंथन

CONTENTS

Articles		Pages
1.	महायोगि गोरक्षनाथस्य व्यावहारिकजीवनदर्शनम् – **प्रो. मुरली मनोहर पाठक**	1
2.	**नाथपंथ का समाज दर्शन** – **डॉ. प्रदीप कुमार राव**	5
3.	गोरखपुर की ऐतिहासिक विरासत – **प्रो. राजवन्त राव**	20
4.	गोरखपुर – कल, आज और कल – **डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय**	30
5.	परिवर्तन की राह पर गोरखपुर – **रणविजय सिंह**	48
6.	गोरखपुर का बदलता समाज – **प्रो. मानवेन्द्र प्रताप सिंह**	52
7.	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ – **प्रो. विजय कृष्ण सिंह**	57
8.	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर : स्थापना एवं विकास-यात्रा – **प्रो. विनोद कुमार सिंह**	76
9.	सुबह-शाम, अदायें गोरखपुर – **डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी**	86
10.	उत्तर प्रदेश सरकार की महायोजनायें (वर्ष 2019) और गोरखपुर नगर निगम का विकास – **डॉ. सचिन राय**	95

11. पूर्वांचल फिर बन रहा है चीनी का कटोरा
- **डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह** 104

12. वर्ष 2019 में गोरखपुर की औद्योगिक प्रगति संभावनायें एवं सुझाव
- **एस.के. अग्रवाल** 107

13. गोरखपुर परिक्षेत्र में पौध-रोपण
- **प्रो. विनय कुमार सिंह** 111

14. अशफ़ाक उल्लाह खां प्राणि उद्यान (चिड़ियाघर) : एक अनमोल उपहार
- **डॉ. संतोष कुमार सिंह** 116

15. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संसथान (एम्स) -
शुरू हुआ असाध्य रोगों से मुक्ति का निर्णायक संघर्ष
- **डॉ. हर्ष सिन्हा** 118

16. खाद कारखाना : विकास की राह में महत्वाकांक्षी कदम
- **पुरुषोत्तम राय** 121

17. व्यापार-वाणिज्य - उत्साहवर्धक नीतियों एवं एयर-कनेक्टिविटी से बदल रहा परिदृश्य
- **डॉ. अजेय कुमार गुप्ता** 123

18. बाबा राघव दास मेडिकल कालेज, गोरखपुर -
अवस्थापना सुविधाओं एवं मानक स्वास्थ्य सेवाओं की प्रतिबद्धता
- **गणेश कुमार** 129

19. प्रभावी पर्यवेक्षण से बदल रही है स्वच्छता की तस्वीर
- **डॉ. ए.के. श्रीवास्तव** 132

20. माध्यमिक शिक्षा परिषद्, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर : स्थापना एवं शुभारम्भ
- **डॉ. रुद्र प्रताप सिंह** 135

21. उच्च शिक्षा - नकलमुक्त परीक्षा और नये विद्याकेन्द्रों के आरम्भ का वर्ष
- **डॉ. अश्वनी कुमार मिश्र** 139

22. गोरखपुर का विकास - रेलवे एक अहम भागीदार
- **पंकज कुमार सिंह** 143

23. बदल गयी बनटांगिया की तस्वीर
- **डॉ. अविनाश प्रताप सिंह** 146

24. पशुपालन - गोवंश का संरक्षण-संवर्द्धन में भागीरथ प्रयासों का वर्ष
- डॉ. संजय कुमार श्रीवास्तव 151

25. गोरखपुर के परिप्रेक्ष्य में न्यायपालिका
- अशोक कुमार शुक्ल 157

26. गोरखपुर न्यायपालिका की वर्ष 2019 की उपलब्धियाँ
- डॉ. सुभाष चन्द्र शुक्ल 159

27. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गोरखपुर की मीडिया
- राजन राय 162

28. गोरखपुर के साहित्य-साधना का परिवेश
- प्रो. दीपक प्रकाश त्यागी 164

29. गोरखपुर का साहित्यिक स्पन्दन : एक सिंहावलोकन
- प्रो. आर.डी. राय 174

30. साहित्य-संस्कृति एवं नवाचारी आयोजनों का वर्ष - 2019
- शैवाल शंकर श्रीवास्तव 186

31. आकाशवाणी - गोरखपुर के 'मन की बात'
- अनामिका श्रीवास्तव 191

32. गोरखपुर अब विश्व-क्षितिज पर
- डॉ. आमोद राय 193

33. प्रमाणिक इतिहास लेखन के क्षेत्र में अग्रणी भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त
- डॉ. अजय कुमार सिंह 197

34. गोरखपुर में सँवर रहा है खेल
- अरूणेश शाही 207

35. क्षितिज पर छाया अपना शहर, गर्व से कहें गोरखपुरी हैं हम
- डॉ. अजय कुमार सिंह एवं डॉ. प्रदीप कुमार राव 210

36. गोरखपुर की 2019 की विकास यात्रा
..... 238

महायोगि गोरक्षनाथस्य व्यावहारिकजीवनदर्शनम्

प्रो. मुरली मनोहर पाठक

भारतीय दार्शनिक चिन्तन परम्परायां यथाकालं नैके सन्तों, योगिनो, महापुरुषाश्च जन्म लेभिरे। तैः अपेक्षानुसारं वेदानां पुराणानां विविधदार्शनिकप्रस्थानानांच युगानुरूपं वैज्ञानिकं दार्शनिकं च व्याख्यानं विहितम्। एतादृशेषु एव महापुरुषेषु महायोगी गुरुगोरक्षनाथोऽपि किमपि विशिष्टं स्थानमाप्नोति। स नाथसम्प्रदायस्य महान् उद्धर्त्ता आसीत्। भारते नाथ सम्प्रदायस्य इतिहासः अतीवप्राचीनोऽस्ति। एतस्य समारम्भः आदिनाथेन स्वीकियते, यः कवलु शिवस्य साक्षादवताररूपेण प्रादुरभूत्। एतस्यामेव परम्परायां मत्स्येन्द्रनाथोऽपि समजायत। स तु गोरक्षनाथस्य गुरुरिति परम्परया ज्ञायते।

योगिनो दार्शनिका वा परमसत्यस्य अन्वेषका एव भवन्ति। तेषां पद्धतौ कश्चन भेदो भवति। यत्र दार्शनिकः सत्यान्वेषणे तर्कपद्धतिं समाश्रित्य कश्चन बौद्धिकमार्गं प्रशस्तं करोति, तत्रैव योगी नैतिकमार्गमनुसृत्य मनोनिरोधेन आत्मानुशासनेन च परं सत्यं साक्षात्करोति। दार्शनिकपद्धत्या सत्यान्वेषणे कश्चन वादविशेषो जायते, किन्तु योगमार्गमनुसृत्य सत्यान्वेषणे व्यावहारिकदृष्ट्या सत्यस्य प्राप्तिरधिगमो वा भवति।

महायोगी गुरुगोरक्षनाथः तादृशं पन्थानं प्रस्तौति, यत्र सर्वेऽपि आत्मसाक्षात्कारं कर्तुं प्रभवन्ति। सः सामान्यदृष्ट्या विचारेण कश्चन दार्शनिको नासीत्। यतो हि दार्शनिकशिरोमणिभिः स्वकीयचिन्तनपद्धतेः प्रचारार्थं नैके तत्त्वमीमांसीयसन्दर्भाः प्रस्तूयन्ते, तेषां पुष्ट्यर्थं च विविधास्तर्का दीयन्ते। सः पूर्णत अभिज्ञ आसीत्, यत् कस्यचन स्वकीयसिद्धान्तस्य स्थापनार्थं यदि तर्काः प्रस्तूयन्ते, तर्हि अन्यै विद्वद्भिः तेषां खण्डनमपि भविष्यति। अनेन प्रकारेण कोऽपि तादृशः सिद्धान्तः स्थापयितुं न शक्यते। अतः सिद्धान्तस्थापनस्यापेक्षया कस्याश्चन जीवनस्य

अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

व्यावहारिकपद्धतेः प्रतिष्ठा कर्त्तव्या यामाश्रित्य परमसत्यस्य साक्षादनुभवः भवेत्। एवं सति दार्शनिकमतभेदस्य अवसर एवं नैवोत्पत्स्यति। तस्य चिन्तनस्य पृष्ठभूमिः लोकातीता चैतन्यस्य समाध्यवस्था आसीत्। तत्र स्थित्वा स यत्किञ्चिदपि चिन्तिवान् यां कामप्यनुभूतिं वा लब्धवान् तामेव सरलभाषायां लोकस्य कल्याणार्थं प्रस्तुतवान्। अतस्तस्य भाषा तादृशी दार्शनिकी भाषा नाऽसीत्। तस्य भाषायां कविसफलभकल्पनाः, उपमाः रूपकादयश्च द्रष्टुं शक्यन्ते, येषां माध्यमेन सः स्वकीयायाः आन्तरिकानुभूतेः, या खलु अत्यन्तमुन्नता आसीत् प्रकाशनं कृतवान्। गोरक्षवचनसंग्रहे नैके एतादृशाः सन्दर्भाः दृष्टिपथं समायान्ति। तेषु केचन अत्र प्रस्तूयन्ते।

श्रीगोरक्षनाथमतानुसारेण परमतत्त्वं तु द्वैताद्वैतविलक्षणं भवित। तत्र न भावोऽस्ति न वा अभावोऽस्ति। परमतत्त्वम् उत्पत्तिविनाशरहितमस्ति। तद्यथा –

अद्वैतं केचिदिच्छन्ति द्वैतमिच्छन्ति चापरे।
समं तत्त्वं न विन्दन्ति द्वैताद्वैत विलक्षणम्।।
भावाभावविनिमुक्तं नाशोत्पत्तिविवर्जितम्।
सर्वसंकल्पनातीतं परब्रह्म तदुच्यते।।

सः शक्तिशिवयोर्मध्ये भेदं न स्वीकुरुते। तन्मतानुसारेण शक्तिः शिवस्याभ्यन्तरे तिष्ठति एवमेव शिवोऽपि शक्तेरभ्यन्तरे वर्तते। यथा चन्द्रिकाचन्द्रयोः कश्चन भेदो नास्ति, तद्वदेव अनयोरपि भेदो नास्ति। शक्तिरहित शिवः किञ्चिदपि कर्त्तुं न प्रभवति, स्वशक्त्या मुक्तः सन्नेव सर्वस्य आभासको भवति। शक्तिः प्रसरं ख्यापयति शिवश्च संकोचमाधत्ते। एतयोः प्रसरसंकोचयोः यो योगं विदधाति स एव योगिराड् भवति। वस्तुतः विविधरूपेण भासमानानां शक्तिसहस्राणां संघद्वरूपः शिवो भवति। यथा –

शिवस्याभ्यन्तरे शक्तिः शक्तेरभ्यन्तरे शिवः।
अन्तरं नैव जानीयात् चन्द्रचन्द्रिकयोरिव।।
शिवोऽपि शक्तिरहितः शक्तः कर्त्तुं न किञ्चन।
स्वशक्त्या सहितः सोऽपि सर्वस्याभासको भवेत्।।
प्रसरं भासयेत् शक्तिः संकोचं भासयेत् शिवः।
तयोर्योगस्य कर्ता यः स भवेत् सिद्धयोगिराट्।।
तथा तथा दृश्यमानानां शक्तिसहस्राणामेकसंघद्वः।
निजहृदयोद्यमरूपो भवति शिवो नाम परमस्वच्छन्दः।।

श्री गोरक्षनाथमतानुसारेण परा संविदेव सर्वत्र राजते। अस्या एव महिम्ना सकलमपि जगत्

स्थितमस्ति –

सत्वे सत्वे सकलरचना राजते संविदेका,
तत्त्वे तत्त्वे परममहिमा संविदेवावभाति।
भावे भावे बहुलतरला लम्पटा संविदेषा,
भासे भासे भजनचतुरा बृंहिता संर्विदेव।।

आत्मन् सिद्धार्थं कस्यचन प्रमाणस्य आवश्यकता नास्ति। अस्मिन् सन्दर्भे आलांकारिकरूपेण महायोगी कथयति यत् यथा गंगास्रोतसि निमग्नस्य जनस्य पिपासा न भवति तथैव विश्वमूलभूतस्य आत्मनः प्रमाणार्थं किञ्चिदपि न अपेक्षितं भवति –

आत्मा खलु विश्वमूलं तत्र प्रमाणं न कोऽप्यर्थयते।
कस्य वा भवति पिपासा गंगास्रोतसि निमग्नस्य।।
एवमेव जीवात्मपरमात्मनोरभेदो वर्तते।
आत्मेति परमात्मेति जीवात्मेति विचारणे।
त्रयाणामैक्यसम्भूतिः आदेश इति कीर्तितः।।

आत्मज्ञानादेव मुक्तिर्भवति। आत्मा निर्मलो गगनाकारश्चास्ति। अयं मरीचिजलतुल्योऽस्ति। एतादृशमात्मानं ज्ञात्वा ध्यात्वा व योगी मुक्तो भवति। यदा सर्वे उपाधयो नश्यन्ति, योगिनः निरन्तरमभ्यासं च कुर्वन्ति तदा मुक्तिकृदात्मा स्वयमेव प्रकाशते –

निर्मलं गगनाकारं मरीचिजलसन्निभम्।
आत्मानं सर्वगं ज्ञात्वा योगी मुक्तिवाप्नुयात्।।
समस्तोपधिविध्वंसात् सदाभ्यासेन योगिनः।
मुक्तिकृत् शक्तिभेदेन स्वयमात्मा प्रकाशते।।

समाधिस्वरूपं निरूपयन् महायोगी कथयति यत् यत्र जीवात्मपरमात्मनोः समत्वं भवति तथा च सर्वे संकल्पा नाशं यान्ति, सा अवस्था समाधिरित्यभिधीयते। यथा जललवणयोरैक्यं भचति तथैव यदा योगद्वारा आत्ममनसोरैक्यं जायते, तदा समाधिर्भवति –

त्तसमत्वं द्वमोरत्र जीवात्मपरमात्मनोः।
समस्तनष्टसंकल्पः समाधिः सोऽभिधीयते।
अम्बुसैन्धनयोरैक्यं यथा भवति योगतः।
तथात्ममनसोरैक्यं समाधिरभिधीयते।।

आसनं, प्राणायामः, प्रत्याहारो, धारणा, ध्यानं, समाधिरिति योगस्य षडङ्गानि। आसनेन रोगाः नश्यन्ति, प्राणायामेन पातकं नश्यति, प्रत्याहारेण मानसविकाराः नश्यन्ति। धारणया मनस्ते धैर्यं जायते। ध्यानाददभुतं चैतन्यं जायते तथा च समाधिना शुभाशुभकर्माणि परित्यज्य योगी मोक्षमधिगच्छति –

आसनं प्राणसंरोधः प्रत्याहारश्च धारणा।
ध्यानं समाधिरेतानि योगांगानि वदन्ति षट्।।
आसनेन रुजं हन्ति प्राणायामेन पातकम्।
विकारं मानसं योगी प्रत्याहरेण मुञ्चति।।
मनोधैर्यं धारणया ध्यानाच्चैतन्यमद्भुतम्।
समाधेमोक्षिमाप्नोति त्यक्त्वा कर्म शुभाशुभम्।।

आत्मादिसकलमपि अनुसंधानं गुरुकृपां विना न शक्यमाप्तुम्। सद्गुरोः कृपां विना किमपि साध्यं न भवति। यः खलु विश्रमस्यानुभवं कर्तुं वाञ्छति तेन गुरोराश्रयो ग्राह्यः। सद्गुरोः वचनात्, त्तकर्तृकशक्तिपातात्, तस्य पादावलोकनात्, तस्य प्रसादाद्वा परमं पदं प्राप्यते। सद्गुरोः कृपा विना विषयत्यागः तत्त्वदर्शनं सहजावस्था चेति सकलमपि सुदर्लभमेव। अतः सर्वथा गुरुराश्रयणीयः –

असाध्याः सिद्धयः सर्वाः सद्गुरोः करुणां विना।।
अनुवुभूषति यो निजविश्रमं स गुरुपादसरोरुहमाश्रयेत्।
तदनुसंसरणात्परमं पदं समरसीकरणं च न दूरतः।।
कथनात् शक्तिपाताद्वा यद्वा पदापवक्तोकमात्।
प्रसादात्सद्गुरोः सम्यक् प्राप्यते परमं पदम्।।
दुर्लभो विषयत्यागो दुर्लभं तत्त्वदर्शनम्।
दुर्लभा सहजावस्था सद्गुरोः करुणां बिना।।

एवं महायोगिगोरक्षनाथेन प्रदर्शितं व्यावहारिकमार्गमनुसृत्य योगानुशासनं च स्वीकृत्य साधारणोऽपि जनः परमपदमाप्तुं शक्नोति स्वकीयं जीवनं च सफलं विधास्यति।

।।इतिक्षम्।।

*****

नाथपंथ का समाज दर्शन

डॉ. प्रदीप कुमार राव

महाकवि सुमित्रानन्द पन्त-भारत के धर्माकाश में बारह प्रमुख धर्माचार्य कौन हैं?
श्रीरजनीश (ओशो)-भारत के धर्माकाश में चमकते, 12 सितारें हैं- कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, नागार्जुन, शंकर, गोरख, कबीर, नानक, मीरा, रामकृष्ण, कृष्णमूर्ति।
महाकवि सुमित्रानन्दन पंत-तो फिर ऐसा करें, सात नाम मुझे दें।
श्री रजनीश (ओशों)-कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, शंकर, गोरख, कबीर।
महाकवि सुमित्रानन्दन पंत-आपने पांच नाम किस आधार पर छोड़े।
श्री रजनीश (ओशो)-नागार्जुन बुद्ध में समाहित हैं। कृष्णमूर्ति भी बुद्ध में समाहित हैं। रामकृष्ण, कृष्ण में लीन हो गए। मीरा-नानक कबीर में समाहित हैं।
महाकवि-अगर पांच की सूची बनानी पड़े।
श्रीरजनीश-कृष्ण, पंतजलि, बुद्ध, महावीर, गोरख। क्योंकि कबीर को गोरख में लीन किया जा सकता है। शंकर तो कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं।
महाकवि सुमित्रानन्दन पंत-अगर चार ही रखने हों?
श्री रजनीश (ओशो)-कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, गोरख। महावीर बुद्ध से बहुत भिन्न नही है।
महाकवि सुमित्रानन्दन पंत-बस एक बार और.....। आप तीन व्यक्ति चुने।
श्रीरजनीश (ओशो)-अब असंभव है।

* महावीर छोड़े जा सकते हैं। गोरख को नहीं छोड़ा जा सकता।
* गोरख से इस देश में एक नया ही सूत्रपात हुआ।
* गोरख एक श्रृंखला की पहली कड़ी हैं। उनसे एक नए प्रकार के धर्म का जन्म हुआ।
* भारत की सारी सन्त परम्परा गोरख की ऋणी है।
* गोरख सबसे बड़े आविष्कारक हैं।
* गोरख के पास अपूर्व व्यक्तित्त्व था, जैसे आंइस्टीन के पास व्यक्तित्त्व था।

(महाकवि सुमित्रानन्दन पंत एंव श्री रजनीश (ओशो) का यह संवाद श्री रजनीश की पुस्तक 'मरो ए योगी मरो' में विस्तार से प्रकाशित है। महायोगी गोरक्षनाथ के सम्बन्ध में श्री रजनीश के विचार की यह पुरस्तक विस्तार से प्रस्तुत करती है।)

उपर्युक्त संवाद महाकवि सुमित्रानन्दन पन्त तथा दर्शनशास्त्र के आचार्य एवं तार्किक उपदेशक रजनीश जी के बीच का है। इस वार्तालाप से संत गोरखनाथ जी का महत्व ज्ञात होता

प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर-273014

है कि वे केवल लोकचित में व्याप्त सन्त ही नहीं थे अपितु ज्ञान परम्परा से भी सम्पन्न थे।

यदि हम धर्म की सामाजिक भूमिका पर दृष्टि डालें तो पायेंगें कि इसकी भूमिका सदैव क्रान्तिकारी रही है। प्रत्येक धर्म अपने समय के क्रान्ति रहे हैं जिन्होंने अपने समय के मनुष्यों की समस्याओं का हल ढूंढा - उनके मुक्ति का मार्ग सुझाया। चूँकि समय बदलता रहता है और प्रत्येक समय के मनुष्यों की अपनी समस्यायें होती हैं इसी लिये प्रत्येक युग में नयी क्रान्ति यानि नये धर्म की आवश्यकता होती है। नया धर्म समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का सामना करता है, नये प्रश्नों का उत्तर देता है। इसे भारतीय परम्परा में अवतारवाद की अवधारणा से समझा जा सकता है। इसे ही भगवान श्रीकृष्ण ने कहा - **'सम्भवामि युगे-युगे'**

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।।

इसी प्राचीन परम्परा में पूर्वमध्य काल में अपने युग के मनुष्यों की समस्याओं का हल लेकर महायोगी गुरु गोरखनाथ एक नये अवतार के रूप में उपस्थित हुये थे। वे मनुष्य को वर्गों, जातियों के बजाय मनुष्य के रूप में पहचान कराने के हामी थे। वे तत्समता के बजाय तद्भवता, शास्त्र के स्थान पर लोक के साथ सम्बद्ध थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार भारत की सभी भाषाओं में गोरखवाणी मौजूद है - इससे लोकचित्त में महायोगी गोरखनाथ जी के व्याप्ति का आभास मिलता है। लोक चित्त में व्याप्ति देश एवं राष्ट्र की सीमायें नहीं जानता। इसी कारण पाकिस्तान, अफगानिस्तान तक नाथ पंथ के स्वर सुनायी देते हैं। लोक चित्त के कारण ही गोरखवाणी, नाथपंथ को न केवल व्यापक आधार मिला वरन महायोगी गोरखनाथ के सम्बन्ध में बहुत सारी अनुरंजक कथायें भी जुड़ी। लोक में यह धारणा विद्यमान है कि महायोगी गोरखनाथ अजन्मा हैं, वे आज भी विद्यमान हैं, वे आदियोगी शिव के अवतार हैं। यह लोकचित्त में महायोगी गोरखनाथ जी की व्याप्ति की पराकाष्ठा है। महायोगी गोरखनाथ जी के मनुष्य को मनुष्य के रूप में जीने का मुकम्मल दर्शन दिया।

हबकि न बोलिबा ठबकि न चलिबा धीरे धरिबा पांव।
सहजै रहिया गरब न करिबा भणत गोरखराव रे।।

यह जो धीरे धरिया पांव है भारत की मुकम्मल परम्परा है। इस राह पर चलकर ही मानव

गरिमा की रक्षा की जा सकती है।

मैं यहाँ उस परिवेश का वर्णन करना चाहूँगा जिसमें महायोगी गोरखनाथ का उदय हुआ था।

महायोगी गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित नाथपंथ के नाथसिद्धों, नवनाथों और चौरासी सिद्धों का आविर्भाव तथा विचारकाल सामान्यः नवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी ई. तक माना जाता है। यह युग भारतीय धर्म-साधना में उथल-पुथल का युग था ही, सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में भी भारत की सनातन संस्कृति के प्रतिकूल अनेक विकृतियाँ एवं चुनौतियाँ उभर चुकी थीं। इस्लाम एक पांथिक शक्ति के साथ-साथ आक्रमणकारी राजनीतिक ताकत के रूप में भारत में प्रवेश कर रहा था। भारत के धार्मिक-आध्यात्मिक जीवन में तन्त्र-मंत्र, टोने-टोटके प्रभावी होते जा रहे थे। बौद्ध साधना पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ चुका था। बौद्ध, शाक्त, शैव और वैष्णव सम्प्रदायों के बीच आपसी मतभेद एवं कटुता बढ़ती जा रही थी। जन-मानस एक ऐसे चौराहे पर खड़ा था जहाँ उसे समझ में नहीं आ रहा था कि किस ओर जायें। मुक्ति का मार्ग कौन सा है।

महात्मा बुद्ध ने जिस वैचारिक अधिष्ठान पर बौद्ध मत का प्रतिपादन किया, लगभग हजार वर्ष बीतते-बीतते वह वैचारिक आन्दोलन भी उन्हीं रूढ़ियों, कुरीतियों, पाखण्डों का शिकार हुआ जिनके गर्भ से उसका जन्म हुआ था। आचार-विचार की शुद्धता तार-तार हो रही थी। वामाचार, तन्त्रवाद एवं अनाचार का शिकार बौद्ध मत तामसी-विलासी-कामुकतापूर्ण कलुषित जीवन का शिकार हुआ। परिणामतः बौद्ध मत से सामान्य-जन का विश्वास डिगने लगा।

बौद्ध मत के ह्रास एवं पतन की परिस्थितियों में वैदिक मत की विविध धाराएँ अपनी पुनर्प्रतिष्ठा के प्रयत्न में सफल होने का प्रयत्न कर रही थीं। विशेष कर वैष्णव-शैव मत अपने नए कलेवर, वैचारिक शुद्धता और आत्मा-परमात्मा के सम्बन्धों पर विविध दार्शनिक व्याख्याओं के साथ वैदिक संस्कृति को लोकप्रिय बनाने में प्रयत्नरत थे। किन्तु इस प्रयत्न में भारतीय समाज में रूढ़िगत स्वरूप में विकसित होने वाली जाति-व्यवस्था सबसे बड़ी बाधा थी।

पूर्व मध्ययुग अर्थात् छठवीं शताब्दी ईस्वी से बारहवीं शताब्दी ईस्वी के कालखण्ड में भारत पर कई इस्लामी आक्रमण हुए। यह युग भारत के तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश का भी युग है। इसी युग में भारतीय समाज में धार्मिक एवं उपासना पद्धतियों के नाम पर पाखण्ड एवं आडम्बर बढ़े तो दूसरी तरफ जातियों में उपजातियों का तेजी से निर्माण हुआ। जाति व्यवस्था ऊँच-नीच एवं छुआ-छूत की विकृति का शिकार हो चुकी थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण जन्माधारित जाति में रूढ़ हो ही रहे थे, इनमें भी विखण्डन एवं विभाजन की प्रवृत्ति

हावी थी। अनेक विदेशी जातियों के भारतीय समाज में समन्वीकरण ने भी जातीय विखण्डन एवं उपजातियों के निर्माण में भूमिका निभाई। इस युग के जाति-व्यवस्था पर अलबरूनी के किताबुलहिन्द एवं चन्दबरदाई के पृथ्वीराजरासों में विस्तृत विवरण मिलता है।

यह युग जातीय विखण्डन के कारण जातीय अस्तित्व एवं शुद्धता को लेकर काफी संवेदनशील युग है। ब्राह्मण अपनी सांस्कारिक शुद्धता, रूढ़िवादिता और धर्मान्धता को अपनी विशिष्टता एवं श्रेष्ठता का आधार मानते थे तो क्षत्रिय अपने शौर्य-पराक्रम की श्रेष्ठता के अहंकार में डूबे थे। वैश्यों के बीच से कायस्थ जाति का उद्‌भव हो चुका था और वे शासन-प्रशासन में अपनी लिखा-पढ़ी के आधार पर जगह बना चुके थे। जातीय श्रेष्ठतावाद से भारतीय समाज में ऊँच-नीच की एक गहरी खाई बनती जा रही थी। ब्राह्मण-क्षत्रिय पौरोहित्य एवं राज्य के बल पर अपनी श्रेष्ठता पूरे समाज पर जबरन थोप भी रहे थे। समाज में इनके द्वारा घोषित शूद्र के अन्तर्गत आने वाली वे जातियाँ जिनके कौशल एवं परिश्रम पर समाज जी-खा रहा था वे नीच और अछूत घोषित की जा रही थीं।

देबल एवं लक्ष्मीधर ने ब्राह्मणों की अनेक उपजातियों का उल्लेख किया है। अत्रिसश्मति तथा मिनतकसार ने ब्राह्मणों की दस श्रेणियों- देवा, मुनि, हिज, राज्य, वैश्य, शुद्र, मरजरा, पशु, म्लेच्छ तथा चाण्डाल- का उल्लेख किया है। क्षेत्रीय आधार पर भी ब्राह्मणों की अनेक उपजातियाँ, यथा बंगाल में वन्ध्यधतिया, चम्पहटिया, इकिया, बरेन्द्र, वैदिक का उल्लेख है। द्राविड़ और उत्कल से आए दक्षिणी ब्राह्मण कहलाए। बिहार में मैथली, सकद्वीपी, गवावाल, मग, गौड़द्ध उत्तर प्रदेश में कन्नौजिया, सरयूपारीय तथा कश्मीर के कश्मीरी ब्राह्मण कहे जाने लगे थे। स्पष्ट है कि जातियों के अन्दर भी ऊँच-नीच का भाव प्रबल होने लगा था।

क्षत्रियों की भी उत्तर भारत में ही 36 जातियों का उल्लेख मिलने लगता है। अलबरूनी लिखता है समाज में ब्राह्मणों के बाद क्षत्रियों का दूसरा स्थान था। इब्नखुदवर्दा के अनुसार क्षत्रिय दो वर्ग सवकुफरिया तथा कहरिया में विभाजित थे। क्षत्रियों में भी ऊँच-नीच की भावना घर कर गयी थी। इसीप्रकार वैश्यों एवं शूद्रों में भी अनेक जातियों एवं उपजातियों का विकास हो चुका था। जैन पुस्तक प्रशस्ति संग्रह के अनुसार गुजरात तथा राजस्थान में ही श्रीमाली, प्रागवत, उपकेष, घरकटा, पल्लखाल, मोधा, गूजर, नागर, दिसवाल, औद, दुम्बाल वैश्यों की प्रमुख जातियाँ थीं। अलबरूनी की माने तो ग्यारहवीं शताब्दी तक वैश्यों और शूद्रों में कोई अन्तर नहीं रह गया था।

अभिधान चिन्तामणि, देसीनमामला तथा वैजयन्ती जैसे ग्रन्थों में शूद्र कहे जाने वाले

मजदूर, लोहार, पत्थर काटने वाले, शंख बनाने वाले, कुम्हार, जुलाहा, बढ़ई, चर्मकार, तेली, ईंट बनाने वाले, स्वर्णकार, जौहरी, ताँबे का काम करने वाले, चित्रकार, बोझा ढोने वाले, भिश्ती, दर्जी, धोबी, कलाल, मदिरा बेचने वाले, माली, घूम-घूम कर वस्त्रें के विक्रेता, शिकारी, चाण्डाल, नर्तक, अभिनेता इत्यादि का उल्लेख मिलता है। वैजयन्ती के अनुसार शूद्रों की 64 जातियाँ थी।

उपर्युक्त जातियों, उपजातियों और उनके बीच ऊँच-नीच प्रबल होते भाव के बीच भारतीय समाज में विखण्डनकारी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही थी। देश की पश्चिम सीमा स्थानीय राजपूतों के जातिकुलाभिमान, पारस्परिक कलह एवं संघर्ष से अव्यवस्थिति हो उठी थी। हिन्दू समाज के समक्ष नष्ट होती सामाजिक परम्परा को कायम रखने एवं युग के सन्दर्भों के अनुरूप अपने को ढालने की चुनौती भी थी, तो मुस्लिम उलेमा अपने रीतिरिवाज का प्रचार-प्रसार कर इस्लाम के प्रभुत्त्व बनाए रखने हेतु प्रयत्नशील भी थे। इससे समाज और राष्ट्र-निरन्तर कमजोर हो रहा था।

बौद्ध युग के बाद यह युग एक बार फिर सामाजिक क्रान्ति की दहलीज पर खड़ा था। भारत के धार्मिक-आध्यात्मिक जीवन में उथल-पुथल के साथ-साथ जाति व्यवस्था में ऊँच-नीच एवं छुआ-छूत से आक्रान्त समाज में एकरसता की डोर कमजोर होती जा रही थी। समाज विखण्डन का शिकार हो रहा था। एक तरफ बौद्धमत का पतन और दूसरी तरफ जाति-व्यवस्था में ऊँच-नीच, छुआ-छूत जैसी विकृतियों से पीड़ित भारतीय समाज एक ऐसे धार्मिक-आध्यात्मिक नायक को खोज रहा था जो एक बार फिर सहज जीवन का ऐसा मार्ग दिखाए जो उसे लौकिक जीवनानन्द के साथ पारलौकिक जीवन का मार्ग भी प्रशस्त करे। भारतीय संस्कृति की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता स्वयं शुद्धिकरण की है। भारत के धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक जीवन में जब-जब जटिलता, कर्मकाण्ड, पाखण्ड, रूढ़िवादिता प्रभावी हुयी, इनके विरूद्ध भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों के पुनर्जागरण हेतु भारतीय समाज खड़ा हुआ। इन्हीं परिस्थितियों में समय-समय पर समाज का नेतृत्व करने के लिए महापुरूषों का अभ्युदय हुआ। समय-समय पर समाज का मार्गदर्शन करने हेतु वैचारिक आन्दोलन चले और कुछ वैचारिक आन्दोलन पांथिक स्वरूप ग्रहण कर संगठित स्वरूप में भारतीय संस्कृति के वाहक बने। महायोगी गोरखनाथ का अभ्युदय एवं उनके द्वारा प्रवर्तित नाथपंथ इन्हीं परिस्थितियों की उपज था।

नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ इस जाति व्यवस्था के ऊँच-नीच एवं छुआ-छूत

जैसी कुरीतियों के विरूद्ध तनकर खड़े हुए। इस विषम सामाजिक परिस्थिति में भारत की जनता को कर्त्तव्य बोध कराने वाले महायोगी गोरक्षनाथ ने नाथपंथ के रूप में जिस संगठन को खड़ा किया वह सामाजिक परिवर्तन और जन-मानस के अनुरूप था। इसमें एक तरफ ईश्वरवाद की एक निश्चित अवधारण थी तो दूसरी तरफ धार्मिक अन्धविश्वासों, कुरीतियों एवं रूढ़ियों पर करारा प्रहार भी था। युग-धर्म के अनुसार उन्होंने जाति-पाति की कट्टरता, धार्मिक उन्माद एवं कथनी-करनी में अन्तर इत्यादि बुराइयों के विपरीत आवाज बुलन्द किया और स्नेह-सहयोग, त्याग-तपस्या, सहनशीलता के शान्तिपूर्ण सन्देश दिए। उन्होंने घोषित किया कि ये कुरीतियाँ शास्त्र-सम्मत नहीं है। उन्होंने सभी के लिए योग का एक ऐसा सहज मार्ग प्रतिपादित किया, जो बिना भेद-भाव के ईश्वर का साक्षात्कार करा सकता था और जिस पथ पर चलकर सभी मोक्ष के अधिकारी थे।

महायोगी गोरखनाथ ने एक नया एवं अद्‌भुत सामाजिक वर्गीकरण का सिद्धान्त दिया। उन्होंने जातीय विभाजन को अस्वीकार करते हुए मनुष्यों का केवल दो वर्ग स्वीकारा है। योगबीज में कहा गया है कि देहधारी मनुष्य दो प्रकार के हैं। एक वे हैं, जो योगहीन होने के कारण अपक्व (कच्चे) देहवाले हैं और दूसरे योगाभ्यास से युक्त पक्व (पक्के) देहवाले हैं।

अपक्वाः परिपक्वाष्च द्विविधाा देहिनः स्मृताः।
अपक्वाः योगहीनास्तु पक्वा योगेन देहिनः।।

योगबीज, 34,

अजपा जप नाथपंथ का वह मंत्र है जो अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष सभी को चाहे-अनचाहे एक समान रूप से उपलब्ध है। श्वास सभी मानव एक जैसे लेते हैं। नाथपंथी दर्शन के अनुसार हर जीव हकार ध्वनि के साथ श्वास (प्राणरूप में) बाहर छोड़ता है और सकार ध्वनि के साथ (अपान रूप में) श्वास भीतर खीचता है। इस प्रकार हर मानव हंस-हंस मंत्र का जप स्वतः दिन-रात मिलाकर इक्कीस हजार छः सौ बार करता है। यथा-

हकारेण बहिर्याति सकारेण विषेत् पुनः।
हंसहंसेत्यमुं मन्त्रं जीवो जयति सर्वदा।।
षटषतानि त्वहो रात्रे सहस्राण्येक विषंतिः।
एतत्संख्यान्वितं मन्त्र जीवो जयति सर्वदा।।

गोरक्षशतक, 42-43

महायोगी गोरखनाथ कहते हैं कि यह अजपा गायत्री है, जिसका स्वत: जप होता रहता है। यह जप संकल्पमात्र से ही मोक्ष प्रदान करता है। इस जप को करने के लिए किसी प्रकार के अतिरिक्त टंट-घंट, कर्मकाण्ड, विधि-विधान, व्यय इत्यादि की कहाँ जरूरत है। मात्र संकल्प ही पर्याप्त है। महायोगी के इस अजपा-गायत्री-जप ने हर जीव को एक समान मोक्ष का अधिकारी बना दिया। उपासना की इतनी सहज विधि कहीं अन्यत्र दुर्लभ है।

गोरक्षशतक में ही 'ऊँकार जप' का उल्लेख मिलता है। अजपा गायत्री की ही तरह यह मंत्र-जाप भी सहज-सरल-सर्वग्राही और बिना किसी भेद-भाव के सभी के लिए करणीय है। गोरक्षशतक के अनुसार चाहे बाह्यशौच से युक्त हो, चाहे अशौच की स्थिति में हो, ॐ-प्रणय का सदा जप करते रहने से जीव उसी तरह पापकर्म में लिप्त नही होता, जैसे कमलपत्र पानी में रहकर भी जल से लिप्त नहीं होता। वाणी से प्रणय-ॐ का जप करना चाहिए। शरीर से उसके चिन्तन में तत्पर रहना चाहिए और मन से उसका नित्य स्मरण करना चाहिए।

पद्मासनं समारूह्य समकायषिरोधार:।
नासाग्रदृष्टिरेकान्ते जपेद्ोकारमव्ययम्।।
वचसा तज्जपेद बींजं वपुषा तत्समभ्यसेत्।
मनसा तत्स्मरेन्नित्यं तत्परं ज्योतिरोमिति।।
शुचिर्वाप्यषुचिर्वापि यो जपेत् प्रणवं सदा।
न स लिप्यति पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।।

गोरक्षशतक 83, 88, 89

इस प्रकार महायोगी गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित योगमार्ग योगियों, गृहस्थों एवं प्रत्येक मानव (स्त्री-पुरूष) के लिए सर्व-सुलभ था। यह उपासना की ऐसी पद्धति थी जो पूर्णत: व्यय-रहित थी एवं विभेद-रहित थी। सभी के लिए नाथपंथी योगमार्ग द्वारा स्वस्थ रहते हुए लौकिक एवं परलौकिक जीवन का चरम लक्ष्य प्राप्य था। योगमार्ग सामाजिक समरसता का महामंत्र बना।

नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरक्षनाथ ने योग-साधना के साथ-साथ आम-जन के लिए जीवन के सहज मार्ग का अनवरत उपदेश किया है। समत्त्व एवं ममत्त्व के साथ एकरस समाज की मनोविकास का निरन्तर प्रयत्न गुरुश्री गोरक्षनाथ की बानियों में दिखायी देता है। जाति-पाति, मत-मजहब, पथ-पंथ की सभी सीमाओं से परे मानव-शरीर और आत्मा को केन्द्र बिन्दु मानते हुए गोरखनाथ कहते हैं कि मानव शरीर में ही भगवान का वास है। अत: अन्त: साधना ही मूल हैं। अलख निरंजन स्वसंवेद्य परमशिव अपने ही भीतर हैं। अपना शरीर ही ज्ञान स्वरूप गुरु

अनादि शिव का अधिष्ठान है। शरीर स्थित आत्मा ही सर्वश्रेष्ठ देवता हैं। इड़ा, पिंगला के संगम स्थान सुषुम्ना में साक्षात् भगवान जगन्नाथ का निवास है। दसवें द्वार ब्रह्मरन्ध्रा पर परमशिव केदानाथ निवास करते हैं, यही केदारधाम है। योग के द्वारा शरीर-आत्मा को साधकर हर कोई, हरकोई मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी है। यथा-

गुरदेव स्यंभेदव सरीर भीतरिये।
आत्मां उत्तिंम देव ताही की न जांणौ सेव।
आंन देव पूजि-पूजि इमही मरिये।।
नवे द्वारे नवे नाथ, तष्बेणीं जगन्नाथ, दसवें द्वारि केदारं।।
जोग, जुगतिसार तौ भौ तिरिये पारं।
कथंत गोरषनाथ विचारं।।

गोरखवानी, पद-9

स्वर्ग-नरक और मुक्ति के सन्दर्भ में महायोगी गोरक्षनाथ ने ऐसा सहज मार्ग प्रतिपादित किया जो सभी के लिए सर्व-सुलभ था। महायोगी ने समाज का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि युक्ताहारविहारयुक्त संयमित जीवन ही शरीर का सुख है, यही स्वर्ग है। असंयमित तथा आहार-बिहार-व्यतिक्रमजन्य रोगाक्रान्त अवस्था ही दुःख है, यही नरक है। अपने संकल्प की पूर्ति के रूप में फलप्राप्ति की भावना से किए गए कर्म ही बन्धन हैं और संकल्प शून्य इच्छारहित सहज-स्वाभाविक अवस्था ही निर्विकल्पता है, यही मुक्ति अथवा कैवल्य है। यद्यपि अज्ञानी की दृष्टि में निद्रादिरूपता ही स्वरूपस्थिति कही गयी है, तथापि यह शुद्ध-बुद्ध आत्मबोधरूप प्रपंचातीत अवस्था ही आत्मजागृति हैं, इससे शान्ति प्राप्त होती है, यही जीव-मुक्ति है। इस तरह सभी देहों में विश्वरूप परमात्मा-परमेश्वर अखण्ड-स्वरूप घट-घट में चित्तस्वरूप व्याप्त है। यथा

यत्सुखं तत्स्वर्गं, यद्दुःखं तन्नरकं, यत्कर्म तद्बन्धानं,
यन्निर्विकल्पं तन्मुक्तिः स्वरूपदशायां निद्रादौ स्वात्मजागरः
शान्तिर्भवति। एवं सर्वदेहेशु विश्वरूप परमेश्वरः
परमात्माशष्खण्डस्वभावेन घटेघटे चित्स्वरूपोतिश्ठति।

सिद्धसिद्धान्तपद्धति, 3.13

नाथपंथ के योगियों ने बार-बार कहा कि पाप-पुण्य हमारे कर्मों के आधार हैं। परमात्मा को स्मरण करते रहने मात्र से मोक्ष-मुक्ति पाया जा सकता है। योग के सहज मार्ग के द्वारा अपने

शरीर के भीतर ही निर्वाण अर्थात मुक्ति पाया जा सकता है। महायोगी गोरखनाथ कहते हैं कि सातो द्वीप और नवखण्ड एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड हमारे शरीर में ही विद्यमान है। अलख-निरंजन परमेश्वर, सूर्य, चन्द्रमा हमारे शरीर में ही है। वाह्यवृत्तियों को समेट कर अपने शरीर के भीतर ही परब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहिए।

पाप पुंन करम का बासा। मोष मुक्ति चेतहु हरि पासा।
जोग जुक्त जब पाओ ग्यांना। काया शोजौ पद नृबाना।।
सप्तदीप नवखंड ब्रह्मण्डा। धरती आकाश देवा रवि चंदा।
तजिबा तिहुँ लोक निवासा। तहाँ निरंजन जोति प्रकासा।।

प्राणसंकली, 2-3

लगभग एक हजार वर्ष पहले जबकि इस्लाम अभी भारत में अपनी जड़ जमाने के प्रयत्न कर रहा था। धार्मिक आधार पर हिन्दू-मुस्लिम टकराहट की अनुगूंज सुनाई पड़ने लगी थी। नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ हिन्दू-मुस्लिम के बीच की विभाजन रेखा को समाप्त करने के प्रयत्न स्वरूप नाथपंथ के प्रवर्त्तक महायोगी के स्वर बार-बार मुखरित हुए। गोरखनाथ ने उपदेश देते हुए कहा कि-

उतपति हिन्दू जदणां जोगी अकलि पीर मुसलमांनी।
ते राह चिन्हो हो काजी मुलां ब्रहमा बिस्न महादेव मांनी।।

सबदी-14

महायोगी गोरखनाथ ने इस्लाम-अनुयायियों को मुहम्मद साहब के उपदेशों के सार-तत्त्व को ग्रहण करने का उपदेश देते हुए कहा कि, हे काजी! परमात्मा के सन्देश वाहक रसूल मुहम्मद साहब का नाम रटने की बजाय उनके विचार की गहनता को समझो। मुहम्मद के हाथ में लोहे या धातु का बनाशस्त्र नहीं था, अपितु प्रेम-मय शक्ति का भाव-शब्द था। यथा-

महंमद-महमंद न करि काजी महमंद का विशम विचारं।
महंमद हाथि करा जे होती लोहै घड़ी न सारं।।

सबदी- 9

नाथपंथ का अपने अभ्युदय काल से ही उपासना की जटिलता धार्मिक आडम्बर, पाखण्ड का प्रबल विरोधी स्वर था। जाति, पंथ, क्षेत्र, लिंग इत्यादि के समस्त विभेदों के विपरीत सामाजिक एकता एवं समरसता को नाथपंथी योगी समर्पित थे। स्पष्ट है कि महायोगी गोरक्षनाथ

ने कर्मकाण्ड-पाखण्ड मुक्त उपासना पद्धति दी जो जाति-पाति, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब सभी के लिए एक समान सहज रूप से सुलभ था। वस्तुतः यह नाथपंथ की एक सामाजिक क्रान्ति थी। ऐसी सामाजिक क्रान्ति जो हर व्यक्ति को हँसते-खेलते जीवन का सूत्र दे रही थी। गोरक्षनाथ की सबदी जन-जन के ओठों पर गूँज रही थी। यथा-

हसिबा खेलिबा रहिबा रंग। काम क्रोध न करिबा संग।।
हसिबा खेलिबा गाइबा गीत। दिढ़ करि राशि आपनां चीत।
हसिबा खेलिबा धरिबा धयांन। अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियांन।
हसै खेलै न करै मन भंग। ते निहचल सदा नाथ के संग।।

सबदी 7-8

नाथपंथ समरस समाज की स्थापना में धार्मिक-आध्यात्मिक दर्शन का न केवल प्रतिपादन किया अपितु सभी जातियों के लिए धर्म-अध्यात्म-योग को सुलभ बना दिया। गोरखनाथ के इसी अभियान का परिणाम था कि भक्ति आन्दोलन में नीच कही जाने वाली जातियों के भक्त ताल ठोककर आगे आए। नाथपंथ में भी नीच कही जाने वाली जातियों के लोग बड़ी संख्या में दीक्षित हुए। आचार्य रामचन्द शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है कि 84 सिद्धों में बहुत से मछुए, चमार, धोबी, डोम, कहार, लकड़हारे, दर्जी तथा और बहुत से शूद्र कहे जाने वाले लोग थे। यहाँ तक कि बड़ी संख्या में इस्लाम के अनुयायी भी नाथपंथ में दीक्षित हुए। नाथपंथ के प्रभाव में ही भारत में सूफी मत में योग-ध्यान विकसित हुआ। महायोगी गोरक्षनाथ एवं नाथपंथी योगियों ने भारतीय जाति व्यवस्था में कोढ़ की तरह व्याप्त जाति व्यवस्था के ऊँच-नीच, छुआ-छूत के विरूद्ध जो अभियान चलाया उसी का परिणाम था कि भारत की सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना में एकता के सूत्र बचे रहे।

राष्ट्रीय-सामाजिक एकता की पुनर्प्रतिष्ठा समय की माँग थी। धर्म-अध्यात्म के सात्विक स्वरूप की पुनर्स्थापना के साथ उसके प्रति सामाजिक आस्था उत्पन्न करना भारतीय संस्कृतिक की सनातन धार्मिक-आध्यात्मिक परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए अपरिहार्य था। दुःख से मुक्त आनन्द एवं सुख की खोज में भटकती मानवता को सर्वस्वीकार्य पथ चाहिए था। भारत की सनातन संस्कृति में सर्व प्रतिष्ठित जीवन-मूल्य 'सदाचरण' को समाज में प्रतिष्ठा चाहिए थी। महायोगी गोरखनाथ इसी कार्य हेतु भारत की पावन भूमि पर अभ्युदित हुए। यह महायोगी भारत में अपनी यौगिक क्षमता का चमत्कार दिखाने नहीं समाज बदलने ही आया था। इस महायोगी ने भारतीय समाज में सदाचरण पर आधारित योग केन्द्रित जन-सामान्य के लिए सुलभ मोक्ष मार्ग

के दार्शनिक-व्यावहारिक अधिष्ठान पर उसी सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात किया जो उससे हजार वर्ष पूर्ण महात्मा बुद्ध-महावीर जैन ने प्रारम्भ की थी। दया-करूणा परपीड़ाहरण के साथ सामाजिक विकृतियों के खिलाफ तनकर खड़े गोरखनाथ ने विश्व-वन्धुत्व, विश्वप्रेम, सहानुभूति, मानव-मानव की समानता, जीव-मात्र के जीवन की पवित्रता, न्याय एवं स्वतन्त्रता के अधिकार, सत्य का आदर, निःस्वार्थ सेवा, मानव जाति की एकता, ब्रह्माण्ड की एकता, मानवजाति को उच्च से उच्चतर सभ्यता की ओर ले जाने वाले धार्मिक-आध्यात्मिक दर्शन का प्रतिपादन किया। गोरखनाथ और उनके नाथपंथी योगियों ने मानव-जाति को सिखाया-आत्मसंयम आत्मतुष्टि से श्रेष्ठ है, बलिदान योग से महान है, आत्म विजय दूसरों की विजय से श्रेष्ठ है। आध्यात्मिक उन्नति भौतिक उन्नति से महान है, विश्वप्रेम सर्वनाशी पाशविक शक्ति से कहीं श्रेष्ठ है। आत्मा के शाष्वत हित में संसार की बड़ी से बड़ी वस्तु का त्याग श्रेष्ठतर है। महायोगी गोरखनाथ ने न केवल वैचारिकी एवं दर्शन का प्रतिपादन किया अपितु योगियों की एक ऐसी **श्रृंखला** खड़ी की जिन्होंने उनके विचार-दर्शन को लोकभाषा में जन-जन तक पहुँचाया। जातियों में ऊँच-नीच एवं भेद-भाव की दीवारें तोड़ दी। सभी के लिए ईश्वर तक जाने का एक योग-मार्ग प्रतिष्ठित कर दिया। धर्म-अध्यात्म का द्वार सभी के लिए एक समान रूप से खोल दिया। पूजा-पाठ अथवा उपासना पद्धतियों की जटिलताएँ समाप्त कर दी। तन-मन को स्वस्थ रखते हुए ऐहिक जीवन के आनन्द के साथ पारलौकिक जीवन के प्रश्नों का सहज उत्तर प्रस्तुत किया। सदाचरण एवं लोक-कल्याण को धर्म-आध्यात्म का मूलमंत्र बनाया। वस्तुतः महायोगी गोरखनाथ ने इस धरती पर भारत की सनातन संस्कृति को पुनर्जीवन दिया। भारत में एक नयी सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया।

मानव-जीवन के परम-लक्ष्य मोक्ष अर्थात् मुक्ति के लिए नाथपंथ ने योगाधारित तन-मन की जो साधना विकसित की, लोक-कल्याण उस साधना का प्रबल पक्ष है। नाथपंथ ने सुसभ्य, सुसंस्कृत, स्वस्थ समाज की रचना को ही लोक-कल्याण का स्थायी मार्ग माना। नाथपंथी योगियों का मानना है कि समरस-संवेदनशील समाज लोक-कल्याण को समर्पित होगा। ऐसा समाज सेवा-भावी होगा। सेवा-भावी समाज दुःख से मुक्त अध्यात्मिक प्रवृत्तियों का समाज होगा। इसी सामाजिक परिवेश में नाथपंथी योग-साधना अपने चरम-लक्ष्य तक पहुँची। वस्तुतः नाथपंथ ने सेवा-साधना के बल पर लोक-कल्याण और योग-साधना के द्वारा मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया।

नाथपंथ के योगियों ने नाथपंथ की सामाजिक-राष्ट्रीय समर्पण की परम्परा को अनवरत

बनाए रखा। सामाजिक समरसता एवं भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। नाथपंथ के मठ-मन्दिर सेवा-साधना के केन्द्र बने रहे। उत्तर-प्रदेश के गोरखपुर में स्थित श्री गोरक्षपीठ एवं श्रीगोरखनाथ मन्दिर नाथपंथ का सर्वोच्च केन्द्र है। यह नाथपंथ के आचार-विचार का साक्षात् स्वरूप प्रस्तुत करता है।

श्री गोरक्षपीठ एवं श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर के महन्तों की अद्यतन यशस्वी परम्परा इस बात की साक्षी है कि महायोगी गोरक्षनाथ एवं नाथपंथ के सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता-अखण्डता के सिद्धान्त आज भी नाथपंथ के योगियों के आचरण-व्यवहार का हिस्सा है। श्रीगोरक्षपीठ के आधुनिक शिल्पी योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी (ब्रह्मलीन 1917 ई.) ने श्री गोरक्षपीठ की स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका बनाए रखी। इससे पूर्व इस मठ के महन्त श्री गोपालनाथ जी महाराज (1855 ई.-1880 ई.) अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार किए जा चुके थे। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी के मार्गदर्शन में पले-बढ़े महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज स्वतन्त्रता आन्दोलन के सक्रिय सिपाही थे। उन्होंने साधु-संन्यासियों को मठ-मन्दिर से बाहर निकालकर समाज-राष्ट्र के लिए कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने नाथपंथ के योगियों को संगठित किया तथा अखिल भेष बारह पंथ योगी महासभा की स्थापना कर उन्हें एक मंच पर लाए। सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध योगियों को जन-जागरण का संदेश दिया और उन्हें समाज के बीच जाने हेतु प्रेरणा दी। परतन्त्र भारत को स्वतन्त्र कराने के अभियान में पहले कांग्रेस के साथ कार्य किया। कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण नीति के विरूद्ध कांग्रेस छोड़कर हिन्दू महासभा की सदस्यता ग्रहण कर स्वतन्त्रा संग्राम में अनवरत सक्रिय रहे। आजाद भारत में उन्होंने भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में अपनी कर्मयोगी संन्यासी की भूमिका का सफलतापूर्वक निवर्हन किया और युग प्रवर्तक कहलाए।

वस्तुतः श्रीगोरक्षपीठ एवं श्रीगोरखनाथ मन्दिर की महन्त-परम्परा सेवा एवं योग साधना का समन्वित नाथपंथी प्रतिमान बना। ऐसा प्रतिमान जो भारत की सनातन संस्कृति का भी प्रतिनिधित्त्व करता है। इस पीठ ने बीसवीं शताब्दी में शिक्षा एवं स्वास्थ्य को मानव-सेवा का प्रस्थान बिन्दु मानकर अपनी युगानुकूल भूमिका का विस्तार किया। गो-सेवा इस पीठ का प्रारम्भ से ही अधिष्ठान रहा है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य को श्री गोरक्षपीठ ने जन-सेवा का आधार माना। महन्त दिग्विजयनाथ जी ने 1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की नींव रखी। 1948 ई. तक महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ने प्राथमिक से लेकर उच्चशिक्षा तक की शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना कर दी। भारतीय संस्कृति के अनुरूप विकसित ये शिक्षण संस्थाएं भी आजाद भारत

में शिक्षण-संस्थान का माडल बनी। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना इसी सेवा-साधना के संकल्प का परिणाम था। इस क्षेत्र में प्रथम महिला महाविद्यालय (महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय, जो विश्वविद्यालय की स्थापना का हिस्सा बन गया) तकनीकी शिक्षा के लिए प्रथम पालीटेक्निक (महाराणा प्रताप पालीटेक्निक, गोरखपुर 1956 ई.) प्रथम आयुर्वेदिक कालेज (दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक कालेज-1971 ई.) की स्थापना का श्रेय श्री गोरक्षपीठ को ही है। वर्तमान मे श्री गोरखनाथ मन्दिर द्वारा संचालित लगभग चार दर्जन सेवा-संस्थानों में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक के शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाएँ, चिकित्सा एवं चिकित्सा शिक्षा के संस्थान, तकनीकी ज्ञान-विज्ञान के संस्थान, कृषि के वैज्ञानिक विकास हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, गो-सेवा एवं दरिद्र नारायण सेवा जैसी संस्थाएँ संचालित हैं। मानव-पशु-पक्षी सहित सेवा के सभी आयामों पर श्री गोरखनाथ मन्दिर कार्य करता है। श्री गोरक्षपीठ दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्ता युक्त शिक्षा एवं गाँव के गरीब, मजबूर, असहायों तक नि:शुल्क चिकित्सा पहुँचानें में अहर्निश जुटा हुआ है। प्रतिवर्ष लगभग 750 छात्र-छात्राओं एवं खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति, लगभग 500 संस्कृत विद्यार्थियों के नि:शुल्क छात्रवास में रखकर वस्त्र, भोजन एवं पढ़ाई की सम्पूर्ण व्यवस्था, प्रतिवर्ष लगभग 5000 रोगियों का नि:शुल्क उपचार, लगभग 2000 हजार गरीबों का नि:शुल्क आँख का ऑपरेशन तथा गरीब एवं असहायों की आर्थिक सहायता श्री गोरक्षपीठ की सेवा-साधना अभियान का हिस्सा है। वस्तुत: दीन-दुखियों की सेवा भी श्री गोरक्षपीठ के महन्त की साधना है। श्री गोरक्षपीठ की यही साधना सामाजिक समरसता का मजबूत आधार-स्तम्भ बनता है।

युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के बाद 29 सितम्बर 1969 ई. में इस पीठ के पीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हुए। 08 फरवरी 1942 ई. को ही महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने श्री अवेद्यनाथ जी महाराज को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। उत्तराधिकारी के रूप में 1940 से ही श्री अवेद्यनाथ जी महाराज नाथपंथ की यशस्वी परम्परा के पथिक बन चुके थे। सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ के इस प्रतिनिधि योगी ने भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक परिवर्तन में अद्वितीय भूमिका निभाई। पांच बार उत्तर प्रदेश की विधान सभा में विधायक तथा भारत की लोकसभा के चार बार सांसद रहते हुए उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नयी परिभाषा दी। 1980 में मीनाक्षीपुरम में हुए धर्म परिवर्तन से दु:खी इस संन्यासी ने राजनीति से संन्यास की घोषणा करते हुए भारत के गाँव की गलियों में घूम-घूम कर छुआ-छूत एवं ऊँच-नीच के विरूद्ध जन-जागरण अभियान चलाया। वे श्री

रामजन्म भूमि आन्दोलन को भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अस्मिता से जोड़कर उसका सफल नेतृत्त्व करते हुए भारत में एक अपने तरह की अलग सामाजिक–राजनीतिक–सांस्कृतिक क्रान्ति के अगुवा बनें। पटना के हनुमान मन्दिर में दलित पुजारी बनाने, काशी के डोमराजा के घर भोजन करने, श्री रामजन्मभूमि के शिलान्यास की पहली ईंट दलित से रखवाने जैसे अपने मौलिक प्रयोगों से उन्होंने भारत में सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता–अखण्डता का जो संदेश दिया, उसने इस नाथपंथ के योगी को एक विशिष्ट सन्त के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई और राष्ट्रसन्त की उपाधि प्राप्त की।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने बसन्त पंचमी 1994 को अपना उत्तराधिकारी अपने शिष्य श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज को बनाया। 14 सितम्बर, 2014 को योगी आदित्यनाथ जी महाराज नाथपंथ की इस सर्वोच्च पीठ के पीठाधिपति बने। नाथपंथ की यशस्वी परम्परा को आगे बढ़ाने वाला एक ऐसा 'आदित्य' मिला जो एक साथ प्रातः सूर्य की शीतल लालिमा तथा दोपहर के समय तपते प्रखर सूर्य के ताप को एक साथ साधकर चलने वाला सिद्ध तपस्वी है। नाथपंथ योग–अध्यात्म में तपा यह संन्यासी वास्तव में अपने गुरू की प्रतिध्वनि 'अवेद्य' को परिभाषित करता है। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि वह महन्त योगी आदित्यनाथ को पूर्णतः जानता है। मध्य रात्रि के 12 बजे शयन कक्ष में जाने वाला यह तपस्वी ब्रह्ममुहूर्त में 3 बजे से अपनी अगली दिनचर्या प्रारम्भ कर देता है। नाथपंथ की सभी पांथिक परम्पराओं का निर्वहन करते हुए भारत की सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की एक–एक कड़ी को मजबूत करने की अद्भुत सिद्धि के धनी इस संन्यासी को दुनिया आज भारत के सबसे बड़े और सर्वाधिक समस्याग्रस्त प्रदेश उत्तर–प्रदेश को सुशासन, सुव्यवस्था और सुविकास के पथ पर तेजी से अग्रसर करते हुए देख रही है। भारत की राजनीति में एक नयी कार्य संस्कृति को जन्म देने वाले श्री नरेन्द्र मोदी का राजनीतिक प्रतिरूप बनता हुआ नाथपंथ का यह संन्यासी नाथपंथ के लोक–कल्याण पथ पर साहस, दृढ़ता, अद्भुत निर्णय क्षमता के साथ सभी बाधाओं को वेधता हुआ बेरोक–टोक गतिमान है।

महायोगी गोरक्षनाथ के इस यशस्वी प्रतिनिधि श्री महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने धार्मिक–आध्यात्मिक क्षेत्र में श्री गोरखनाथ मन्दिर की समस्त परम्पराओं को आगे बढ़ाया है। यद्यपि कि भारत की सन्त परम्परा का मूल्यांकन जाति–पाति आधारित नहीं हो सकता तथापि देश के तथाकथित बुद्धिजीवियों एवं मीडिया की जानकारी के लिए यहाँ बताना आवश्यक लगता है कि श्री गोरखनाथ मन्दिर में बिना किसी जाति–पाति, मत–मजहब के भेद के सभी

को पूजा-पाठ हेतु प्रवेश की छूट है। श्री गोरक्षनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी दलित हैं। श्री गोरक्षपीठाधिपति के भण्डारे के कई भण्डारी दलित जाति के हैं। श्री गोरक्षनाथ मन्दिर द्वारा संचालित मठ-मन्दिरों के पुजारी बिना जाति-पाति पूछे नाथपंथ की दीक्षा के आधार पर महन्त एवं पुजारी बनते हैं।

श्री गोरखनाथ मन्दिर का भण्डारा सभी के लिए खुला होता है। प्रतिदिन महायोगी गोरखनाथ को भोग लगाने के बाद आस-पास के सभी को सहभोज हेतु भण्डारा खुल जाता है। प्रतिदिन लगभग 500 भक्त, दीन-दुखी, गरीब एवं असहाय प्रसाद के रूप में भोजन ग्रहण करते हैं। मन्दिर की गोशाला गो-सेवा का एक विशिष्ट माडल है। वर्ष भर के पर्व-त्योहार पर श्री गोरखनाथ मन्दिर एवं उसके महन्त का सामाजिक सहभाग भी अपने तरह का अनूठा है। विजयादशमी पर्व पर श्रीराम का राजतिलक, शस्त्रपूजन, शोभा-यात्रा, महाशिवरात्रि पर्व पर भव्य-आयोजन, कृष्ण-जन्माष्टमी पर कृष्ण-जन्मोत्सव, दीपावली पर एक दीप शहीदों के नाम के साथ दीपोत्सव एवं बनटांगियों के साथ गोरक्षपीठाधीश्वर का दीपावली मनाना, होली में नृसिंह की पूजा के साथ होलिका दहन के जुलूस में सम्मिलित होना तथा भगवान नृसिंह के रथ पर सवार होकर हजारों की संख्या में होलिकोत्सव मनाती जनता के साथ महानगर के साथ रंग खेलना इस पीठ के सामाजिक सहभाग के कुछ विशिष्ट उदाहरण हैं। ये सभी आयोजन सामाजिक समरसता एवं सामाजिक एकता को ही समर्पित होते हैं।

श्री गोरक्षनाथपीठ योग को जन-जन तक पहुँचानें हेतु मासिक पत्रिका योगवाणी के प्रकाशन, लोगों के सुख-दुख में सम्मिलित होने, लोक-कल्याण से जुड़े हर धार्मिक-सामाजिक-राजनीतिक विषय पर सक्रिय हस्तक्षेप के द्वारा जन-सरोकारों से जुड़ी हुयी है। श्री गोरक्षपीट ने एकान्तिक योग-साधना के साथ-साथ सेवा और सामाजिक सहभाग का माडल देश-दुनिया के मठ-मन्दिरों के लिए प्रस्तुत किया है। नाथपंथ की यह सर्वोच्च धर्मपीठ नाथपंथ के वैचारिकी, भारतीय सनातन संस्कृति के मूलतत्त्व एवं 'हिन्दुत्त्व ही राष्ट्रीयता' के वैचारिक अधिष्ठान का संगम है। श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों ने स्वतन्त्र भारत में लोक-कल्याणार्थ भारतीय राजनीति में भी सक्रिय हस्तक्षेप किया। धर्माधारित राजनीति के सिद्धान्त को मूर्त रूप दिया। आज उत्तर प्रदेश को योग्यतम शासन एवं नयी कार्यसंस्कृति देने में जुटे श्री योगी आदित्यनाथ जी श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर, श्री गोरखनाथ मन्दिर के महन्त, नाथपंथ के सर्वोच्च धर्मगुरु हैं।

*****

गोरखपुर की ऐतिहासिक विरासत

प्रो. राजवन्त राव

गोरखपुर परिक्षेत्र भारत का वह भू-भाग है जहाँ वैचारिक एवं भौतिक समृद्धि के साथ ही न केवल विविध विचार-सरणियों, कला, धर्म एवं परम्पराओं का स्वतन्त्र अस्तित्त्व बना रहा अपितु विविध सांस्कृतिक तत्त्वों के संयोजन से नवीन निष्पत्तियाँ भी सम्भव हो सकीं। यहाँ प्रवृत्ति मार्गी वैदिक ब्राह्मण एवं निवृत्ति मार्गी श्रमण - दोनों विपरीत विचार परम्पराएँ जहाँ साथ-साथ चलती दिखायी देती हैं, वहीं दोनों के समन्वय से चतुराश्रम व्यवस्था की नयी अवधारणा जन्म लेती है। वैचारिक सह-अस्तित्त्व, अन्तःक्रियायें, समन्वय, सृजनात्मकता यहाँ की संस्कृति की प्राणवायु रही है। इस भौगोलिक क्षेत्र में जहाँ एक ओर आथर्वण ऋषि, सांख्य दर्शन के प्रणेता परमर्षि कपिलमुनि हुये तो दूसरी ओर अहिंसा, करुणा, मैत्री, सहिष्णुता का संदेश देने वाले ऋषि संत गौतम बुद्ध, गोरखनाथ, कबीर।

गोरखपुर की सांस्कृतिक परम्परा अत्यन्त प्राचीन रही है। सन् 1960 ई. तक तो यहाँ के प्रागैतिहास के सम्बन्ध में बहुत कम सूचनाएँ उपलब्ध थीं, किन्तु पुरातात्त्विक अनुसंधानों के परिणामस्वरूप अब यहाँ के मानव सन्निवेशों तथा संस्कृतियों की परम्परा 7000 ई.पू. तक रेखांकित की जा चुकी है। यहाँ से नव पापाण कालीन कृषक बस्तियों के अनेक अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस दृष्टि से आमी और राप्ती नदियों के संगम पर स्थित सोहगौरा ग्राम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यहाँ से प्राक् मौर्य कालीन एक ताम्रपत्र के प्राप्त होने से पुराविदों को इस स्थल की प्राचीनता का अनुमान हुआ था। यह ताम्र-पत्र श्रावस्ती के महापात्रों द्वारा जारी एक शासनादेश है जिसके अन्तर्गत दुर्भिक्ष के लिए दो कोष्ठागारों के निर्माण का उल्लेख है। अभिलेख के शीर्ष भाग पर दो अन्नागार, कमल नाल, प्राकार में वृक्ष, अर्धचन्द्र जैसे प्रतीकों का

पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

अंकन है। इस पर सम्भवतः वास्तु संरचना का प्राचीनतम अंकन प्राप्त होता है। यही वास्तु संरचना कालान्तर में देव मन्दिरों के लिए प्रेरक बना। उल्लेखनीय है कि आज सोहगौरा के आस-पास कोठा, गोंठा, नामक अनेक गाँवों का अस्तित्त्व मिलता है जो कोष्ठागारों के नाम पर निर्मित जान पड़ते हैं। इसी से प्रेरित होकर दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग ने प्रो. शैलनाथ चतुर्वेदी के निर्देशन में यहाँ उत्खनन कार्य करवाया। उत्खननकर्ता ने इस स्थल की प्राचीनता लगभग 1600 ई.पू. निर्धारित की तथा इसकी प्रारम्भिक संस्कृति को नवपाषाण कालीन संस्कृति बताया। यहाँ के नवपाषाणिक स्तरों में धान की खेती के प्रमाण मिले तथा यहाँ से नवपाषाण काल के उपरान्त कुषाण काल तक मानव सन्निवेशों का सातत्य मिला, जिससे इस परिक्षेत्र के ताम्रप्रस्तर युगीन, महाजनपद कालीन एवं मौर्य, शुंग, कुषाण काल के सांस्कृतिक जीवन के अनेक पक्ष प्रकाशित हुए। पुरातत्त्वविदों द्वारा उत्खनित अन्य प्रमुख स्थलों में नरहन, इमलीडीह और लहुरादेवा भी विशेष उल्लेखनीय रहा है। इनमें नरहन और इमलीडीह का उत्खनन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. पुरुषोत्तम सिंह द्वारा कराया गया। यह उल्लेखनीय है कि दोनों स्थल सरयू नदी के उत्तरवर्ती क्षेत्र में गोला और बड़हलगंज के बीच स्थित हैं। इन स्थलों से भी सोहगौरा की भाँति ही नवपाषाणिक एवं ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं तथा यहाँ से भी धान की खेती के साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। यहाँ से आहत मुद्राएँ भी प्राप्त हुयी हैं जिनमें आहत विधि से निर्मित चिन्हों वाली मुद्राओं के साथ ऐसी भी मुद्राएँ हैं जिनमें दोनों ओर का भाग सादा है। कुछ मुद्राशास्त्रियों ने इसे मुद्रा के प्राक् रूप 'हिरण्य' की संज्ञा दी है। महाराजगंज के परसादयाराम क्षेत्र से रजत की आहत मुद्राओं की निधि प्राप्त हुई है जो कोशल की है। इस परिक्षेत्र का लहुरादेवा नामक पुरातात्त्विक स्थल विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ क्योंकि यहाँ के उत्खनन से धान के नमूनों की प्राचीनता 7000 ई.पू. के लगभग निर्धारित की गयी है। इस स्थल का उत्खनन कार्य उत्तर प्रदेश पुरातत्त्व विभाग के निदेशक डॉ. राकेश तिवारी द्वारा कराया गया है। यहाँ से खाद्यान्न उत्पादन की प्राचीनता के जो साक्ष्य मिले हैं, वह इसलिये भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं कि इनसे यह प्रमाणित हो गया है कि गोरखपुर परिक्षेत्र चावल की खेती की दृष्टि से भारत का प्राचीनतम क्षेत्र रहा है। यहाँ से प्राप्त चावल के नमूनों की प्राचीनता विन्ध्य क्षेत्र के कोल्डिहवा तथा बलूचिस्तान क्षेत्र के मेहरगढ़ नामक स्थल से प्राप्त खाद्यान्न के नमूनों से भी पुरानी है। कुछ पुरातत्त्वविद् तो यहाँ तक कहने लगे हैं कि भारत में चावल की खेती का प्रारम्भ गोरखपुर परिक्षेत्र में ही हुआ। यह उल्लेखनीय है कि इस परिक्षेत्र में धान की खेती की परम्परा नवपाषाण काल से लेकर आज तक जीवित है। भगवान बुद्ध के पिता शुद्धोधन नाम में इस क्षेत्र के शुद्ध

धान की खेती से सम्बद्ध होने की स्मृति अवशिष्ट दिखायी देती है। इस क्षेत्र से सम्बद्ध आथर्वण ऋषि ने अथर्ववेद में ओदन को 'अमृत' कहा है। (12.3.4) पालिग्रन्थ जो कि इसी क्षेत्र की संस्कृति से सम्बन्धित है विभिन्न प्रकार के धान का उल्लेख करते हैं। काला नमक जो कि धान की अद्‌भुत प्रजाति है की पैदावार भी इसी क्षेत्र से जुड़ी है। आज भी आषाढ़-सावन माह में रंगबिरंगे परिधान के साथ लोकगीत गाते हुये खेतों में धान का रोपा करती हुयी महिलाओं की अद्‌भुत छटा दिखायी देती है। धान एवं व्यापार के कारण ही यह परिक्षेत्र बुद्ध के काल में अत्यन्त समृद्ध था। श्रावस्ती के सेठ अनाथपिण्डक ने राजकुमार जेत का उद्यानवन 14 करोड़ स्वर्ण मुद्राओं को बिछाकर खरीदा था और उसे भगवान बुद्ध को समर्पित कर दिया था। जैसा कि नाम से ही विदित होता है – अनाथपिण्डक गरीबों के लिये करुणावतार था। वह प्रतिदिन गरीबों को भोजन कराता था। विभिन्न प्रकार के खाद्यान्न के उत्पादन के बावजूद आज तक चावल ही यहाँ के लोगों का मुख्य आहार है। यह परिक्षेत्र का इतिहास छठी सदी ई.पू. से अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है। यह महात्मा बुद्ध और महावीर का काल था। यह परिक्षेत्र कोसल महाजनपद का अंग था तथा यहाँ इक्ष्वाकु वंशियों का शासन था। बौद्ध ग्रन्थों से यह सूचना मिलती है कि गोरखपुर परिक्षेत्र में शाक्य, कोलिय, मौर्य तथा मल्ल आदि जिन गणों का शासन था वे स्वंय को इक्ष्वाकु वंशीय मानते थे। यहाँ का बुद्धकालीन इतिहास राजनैतिक दृष्टि से गणतान्त्रिक शासन पद्धति के प्रचलन के कारण महत्त्वपूर्ण है। बुद्ध स्वयं शाक्य गण में उत्पन्न हुये थे। शाक्यों का गणराज्य रोहिणी नदी के पश्चिम में था और सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित पिपरहवा नामक स्थल पर इसकी राजधानी कपिलवस्तु स्थित थी। प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार इनका बाल्यकाल और यौवन कपिलवस्तु में ही बीता था। यहीं उन्होंने वृद्ध, रोगी, मृतक और सन्यासी को देखकर, संसार में निरन्तर होते परिवर्तन तथा जगत में अनिवार्य रूप से व्याकुल दुख का साक्षात्कार किया था। यहाँ से प्राप्त अभिलेख, स्तूप एवं बिहार इस स्थल की पहचान को सुनिश्चित करते हैं। यहाँ पर स्थित स्तूप से एक अस्थि मंजूषा अभिलेख प्राप्त हुआ जो भारत के प्राचीनतम ज्ञात अभिलेखों में से एक है। इस अभिलेख में भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेषों को इस मंजूषा में रखकर स्तूप के अन्दर स्थापित करने की बात कही गयी है। यहाँ से कुषाण कालीन मिट्‌टी की कुछ ऐसी मुहरें प्राप्त हुयी हैं जिसपर 'कपिलवस्तु भिक्षु संघस्य' अंकित है जिससे कपिलवस्तु की पहचान सुनिश्चित होती है। सन्त कबीर नगर जनपद के मेहदावल कस्बे में कोपिया नामक स्थान है, परम्परानुसार भगवान बुद्ध ने यहीं अपने साथी छन्न, अश्व, कन्थक एवं राजसी वस्त्र का त्यागकर कौपीन धारण कर अनोमा नदी को पार कर ज्ञान की खोज में निकले थे। यहाँ ये कुषाणकालीन मुद्राएँ एवं अन्य

पुरावशेष बड़ी मात्रा में प्राप्त हुए हैं। यह स्थल प्राचीन काल में शीशा उद्योग के लिए प्रसिद्ध था, आज भी इसके अवशेष प्राप्त होते रहते हैं। कोलिय गणराज्य की राजधानी रामग्राम संभवत: गोरखपुर के निकट स्थित रामगढ़ताल के आस-पास थी। कोलिय गणराज्य से गौतम बुद्ध का अतिशय लगाव था। यहीं पर भगवान बुद्ध का ननिहाल था। बुद्ध की पत्नी यशोधरा देवदह की कन्या थीं। सम्भवत: इन्हीं सम्बन्धों के कारण भगवान बुद्ध ने कोलियों एवं शाक्यों के बीच के रोहिणी जल-विवाद को अनेक बार शान्त कराया था। कोलिय गणराज्य के पूर्व पिप्पलि वन के मोरियों और कुशीनारा तथा पावा के मल्लों के गणराज्य थे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ये गणराज्य उस जनतान्त्रिक व्यवस्था का प्राचीनतम रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं जिसकी स्थापना के सुदृढ़ता के लिये आधुनिक विश्व के प्राय: सभी राज्य प्रयत्नशील हैं। गोरखपुर परिक्षेत्र के गणराज्य वैचारिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सत्ता एवं सम्पत्ति पर अधिकार के सम्बन्ध में यथासम्भव समानता को महत्त्व देते थे और साथ ही अपनी परम्पराओं, अपने श्रेष्ठ जनों और स्त्रियों के प्रति अतिशय सम्मान का भाव भी रखते थे। यद्यपि मगध के साम्राज्यीय शक्ति के दबाव में इन गणराज्यों का अस्तित्त्व समाप्त हो गया, किन्तु इनके द्वारा स्वतंत्र चिन्तन का जो वातावरण प्रस्तुत हुआ, उसकी अभिव्यक्ति धार्मिक और आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में नये आन्दोलनों के रूप में हुई। महात्मा गौतम बुद्ध और महावीर गणतांत्रिक व्यवस्था के ही उत्पाद थे, जिन्होंने भारत और एशिया के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने जिस धर्म का प्रवर्तन किया उसमें नैतिक मूल्यों को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, अस्तेय आदि नये मूल्यों का प्रचार तो किया ही, साथ ही संघीय जीवन में समता और भ्रातृत्व भाव की स्थापना कर जातियों में बँटे तत्कालीन समाज के सामने मानवीय न्याय का ऐसा उच्च मानदंड रखा, जिसने भारतीय चिन्तन धारा को शताब्दियों तक प्रभावित किया। आज विश्व स्तर पर मानव मात्र की समानता के जो स्वर सुनाई देते हैं, उसका शंखनाद पहली बार महात्मा बुद्ध ने ही किया था। गोरखपुर के इस परिक्षेत्र में बुद्ध ने अपनी चारिका के सन्दर्भ में अनेक बार यात्राएँ की थीं। श्रावस्ती से वैशाली और राजगृह तक उन्हें अपने जीवनकाल में प्राय: यात्राएँ करनी पड़ी और प्रत्येक बार उनकी यह यात्रा गोरखपुर की धरती से ही होती थी। उनका महापरिनिर्वाण भी गोरखपुर परिक्षेत्र में स्थित मल्लों की राजधानी कुशीनगर में ही हुआ था। कुशीनगर के मल्ल भी शाक्यों की भाँति मूलत: इक्ष्वाकुवंशी थे और स्वयं को राम के छोटे भाई लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु मल्ल का वंशज मानते थे। मल्ल गण के क्षत्रिय अपनी शारीरिक शक्ति और पराक्रम के लिये विख्यात थे। गौतम बुद्ध का कुशीनारा के मल्लों से भी भावनात्मक लगाव था इसलिए उन्होंने कुशीनगर के सालवन में महापरिनिर्वाण की इच्छा अपने शिष्य आनन्द से

व्यक्त की थी। कुशीनारा में भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेषों पर विशाल स्तूप के अवशेष आज भी कुशीनगर में विद्यमान है, जिसे स्थानीय लोग माथा कुँवर का स्तूप कहते हैं। माथा कुँवर सम्भवत: मृतकुमार का रूपान्तर है। इस स्थल का उद्धार करने का श्रेय पुरातत्त्वविद् हीरानन्द शास्त्री को है, जिन्होंने इस स्थल से अनेक बौद्ध विहारों एवं स्तूपों के अवशेष ढूंढ निकाले। यहाँ से महापरिनिर्वाण मुद्रा में महात्मा बुद्ध की गुप्त कला शैली में निर्मित एक विशाल प्रतिमा भी प्राप्त हुयी है, जिसका निर्माण मथुरा के प्रसिद्ध शिल्पी दिन्न ने किया था तथा इसका व्यय भार हरिबल नामक श्रेष्ठि ने उठाया था। इस मंदिर के निकट स्थित स्तूप से एक अभिलेख भी प्राप्त हुआ है, जिस पर – 'महापरिनिर्वाण चैत्य विहारे', अंकित मिलता है, जिससे कुशीनारा की पहचान सुनिश्चित होती है। इस समय भारत सरकार द्वारा इस स्थल के रख-रखाव पर समुचित ध्यान तो दिया ही जा रहा है, साथ ही जापान, वर्मा, श्रीलंका आदि देशों के बौद्ध श्रद्धालुओं ने भी इसके विकास में पर्याप्त रूचि प्रदर्शित की है। परिणामत: यह स्थल आज सारनाथ और बोधगया के समान ही देशी एवं विदेशी पर्यटकों का केन्द्र बन गया है।

महात्मा बुद्ध की भाँति जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर का भी इस क्षेत्र से गहरा लगाव था। यद्यपि उनका जन्म बिहार में वैशाली के निकट स्थित कुंडग्राम के ज्ञातृक कुल में हुआ था, तथापि उन्होंने भी वैशाली और श्रावस्ती के बीच घूम-घूम कर अपने पंच महाव्रतों का उपदेश दिया था। वे स्वयं गणतान्त्रिक परम्परा में उत्पन्न हुये थे, अत: लिच्छवि, मल्ल और कोलिय आदि गणों पर उनका भी गहरा प्रभाव था। उन्होंने पंचमहाव्रतों का उपदेश दिया जिनमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य सम्मिलित थे। यद्यपि महात्मा बुद्ध ने भी इन आचारों के पालन पर बल दिया था किन्तु वे मध्यम मार्गी थे। उन्होंने इन आचारों के यथाशक्ति पालन का उपदेश गृहस्थों के लिए किया। इसके विपरीत महावीर की दृष्टि अतिवादी थी। वे स्वयं दिगम्बर थे, यद्यपि अपने अनुयायियों को कठोर अनुशासन और साधना का मार्ग दिखाया। गोरखपुर परिक्षेत्र में उनके अनुयायियों की संख्या काफी अधिक थी। गुप्त कालीन कहाँव अभिलेख से इस क्षेत्र में तीर्थंकर महावीर के प्रभाव की पुष्टि होती है। उन्होंने शरीर त्याग भी मल्लों की दूसरी शाखा की राजधानी पावा में किया जिसकी पहचान कनिंघम, पड़रौना तथा कार्लाइल, फाजिलनगर के साथ करते हैं। दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग द्वारा फाजिलनगर के निकट कराये गये उत्खनन में अग्रहार का अवशेष तथा अग्रहार सूचक एक छोटा सा अभिलेख मिला है जिस पर 'श्रेष्ठिग्रामाग्रहारस्य' ब्राह्मी लिपि में अंकित है। उल्लेखनीय है कि प्राचीन भारतीय साहित्य में अनेकश: चर्चित अग्रहारों के अस्तित्त्व का सूचक यह एक मात्र पुरातात्त्विक साक्ष्य है।

इस परिक्षेत्र में निवास करने वाले मोरिय गणराज्य के एक युवक चन्द्रगुप्त मौर्य ने प्रथम बार एक अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की। उसने उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक तथा पूर्व में बिहार और बंगाल से लेकर पश्चिम में गुजरात तक तथा पश्चिमोत्तर दिशा में आधुनिक अफगानिस्तान तक अपनी राज्य सीमाओं को सुस्थिर किया। उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के पूर्व इतने बड़े साम्राज्य की स्थापना कोई अन्य शासक नहीं कर सका। चन्द्रगुप्त के पौत्र अशोक ने तो अपने वंश के कीर्तिध्वज को भारत की मौलिक सीमाओं से बाहर पश्चिमी एशिया, पूर्वी यूरोप तथा दक्षिण पूर्व एशिया तक फहराया। विश्व इतिहास का वह पहला शासक था जिसने शक्तिशाली होते हुए भी युद्ध और साम्राज्य विस्तार की नीति का परित्याग किया, पड़ोसी राज्यों में मनुष्यों और पशुओं के लिए औषधियों का वितरण कराया तथा सभी मनुष्यों को अपने पुत्रों के समान माना। उसने लोकहित को सर्वाधिक महत्त्व देते हुए लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार कर दिया। विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार में योगदान देकर वह सम्पूर्ण एशिया का महानतम शासक बन गया। आश्चर्यजनक नहीं है कि आज भी उसका नाम वोल्गा से गंगा तक आदर के साथ लिया जाता है।

मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरान्त गोरखपुर जनपद क्रमशः शुंग, कुषाण, गुप्त आदि राजशक्तियों के अधीन रहा। इस कालखण्ड की अनेक मुद्राएँ, मृण्मय एवं पाषाणनिर्मित प्रतिमाएँ तथा महत्त्वपूर्ण पुरावशेष सांस्कृतिक जीवन में इस क्षेत्र के योगदान को प्रमाणित करते हैं। प्रतिमाओं के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मौर्योत्तर काल में यहाँ विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों से सम्बद्ध देवी-देवताओं की पूजा प्रचलित थी तथा विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच सद्भाव था। गोरखपुर नगर में प्राप्त, व्ही पार्क की विष्णु प्रतिमा तथा असुरन चौराहे के निकट स्थित रूद्रपुर कस्बे में स्थित ख्यातिलब्ध श्रीदुग्धेश्वर नाथ शिव मन्दिर के परिसर में तालाब की खुदायी में प्राप्त हुयी थीं। इस पूरे परिक्षेत्र में सूर्य प्रतिमाएँ बड़ी संख्या में प्राप्त हुयी हैं जो इस क्षेत्र में सूर्यपूजा की लोकप्रियता को इंगित करती है। गोरखपुर नगर से अग्नि प्रतिमाएँ भी प्राप्त हुयी हैं जो अग्निपूजा के प्रचलन को सूचित करती हैं, किन्तु ऐसा नहीं है कि अन्य धार्मिक सम्प्रदाय अलोकप्रिय थे। सलेमपुर (देवरिया) के निकटवर्ती कहाँव से प्राप्त जैन प्रतिमा एवं अभिलेख तथा अन्य क्षेत्रों के विभिन्न भागों से प्राप्त कुछ बुद्ध की मूर्तियाँ इन दोनों धर्मों के भी लोकस्वीकृत होने की साक्षी हैं।

गुप्तोत्तर काल में गोरखपुर जनपद कुछ समय तक मौखरियों के अधीन रहा है, फिर हर्ष

के साम्राज्य का अंग बन गया। हर्ष के मधुबन (मऊ जनपद में स्थित) ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि हर्ष के शासन-काल में यह श्रावस्ती भुक्ति के अन्तर्गत था। हर्ष के मृत्यु के उपरान्त अल्पकाल के लिये यह क्षेत्र कन्नौज नरेश यशोवर्मा के शासनान्तर्गत और फिर नवीं-दसवीं सदी में गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य का भाग बन गया, जिस पर प्रतिहारों के सामन्त कलचुरि शासक राज्य करते थे। उल्लेखनीय है कि कसया एवं कहला नामक स्थान से कलचुरियों के महत्त्वपूर्ण अभिलेख प्राप्त हुए हैं। कहला अभिलेख से ज्ञात होता है कि कलचुरि-वंश का शासक गुणाम्बोधिदेव प्रतिहार सम्राट, मिहिरभोज का सामन्त था। कलचुरि राजवंश के शासक बंगाल और बिहार के पाल वंशी शासकों के आक्रमण से प्रतिहार साम्राज्य की पूर्वी सीमाओं की सुरक्षा हेतु सन्नद्ध थे। प्रतिहारों और उनके सामन्त कलचुरियों के सत्ताच्युत होने के उपरान्त इस क्षेत्र पर गाहड़वालों का शासन स्थापित हुआ, उनवल, गगहा, पाली और लार आदि स्थानों से गाहड़वाल शासकों के अनेक दानपरक अभिलेख प्राप्त हुए हैं। कलचुरियों तथा गाहड़वालों के शासन-काल में इस परिक्षेत्र में अनेक शैव एवं वैष्णव मन्दिरों का भी निर्माण हुआ। इस काल की पाल कला शैली में निर्मित अनेक देव प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। इन प्रतिमाओं में रूद्रपुर के दुग्धेश्वर नाथ मन्दिर की विष्णु एवं शिव-पार्वती की प्रतिमा तथा विभिन्न स्थानों से प्राप्त सूर्य प्रतिमाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। रूद्रपुर के दुग्धेश्वरनाथ शिव मन्दिर का माहात्म्य इस पूरे परिक्षेत्र में व्याप्त है। यहाँ के आस-पास के इलाकों में अनेक शिव मन्दिर हैं। यहाँ के जनजीवन में शिव की आराधना अत्यन्त लोकप्रिय रही है। कहला अभिलेख के साक्ष्यों, दुग्धेश्वरनाथ मन्दिर, मन्दिर के पीछे की गढ़ी के अवशेष एवं अन्य पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आलोक में रूद्रपुर को कलचुरियों की राजधानी अथवा शक्ति का केन्द्र माना जा सकता है।

गोरखपुर का इतिहास योगी गोरक्षनाथ की चर्चा के बिना अधूरा है। उन्हीं के नाम पर यह नगर गोरखपुर नाम से विख्यात हुआ। सर्वप्रथम गोरखपुर का उल्लेख कालंजर के बुन्देला शासक रुद्रदेव के सन् 1486 ई. की कालंजर प्रशस्ति में 'गोरखपुर' नाम से हुआ है। गोरक्षपुर योगिराज गोरखनाथ की समाधि का समीपवर्ती इलाका था। योगिराज बाबा गोरखनाथ का सम्बन्ध गोरक्षा से भी है। 14वीं शताब्दी तक बाबा गोरखनाथ लोकविश्रुत हो चुके थे। नाथ सम्प्रदाय की परम्परा उन्हें शिव का साक्षात् रूप अतएव अनादि मानती है, किन्तु इतिहासकारों के मतानुसार उनका आविर्भाव नवीं सदी ई. में हुआ था। उस समय ब्राह्मणों और बौद्धों के अनेक सम्प्रदायों में तांत्रिक साधनाओं का बाहुल्य हो गया था। रहस्यात्मक साधनाओं में अंधविश्वासों, वाह्याडम्बरों तथा पंचमकारों के प्रवेश के कारण धार्मिक जीवन में विकृतियों का संचार हो गया था। ऐसी स्थिति में गुरु गोरक्षनाथ जी ने सादगीपूर्ण जीवन तथा मन, वाणी और

कर्म की शुद्धता पर बल दिया तथा ध्यान, योग और तप के मार्ग के अनुसरण का उपदेश दिया। गुरु गोरखनाथ के प्रभाव के कारण गोरखपुर नगर नाथ-सम्प्रदाय का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गया। नगर के उत्तरी क्षेत्र में स्थित गोरखनाथ का भव्य मन्दिर आज भी नगरवासियों तथा पार्श्ववर्ती क्षेत्रों की ग्रामीण जनता की श्रद्धा का केन्द्र है तथा गुरु गोरक्षनाथ की स्मृतियों को संजोए हुए है।

गोरखनाथ मन्दिर में मकर संक्रान्ति को लगने वाला खिचड़ी का पर्व विशेष आकर्षण का केन्द्र है। सुदूरवर्ती क्षेत्रों के लोग आकर श्रद्धापूर्वक खिचड़ी चढ़ाते हैं। यह अत्यन्त आकर्षक और लोकमानस की आस्था का प्रधान केन्द्र है। यह मेला लगभग एक माह तक चलता है। ऐतिहासिक अनुश्रुतियों के आधार पर यह माना जाता है कि गोरखपुर नगर दसवीं सदी में अस्तित्त्व में आया तथा मानसिंह नामक एक राठौर सामन्त ने इसकी स्थापना की थी। उसे मानसरोवर और कवलदह जैसे जलाशयों के निर्माण का श्रेय भी दिया जाता है। मानसिंह ने कदाचित भरों और डोमों को पराजित कर इस क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित किया था किन्तु कुछ ही समय बाद डोम कटारों ने पुनः इस क्षेत्र को अधिकृत कर लिया। डोम कटारों ने डोमिनगढ़ में एक दुर्ग का निर्माण कराया जिसके अवशेष निकटभूत तक दिखाई पड़ते थे। डोम कटारों को पराजित कर श्रीनेत वंश के चन्द्रसेन ने गोरखपुर पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। वे सतासी राजवंश के थे। इसके पश्चात् थोड़े बहुत अन्तराल के साथ अधिाकांशतः श्रीनेत राजाओं का ही वर्चस्व गोरखपुर और इसके आस-पास के क्षेत्र पर व्याप्त रहा।

मध्यकाल में जब उत्तर भारत के विस्तृत क्षेत्रों पर तुर्कों और फिर मुगलों का आधिपत्य रहा, तब यह क्षेत्र राजनीतिक गतिविधियों की दृष्टि से प्रायः महत्त्वहीन ही रहा। बाढ़ों, जंगलों और मच्छरों के बाहुल्य के कारण सरयू नदी का उत्तरवर्ती भूखण्ड विजेताओं और आक्रमणकारियों के आकर्षण का विषय नहीं बन सका। परिणामतः स्थानीय रजवाड़ों का प्रभाव इस क्षेत्र में बना रहा। किन्तु वैचारिक आन्दोलन इस काल में भी चलता रहा। इस दृष्टि से पन्द्रहवीं सदी के सन्त कवि कबीर की ओर हमारा ध्यान बरबस ही आकृष्ट हो जाता है। वे ज्ञानी किन्तु फक्कड़ थे। उन्होंने यहीं मगहर में समाधि ली थी। उन्होंने निर्ममता पूर्वक तथा बेलौस ढंग से हिन्दू और मुसलमान दोनों की कुरीतियों पर प्रहार किया तथा दोनों के बीच सद्भावना का मार्ग भी प्रशस्त किया। मगहर में उनकी समाधि पर साथ-साथ मन्दिर और मस्जिद का निर्माण कबीर की धार्मिक सद्भावना और समन्वयवादी दृष्टि का जीवन्त प्रतीक है। कबीर ने न केवल आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में क्रान्ति की वरन् सामाजिक सुधार की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण

योगदान दिया, जिसके लिए वे आज भी स्मरण किए जाते हैं।

मुगल सत्ता के ह्रास के उपरान्त गोरखपुर अवध के नवाबों के अधिकार में आ गया। 1721 ई. में सआदत खाँ अवध के प्रशासक हुए और तभी से यह क्षेत्र अवध के नवाबों के प्रभुत्व में रहा। किन्तु 1801 ई. में इस क्षेत्र पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अधिकार स्थापित हो गया। उन्नीसवीं सदी के मध्य तक गोरखपुर नगर में आधुनिकता की लहर आई और यहाँ नगरपालिका, टाउनहाल और जुबिली स्कूल आदि संस्थाएँ स्थापित हुईं। वर्ष 1885 ई. में यह नगर रेल लाइन से जुड़ा, जिससे आर्थिक प्रगति तथा गतिशीलता का मार्ग प्रशस्त हुआ। रेलवे की स्थापना के कारण गोरखपुर भारत के प्रमुख नगरों के साथ जुड़ गया।

सन् 1857 ई. की क्रान्ति में भी गोरखपुर क्षेत्र के लोगों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इस स्वतंत्रता संग्राम में पैना के ठाकुरों तथा सतासी, धुरियापार और नरहरपुर के राजाओं के साथ इस क्षेत्र के अनेक ताल्लुकदारों और सामान्य जनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया था। इस स्वतंत्रता संग्राम में डुमरी के बाबू बन्धू सिंह की भूमिका अतिशय महत्त्वपूर्ण रही। स्वतंत्रता की वेदी पर उन्होंने अपना धन-जन ही नहीं वरन जीवन भी बलिदान कर दिया था। विद्रोहियों ने थोड़े समय के लिए नगर पर अधिकार कर लिया था किन्तु दुर्भाग्यवश गोरखा सेनाओं द्वारा अंग्रेजों के सहयोग के कारण गोरखपुर पुनः कम्पनी सरकार के अधिकार में चला गया। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में भी गोरखपुर सक्रिय रहा। गांधी जी सन् 1921 ई. में स्वयं गोरखपुर आए थे तथा उन्होंने यहाँ के लोगों में उत्साह का संचार किया किन्तु 1922 ई. में घटित चौरीचौरा काण्ड के बाद आन्दोलन स्थगित हो गया था। इस बीच गोरखपुर परिक्षेत्र के अनेक क्रान्तिकारी नेता सक्रिय रहे। क्रान्तिकारियों में शचीन्द्र नाथ सान्याल, विश्वनाथ मुखर्जी और रामप्रसाद बिस्मिल को तो 19 दिसम्बर 1927 को यहीं गोरखपुर जेल में फांसी दी गई थी। गोरखपुर की जनता आज भी उन क्रान्तिकारियों को श्रद्धा और सम्मान के साथ स्मरण करती है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान इस नगर में बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी चलती रहीं, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से आन्दोलन को बल प्रदान किया। देशभक्ति की भावना को सुदृढ़ करने तथा नवयुवकों को इस दिशा में प्रेरित करने में गोरखपुर से प्रकाशित 'स्वदेश', 'युगान्तर', 'बिजली' और 'बवण्डर' जैसे प्रकाशनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसी समय गोरखपुर के गीताप्रेस से धार्मिक साहित्य का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ। गीताप्रेस से प्रकाशित 'कल्याण' नामक पत्रिका ने न केवल लोगों के नैतिक स्तर को उठाने का कार्य किया वरन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार कर देश के स्वाभिमान को भी

जगाया। रामायण और भगवद्गीता की प्रतियाँ सस्ते दामों में प्रकाशित कर इन्हें देश के कोने-कोने तक पहुँचा दिया। यहाँ के लोकगीतों में कजरी, चैता, पीड़िया, निरगुन, बिरहा आदि महत्त्वपूर्ण हैं। ग्रामीण अंचलों के लोग फगुआ, बिरहा, कबीर, कबीरबानी, गोरखबानी, आल्हा आदि गाकर अपने मन के उल्लास और उछाह को व्यक्त करते हैं। लोक-कथाएँ एवं लोक-गाथाएँ यहाँ बहुत प्रचलित हैं। शहीद बन्धु सिंह के विषय में अनेक लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त भरथरी और गोपीचन्द की लोक-गाथाएँ भी गायी जाती हैं। सीत-बसन्त की कथा भी ग्रामीण महिलाओं में लोकप्रिय हैं। यहाँ के सांस्कृतिक कलेवर में भाईजी हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं महाभावनिमग्न श्री राधा बाबा की तपोभूमि गीता वाटिका का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर भाद्रपद शुक्ल षष्ठी से भाद्रपद शुक्ल दशमी तक राधा अष्टमी का महोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। मन्दिर में अखण्ड कीर्तन चलता रहता है।

आज गोरखपुर अपनी पहचान गढ़ रहा है। रामगढ़ ताल एवं कुसम्ही जंगल गोरखपुर के लिये प्राणवायु की भाँति पर्यावरण को स्वस्थ रखने का कार्य करते हैं। इधर प्रदेश सरकार ने दोनों को संरक्षित करने एवं आकर्षण का केन्द्र बनाने का कार्य किया है। रामगढ़ ताल के पश्चिमी छोर पर बनी फोर लेन सड़क मुम्बई के मरीन ड्राइव का स्मरण दिलाती है। यहाँ के शहर वासी अपने-अपने परिवार के साथ घूमने आते हैं और ताल में तैरते बोटों पर लेजर रोशनी में आकार लेते गोरखपुर की विरासत का लुत्फ उठाते हैं। सुबह और शाम ताल में चढ़ते उतरते सूर्य का दृश्य अद्भुत होता है। सम्प्रति गोरखपुर चिड़ियाघर, एम्स, फर्टिलाइजर एवं विभिन्न उपवनों से सुसज्जित है। विभिन्न धार्मिक स्थलों - सूरजकुण्ड, बुढ़िया माई मन्दिर, तरकुलहा देवी, हट्ठीमाई, संतकबीर की समाधि स्थली मगहर को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जा रहा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सुदूर अतीत से लेकर आधुनिक काल तक इस परिक्षेत्र का विशिष्ट योगदान रहा है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहरों एवं अपने पूर्वजों की उपलब्धियों पर हम गर्व कर सकते हैं।

*****

गोरखपुर : कल, आज और कल

संयोजन : डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय

'गोरखपुर महोत्सव-2020' पर प्रकाश्य पत्रिका 'मंथन' के लिए इसके सम्पादक के आग्रह और उनके द्वारा निर्दिष्ट उपर्युक्त विषय पर अपने नगर के दस साहित्यकारों से बातचीत की। बातचीत का आधार था एक साहित्यकार के रूप में वे इस नगर के अतीत और वर्तमान को किस दृष्टि से देखते हैं तथा भविष्य में इसे किस रूप में देखना चाहते हैं। आभारी हूँ कि मेरे अनुरोध पर हमारे नगर के दस प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने अपना विचार लिखित रूप में दिया है जिसे यहाँ अविकल रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। अपने प्रिय पाठकों की सुविधा को दृष्टि में रखकर संयोजक के नाते मैंने लेख के अन्त में सभी के विचारों का, क्रमिक रूप से, सारांश प्रस्तुत कर दिया है और भविष्य के गोरखपुर से सम्बन्धित उनके सुझाव, कल्पना, आकांक्षा और निर्देश का निरूपण भी। अन्त में मैंने भी अपना मंतव्य प्रस्तुत किया है।

ऐसा और कहाँ?

– प्रो. रामदेव शुक्ल

सरयू नदी के किनारे धान (ब्रीहि) की खेती। पाणिनि ने 6 प्रकार के धान का उल्लेख किया है – ब्रीहि, शालि, मरा ब्रीहि, हायन, षष्टिका और नीवार। यज्ञ के नाम पर पशु बलि का निषेध करते महावीर और गौतम बुद्ध। नालंदा से प्रवाहित ज्ञान-धारा का चीन-जापान तक प्रवाह। सातवीं शताब्दी में नालंदा के आचार्य सरहपाद के चर्यापदों से निर्मित होती भोजपुरी भाषा। पुरानी हिंदी के पद्य और गद्य के रूप गोरखवानी में। सघन वन में महायोगी गोरखनाथ

पूर्व प्राचार्य, सम्पादक : शहरनामा, गोरखपुर,
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा मधुलिमये साहित्य सम्मान से पुरस्कृत

की अखंड धूनी, अक्षयपात्र और अक्षय भंडारे से योग का सर्वसमावेषी मार्ग। नाथ-पंथ में सूफी-रहस्य-भावना से लेकर वेदान्त, ज्ञान और कर्मयोग से भक्ति तक की अनुभूति। गोरखनाथ का कथन -

महमद महमद मतकर काजी, महमद मरम विचारं
महमद हाथ फरद जो होती लोहे रची न सारं।।

काजी! महमद महमद क्या करता है, महम्मद के मर्म का विचार करो।
महम्मद के हाथ में जो तलवार थी, वह न लोहे की थी, न इस्पात की।।

वह तलवार (करद) प्रेम की थी। सोने चाँदी से बने इमामबाड़े के ताजिए, गोरखनाथ मंदिर, गीताप्रेस, गीतावाटिका, पुराने चर्च, गुरुद्वारे, दुर्गाबाड़ी और बंगाली थिएटर, सिंधी समाज के झूलेलाल - सब मिलकर गोरखपुर की पहचान। कभी कोई साम्प्रदायिक दंगा नहीं। कभी कभार मत-भेद के बाद गहरा मेल-मिलाप। सबके पर्वोत्सवों में सबका हार्दिक सहयोग।

संन्यासी के साथ समाज सेवीसंत बाबा राघवदास, शहीद राम प्रसाद बिस्मिल सबकी सेवा में त्तपर भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार, महाबीर प्रसाद पोद्दार, गरीब बैंक खोलने वाले राम गरीब लाल वकील, मियाँ साहब, राधा बाबा, अनेक परोपकारी जन से निर्मित समाज। डॉ. केदार नाथ लाहिड़ी, डॉ. हेमंत कुमार बनर्जी, डॉ. यशोदानंदन और डॉ. रामकृष्ण चंद्र मिश्र जैसे कुशल और परोपकारी चिकित्सक जिनकी संततियाँ भी बिना फीस नाम मात्र मूल्य की दवाओं से जनकल्याण कर रही हैं।

कवियों, लेखकों, पत्रकारों, चित्रकारों, संपादकों की लंबी सूची। विश्वविद्यालय के शोध कार्यों की विश्व के प्रख्यात शोध संस्थानों में मान्यता। भौतिक समृद्धि के लिए दशकों से बंद पड़े खाद कारखाने का आरंभ, अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, एम्स का संचालन, अनेक उच्च स्तर के अस्पताल और सेवा संस्थान, उद्योग धंधों के तीव्र विकास के अनेक उपक्रम। भौतिक और आध्यात्मिक विकास की उड़ान भर चला है अपना गोरखपुर।

तेज हो गयी है गोरखपुर में विकास की रफ्तार

- प्रो. कृष्णचन्द्र लाल

मैं गोरखपुर को सन् 1970 से कभी धीमी, कभी तेज गति से चलते-बढ़ते देख रहा हूँ। अस्सी के दशक तक यह अपनी सामान्य गति से चलता रहा। न यहाँ बहुत भीड़ थी, न

आपाधापी और न ही गगनचुंबी अट्टालिकाएँ थीं। लोगों के मनोरंजन के लिए केवल सिनेमाहॉल थे, खरीद-फरोख्त के लिए अलीनगर, गोलघर और उर्दू बाजार थे, लोगों के टहलने घूमने के लिए सड़कें और चौराहे थे, गिने-चुने होटल थे, यात्रियों के लिए रेलवे कैन्टीन थी। इन्हीं सब के बीच यहाँ के लोगो की जिन्दगी सीमित साधनों के साथ गुजर रही थी। शहर के विकास और उत्थान के लिए कोई कसमसाहट भी नहीं थी, जो कुछ था वह चुनाव जीतने के लिए एक हथकंडा भर ही था, इसलिए जनता को उसमें अपने किसी सपने के साकार होने की तमन्ना भी न थी। स्वर्गीय वीर बहादुर सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल में इस शहर में विकास की हलचल हुई। सड़कें चौड़ी हुईं, गोलघर स्वच्छ, प्रशस्त हुआ, इंदिरा बाल विहार और नेहरू पार्क बना, तब लोगों में नया जीवनोत्साह पैदा हुआ, ढर्रे की जिन्दगी जीने की जगह नए सपनों को साकार करने की भावना जगी। शहर को लगा कि अब उसकी जिन्दगी में सुख-सुविधा का नया दौर आ जाएगा लेकिन वीर बहादुर सिंह के असामयिक निधन ने उस उत्साह को ठंडा-सा कर दिया। लोग एक लंबे समय तक यही कहते रहे - काश वीर बहादुर सिंह कुछ दिन और होते तो गोरखपुर का कायाकल्प हो जाता। वे 'विकास-पुरुष' के रूप में अमर हो गए।

गोरक्षपीठाधीश्वर माननीय योगी आदित्यनाथ जी के मुख्यमंत्री बनने के साथ गोरखपुर के विकास के सोये हुए सपने को फिर से साकार रूप लेने की स्पृहा इसलिए जाग उठी क्योंकि वे स्वयं उस सपने के साथ ही इस नगर की छवि को सुंदर और इसके जीवन को सुखद-कल्याणमय बनाने की योजनाओं के साथ सोत्साह आगे बढ़ चले। उन्होंने जनाकांक्षा को पूरा करने का संकल्प लेकर जिस तरह की सक्रियता दिखाई है, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि गोरखपुर मेट्रो सिटी तो बन जाएगा ही, स्मार्ट सिटी भी बनेगा। यहाँ एम्स का बनना, इंजीनियरिंग कॉलेज का विश्वविद्यालय होना, इंसेफ्लाइटिस के आतंक से लगभग मुक्त होना, सड़कों का प्रशस्त होना, चिड़ियाघर का बनना, रामगढ़ताल का सँवरना, फर्टिलाईजर का पुनः शुरू होना, नई औद्योगिक इकाइयों का स्थापित होना, आदि वे तमाम बातें हैं जो यह दर्शाती हैं कि गोरखपुर के विकास की गति बहुत तेज हो गई है। इस विकास के चलते दिक्कतों-असुविधाओं का पैदा होना भी स्वाभाविक है। उनका सामना करके, निराकरण करके विकास-सुख प्राप्त किया जा सकता है।

पहले गोरखपुर चार-पाँच किलोमीटर के दायरे में था, अब 25-30 किलोमीटर तक की दूरी में फैल गया है, जनसंख्या बहुत बढ़ गयी है। इन सबको देखते हुए नयी व्यवस्थाओं के बारे में सोचना होगा। पुराने शहर में संकरी गलियाँ हैं, पतली सड़कें हैं, सड़कों पर दुकानों की

बेतरतीब भीड़ है, जाम की जटिल समस्या है। इन सबसे निपटना, उनका समाधान निकालना प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती है। हमें विकास के बड़े मॉडल पर ही नहीं, जो नारकीय और दारुण दशा है, उस पर ध्यान देना चाहिए। भारत के स्वच्छता अभियान को अभी भी जहाँ-तहाँ खुले में हो रहे शौच लज्जित कर रहे हैं। रेलवे लाइन के किनारे यह दृश्य अभी भी सुबह-शाम देखा जा सकता है। सूरजकुंड कॉलोनी के दक्षिणी कोने पर अभी भी गंदगी का अंबार लगा हुआ है। कमोवेश यही स्थिति शहर के अन्य गरीब बस्तियों के आसपास देखा जा सकता है। इस गंदगी से शहर को, लोगों को निजात दिलाना जरूरी है। सड़कों के गड्ढा-मुक्त हो जाने की घोषणा के बावजूद शहर की सड़कें बुरी तरह क्षतिग्रस्त हैं। जिम्मेदार लोग एक बार उनका मुआयना करके हकीकत जान सकते हैं। यदि सड़कें सुचारु रूप से बनी हों तो चलने में, रफ्तार के साथ सुविधा भी होगी, आनंद आयेगा लेकिन टूटी-फूटी सड़कों पर चलकर, गिरकर, दुर्घटनाग्रस्त होकर आलीशान भवनों को देखने में कोई सुख न मिलेगा।

बीते वर्ष में शहर को मई-जून के महीने में भी विद्युत-कटौती से निजात मिली, इसके लिए शासन-प्रशासन को धन्यवाद देना चाहिए और यह उम्मीद भी रखनी चाहिए कि अबाध विद्युत-आपूर्ति होती रहेगी। इससे जन-जीवन को बड़ी राहत मिलेगी। बड़ी सुविधाएँ, नयी सुविधाएँ पैदा हों, उनका सुख मिले किन्तु यह भी जरूरी है कि जिंदगी की जरूरी सुविधाएँ जनता को अवश्य उपलब्ध हों।

अब शहर बड़ा हो गया है, सड़कें चौड़ी हो रही हैं, फोरलेन बन रही है, बड़े-बड़े माल बन गये हैं, बाजार में रौनक है, होटल जगमगा रहे हैं। शहर का यह भौतिक विकास सुखदाई है लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि अभी किन घरों में, किन बस्तियों में चिराग शाम से ही कुछ बुझा-बुझा से रहता है। शहर को झुग्गी-झोपड़ियों से मुक्त करना शासन-प्रशासन का कर्तव्य होना चाहिए। यदि सरकार एक करोड़ रूपये इनके सुधार के लिए प्रतिवर्ष खर्च करे तो इनमें रहने वालों की जीवन-दशा सुधर जाएगी।

गोरखपुर का अतीत, वर्तमान और भविष्य

– डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी

महायोगी गुरु गोरखनाथ के नाम पर बसे गोरखपुर जनपद का मुख्यालय गोरखपुर नगर को मैं 1960 से देख रहा हूँ। उस समय गोरखपुर में नगरपालिका की व्यवस्था थी। शहर की प्रकाश व्यवस्था के लिये नगरपालिका द्वारा शहर की अनेक गलियों में किरोसिन तेल से जलने

वाले लैम्प हुआ करते थे। लोगों के घरों का मैला ढोने के लिए नगरपालिका द्वारा भैंसा-गाड़ी चलती थी जो बीच सड़क से दुर्गंध छितराते हुये महेवा मंडी के पास खत्ता में उत्सर्जन हेतु जाया करती थी। बर्डघाट पर राप्ती नदी पर बरसात के समय स्टीमर चलता था तथा शेष आठ महीना पीपे का पुल रहता था। हाँसूपुर से रेलवे स्टेशन तक प्रायः इक्के ही चला करते थे। चार पहिया वाहन केवल रईश लोगों के पास था। जाम की समस्या का तो कहीं सवाल ही नहीं था। चोरी-छिनैती का कहीं नामोनिशान नहीं था।

शिक्षा के क्षेत्र में इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा के लिये राजकीय जुबिली इंटर कालेज का नाम शीर्ष पर था। विश्वविद्यालय की स्थापना हो जाने से उच्च शिक्षा की व्यवस्था मुकम्मल हो गई थी।

कुछ चुनिंदा नामचीन डॉक्टर थे जिनमें होमियोपैथी के डॉक्टर हेमन्त कुमार बनर्जी और एलोपैथी में डॉ. जानकी प्रसाद का नाम प्रमुख था। नर्सिंग होम का नामोनिशान नहीं था।

बिजली की किल्लत रहती थी। गैस की सप्लाई अभी शुरू नहीं हुई थी इसलिए ईंधन के नाम पर लकड़ी, किरासन ऑयल था। कोयले का भी प्रयोग होता था। शहर में नये जमाने के परिर्वतन की हवा अभी नहीं बही थी।

आज के समय का गोरखपुर

अब गोरखपुर नगर नये अन्दाज में बाहर के लोगों को आकर्षित कर रहा है। हालांकि वीर बहादुर सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल में इस नगर में विकास की बयार बही थी किन्तु उनके असमय निधन से सारी विकास यात्रा मंद पड़ गयी थी लेकिन पूज्य योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने पर इस शहर के विकास को पंख लग गये। रामगढ़ झील, राजकीय बौद्ध संग्रहालय, रेलवे स्टेशन, राप्ती तट आदि अनेक कार्य इस समय नये कलेवर में दिख रहे हैं।

अब गोरखपुर नगर में न तो बिजली चले जाने की कोई समस्या है और न गैस प्राप्त करने के लिए जाड़े की रात में भोर से लाइन लगाने की समस्या है। कुछ ही दिन में यहाँ पाइप के द्वारा घरों में गैस मुहैया होना शुरू हो जायेगा।

अपेक्षायें -

गोरखपुर में जाम लगना एक आम समस्या है। अगर यहाँ पर्याप्त फ्लाईओवर और मेट्रों सेवा शुरू हो जाये तो काफी निजात मिल जायेगी। अगर गली-गली में खुलने वाले नर्सिंग होमों के अंधाधुंध धन-दोहन पर कुछ नियंत्रण किया जा सके तो आम आदमी को काफी राहत मिलेगी।

हमारा गोरखपुर - कल, आज और कल

– नरसिंह बहादुर चन्द

सन् 1951 में जब मैं पहली बार गोरखपुर आया तो राप्ती तट से बेतियाहाता अमरूद, बेर और कहीं-कहीं बबूल के पेड़ देखने को मिले। ताड़ और खजूर के पेड़ भी दिखाई दिये। शहर का उत्तर-पूर्वी भाग जंगलों से घिरा था। रोशनी विहीन, तंग और कच्ची गलियाँ और ऊबड़-खाबड़ रास्ते मिले। उस समय शहर में जल-संसाधन नाम मात्र के थे। स्वास्थ्य और शिक्षा की व्यवस्था भी पर्याप्त नहीं थी। यात्रियों के रहने के लिए पर्याप्त सुविधायुक्त स्थान नहीं थे। कहीं-कहीं रईसों और जागीरदारों के आवास दिखाई देते थे। एकमात्र रेलवे स्टेशन भी सुविधा विहीन था। कुछ मन्दिर, मस्जिद और गिरिजाघर देखने को मिलते थे। गोरक्षपीठाधीश दिग्विजयनाथ जी द्वारा शिक्षा का बिगुल फूंकने पर शहर के कई लोग साथ आये और कई कालेज खुले। कुछ स्वास्थ्य सेवा का भी प्रबंध हुआ। विद्वान और शान्तिप्रिय पीठाधीश अवेद्यनाथ जी के जन-प्रतिनिधित्व काल में उनके प्रयास से (विरोधी पार्टियों के शासन में भी) शहर के विकास के कई कार्य हुए जो अपर्याप्त रहे। वीर बहादुर सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल में शहर के विकास की तमाम योजनाएँ बनीं। परन्तु पूर्ण नहीं हो सकीं, क्योंकि काल की गति ने उन्हें गोरखपुर की जनता से छीन लिया। जिसकी वजह से विकास कार्य अधूरा रह गसा। सपा और बसपा की सरकारों ने गोरखपुर के विकास के ऊपर ध्यान नहीं दिया। बल्कि फर्टिलाइजर खाद कारखाना बन्द करवा दिया तथा चीनी मिलों को भी बेंच दिया। जनता की गाढ़ी कमाई निरर्थक कार्यों में खर्च किया और शहर बदहाल स्थिति में रह गया।

शहरवासियों के भाग्य और ईश्वर की कृपा से वर्तमान गोरक्ष पीठाधीश को मुख्यमंत्रित्व का अवसर मिला और शहर गोरखपुर ही नहीं पूरे प्रदेश में विकास की आँधी चली और शहर गोरखपुर के विकास में इतने कार्य हुए कि जो पिछले 70 वर्षों में नहीं हो सके थे। आज सड़क, विद्युत व्यवस्था, जल-संसाधन, स्वास्थ्य की उचित व्यवस्था से सम्पन्न साफ-सुथरा चमकता हुआ शहर गोरखपुर हमारे सामने है। इस अल्पसमय में योगी आदित्यनाथ जी ने जो विकास किया वह अभूतपूर्व है। आज गोरखपुर प्रदेश और देश के गिने-चुने शहरों की पंक्ति में खड़ा है। फर्टिलाइजर का पुनः संचालन, एम्स का होना, रामगढ़ताल का विश्वस्तरीय सुन्दरीकरण, सड़कों, चौराहों, रेलवे स्टेशन आदि का सुन्दरीकरण, गोरखनाथ पीठाधीश्वर योगी श्री आदित्यनाथ जी की देन है।

प्रगति की इस रोशनी में गोरखपुरवासियों की उम्मीद भी बढ़ी है। हम चाहते हैं कि

गोरखपुर की जनता, योगी आदित्यनाथ जी के संरक्षण में अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक मर्यादाओं, राष्ट्रीय धरोहरों, संस्कारों, चरित्र सम्पन्न विचारों और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना के साथ एकता की डगर पर अनवरत चलते हुए मानवता और विश्वकल्याण की कल्पना के साथ आगे चलती रहे। हम आशान्वित हैं कि हम पुरखों के गौरवशाली इतिहास और अतीत की उपलब्धियों के साये में वर्तमान को यशस्वी और प्रतिभा सम्पन्न बनाये रखने में कामयाब रहेंगे।

गोरखपुर - कल, आज और कल

- आर.डी.एन. श्रीवास्तव

कल का गोरखपुर एक गाँवनुमा बड़ा-सा कस्बा था। पूरा कस्बा नदी राप्ती, रेलवे लाइन के बीच में बसा था। पूरब में रुस्तमपुर तथा पश्चिम में तिवारीपुर तक सीमित था। अलीनगर, मियां बाजार और उर्दू बाजार प्रमुख स्थान हुआ करते थे। रहने को तो सभी जाति-धर्म के लोग थे किन्तु जमींदारी कायस्थों और मुसलमानों तक सीमित थी जिन्होंने नगर के सांस्कृतिक, शैक्षिक, सामाजिक और साहित्यिक विकास के लिए अनेक कार्य किए। लोगों में आपसी प्रेम था और सभी तीज-त्योहार सौहार्द के वातावरण में मनाते थे। प्रेमचन्द, फिराक और देवेन्द्र कुमार बंगाली का शहर था। डॉ. शिव रतन लाल नगर की साहित्यिक गतिविधियाँ बनाये रखते थे। चिकित्सा-क्षेत्र में डॉ. लाहिड़ी एवं डॉ. गुलाटी की ख्याति पूरे देश में थी। रेलवे लाइन के दक्षिण में रेलवे कालोनी, राजकीय पॉलीटेक्निक, आरोग्य मंदिर तथा मेडिकल कालेज थे। यह नगर पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय तब भी था और अब भी है। उर्दू में 'लल्लन की दुकान' चारों ओर पचासों मील तक लोकप्रिय थी जो घंटाघर के पास थी। देश के अन्य बड़े नगरों के मुकाबले काफी पिछड़ा हुआ माना जाता था। तब गोलघर में रात को सियार घूमा करते थे।

आज का गोरखपुर देश के महानगरों के कंधे से कंधा मिला कर चल रहा है। सीमित शब्दों में वर्तमान गोरखपुर को समेटना असम्भव-सा है। आज का गोरखपुर शिक्षा, संस्कृति, चिकित्सा, सेवा, व्यापार, हर क्षेत्र में अग्रणी है। गीता प्रेस तब भी था आज भी है जो गोरखपुर की पहचान है।

आने वाले कल का गोरखपुर देश के प्रति अपने दायित्वों का सदा निर्वहन करता रहेगा ऐसी आशा है। सभी जाति-धर्म के लोग मिल जुल कर प्रेम सौहार्द से रहेंगे और एक दूसरे के आर्थिक और सामाजिक विकास में सदा सहयोग करेंगे। गुरु गोरखनाथ का यह शहर और

गोरखनाथ मंदिर इस नगर की शान थी, आगे भी रहेगी।

गोरखपुर - तब और अब

– रौशन एहतेशाम

पचास-साठ के दशक में गोरखपुर की कुछ गलियाँ ऐसी भी थीं जिनमें रात में प्रकाश के लिये लकड़ी के खम्भे पर लैम्प पोस्ट लगा होता था, जिसमें मिट्टी के तेल से प्रकाश किया जाता। शाम होते ही नगर पालिका का कर्मचारी कंधे पर सीढ़ी और हाथ में मिट्टी के तेल का कनस्तर लिये आता और चिमनी साफ करके, तेल डाल कर चिराग रौशन कर आगे बढ़ जाता। गोलघर जैसी बाजार में भी दुकानों में जलते पेट्रोमेक्स से ही प्रकाश मिल पाता क्योंकि बिजली के जो बल्ब सड़क के किनारे लगे होते वह बहुत कम वोल्टेज के होते। आज के जगमगाते गोलघर को देखकर कोई उस दौर की कल्पना तक नहीं कर सकता। शाहपुर और बिछिया जैसे मोहल्लों में लोग दिन डूबने के बाद जाने को सोच भी नहीं सकते थे।

पूर्वांचल के शहरों में सबसे तेजी से तरक्की गोरखपुर ने ही की। पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय होने का लाभ तो मिला ही, 1957 में विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद शिक्षा के क्षेत्र में भी इस इलाके का पिछड़ापन दूर हुआ। आज के गोरखपुर में चौड़ी-चौड़ी सड़कें हैं, जगमगाते बाजार हैं। कोने-कोने में माल और शॉपिंग काम्प्लेक्सेज खुल गये हैं। आर्थिक उदारीकरण के इस दौर में लोगों को खर्च करना भी आ गया है। अच्छे रहन-सहन के लिये लोग जी खोल कर खर्च कर रहे हैं। जीवन स्तर ऊँचा उठा है।

तरक्की के साथ कुछ परेशानियाँ भी बढ़ी हैं। तब शहर में इतनी गाड़ियाँ नहीं थीं। वायु और ध्वनि-प्रदूषण की कोई समस्या नहीं थी। लोग एक दूसरे से मिलते-जुलते थे। एक दूसरे के दुख-दर्द में शरीक होते थे। अब भाग-दौड़ की जिन्दगी हो गई है। लोगों के पास समय की कमी हो गई है।

भविष्य के गोरखपुर के लिये मेरी कामना है कि ऐसी योजनाएँ बनें, जिससे प्रदूषण पर प्रभावी काबू पाया जा सके। सड़कों पर आये दिन लगने वाले जाम से निजात मिले। गोरखपुर एक अपराध मुक्त शहर हो। तसल्ली की बात है कि सरकार इन सभी बिन्दुओं पर विचार कर तद्नुसार योजनाएँ बना रही है। प्रत्येक नागरिक को भी अपनी जिम्मेदारी समझते हुए शहर को साफ-सुथरा रखने में भरपूर योगदान देना चाहिये।

शहर छोटा था मगर दायरा बड़ा था

– देवेन्द्र आर्य

मेरे लिए आँखों देखा गोरखपुर का साहित्यिक परिदृश्य आठवें दशक के मध्य से प्रारम्भ होता है जब देवेन्द्र कुमार बंगाली, डॉ. शिवरतन लाल, बादशाह हुसेन रिजवी, हृदय चौरसिया, हरिहर सिंह, सतीश जैन, डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव, डॉ. गिरीश रस्तोगी, राम लखन सिंह, माधव मधुकर, तड़ित कुमार, डॉ. लाल बहादुर वर्मा, एम. काठियाती राही, सुरेन्द्र काले, महेश अश्क, जगदीश नारायण श्रीवास्तव, मदन मोहन, कपिल देव त्रिपाठी सदृश लोगों के साथ मेरी बैठकें शुरू हुई थीं। उस वक्त साहित्य का दायरा, तत्कालीन छोटे शहर से बहुत बड़ा था। गोष्ठी, आक्रामक, गम्भीर और कट्टर किस्म की होती थी। सर्वाधिक चर्चित पत्रिका 'भंगिमा' थी। डॉ. लाल बहादुर वर्मा ने साहित्य को एक्टिविज्म से जोड़ने का महत्वपूर्ण काम किया। नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत इसी दौरान हुई। प्रमुख एक्टिविस्ट बुद्धिजीवियों में डॉ. रामकृष्ण मणि त्रिपाठी थे। मझोले किस्म के आयोजनों का एक मात्र सभागार अलीनगर स्थित अग्रवाल अतिथि भवन था।

आज गोरखपुर का साहित्यिक माहौल, गो.वि.वि. स्थित संवाद भवन, प्रेस क्लब, गोजए सभागार, प्रेमचन्द पार्क, गोकुल अतिथि भवन से लगायत शहर के बाहर जंगल धूसड़ तक फैल चुका है। शहर के साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को बड़ा करने में इस बीच कुछ घटनाओं का प्रमुख हाथ रहा है। 'दस्तावेज' सम्पादक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का पहले साहित्य अकादमी में हिन्दी समन्वयक और बाद में अध्यक्ष होना एक बड़ी घटना रही जिसने अकादमिक गतिविधियों का रुख गोरखपुर की तरफ मोड़ा और यहाँ के रचनाकारों की भागीदारी भी बढ़ी। सांसद योगी आदित्यनाथ के प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने के बाद नाथ सम्प्रदाय के साहित्य पर विशेष कार्य हुआ और उ.प्र. हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त का मनोनयन हुआ। इससे गोरखपुर के साहित्यिक माहौल को नयी गरिमा मिली। इधर देवेन्द्र कुमार बंगाली और डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव के मूल्यांकन का भी प्रयास हुआ। संस्कृति सुधा संस्थान की पहल पर दर्जनों रचनाकारों की पुस्तकें प्रकाशित हुईं तो दूसरी तरफ भोजपुरी साहित्य की तरफ भी लोगों का ध्यान गया। जलेस, प्रलेस, जसम लेखक संगठनों और मनोज सिंह के विशेष प्रयास से 'प्रतिरोध का सिनेमा' ने भी शहर में सार्थक साहित्यिक-सांस्कृतिक हस्तक्षेप किया है। डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा ने राष्ट्रीय सहारा के परिशिष्ट 'आजकल' की शुरुआत करा कर यहाँ की रचनात्मकता को निखारा जो आज भी कायम है।

भविष्य के गोरखपुर के साहित्यिक माहौल की परिकल्पना करते हुए सर्वाधिक चिंता का विषय रचनाकारों का प्रचार-प्रसार और पुरस्कार मुखी होते जाना है। गहरे अध्ययन और विचार-विमर्श से आरुचि का कारण गोरखपुर के प्रमुख पुस्तकालयों का टूटते-खत्म होते जाना भी है। आकाशवाणी और दूरदर्शन जैसे माध्यमों का रोल लगातार कम होता जा रहा है। नयी पीढ़ी यूँ भी साहित्यिक उपादेयता के प्रति बहुत आश्वस्त नजर नहीं आती। सामाजिक, राजनैतिक गिरावट का असर भविष्य के साहित्यिक माहौल को प्रभावित न करे, ऐसा सम्भव नहीं है।

गोरखपुर की तमाम में से तीन समस्यायें

– रण विजय सिंह

अगला विश्व युद्ध न तो पानी को ले कर होगा न ही आतंकवाद को। वह कूड़े के निस्तारण को लेकर लड़ा जायेगा। विकसित देश कचरे से भरे कंटेनर वाले जहाजों को अविकसित और विकासशील देशों को भेज रहे हैं। आस्ट्रेलिया के एक ऐसे ही जहाज को फिलिपीन्स और इण्डोनेशिया ने वापस भेज दिया। यूरोप जहाँ तक मुझे याद है नार्वे के कचरे से लदे जहाज को श्रीलंका ने अपने यहाँ से बरास्ते भारत वापस भेज दिया।

कौन जानता है कि कल को अमेरिका का जहाज दक्षिणी चीन सागर में कचरा डंप कर रहा हो और चीन उस पर हमला कर दे। विश्व युद्ध शुरू होने के लिये इतना ही काफी है न!

गोरखपुर में भी कचरा निस्तारण स्थल (डंपिंग ग्राउण्ड के पास के गाँवों के लोगों द्वारा विरोध किये जाने की खबरें आती ही रहती हैं। समस्या केवल डंपिंग की नहीं है। यहाँ उससे जनस्वास्थ्य के प्रभावित होने का भी खतरा रहता है। पर्यावरण तो प्रदूषित होता ही है। सामान्यतया डंपिंग ऐसे क्षेत्र में होती है जो कि आस-पास के क्षेत्रों से गहरे हों। इन भागों के भरे जाने से क्षेत्र में जल प्लावन तथा जल जमाव होता है। निचले भागों के भर जाने से पानी का एकत्रीकरण नहीं हो पाता है। इससे भूतल जल भंडार का उचित संभरण न होने से सिंचाई और पीने के लिये पानी की उपलब्धता कम हो जाती है।

इस कूड़े का सही निस्तारण इससे कम्पोस्ट खाद तथा उस योग्य न पाये जाने वाले कूड़े के दहन से तापीय बिजली बनाई जा सकती है। शेष प्लास्टिक आदि के कचरे का पुनर्कल्पन किया जा सकता है।

नगर के निचले भागों तथा तालाबों के पट जाने अथवा पाट दिये जाने से तेज वर्षा में सड़कों पर तो पानी लगता ही है, लोगों के मकानों और दुकानों में भी घुस जाता है। इसके लिये पुराने जलाशयों को जीवित करने के साथ ही नगर के जल निकास वाले बड़े मुख्य नालों के टेल एंड पर वर्तमान में लगे पम्पों से अधिक तेज और बड़े पम्प लगा कर पानी को शीघ्र बाहर फेंकना सुनिश्चित करना होगा। अभी ये ड्रेन्स कूड़ा-कर्कट के कारण भरे रहते हैं। इनका ढाल इस तरह बनाया जाय कि बहाव के साथ ही इनकी सफाई हो जाय। सामान्यतया इन्हें ढका होना चाहिये। सिंगल यूज प्लास्टिक के बंद हो जाने से इनके पट जाने की समस्या स्वतः समाप्त हो जायेगी।

और छः दिन की यातायात समस्या तथा सोमवार की भीषण समस्या अर्थात ट्रैफिक जाम से निजात के लिये टू-टियर यातायात व्यवस्था आवश्यक है। सड़कों के डिवाइडर के ऊपर लाइट रेल की व्यवस्था से ऊपर रेल और नीचे सड़क यातायात, नगर के यातायात घनत्व को दो भागों में बाँट कर समस्या का हल करने के लिये सर्वोत्तम है।

इस व्यवस्था में काफी समय लगेगा इसलिये तक तब सड़कों का चौड़ीकारण, रिंग रोड तथा मुख्य बाजारों (सी.बी.डी.) के विकेन्द्रीकरण से काफी राहत मिल सकती है। वैसे लोगों का यातायात व्यवहार यदि सुधर जाय तो समस्या काफी हद तक वर्तमान स्थितियों में भी सुधर सकती है।

सबकी अपनी-अपनी दृष्टि है। अपना-अपना दृष्टिकोण। मेरे अनुसार वर्तमान में गोरखपुर नगर की यही प्रमुख समस्यायें हैं।

गोरखपुर : कल आज और कल

– श्रीधर मिश्र

महात्मा बुद्ध व सन्तकवि कबीर की वाणी से आच्छादित गुरुगोरक्षनाथ की तपस्थली गोरखपुर की साहित्यिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक परम्परा अतिसमृद्ध है। महाभारत युगीन यह गोरक्षप्रान्त व इसे स्पर्श करती पौराणिक नदी अचिरावती (राप्ती) का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। विशेषतः गंगा-जमुनी तहजीब की मिसाल यह जमीन आपसी भाईचारा का संदेश देती है। गुरुगोरखनाथ मंदिर, इमामबाड़ा, गुरुद्वारा व बशारतपुर का ईसाई टोला और गिरजाघर सब एक साथ जिस शान्ति से रहते हैं वह एक उदाहरण है। एक मायने में गोरखपुर खुद में छोटा हिन्दुस्तान है, स्वतन्त्रता आन्दोलन में गोरखपुर की प्रतिभागिता स्मरणीय-स्तुत्य है। विश्व प्रसिद्ध

शायर फिराक गोरखपुरी, प्रेमचन्द, मजनू गोरखपुरी ने इस धरती पर साहित्यिक तपस्या की है। सन्त हनुमान प्रसाद पोद्दार ने अपनी आध्यात्मिक चेतना से 'गीताप्रेस' के माध्यम से जो अलख जगाई है वह आज भी कायम है। गोरखपुर में पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय, खाद कारखाना, विश्वविद्यालय, रामगढ़ताल परियोजना, गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण, रेल कारखाना, चीनी मिल, कुटीर उद्योग, एक समय ऐसा प्रतीत होने लगा कि यह आध्यात्मिक नगरी विकास पथ पर तीव्र गति से अग्रसर है। फिर जैसे किसी की नजर लग गयी हो, खाद कारखाना बन्द हुआ, रेलवे मुख्यालय के हटने की अफवाह आने लगी, मस्तिष्क ज्वर से हजारों बच्चे मरने लगे। आगे का विकास तो दूर जो था वह भी समाप्त होने लगा। एक निराशा, भय व कुण्ठा का भाव जनमानस में पसर गया।

आज गोरखपुर फिर विकास की मुख्यधारा में आ गया है। गुरुगोरखनाथ की तपस्थली पुनः जीवन्त हो उठी है, इस वर्ष मस्तिष्क ज्वर से मरने वाले बच्चों की संख्या बहुत कम हुई, नये खाद कारखाने का शिल्यानास हुआ, बी.आर.डी. मेडिकल कालेज उच्चीकृत सुविधाओं से लैस हुआ, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान का लोकार्पण हुआ, रामगढ़ताल परियोजना का विकास कार्य प्रारम्भ हुआ, तारामण्डल शुरू हुआ, चिड़ियाघर का शिलान्यास हुआ, साहित्यिक, सांस्कृतिक व सामाजिक गतिविधियाँ उत्साह के साथ प्रारम्भ हुईं। आज गोरखपुर में विकास की गति काफी तीव्र हुई है जो अत्यन्त उत्साह जनक व आश्वस्तिपरक है।

गोरखपुर की मेधा व इसकी जमीन की ताकत का कोई जवाब नहीं लेकिन अवस्थापना सुविधाओं की कमी, औद्योगिकरण की शिथिल गति के चलते यहाँ के युवाओं के पास रोजगार व उनकी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिये अवसर कम हैं। अतः विस्थापन उनकी आवश्यकता भी बन जाती है व विवशता भी। अतः आनेवाले दिनों में इस पर ध्यान देना होगा। सांस्कृतिक गतिविधियों के लिये एक मात्र स्थान 'प्रेक्षागृह' वर्षों से अधूरा बन कर पड़ा है उसे पूरा कराना होगा।

गोरखपुर : कल आज और कल

– डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय

मैं अपने प्रिय नगर गोरखपुर को 1960 से देख रहा हूँ। तब से जब राप्ती में पीपे का पुल होता था और बरसात में नावें चलती थीं। राप्ती पर पुल बनना शुरू हो गया था। बर्डघाट चुंगी कार्यालय से लोग पैदल या इक्का से कचहरी, रेलवे स्टेशन जाया करते थे। राजकीय

पालीटेक्निक स्कूल, सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज, विश्वविद्यालय अस्तित्व में आ चुके थे। फर्टिलाईजर फैक्ट्री बन रही थी। रेलवे मुख्यालय और रेलवे वर्कशाप (लोकोशेड) कार्य कर रहे थे। गोरखपुर कमिश्नरी के तौर पर जाना जाता था। गीताप्रेस दुनिया में मशहूर था। गोरखनाथ मन्दिर धार्मिक स्थलों में प्रमुख था। महन्त दिग्विजयनाथ अपने समय के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में जाने-पहचाने जाते थे। 'कुष्ठ आश्रम', 'गीता वाटिका', 'गोरखा डिपो', 'हवाई अड्डा', 'आरोग्य मंदिर', 'राजकीय अस्पताल' आदि मौजूद थे। घंटाघर (उर्दू बाजार) का सराफा, बक्शीपुर का पुस्तक-व्यवसाय और साहबगंज की मण्डी पूरी कमिश्नरी के आकर्षण के केन्द्र थे।

कुल मिलाकर नगर पालिका की हैसियत प्राप्त हमारा शहर पड़ोस के अन्य शहरों से बड़ा, बेहतर और समृद्ध था। यह सब होने के बावजूद अपनी तमाम कमियों-कमजोरियों के कारण यह कुछ धुँधला-धुँधला सा दिखाई देता था।

आगे चलकर समय ने करवट लिया और सौभाग्य से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने बाबू वीर बहादुर सिंह। स्मरण कर प्रसन्नता होती है कि सिंह साहब के मन में गोरखपुर के विकास की न केवल फिक्र थी अपितु वे सक्रिय भी थे। उनकी दिलचस्पी से नगर का रूप-परिवर्तन शुरू ही हुआ था कि वे अकाल कालकवलित हो गये। उनके वक्त में आए दिन नई सड़क बनती थी, चौराहों का सुन्दरीकारण होता था, नये पार्क अस्तित्व में आ रहे थे, पुराने सँवर रहे थे। सबसे बड़ी कल्पना थी उनकी 'रामगढ़ताल परियोजना'। इसने आकार लेना शुरू ही किया था कि वे दुनिया छोड़ गये। उनकी याद इस अर्थ में भी सुखद है कि उन्होंने बिगड़े और बदनाम गोरखपुर को अनुशासन में रहने पर मजबूर कर दिया था। बन्दूक की नालें वाहनों के बाहर दिखाई नहीं पड़ती थीं।

इस नगर के स्वरूप-विस्तार में 'सहारा' के मालिक श्री सुब्रत राय की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। राजघाट पर व्यवस्थित छाया युक्त, साधन सम्पन्न शवदाह गृह, सहारा इस्टेट कालोनी, छात्रसंघ चौराहा, गोरखपुर से 'राष्ट्रीय सहारा' अखबार का प्रकाशन करके उन्होंने गोरखपुर को ऊँचाई दी।

साहित्य, कला, संगीत, कुश्ती, खेल, कानून, चिकित्सा और उद्योग की दृष्टि से यह नगर प्रतिष्ठित था। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धीरे-धीरे आगे भी बढ़ रहा था किन्तु विकास की गति मन्द-मन्थर थी। वैसी कदापि नहीं जैसी 'सैफई' की थी, जैसी नोयडा-ग्रेटर नोयडा, गाजियाबाद आदि की थी। होने को मेडिकल कालेज, इन्जीनियरिंग कालेज, फर्टिलाईजर फैक्ट्री, गीडा आदि

भी थे किन्तु वह रौनक, वह रौशनी, वह चमक नहीं थी जो आज दिख रही है। मुझे अनवर मिर्जापुरी की दो पंक्तियाँ याद आ रही हैं -

''तेरी आँखों में सब कुछ है लेकिन
दावते कैफे मस्ती नहीं है।''

कभी ऐसा नहीं हुआ कि गोरखपुर का कोई एम.एल.ए. नहीं था, एम.पी. नहीं था और-तो-और शायद ही कोई ऐसा वक्त रहा हो जब यहाँ का कोई मिनिस्टर न रहा हो किन्तु आज जैसी मस्त कर देने वाली प्रगति, आह्लादित कर देने वाला विकास, अन्धे को भी दिखाईदे जाने वाले कार्य और बहरे को भी सुनाई दे जाने वाली विकास की सांगीतिक आवाज नहीं थी।

कवि नीरज ने ठीक कहा था -

'मानव होना भाग्य है
कवि होना सौभाग्य।''

सौभाग्य से वही हुआ। सांसद योगी आदित्यनाथ अपने, पूर्वांचल के और प्रदेश के भी परम सौभाग्य से मुख्यमंत्री बने। अपने खास तेवर के लिये प्रदेश और देश में भी पहचाने जाने वाले योगी जी के मुख्यमंत्री बनते ही प्रदेश, पूर्वांचल और खास तरीके से गोरखपुर में विकास की जो तीव्र वेग वाली धारा बही है वह दूर से ही दिखाई देने योग्य है। आज मुण्डेरवा से पिपराईच, कालेसर से जगदीशपुर, जंगल कौड़िया से मोहद्दीपुर, सर्किट हाउस से हवाई अड्डा, बाघागाड़ा से ताराण्डल, कूड़ाघाट और तारामण्डल से देवरिया तक जो होता हुआ दिख रहा है उस पर विस्तार से लिखना अपने प्रिय पाठकों के कोप का भाजन बनना है। कोप का भाजन इस अर्थ में कि वे कह सकते हैं कि आप कौन सी नई बात लिख रहे हैं जिसे हम नहीं जानते - नहीं देखते। बनता हुआ और कार्य करता हुआ 'एम्स', धरती से आकाश की ओर उगता - अँखुवाता फर्टिलाईजर, आकार पकड़ता चिड़ियाघर, चँहकता-इठलाता रामगढ़ताल, दमकता-महकता गोरखनाथ मन्दिर, विस्तार पाता मेडिकल कालेज और हवाई अड्डा, निर्माणाधीन प्रेक्षागृह आज विरोधी को भी प्रसन्न होने और प्रशंसा करने को विवश कर रहे हैं। यह एक छोटी-सी तस्वीर है वर्तमान के हमारे नगर-जनपद और उसके पार्श्ववर्ती भू-भागों की। इस पर अधिक कुछ कहना अपना कागज, स्याही और समय बेकार खर्च करने जैसा होगा। अतः अब हम भविष्य के गोरखपुर को जिस रूप में देखना चाहते हैं उसकी एक रूपरेखा प्रस्तुत कर रहे हैं। मेरी कामना-कल्पना-सपना-इच्छा और आकांक्षा है -

- ❖ कि नगर और जनपद आवारा पशुओं से मुक्त हो ताकि साँड़ों के मारने से अब किसी नागरिक की मृत्यु न हो और साँसत झेल रहा किसान राहत महसूस करे।
- ❖ कि प्रेक्षागृह शीघ्र निर्मित हो और कलाकारों को मनचाहा कार्यक्रम प्रस्तुत करने का आमंत्रण दे।
- ❖ कि नगर के भीतर पशुपालन (मेरा अभिप्राय डेयरी-संचालन से है) न हो।
- ❖ कि आगे किसी अवैध कालोनी की नींव न पड़े।
- ❖ कि जैसे गोरखनाथ मन्दिर के सामने से फोरलेन गुजर रही है वैसे ही किसी भी एक दिशा से (जिधर से भी गुंजाइश बने) गीताप्रेस को भी कम-से-कम टू लेन से जोड़ा जाय।
- ❖ कि जैसे महेसरा से मन्दिर होते हुए सर्किट हाउस और हवाई अड्डे तक सफाई की चाक-चौबन्द व्यवस्था होती है वैसे ही नगर के भीतरी इलाकों में भी सुनिश्चित हो। अन्दर के गोरखपुर की हालत (स्वच्छता की दृष्टि से) अच्छी नहीं है।
- ❖ कि नगर के अन्दर कहीं सुअर दिखाई न दे।
- ❖ कि नगर के चौराहे और प्रशस्त हों।
- ❖ कि किसी भी सरकारी भवन पर अवांक्षित पेड़-पौधा दिखाई न दे।
- ❖ कि किसी महकमे का कोई कर्मचारी-अधिकारी घूस न ले।
- ❖ कि नगर के भीतर के जलाशय (पोखरे-गड़हियाँ) अनधिकृत कब्जों से मुक्त हों और उनका सुन्दरीकरण करके उन्हें जनोपयोगी बनाया जाय।
- ❖ कि सड़क के किनारे पेड़ लगाते समय इस बात का ध्यान रखा जाय कि उसके ऊपर से बिजली का तार न दौड़े। जवान-प्रौढ़ होते हुए पेड़ों के सिर बार-बार कलम न किये जायें।
- ❖ कि पक्के निर्माण (डिवाइडर हो, भवन हो, सड़क हो या नाली) की लगातार - भरपूर कम-से-कम सात दिन तक तरी की जाय। बनाकर तुरंत चूना-सफेदी न कर दी जाय।
- ❖ कि प्रत्येक क्षेत्र में गोरखपुर का यश-मान बढ़े। और हमें गोरखपुरिया होने पर गर्व महसूस हो।

संयोजकीय :

- ■ **प्रो. रामदेव शुक्ल :** उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'हिन्दी-गौरव' सम्मान से अलंकृत, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के कृतकार्य आचार्य एवं अध्यक्ष, प्रख्यात

विद्वान और कथाकार हैं।

आपने गोरखपुर के अतीत और वर्तमान पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। किन्तु भविष्य के गोरखपुर पर कोई मंतव्य प्रकट नहीं किया है।

- **प्रो. कृष्ण चन्द्र लाल :** उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'श्रेष्ठ शिक्षक' सम्मान से विभूषित, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त आचार्य एवं अध्यक्ष, अधिष्ठाता-कला संकाय, कवि, गजलकार, नाट्य लेखक, समीक्षक, सम्पादक और विद्वान हैं।

  आपने 1970 से आजतक के गोरखपुर का एक चित्र प्रस्तुत किया है और नगर के विकास की रूपरेखा भी।

  भविष्य के गोरखपुर से आप की अपेक्षाएँ निम्न हैं :-

  - नगर के कई हिस्सों में अभी भी गन्दगी का अम्बार है। स्वच्छता की पहल और तेज की जाय।
  - अभी भी कुछ लोग खुले मे शौच करते दिख रहे हैं। उन्हें रोका जाय और उनके लिए व्यवस्था की जाय।
  - नगर को झुग्गी-झोपड़ियों से मुक्त किया जाय। उनके आवास की व्यवस्था हो और उन्हें सहायता दी जाय।
  - विद्युत आपूर्ति की अबाधता बनी रहे।
  - सड़कें गड्ढा मुक्त हों।

- **डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी :** उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान से सम्मानित, लोक साहित्य के मर्मज्ञ, भोजपुरी कहानीकार, प्रसिद्ध विद्वान - वक्ता और वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के निर्वतमान अधिष्ठाता - कला संकाय हैं।

  आपने नगर के अतीत और वर्तमान पर प्रकाश डाला है। भविष्य के गोरखपुर के बारे में आप की अपेक्षाएँ निम्नवत् हैं :-

  - जाम से मुक्ति मिले। इस निमित्त जगह-जगह फ्लाईओवर बने।
  - मेट्रो रेल सेवा आरम्भ हो।
  - प्राइवेट अस्पतालों (नर्सिंग होम) द्वारा किया जा रहा धन-दोहन बन्द हो। इस पर प्रभावी नियंत्रण हो।

- **श्री नरसिंह बहादुर चन्द :** वरिष्ठ कवि, लेखक, समाजसेवी, विचारक और 'संगम' (साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था) के अध्यक्ष हैं।

  आप ने नगर के क्रमिक विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की है। भविष्य के विषय में आप

की सदिच्छा है कि गोरखपुर की विरासत बरकरार रहे।

- **श्री आर.डी.एन. श्रीवास्तव** : वरिष्ठ कवि, शायर, विचारक, अनुवादक और एक प्रतिष्ठित इण्टर कालेज के निर्वतमान प्रधानाचार्य हैं।
  आप ने नगर के अतीत और वर्तमान का सिलसिलेवार वर्णन किया है। आप की अपेक्षा है कि भविष्य में नगर में सद्भाव-सौहार्द बना रहे। सभी समुदायों के लोग परस्पर सहयोग करें।

- **श्रीमती रौशन एहतेशाम** : प्रसिद्ध रंगकर्मी, समाजसेवी, रेडियो और दूरदर्शन की उच्च श्रेणी कलाकार, पूर्व अध्यापिका, कवयित्री, उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'विष्णु प्रभाकर सर्जना पुरस्कार' से पुरस्कृत लेखिका एवं एक बेहतर इन्सान हैं।
  आप ने अपने नगर के अतीत और वर्तमान का खाका पेश करते हुए चाहा है कि भविष्य का गोरखपुर जाम से निजात पाये। अपराध से मुक्त हो और स्वच्छता के प्रति लोग स्वयं जागृत हों।

- **श्री देवेन्द्र आर्य** : पूर्वोत्तर रेलवे के कृतकार्य अधिकारी, प्रख्यात गीतकार, कवि, शायर, समीक्षक, लेखक और सम्पादक हैं।
  आप ने नगर के अतीत और वर्तमान के साहित्यिक मिजाज-परिदृश्य पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है और उसका मूल्यांकन भी। भविष्य के गोरखपुर से सम्बन्धित कोई खास सुझाव न देकर आप ने अपनी सदिच्छा व्यक्त की है कि नगर में साहित्य पर गम्भीर विमर्श हो तथा साहित्य की उपादेयता बनी रहे।

- **श्री रणविजय सिंह** : पूर्वोत्तर रेलवे के अवकाश प्राप्त उच्च अधिकारी, प्रसिद्ध व्यंग्यकार, विचारक और उ.प्र. हिन्दी संस्थान से सद्य: 'श्री नारायण चतुर्वेदी साहित्य सम्मान' से सम्मानित रचनाकार हैं।
  आप ने गोरखपुर नगर-जनपद के अतीत और वर्तमान का वर्णन न करके उसकी वर्तमान-ज्वलन्त तीन समस्याओं की चर्चा की है। साथ ही उनके निराकरण के ठोस उपाय भी सुझाए हैं। आप की आकांक्षा है कि भविष्य के गोरखपुर में कूड़ा का निस्तारण ढंग से किया जाय। इसके कुछ भाग से कम्पोस्ट खाद, कुछ से बिजली निर्माण और कुछ की रिसाइकिलिंग की जाय। जाम से मुक्ति के लिए डिवाइडर के ऊपर से मिनी मेट्रो रेल चलाया जाय। नालों के निर्माण में ढाल का ध्यान रखा जाय। सड़कें चौड़ी की जायें। पोखरों-तालाबों को उद्धार किया जाय जिससे वर्षा काल में नगर को जलमग्न होने से बचाया जा सके।

■ **श्रीयुत् श्रीधर मिश्र :** प्रसिद्ध कवि, समीक्षक, शिक्षक, विचारक, वक्ता और शिक्षक संघ के नेता हैं।

आप ने नगर के अतीत और वर्तमान का साहित्यिक चित्रण किया है। आप की कल्पना के गोरखपुर में औद्योगिक अस्थानों और अवस्थापना-सुविधाओं में वृद्धि की जरूरत है ताकि यहाँ के युवावर्ग का पलायन रुके और उनकी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति संभव हो सके। प्रेक्षागृह का निर्माण शीघ्र हो जिससे कलाकारों को उचित मंच मिले।

*****

परिवर्तन की राह पर गोरखपुर

रणविजय सिंह

हर देश क्षेत्र अथवा स्थान का अपना-अपना स्वर्णकाल होता है। इस काल में वहाँ हर क्षेत्र में विकास होता है। उत्कृष्टता आती है।

वर्तमान समय में गोरखपुर का स्वर्ण काल चल रहा है। प्रदेश के सर्वोच्च पद पर यहाँ के योगी आदित्यनाथ आसीन है। नगर की नागरिक सुविधाओं का निरन्तर विकास हो रहा है। रामगढ़ ताल एक उत्कृष्ट पर्यटन स्थल के रुप में विकसित हो चुका है। यहाँ हजारों की संख्या में लोग प्रतिदिन सुरम्य दृश्यों को देखने आते है। गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण में अनेक उद्योगों की स्थापना हो रही है।

बंद पड़ी चीनी मिलों और खाद के कारखाने का पुनरुद्धार या तो हो चुका है या चल रहा है। इससे कृषि के विकास की संभावना बढ़ी है। किसानों की आय चीनी मिलों के पुनरुद्धार के परिणामस्वरूप गन्ने की खेती का क्षेत्रफल बढ़ने की संभावना बढ़ गई है। इस प्रकार उद्यम के तीनों क्षेत्रों –कृषि, विनिर्माण एवं सेवा में गोरखपुर और उसके आन्तरिक क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है। केवल आर्थिक विकास ही किसी क्षेत्र के स्वर्ण युग के निर्धारण के लिये एक मात्र मापक नहीं है। कला, साहित्य और संस्कृति के विकास की इसमें आर्थिक विकास से भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संस्कृति और कला के क्षेत्र में गोरखपुर इतना विकसित है, उसके इतने आयाम है कि इसका इस लेख में वर्णन कर पाना संभव नहीं है साहित्य में अभी कुछ दिन पूर्व तक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष का पद गोरखपुर के साहित्यकार विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी के पास था। इस पद पर आसीन होने वाले वे हिन्दी के पहले साहित्यकार थे। डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त जी उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष के

पूर्व मुख्य परिचालन प्रबन्धक, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

रुप में हिन्दी भाषा और उसके साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है।

सारे विकास का मूल शिक्षा में निहित है इसलिये यदि इस क्षेत्र का उल्लेख न किया जाय तो उसके साथ अन्याय होगा। नगर के छः शिक्षा शास्त्री, कुलपति के रूप में न केवल इस क्षेत्र वरन क्षेत्र के विभिन्न भागों में शिक्षा के विकास और उसकी गुणवत्ता में सुधार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहें हैं। किसी भी नगर और उसके आस-पास के क्षेत्र में इतने कुलपतियों का एक साथ कार्यरत होना उसका स्वर्णकाल ही तो कहा जायेगा?

यह सब भूमिका मैंने आवश्यक समझा इसलिये लिख दिया जिससे मूल विषय पर लिखना और लिखे हुये को समझना आसान हो जाय। कोई ऐसा विषय नहीं होता जिस पर सभी लोग सहमत हो सकें। क्या खाना और क्या पहनना चाहिये? या नहाना चाहिये या नहीं, दाढ़ी बढ़ानी चाहिए या नहीं, पानी कितना पीना चाहिये-जैसे सामान्य विषयों पर भी लोगों में मतभेद देखे जाते है। जब मैं कहता हूँ कि गोरखपुर का स्वर्णकाल चल रहा है तो मुझसे असहमत होने वाले लोग भी आवश्यक हैं। या यों कहिये कि काफी संख्या में हैं। असहमति विचारशीलता की पहली निशानी है यह आदमी होने की पहचान भी है। बाहरी रूप में भेड़ से उसे अलग दिखाने का गुण भी है।

लोगों की असहमति के असंख्यक बिन्दु हैं। मूर्त और अमूर्त। विचार किया जाय तो मूर्त कारक पर बहस हो सकती है। इससे सहमत या असहमत हुआ जा सकता है। सब आप की प्रतिबद्धता या निरपेक्षता पर निर्भर है। किन्तु विनम्रतापूर्ण असहमति पर सहमत हो कर उसे समाप्त किया जा सकता है।

लोग परियोजनाओं को तेजी से क्रियान्वित होते देखना चाहते हैं। मैं भी यही चाहता हूँ। निर्माणकाल में असुविधा होती है। यह जितनी जल्दी पूरी हो जाय उतना ही ठीक रहता है। समय बढ़ने से बजट भी प्रभावित होता है। लागत व्यय बढ़ता है। इसलिये परियोजनाओं को शीघ्र पूरा होना ही चाहिये किन्तु किसी भी परियोजना के पूर्ण होने के लिये गुणवत्ता आदि के आधार पर एक निश्चित अवधि आवश्यक होती है। इस अवधि में परियोजना यदि पूरी हो जाय तो ठीक समझा जाता है। नगर की नाली औरर सड़क परियोजनायें निःसंदेह अधिक विलंब से चल रही हैं। वे संभवतः अपने निर्धारित अवधि का कई गुना समय ले चुकी हैं। यह कारक नगर के स्वर्णकाल या स्वर्णयुग पर निश्चित है एक दावा है।

मुझे नहुष की कथा पता है। इन्द्राणी तक पहुँचने की जल्दी में अपनी पालकी ढो रहे सप्तर्षियों को तेज चलने के लिये - सर्प-सर्प कहा और ऋषियों ने उन्हें सर्प बनने का श्राप

दे दिया। सारा गुड़-गोबर। हजारो साल तक अजगर बने रहे। इन्द्राणी से मिलने की कौन कहे। इसलिये मैं यहाँ अनावश्यक तेजी की बात नहीं कर रहा हूँ किन्तु निर्धारित अवधि में निर्माण कार्यों का पूरा होना सभी कारणों से आवश्यक है और होना ही चाहिये। अतिविशिष्ट अतिथियों के आने पर रातों-रात हुये सड़क निर्माण कार्यों का हश्र हम लोग देख चुके है। चौबीस घंटे में ही सड़क टूट जाती है इसलिये लोग इतनी तेजी भी नहीं चाहते है। वह चाहते हैं कि जो कुछ बने वह टिकाऊ, सुविधाजनक और निर्धारित अवधि के भीतर हो।

निर्माण आदि तो पूरा हो जायेगा क्योंकि जो काम शुरु हुआ है उसे पूरा होना ही है। ठीक उसी तरह जिस तरह कि हैर पैदा होने वाली जीवधारी को मरना ही होगा। परियोजनाओं में हो रही देरी तब शायद बहस का विषय न रहे पर कुछ कारक तब भी बहस के केन्द्र में बने रहेंगे।

गोरखपुर की सफाई व्यवस्था जिसे कि इस बहस के केन्द्र में होना चाहिये उस पर अभी तक चर्चा शुरु नहीं हुई। शायद हम लोग मान चुके हैं। कि उसे नहीं सुधारना है। शायद कुत्ते की दुम की तरह कुछ भी कर लीजिये। बांस की नली में रखिये या लकड़ी बांधिये, बारह साल बाद भी वह टेढ़ी ही रहेगी। रोज सफाई की नयी-नयी योजनायें अखबारों में दिखाई देती हैं। पर धरातल पर कुछ दिखाई नहीं देता। नगर इस मामले में उस मरीज की तरह है जिसे डॉक्टर बताता तो है कि रामबाण औषधि दे रहा है। पैसे भी उसी के लेता है पर देता कुछ भी है न ठीक होने का दोष वह रोगी को जिजीविषा का देता है। कहता है कि मरीज ठीक होना है नहीं चाहता है। स्वस्थ होने की उसकी इच्छा ही नहीं है। या वह दवा ठीक से खा ही नहीं रहा है।

कुछ भी हो स्थान-स्थान पर लगे कूड़े के ढेर नगर के स्वर्णकाल होने को चुनौती दे रहे हैं। इसका निस्तारण निश्चित रूप से किसी की व्यक्तिगत जिम्मदारी नहीं हो सकती है। अर्थात् समस्या डॉक्टर में है, मरीज में नहीं। लेकिन मरीज ठीक होना चाहता है। डॉक्टर इसका प्रमाण चाहेगा अतः उसकी भी पड़ताल होनी चाहिये।

मैं कल एक आयोजन में गया था। इसमें बीच-बीच में चाय भी चलाई जा रही थी। इसके पहले के कई आयोजनों में भी इस प्रकार की व्यवस्था देखी थी। लोग चाय पीकर कागज या प्लासिटक के गिलास अपनी कुर्सियों के नीचे रख देते थे। कुछ लोग उसमें गुटका भी थूक देते थे। आयोजकों अथवा स्थलवालों के लिये बाद में इनकी सफाई बड़ी समस्या रहती थी। किन्तु कल के कार्यक्रम में कुछ अलग ही दृश्य दिखा। लोग चाय पीने के बाद बाहर निकल कर कागज के गिलास, वहाँ लगे डस्टबिन में डाल रहे थे। एक-दो अपवादों को छोड़ कर। बाद में बगलवालों को देखकर वे भी अपनी गिलास डस्टबिन में डालने लगे।

किसी भी काम की शुरुआत उसके बनने में सोचने से होती है। कल के कार्यक्रम के बाद मुझे लगा कि नगर के लोगों की सफाई के बारे में सोच बदल रही है। उनकी सोच में बदलाव सफाई पर आधी विजय है। अर्थात मरीज ठीक होना चाहता है। इसमें कोई संदेह नहीं है। अब डॉक्टर को प्रयास करना ही होगा। डॉक्टर जानता है कि मरीज के पास तमाम विकल्प हैं। वह दूसरे डॉक्टर के पास जा सकता है। जब कि डॉक्टर विकल्पहीन है। इसलिये डॉक्टर को भी प्रयास करना ही होगा। कूड़े के ढेरों को हटवाना ही होगा।

लोगों की सोच में बदलाव लाना आसान नहीं है। इसे कानून या दण्ड से नहीं किया जा सकता है। सामाजिक आन्दोलन भी इसे शत-प्रतिशत बदलने में सफल नहीं होते। कभी-कभी तो इनका नकारात्मक प्रभाव भी देखा जाता है। तो यदि बदलाव किसी कारणवश आता है तो वह लेने समय के लिये स्थायी रहता है। गोरखपुर में केवल सफाई के प्रति ही लोगों को सोच नहीं बदली है। बल्कि हर क्षेत्र में बेहतर करने की इच्छा, लोगों में जाग्रत हुई है। इसलिये गोरखपुर हर क्षेत्र में आगे है। यह कि स्वत: स्फूर्त उत्कृष्टता का आन्दोलन यहाँ का हर नागरिक अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता का प्रयास कर रहा है। और उसे प्राप्त भी कर रहा है।

जब तक गोरखपुर में लोगों में उत्कृष्टता की ललक बनी रहेगी तब तक उसका स्वर्णकाल चलता रहेगा। आज की पीढ़ी इसमें अपना योगदान कर रही है। आगे आने वाली पीढ़ी भी निश्चित ही इससे बेहतर करेगी।

*****

गोरखपुर का बदलता समाज

प्रो. मानवेन्द्र प्रताप सिंह

महायोगी गुरू गोरक्षनाथ ने भारतीय दर्शन, धर्म, साधना एवं योग के क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत की जिसके केन्द्र के रूप में उन्होंने गोरखपुर क्षेत्र का चयन किया। उन्हीं के नाम पर इस नगर का नाम गोरखपुर पड़ा। नाथपंथ के केन्द्र के रूप में पूरे विश्व में गोरखपुर की एक विशिष्ट पहचान है। गोरखपुर की आध्यात्मिक एवं सामाजिक चेतना गोरखनाथ मन्दिर, गीताप्रेस, बुद्ध एवं कबीर के चिंतन के ईर्द-गिर्द निर्मित हुई। इसी चिंतन के अनुरूप यहाँ की सामाजिक संरचना, सामाजिक व्यवस्था तथा विशिष्ट संस्कृति का विकास समय के साथ हुआ, जिसका आधार सामाजिक समरसता है। आध्यात्मिक एवं धार्मिक केन्द्र होने के कारण यहाँ की सामाजिक व्यवस्था और समाज का स्वरूप पारम्परिक रहा है, अत: जब हम परिवर्तन को समझने का प्रयास करते हैं तो इसे परम्पराओं के सात्तय में ही समझा जा सकता है।

पिछले कुछ दशकों में नगरीकरण, औद्योगीकरण, भूमण्डलीकरण जैसी परिवर्तन की प्रक्रियाओं से गोरखपुर भी प्रभावित रहा है। आधुनिक जीवन मूल्यों का गोरखपुर के समाज में भी पदार्पण हुआ परन्तु यह परिवर्तन पारम्परिक समाज के सात्तय में ही समझा जा सकता है। पिछले दो दशकों में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। भूमण्डलीकरण को कुछ विद्वान उच्च आधुनिकता के दौर के रूप में समझते हैं। 'सैटेलाइट टेक्नालॉजी' और 'फाइबर ऑप्टिक्स' ने सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर बड़ा परिवर्तन लाया। आधुनिक प्रौद्योगिकी ने निश्चित रूप से लोगों की जीवन शैली को बदला है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया का प्रभाव गोरखपुर पर भी पड़ा और सम्भवत: इसी कारण बड़ी संख्या में लोग कृषि कार्य छोड़कर कारखानों, सेवा क्षेत्र अथवा अन्य व्यवसायों की तरफ

अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

उन्मुख हुए हैं। यहाँ का युवा कृषि के साथ-साथ अन्य जीविकोपार्जन के साधन की तरफ उन्मुख हुआ है।

ध्यातव्य है कि भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के साथ-साथ वैश्वीस्नायीकरण (ग्लोकलाईजेशन) की प्रक्रिया भी चलती है। इसीलिए, भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने जिस प्रकार लोगों की जीवन-शैली में बदलाव लाया है उसी के समानान्तर वैश्वीकरण इस परिवर्तन की प्रक्रिया को परम्परा से सात्तयता बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुयी है। अत: हम परिवर्तन की पूरी प्रक्रिया को अतीत से अलग नहीं कर सकते और विशेषकर गोरखपुर के समाज को जिसका वैशिष्ट्य ही प्राचीन भारतीय संस्कृति, आध्यामिकता तथा सामाजिक समरसता पर आधारित जीवन है। आमतौर पर ऐसा माना जाता है, कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया समाज को एकदम से बदल के रख देगी परन्तु भारतीय समाज की विशिष्टता है कि यह दूसरी संस्कृति/पाश्चात्य संस्कृति से अपने मूल संस्कृति को प्रभावित नहीं होने देती। परिवर्तन बहुस्तरीय संस्कृति के ऊपरी परतों पर ही देखा जा सकता है, मूल संस्कृति (कोर वैल्यूज) में नहीं। इसी प्रकार गोरखपुर के समाज पर भी सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति, सोशल मीडिया तथा आभासी दुनिया की संस्कृति का प्रभाव तो पड़ा है परन्तु मूल गोरखपुर की संस्कृति के जो तत्त्व हैं उनकी निरन्तरता बनी हुई है। अत: खान-पान, भाषा, वेश-भूषा इत्यादि में लोगों पर खासकर युवा वर्ग पर परिवर्तन की शक्तियों का प्रभाव तो बढ़ा है, पर उनके जीवन मूल्य और सोच में कोई अतिवादी परिवर्तन नहीं देखने को मिलता।

शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर में 1932 ई. में महन्त दिग्विजयनाथ जी के द्वारा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना ने इस क्षेत्र में शैक्षणिक क्रान्ति लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। परिषद ने प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेष बात यह है, कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने समय की आवश्यकता के अनुरूप नए प्राविधिक एवं चिकित्सा शिक्षा के संस्थानों की भी स्थापना की और यह प्रक्रिया निरन्तर जारी है। गोरखपुर के अन्य महानुभावों ने भी समय की मांग के अनुरूप अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना किया। आज गोरखपुर में पंद्रह से ज्यादा प्राविधिक, इंजीनियरिंग, मेडिकल शिक्षण संस्थान है, जिससे यह क्षेत्र यहाँ के युवाओं को आधुनिक शिक्षा देने का कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित कर रहा है।

आज का आधुनिक दौर प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी की मदद से कुछ सामान्य जीवन मूल्यों के आधार पर 'विश्व ग्राम' एवं 'नेटवर्क सोसाइटी' की बात कर रहा है, परन्तु भारत

तो पहले से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम' के दर्शन को महत्व देता रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' को चरित्रार्थ करने में तकनीकी आधारित नेटवर्क सोसाईटी और सहायक सिद्ध होगी क्योंकि इससे भारतीय संस्कृति का विस्तार सम्पूर्ण विश्व में होगा। अत: 'वसुधैव कुटुम्बकम' के इस वृहत अवधारणा में ही विश्व-ग्राम और 'नेटवर्क सोसाईटी' की अवधारणाएँ स्वत: स्माहित हो जाती हैं।

'टेक्नोलॉजी' का हस्तक्षेप गोरखपुर के भी सामाजिक जीवन में बढ़ा है। आज का युवा स्मार्ट फोन तथा कम्प्यूटर के माध्यम से सोशल मीडिया से जुड़ गया है। इसका सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरीके का प्रभाव देखने को मिल रहा है। आज के सूचना युग तथा 'इलेक्ट्रानिक इकानोमी' के समय में हमें औरों से पिछड़ना नहीं है परन्तु अपनी पहचान को अपने समृद्ध सांस्कृतिक पहचान और विशिष्ट स्थानीय संस्कृति से भी जोड़े रखना है।

गोरखपुर के युवा शुरू से ही प्रतिभा के धनी रहे हैं, और वह राष्ट्रीय पटल पर अपना योगदान देते रहे हैं। हाल के वर्षों में बड़ी संख्या में गोरखपुर के विद्यार्थियों ने इंजीनियरिंग, मेडिकल, प्रशासनिक सेवा और उच्च शिक्षा से जुड़ी संस्थाओं की प्रवेश परीक्षाओं में सफलता हासिल की है।

स्वास्थ्य के प्रति भी लोगों का नजरिया बदला है। गोरखपुर पहले भी चिकित्सा के क्षेत्र में महत्व रखता था लेकिन 'एम्स' की स्थापना और बी.आर.डी. मेडिकल कालेज में सुविधाओं में विस्तार के उपरान्त गोरखपुर को न केवल प्रदेश में बल्कि देश के प्रमुख महानगरों की सूची में ला दिया है। वर्तमान माननीय मुख्यमंत्री महंत योगी आदित्यनाथ जी के प्रयास से ही यह संभव हो पाया है।

प्राकृतिक चिकित्सा और योग के प्रति लोगों का आकर्षण और रुझान बढ़ा है। इसके माध्यम से लोग मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार का प्रयास कर रहे हैं। शहर के लगभग हर भाग में नए नए 'जिम' एवं 'स्वास्थ्य क्लब' खुल रहे हैं, जो लोगों की स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता को दर्शाता है।

पर्यटन के प्रति भी शहर के युवाओं का दृष्टिकोण बदला है। यहाँ के युवा पर्यटन के प्रति रुचि दिखा रहे हैं और देश-विदेश की यात्राएँ हाल के दिनों में बढ़ी हैं। वायु यात्रा के प्रति भी लोगों में रुझान बढ़ा है। इसी कारण गोरखपुर से बड़े शहरों के लिए वायु यात्रा सेवा का विस्तार हुआ है। गोरखपुर में रामगढ़ताल एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है।

धार्मिक पर्यटन के लिए गोरखपुर का क्षेत्र भारत ही नहीं वरन् पूरे दक्षिण एशिया में व्यापक प्रभाव रखता है। गोरखनाथ मंदिर और प्रमुख बौद्ध केन्द्र कुशीनगर के नाते दूर-दूर से लोग यहाँ की यात्रा करते हैं। वर्तमान सरकार की नीतियाँ भी यहाँ पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दे रही है।

हम यह कह सकते हैं, कि गोरखपुर में भी उपभोक्तावादी और शॉपिंग मॉल संस्कृति का विस्तार हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में कई नए शॉपिंग मॉल खुले हैं और उसमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पादों के प्रति लोगों और खासकर युवा वर्ग का आकर्षण बढ़ा है। वहीं दूसरी तरफ आयुर्वेद और पतंजलि उत्पादों के बढ़ते विक्रय केन्द्रों की तरफ भी लोगों की रुचि तेजी से बढ़ी है। अतः हम कह सकते हैं, कि उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के साथ-साथ उपभोक्ता राष्ट्रवाद अर्थात स्वदेशी दोनों प्रवृत्तियाँ साथ-साथ बढ़ती दिख रही है।

नियोजित सामाजिक परिवर्तन में राज्य की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सरकार की नीतियों एवं 'सोशल पालिसी' का आम लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। गोरखपुर के लोगों की जीवनशैली में भी बदलाव आया है। चौराहों के सौन्दर्यीकरण, गोरखपुर महोत्सव के आयोजन, फोरलेन सड़कों का निर्माण, सीवरेज व्यवस्था में सुधार, ट्रैफिक व्यवस्था में सुधार, गरीबों के लिए सरकारी आवास, फ्लैट कल्चर का विकास, आयुष्मान योजना, निर्बाध विद्युत आपूर्ति, कौशल विकास योजना इत्यादि का प्रभाव यहाँ के लोगों के जीवन शैली पर सकारात्मक रूप से पड़ रहा है। लोग अब रेस्टोरेन्ट में जा रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में बाहर के शहरों के लोग नियुक्त होकर गोरखपुर में प्रवास कर रहे हैं। गोरखपुर के समीपवर्ती कस्बों से भी लोगों के उत्सव मनाने एवं मनोरंजन के लिए गोरखपुर नगर में आने की प्रवृत्ति बढ़ी है। सरकार भी गोरखपुर को स्मार्ट सिटी बनाने की योजना पर काम कर रही है। गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी के मुख्यमंत्री पद का दायित्व संभालने के बाद शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, व्यापार, स्वच्छता एवं आधारभूत संरचना के निर्माण में अभूतपूर्व प्रयास किये जा रहे हैं जिसका प्रत्यक्ष लाभ यहाँ के लोगों को मिल रहा है।

गोरखपुर में महिलाओं की स्थिति में प्रत्यक्ष सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहा है। उनमें शिक्षा और रोजगार के प्रति चेतना बढ़ी है। शहर में निरन्तर महिला छात्रावास, पेईंग गेस्ट हास्टल की संख्या बढ़ रही है, जो इस बात का स्पष्ट संदेश देती है, कि समीपवर्ती क्षेत्र के अभिभावक अपने लड़कियों को शिक्षित करने हेतु हर संभव प्रयास कर रहे हैं। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के 2019 में आयोजित दीक्षांत समारोह में माननीय महामहिम

कुलाधिपति श्रीमती आनन्दीबेन पटेल जी ने अधिकांश छात्राओं के स्वर्ण पदक प्राप्त करने पर इस बात को रेखांकित किया था कि गोरखपुर समेत पूरे प्रदेश में लड़कियों में शिक्षा के प्रति चेतना का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है।

गोरखपुर क्षेत्र में हाल के वर्षों में सरकार के प्रयास के कारण लोगों के स्वच्छता के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव आया है। लोग तेजी से स्वच्छता को अपनी जीवनशैली में अपना रहे हैं। इस महत्वपूर्ण विषय पर जन–चेतना का विस्तार हुआ है। इसका परिणाम हाल ही में जारी शहरों की स्वच्छता सूची में गोरखपुर के रैंक में सुधार के रूप में देखा जा सकता है।

शहर और आसपास निवास कर रहे सीमांत समुदाय जो समाज की मुख्यधारा में नहीं थे उनके विकास पर भी सरकार द्वारा विशेष ध्यान है। उदाहरण के लिये माननीय मुख्यमंत्री महंत योगी आदित्यनाथ जी के प्रयास से वनटांगिया समुदाय, जो दशकों से अलगाव एवं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वेदना का दंश झेल रहा था, आज राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा से जुड़ पाया है। वनटांगिया वन्य गाँवों की राजस्व गाँव का दर्जा दे दिया गया है, जिससे समस्त सरकारी योजनाओं का लाभ उन तक तेजी से पहुँच रहा है।

बदलता गोरखपुर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखते हुए आधुनिकता एवं परिवर्तन की शक्तियों के साथ सकारात्मक समन्वय स्थापित कर विकास केन्द्रित जनांदोलन में एक सक्रिय सहभागिता कर रहा है। यहाँ पर आ रहे परिवर्तनों को इसी संदर्भ में समझा जा सकता है।

*****

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

प्रो. विजय कृष्ण सिंह

गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर का शिलान्यास 01 मई, 1950 को तत्कालीन मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, पं. गोविन्द बल्लभ पन्त के कर-कमलों द्वारा हुआ। विश्वविद्यालय की स्थापना में तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्तश्री दिग्विजयनाथ जी महराज द्वारा महाराणा प्रताप महाविद्यालय तथा महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की सम्पूर्ण भू-भवन, परिसम्पत्ति एवं मानव संसाधन विश्वविद्यालय को समर्पित कर दिया गया। तत्कालीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महराज के आशीर्वाद एवं प्रयत्न से विश्वविद्यालय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसके निमित्त विश्वविद्यालय स्थापना समिति का निर्माण हुआ। गोरखपुर जिले के जिलाधिकारी होने के कारण श्री सूरति नारायण मणि त्रिपाठी अध्यक्ष बने। समिति उपाध्यक्ष श्री दिग्विजयनाथ महराज जी एवं सरदार सुरेन्द्र सिंह मजीठिया, प्रधानमंत्री-श्री मधुसूदन दास जी, मंत्री श्री हरिहर प्रसाद दूबे व डॉ. सी.जे. चाको जी एवं भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार सहित कुल 19 सदस्यों के कर्मयोग से इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। लगभग 5-6 वर्षों तक निरन्तर प्रयास के उपरान्त यह विश्वविद्यालय 1956 में **'गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर'** नामांकन के साथ उत्तर प्रदेश राज्य विधान सभा द्वारा अधिनियमित हुआ। सन् 1997 से यह विश्वविद्यालय एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के नाम से **'दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर'** के रूप में प्रतिष्ठित है।

कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

विश्वविद्यालय की वर्तमान स्थिति-

वर्तमान में इस विश्वविद्यालय में 07 संकाय (कला संकाय, विज्ञान संकाय, वाणिज्य संकाय, शिक्षा संकाय, विधि संकाय, कृषि संकाय एवं औषधि संकाय) एवं 29 विभागों से शैक्षिक एवं शोध कार्य संचालित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय परिसर में कुल विद्यार्थियों की संख्या-19,988 है तथा महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की कुल संख्या-2,58,445 है।

सम्बद्ध महाविद्यालयों की स्थिति-

वर्तमान में इस विश्वविद्यालय से तीन जिलों-गोरखपुर, देवरिया एवं कुशीनगर के महाविद्यालय सम्बद्ध हैं। विवरण निम्नवत् है :-

घटक महाविद्यलय	01
राजकीय महाविद्यालय	08
अनुदानित महाविद्यालय	21
स्ववित्तपोशिवत महाविद्यालय	310
योग-	**340**

महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ :-

1. वर्षों से रिक्त शिक्षक संवर्ग में चयन-

विश्वविद्यालय में विगत 20 वर्षों से शिक्षकों की कोई नियुक्ति नहीं हुई थी, जबकि प्रतिवर्ष शिक्षक सेवानिवृत्त हो रहे हैं, जिससे शिक्षकों की अत्यन्त कमी हो गयी थी। विधि, ललित कला एवं संगीत, संस्कृत, उर्दू विभाग में एक-दो शिक्षक ही कार्यरत थे। शिक्षकों की कमी के कारण पठन-पाठन एवं शोध कार्य प्रभावित हो रहे थे। वर्ष 2018 में **माननीय कुलाधिपति महोदय के आशीर्वाद से शिक्षकों के रिक्त 154 पदों पर चयन सकुशल सम्पन्न हो गये हैं।** शैक्षणिक कार्य सुचारु रूप से संचालित हो रहे हैं।

2. शिक्षक संवर्ग में शेष रिक्त पदों पर चयन-

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में शिक्षक संवर्ग में रिक्त विभिन्न 107 पदों पर चयन हेतु विज्ञापन किया गया है। शीघ्र ही इन रिक्त पदों पर भी चयन की कार्यवाही प्रारम्भ की जायेगी।

3. विश्वविद्यालय के शिक्षकों की उच्च पदों पर नियुक्तियाँ-

विगत दो वर्षों में इस विश्वविद्यालय के चार आचार्य देश एवं प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कुलपति नियुक्त हुये हैं। **प्रो. राजेन्द्र प्रसाद (पूर्व कुलपति, प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज) कुलपति, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार; प्रो. सुरेन्द्र दुबे (पूर्व कुलपति, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी) कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर; प्रो. के.एन. सिंह, कुलपति उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज; प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश पद को सुशोभित कर रहे हैं। इसके साथ ही प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज पद पर नियुक्त होकर विश्वविद्यालय की गरिमा को बढ़ाया है।**

4. स्नातक स्तर पर प्रवेश हेतु प्रथम बार केन्द्रीयकृत संयुक्त प्रवेश परीक्षा का आयोजन-

शैक्षिक सत्र 2018-19 से विश्वविद्यालय सहित सभी महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर प्रवेश के लिए **पहली बार संयुक्त प्रवेश परीक्षा का आयोजन** किया गया, जिसके माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा **ऑनलाइन काउसिंलिंग कराकर प्रवेश कार्य सम्पादित** किया गया। वर्तमान सत्र 2019-20 में भी विश्वविद्यालय सहित सभी महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर प्रवेश के लिए संयुक्त प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया गया। इससे महाविद्यालयों द्वारा **विद्यार्थियों से मनमानी फीस वसूल कर प्रवेश लेने के कार्य पर रोक लगी है।** इसके आलावा विश्वविद्यालय परिसर सहित राजकीय एवं अनुदानित महाविद्यालयों तथा प्रतिष्ठित स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में प्रवेश केन्द्रीयकृत संयुक्त प्रवेश परीक्षा के माध्यम से मेरिट के आधार पर विद्यार्थी प्रवेश पा रहे है जिससे शिक्षा के गुणवता में वृद्धि होगी।

5. वर्षों से लम्बित शोध पात्रता परीक्षा (RET) का आयोजन-

विश्वविद्यालय में वर्ष 2011 **के बाद शोध पात्रता परीक्षा का आयोजन नहीं हुआ था।** इससे विश्वविद्यालय में शोधकार्य एवं शोधार्थियों की संख्या में काफी कमी हो गयी थी। सत्र 2018-19 में शिक्षकों के रिक्त पदों पर चयन सम्पन्न हो गये, इससे शोध पाठ्यक्रम में रिक्त सीटों की संख्या में वृद्धि हो गयी है। पी-एच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु शोध पात्रता परीक्षा के आयोजन के लिए **प्रथम बार ऑनलाइन आवेदन फार्म भरने की व्यवस्था की**

गयी तथा **ऑनलाइन पद्धति से परीक्षा कराकर** शोध पात्रता परीक्षा का अन्तिम परिणाम घोषित किया गया। **विभिन्न विभागों में पी-एच.डी. पाठ्यक्रम के लगभग 1000 सीट रिक्त हैं, जिनपर प्रवेश हेतु 01 जुलाई, 2019 से रजिस्ट्रेशन की कार्यवाही की गयी।** अधिकतर विभागों में पी-एच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश कार्य पूर्ण हो चुके हैं।

6. मेरिट स्कॉलरशिप की व्यवस्था -

शोध कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालय में **मेरिट स्कालरशिप** की व्यवस्था की गयी है, जिसके अन्तर्गत **100 ऐसे शोध छात्रों को रु. 2000.00 प्रतिमाह स्कालरशिप प्रदान करने का प्रावधान किया गया है,** जिन्हें किसी अन्य स्रोत से किसी प्रकार की कोई वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं होती है।

7. केन्द्रीय ग्रन्थालय में पुस्तकों का क्रय एवं ग्रन्थालय का ऑटोमेशन/डिजिटाइजेशन-

1. वर्ष 2013 से बंद शोध पत्रिकाओं (रिसर्च जर्नल्स) की क्रय (Purchase) की प्रक्रिया पुनः प्रारम्भ की गयी है। इसमें **21 शोध पत्रिकाओं के प्रिंट संस्करण का वार्षिक सदस्यता शुल्क भेजा गया है और अब इनकी आपूर्ति प्रारम्भ हो चुकी है।**
2. **पहली बार ई-जर्नल्स की क्रय प्रक्रिया शुरू की गई है।** इस वर्ष **864880.00 रुपये मूल्य के ई-जर्नल्स के लिए क्रय आदेश निर्गत किया गया।**
3. **शोधगंगा पोर्टल से एम.ओ.यू. (MoU) कराया गया** तथा 2013 से अब तक डिजिटल फार्मेट में प्राप्त सभी **410 शोध प्रबंधों (Thesis) को शोधगंगा पोर्टल पर अपलोड किया जा चुका है।**
4. **Library Automation का कार्य पूर्णतया सम्पन्न हो चुका है तथा पुस्तकों के वितरण का कार्य इसी माध्यम से किया जा रहा है। विभागीय पुस्तकालय में Automation का कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है।**
5. **इन्फ्लिबनेट (INFLIBNET)** से **एन्टी प्लैजरिज्म सॉफ्टवेयर** प्राप्त करके उसका प्रयोग प्रारम्भ कर दिया गया है। 50 शोध प्रबन्धों का **प्लैजरिज्म सॉफ्टवेयर** से परीक्षण किया जा चुका है तथा तद्नुसार उन्हें प्रमाण पत्र भी निर्गत किया जा चुका है।
6. इस वित्तीय वर्ष में लगभग **01 करोड़ रूपये मूल्य के ई-कन्टेन्ट (ई-बुक्स, ई-जर्नल्स तथा डाटाबेस) क्रय किया गया है।**
7. नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में विशेष प्रयास करके **सभी शिक्षकों तथा 12000 से**

अधिक विद्यार्थियों के सदस्यता का पंजीकरण कराया गया। इस सुविधा से वे **07 लाख से अधिक ई-बुक्स तथा ई-जर्नल्स आदि का निःशुल्क उपयोग कर रहे हैं।**

8. **रूसा के अन्तर्गत प्राप्त अनुदान से 01 करोड़ मूल्य के प्रिन्ट बुक्स का क्रय** किया गया है।

9. केन्द्रीय ग्रन्थालय में **20 टर्मिनल वाली एक साइबर लाइब्रेरी** स्थापित करने का कार्य अन्तिम चरण में है।

10. केन्द्रीय ग्रन्थालय को विद्यार्थियों के उपयोग को ध्यान में रखकर पूर्व में निर्धारित कार्य अवधि को विस्तारित किया गया है, जिससे ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी ग्रन्थालय का उपयोग कर सकें।

11. केन्द्रीय ग्रन्थालय में उपलब्ध पुस्तकों एवं शोध पत्रिकाओं का विवरण उनके उपयोगकर्ताओं के मोबाइल फोन पर उपलब्ध कराने की प्रक्रिया प्रारम्भ की जा रही है।

12. केन्द्रीय ग्रन्थालय में पुस्तकों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए **Radio Frequency Identification Device (RFID)** तकनीक शीघ्र प्रारम्भ किया जायेगा।

13. विद्यार्थियों की सुविधा के लिए **ग्रन्थालय परिसर में डिजिटल कियोस्क स्थापित किये जायेंगे,** जिसपर विद्यार्थी स्वयं पुस्तकों की उपलब्धता के विषय में सूचना प्राप्त कर सकेंगे।

8. राज्य सरकार द्वारा अनुदानित गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना-

विश्वविद्यालय परिसर में **गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ** की स्थापना राज्य सरकार के द्वारा दिये गये अनुदान से की गयी है, जिसके अन्तर्गत शासन द्वारा **विभिन्न 28 पद स्वीकृत किये गये** हैं। शिक्षक संवर्ग में रिक्त पदों का विज्ञापन किया जा चुका है। इसके पश्चात् इन पदों पर चयन की कार्यवाही सम्पन्न की जायेगी। शोधपीठ संचालित करने की प्रक्रिया प्रगति पर है। शीघ्र ही शोधपीठ का संचालन प्रारम्भ हो जायेगा। इस **शोधपीठ एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ** के **संयुक्त त्तवावधान** में **'प्राचीन भारत के वैज्ञानिक एवं उनके अवदान'** विषयक संगोष्ठी **में विधानसभा अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित बतौर मुख्य अतिथि** के रूप में शरीक हुये। शोधपीठ आरम्भ होने के एक वर्ष के अन्दर ही गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा **अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'नाथ प्रज्ञा'** का प्रकाशन **प्रोफेसर संतोष कुमार शुक्ल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सम्पादकत्व में**

प्रकाशित किया जायेगा। **'नाथ प्रज्ञा' नामक शोध पत्रिका के प्रथम अंक का प्रकाशन प्रक्रियाधीन है।** जल्द ही यह पत्रिका विद्यार्थियों एवं विद्वतजन के लिए सुलभ हो सकेगी।

महायोगी गुरुश्री गोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा प्रकाशित पुस्तिकायें :-

(1) **'गोरखनाथ और भोजपुरी'**, लेखक-डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त

(2) **'नाथ पंथ का समाज दर्शन'**, लेखक-डॉ. प्रदीप कुमार राव

(3) **'नाथ पंथ'**, लेखक-डॉ. प्रदीप कुमार राव

(4) **'सृष्टि सृजन और योग का विज्ञान'**, लेखक-**डॉ. भारती सिंह एवं प्रो. दिनेश कुमार सिंह**

(5) **'गोरखनाथ एवं विविध संदर्भ'**, लेखक-डॉ. संतोष कुमार सिंह

अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'नाथ प्रज्ञा' का प्रकाशन एवं ISSN नम्बर के लिए प्रेषित किया गया है।

नाथपंथ विश्वकोष के निर्माण के लिए दो कार्यशालाओं का आयोजन हो चुका है। दिनांक 14-15 दिसम्बर, 2019 को 'नाथपंथ विश्वकोष निर्माण: योजना एवं क्रियान्वयन के विविध आयाम' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी, जिसमें मुख्य अतिथि-डॉ. बलवन्त शांतिलाल जानी, कुलाधिपति, डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र. एवं विशिष्ट अतिथि-श्री महन्त शिवनाथ जी, केयर वैक मठ, महाकालपारा, केन्द्रपाड़ा, उड़ीसा थे।

9. राज्य सरकार द्वारा अनुदानित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ की स्थापना-

विश्वविद्यालय परिसर में दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ की स्थापना की जा चुकी है। इस **शोधपीठ के लिए शासन से रु. 50.00 लाख का अनुदान प्राप्त हुआ है।** शोधपीठ सुचारु रूप से संचालित हो रहा है। **11 फरवरी, 2018 को पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धान्जलि सभा का आयोजन** किया गया, जिसमें **श्री शिवप्रताप शुक्ला, केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री मुख्य अतिथि** थे। 08 अगस्त, 2018 को **'पं. दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन'** विषय पर एक **संगोष्ठी** का आयोजन किया गया, जिसमें **मुख्य वक्ता, प्रो० सुरेन्द्र दुबे, कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, मुख्य अतिथि, प्रो. मनोज दीक्षित, कुलपति डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. योगेन्द्र सिंह, जननायक विश्वविद्यालय, बलिया** थे। 25 सितम्बर,

2018 को **पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती** के अवसर पर **'एकात्म मानववाद एवं सामाजिक समरसता'** विषय पर एक **संगोष्ठी** का आयोजन हुआ, जिसके **मुख्य अतिथि श्री हर्ष कुमार सिंह चौहान तथा मुख्य वक्ता श्री हरेन्द्र प्रताप, पूर्व विधान पार्षद, पटना** थे।

नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं को पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की कृत्तिव एवं व्यक्तित्व की जानकारी हेतु 04 जुलाई, 2019 से प्रारम्भ सभी कक्षाओं के प्रवेश के अवसर पर **पं. दीनदयाल जी के जीवन पर आधारित हस्तपुस्तिका वितरित की गयी। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानव दर्शन पर संगोष्ठी तथा स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गयी।**

10. विश्वविद्यालय के विधि संकाय (Faculty of Law) के अन्तर्गत प्रथम बार पंचवर्षीय विधि पाठ्यक्रम का प्रारम्भ-

विश्वविद्यालय के विधि विभाग के अन्तर्गत **पंचवर्षीय विधि पाठ्यक्रम सत्र 2018-19 से संचालित हो रहा है।**

11. स्वयंप्रभा डीटीएच चैनल की सुविधा-

विश्वविद्यालय में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देश पर **स्वयं प्रभा डीटीएच चैनल** की सुविधा प्रदान की गयी है। इस चैनल पर विभिन्न विषयों के पाठयक्रमों को मल्टीमीडिया आधारित वीडियो लेक्चर एवं लाइव प्रयोग के रूप में प्रसारित किया जाता है, जिससे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी लाभार्थी लाभान्वित होंगे। विश्वविद्यालय के केन्द्रीय ग्रंथालय सहित सभी विभागों में यह सुविधा प्रदान की जाने की कार्यवाही चल रही है।

12. विश्वविद्यालय में Choice Based Credit System (CBCS) लागू किया जाना-

विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम की आवश्यकता के दृष्टिगत नियमानुसार समय-समय पर समीक्षा एवं सुधार किया जाता है। कौशल विकास को ध्यान में रखकर व्यापक स्तर पर प्रथम बार सत्र 2019-20 से विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर के सभी पाठ्यक्रमों में **Choice Based Credit System (CBCS)** लागू कर दिया गया है। महाविद्यालयों में भी स्नातकोत्तर स्तर के विज्ञान संकाय के पाठ्यक्रमों में **Choice Based Credit System (CBCS)** सत्र 2019-20 से लागू कर दिया गया है।

13. विश्वविद्यालय में इन्टीग्रेटेड यूनिवर्सिटी मैंनेजमेन्ट सिस्टम लागू किया जाना-

विश्वविद्यालय में इन्टीग्रेटेड यूनिवर्सिटी मैंनेजमेन्ट सिस्टम लागू किये जाने हेतु

UTTAR PRADESH ELECTRONICS CORPORATION LIMITED (UPECL) द्वारा लेखा विभाग में सेलरी, बजट, ऑनलाइन ट्रान्जेक्शन, जी.पी.एफ. माड्यूल परीक्षा एवं प्रवेश कार्यों को ऑनलाइन कराने के लिए साफ्टवेयर बनाया जा चुका है। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन उपस्थिति का साफ्टवेयर तैयार हो चुका है। आर.टी.आई., लीगल एवं कोर्ट केसेज का भी साटवेयर तैयार किया जा चुका है। लेटर एण्ड फाइल ट्रेकिंग एवं अन्य विश्वविद्यालय के उपयोग हेतु साफ्टवेयर तैयार करने का कार्य चल रहा है, जिसे यथाशीघ्र लागू कर लिया जायेगा।

14. कैरियर गाइडेंस एवं कैम्पस प्लेसमेन्ट सेल की स्थापना-

कैरियर गाइडेंस एवं कैम्पस प्लेसमेन्ट हेतु विश्वविद्यालय में विद्यार्थी परामर्श केन्द्र की स्थापना की गयी है, जिसके माध्यम से छात्र/छात्राओं को उक्त के सम्बन्ध में सूचनाएं प्रदान की जाती है।

विद्यार्थियों को कौशल विकास एवं रोजगार हेतु क्षेत्रों की पहचान कर उचित प्रशिक्षण-

विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए मेधा संस्था द्वारा कौशल विकास के लिए अनेक शार्ट टर्म रोजगारपरक कोर्स संचालित किये जाते हैं। वर्ष 2015-19 तक मेधा के संचालन से विश्वविद्यालय परिसर के 96 छात्र-छात्राओं का विभिन्न संस्थानों में प्लेसमेन्ट हुआ है तथा 435 छात्र-छात्राओं को रोजगार हेतु ट्रेनिंग दी गयी है। विश्वविद्यालय में एक सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र स्थापित है, जो विद्यार्थियों को रोजगार से सम्बन्धित अद्यतन जानकारी प्रदान करती है।

15. स्टार्ट-अप ग्रान्ट के अन्तर्गत उपलब्धि-

इस वर्ष हमारे विश्वविद्यालय के 22 **नवनियुक्त सहायक आचार्यों** को **यू.जी.सी. की स्टार्टअप ग्राण्ट** के लिए चयनित किया गया है, जिसमें **09 शिक्षकों को अनुदान प्राप्त हो चुका है।** शेष **१३ शिक्षकों को अनुदान प्राप्त होना है।**

विश्वविद्यालय के निम्नलिखित 09 नव-नियुक्त शिक्षकों को स्टार्ट-अप ग्रान्ट के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से अनुसंधान के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है-

- डॉ. राजेश कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गणित एवं सांख्यिकी विभाग, को यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।

इसके साथ ही उ.प्र. सरकार से गणित विभाग को सेन्टर ऑफ एक्सलेन्स के तहत 7 लाख का ग्राण्ट प्राप्त हुआ है।

- डॉ. अर्चना सिंह भदौरिया, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गणित एवं सांख्यिकी विभाग, को यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।
- डॉ. स्मृति मल्ल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग को यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।
- डॉ. अम्बरीज़ कुमार श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग को यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।
- डॉ. विनीत कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग को यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।
- डॉ. उदयभान सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग को यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।
- डॉ. राम प्रताप यादव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग को यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।
- डॉ. प्रदीप कुमार राव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।
- डॉ. सर्वेश कुमार पाण्डेय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, यू.जी.सी., नई दिल्ली द्वारा **स्टार्टअप योजना** के अन्तर्गत **दस लाख का अनुदान** प्राप्त हुआ है।

विश्वविद्यालय के निम्नलिखित 13 नव-नियुक्त शिक्षकों को स्टार्ट-अप ग्रान्ट के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा चयनित किया गया है-

- डॉ. प्रीती गुप्ता, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग।
- डॉ. गीता सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग।
- डॉ. सीमा मिश्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग।
- डॉ. आलोक कुमार चौधारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग।
- डॉ. आलोक कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग।
- डॉ. अंत्रज़ कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग।
- डॉ. राजन वालिया, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग।

- डॉ. दीपाश शेखर सैनी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग।
- डॉ. प्रशान्त शाही, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग।
- डॉ. कृपामणि मिश्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग।
- डॉ. दीपेन्द्र शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग।
- डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग।
- डॉ. मणिन्द्र कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग।

नव-नियुक्त सहायक आचार्यों को डीएसटी इंस्पायर फेलोशिप/प्रोजेक्ट प्राप्त-

* डॉ. प्रशान्त शाही, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग को डीएसटी प्रोजेक्ट।

* डॉ. निखिल कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग को डीएसटी इंस्पायर फेलोशिप।

* डॉ. आलोक कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग को डीएसटी इंस्पायर फेलोशिप।

* डॉ. सचिन कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग को डीएसटी इंस्पायर फेलोशिप।

* डॉ. विमलेन्दु अधिकारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विभाग को डीएसटी इंस्पायर फेलोशिप।

16. नव-नियुक्त शिक्षकों को अवार्ड एवं उपलब्धि-

* **नवनियुक्त सहायक आचार्य डॉ. प्रशान्त शाही लीथियम आयन बैटरी के विकास के लिए इस वर्ष का नोबल पुरस्कार पाने वाले वैज्ञानिक प्रो. जॉन वी गुडइन्फ के साथ शोध करते हुए उन्होंने शोध-पत्र लिखा था, जो प्रतिष्ठित जर्नल 'प्रोसीडिंग्स ऑफ नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस' में 2018 में प्रकाशित है।**

* **ललित कला एवं संगीत विभाग के नवनियुक्त सहायक आचार्य डॉ. शुभांकर डे को 'यंग अचीवर्स अवार्ड' मिला है।**

* नव-नियुक्त **प्रोफेसर डॉ. राजर्षि कुमार गौर, बायोटेक्नोलॉजी विभाग** को अभी हाल में **प्रो. बी.एम. जौहरी मेमोरियल अवार्ड** मिला है।

17. विश्वविद्यालय का NAAC से मूल्यांकन-

इस विश्वविद्यालय का **NAAC से 2005 में मूल्यांकन कराये जाने के पश्चात्** अभी तक मूल्यांकन लम्बित रहा। विश्वविद्यालय में शिक्षक संवर्ग में चयन हो जाने के पश्चात् अब

इस कार्य में तेजी लायी गयी है। विश्वविद्यालय द्वारा नैक को **Institutional Information for Quality Assessment (IIQA)** ऑनलाइन प्रस्तुत कर दिया गया है, जो स्वीकार कर लिया गया है। शीघ्र ही **Self Study Report (SSR) NAAC** को प्रस्तुत किया जायेगा।

18. विश्वविद्यालयों द्वारा कार्पोरेट सोशल रेस्पोन्सेबिलिटी के अन्तर्गत उद्योग जगत से सहयोग प्राप्त करना-

उद्योग जगत एवं विश्वविद्यालय के बीच विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग स्थापित करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा **चैम्बर ऑफ इंडस्ट्रीज** तथा **विशिष्ट उद्यमियों** के साथ वार्ताओं और संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा है। **विश्वविद्यालय की University & Industry Cell के द्वारा कारपोरेट सोशल रिस्पांसबिलिटी के अंतर्गत उद्योग जगत से सहयोग प्राप्त करने के लिए नए सिरे से निर्देश दिए गए हैं।**

'फोर्ब्स लिस्टेड कम्पनी गैलेंट इस्पात लिमिटेड तथा इंडिया ग्लाइकोल ने इस संबंध में रुचि प्रदर्शित करते हुए विश्वविद्यालय से संभावित परियोजना का विस्तृष्टत विवरण मांगा था, जिसे प्रेषित किया गया है।'

विश्वविद्यालयों में कार्पोरेट सोज़ल रेस्पोन्सेबिलिटी के अन्तर्गत निम्नलिखित अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य-

(1) जैविक खेती

(2) जैविक कीटनाशक

(3) कीट प्रबन्धन

(4) वर्मी कम्पोस्टिंग द्वारा जैविक अपशिष्ट प्रबन्धन

(5) मलिन बस्तियों में स्वच्छता तथा कुरीतियों के प्रति जागरुकता

(6) बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ समाजशास्त्र विभाग, राष्ट्रीय सेवा योजना/एन.सी.सी. द्वारा भोजन पैकेट, दवायें तथा दैनिक उपयोग की सामग्रियों का वितरण।

19. विश्वविद्यालय द्वारा टी.बी. ग्रस्त मरीजों को गोद लिया जाना-

विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं अधिकारियों द्वारा गोरखपुर जनपद के **15 टी.बी. ग्रस्त मरीजों को गोद लिया गया** है। गोद लिये गये **मरीजों को दवाइयाँ, फल एवं नकद धनराशि दी गयी**। गोद लिये गये मरीजों को उनके रोगमुक्त होने तक शिक्षकों एवं अधिकारियों द्वारा पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान की जायेंगी। विश्वविद्यालय के अन्य शिक्षकों द्वारा टी.बी. मरीजों को

गोद लिये जाने की कार्यवाही चल रही है।

20. विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों द्वारा गोद लिये गये गांव-

इस विश्वविद्यालय के **राष्ट्रीय सेवा योजना** द्वारा **उन्नत भारत अभियान योजना** के अन्तर्गत गोरखपुर जनपद के निम्नलिखित गाँवों को गोद (Adopt) लिया गया है :-

1. ग्राम पंचायत-बैजनाथपुर, क्षेत्र पंचायत-चरगांवा, जनपद-गोरखपुरः- स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण जागरूकता कार्य।
2. ग्राम पंचायत-सरहरी, क्षेत्र पंचायत-जंगल कौड़िया, जनपद-गोरखपुरः- शिक्षा, नारी सज़क्तिकरण तथा स्वच्छता जागरूकता कार्य।
3. ग्राम पंचायत-बालापार, क्षेत्र पंचायत-चरगांवा, जनपद-गोरखपुरः- जल जनित बीमारियों, स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा कौशल विकास जागरूकता कार्य।
4. ग्राम पंचायत-जंगल अखलाश कुंवर, क्षेत्र पंचायत-पिपरौली, जनपद-गोरखपुरः- कुपोष्ठाण, स्वास्थ्य, स्व-रोजगार जागरूकता कार्य।
5. ग्राम पंचायत-ककराखोर, क्षेत्र पंचायत-पिपरौली, जनपद-गोरखपुरः- स्कूल चलो जागरूकता, जल प्रबन्धन, वित्तीय साक्षारता जागरूकता कार्यक्रम।

उपर्युक्त सभी योजनाओं के साथ-साथ ग्रामवासियों को उनके कौशल विकास तथा बेहतर जीवन प्रणाली के लिए स्वरोजगार हेतु उन्हें फूल की खेती, बकरी पालन, मत्स्य पालन, मूर्गी पालन, मधुमक्खी पालन पशु पालन, बत्तक पालन, रेशम कीट पालन, मोमबत्ती तथा अगरबत्ती उद्योग लगाने हेतु प्रशिक्षित किया जा रहा है।

गोद लिए गये गाँव में स्वास्थ्य तथा शिक्षा के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवको निम्नलिखित योजनाओं पर कार्य किया जा रहा है :-

1. स्वच्छता जागरूकता-खुले में शौच मुक्त, नालियों तथा पोखरों की सफाई।
2. स्वास्थ्य जागरूकता- मानसिक रोग, कुपोषण, मद्यपान एवं तम्बाकू निषेध आदि जाकरूकता कार्यक्रम।
3. वित्तीय साक्षरता जागरूकता-भीम ऐप, मोबाइल बैंकिंग के प्रयोग हेतु प्रशिक्षण।
4. **स्व-रोजगार जागरूकता- फूल की खेती, बकरी पालन, मत्स्य पालन, मूर्गी पालन, मधुमक्खी पालन पशु पालन, बत्तक पालन, रेशम कीट पालन, मोमबत्ती तथा अगरबत्ती उद्योग लगाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम।**
5. पर्यावरण संरक्षण-वृक्षारोपण एवं प्रदूषण जागरूकता।

6. नारी सशक्तिकरण-बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जागरूकता कार्यक्रम।

7. स्कूल चलो जागरूकता

8. अपशिष्ट प्रबन्धन-जैविक खाद उत्पादन।

9. जल प्रबन्धन

21. छात्रावासों में मेस का संचालन-

विश्वविद्यालय के **पुरुष छात्रावासों में प्रारम्भ (1958) से ही मेस संचालन की व्यवस्था नहीं थी।** वर्तमान **सत्र 2019-20 से** छात्रावासियों एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के संयुक्त सहयोग से समस्त पुरुष छात्रावासों में **प्रथम बार मेस का संचालन किया जा रहा है।** मेस संचालन के लिए शुल्क का निर्धारण भी छात्रावासियों से वार्ता के आधार पर किया गया है, जो प्रति छात्रावासी रु. 22000.00 प्रति वर्ष है।

22. पढ़े गोरखपुर, बढ़े गोरखपुर-

माननीया राज्यपाल/कुलाधिपति महोदया की प्रेरणा से विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय, सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं जिला प्रशासन के सहयोग से दिनांक 18 दिसम्बर, 2019 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 11.45 बजे तक 'पढ़े गोरखपुर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उच्च शिक्षा से 1,25,000, प्राथमिक शिक्षा से 1,75,000 और माधयमिक शिक्षा से 5,50,000 विद्यार्थियों द्धकुल 8,50,000ऋ ने 'पढ़े गोरखपुर' कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिभाग किया और अपने रुचि के अनुसार विभिन्न पुस्तकें पढ़ीं।

23. स्टूडियो एवं मीडिया सेल का गठन-

विश्वविद्यालय की सभी महत्वपूर्ण शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों की रिकार्डिंग और बुलेटिन तैयार करने के लिए विश्वविद्यालय में स्टूडियो एवं मीडिया सेल का गठन किया गया है। बड़े कार्यक्रम एवं गतिविधियों की सजीव प्रसारण विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर किया जायेगा। स्टूडियो एवं मीडिया सेल के उत्कृष्ट संचालन हेतु आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से भी अनुबन्ध करने की दिशा में सार्थक प्रयास किया जा रहा है, जहाँ प्रतिदिन निश्चित समय पर विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों का प्रसारण किया जायेगा।

24. GeM के माध्यम से सामग्रियों का क्रय-

विश्वविद्यालय में सामग्रियों का पारदर्शी तरह से क्रय भारत सरकार के **Government e-Marketplace (GeM)** पोर्टल के माध्यम से किया जा रहा है।

25. RTGS के माध्यम से भुगतान का शुभारम्भ-

दिनांक 08 सितम्बर, 2017 को विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन स्थित कमेटी कक्ष के पुनः सुसज्जित होने पर **कमेटी कक्ष का लोकार्पण** एवं **विश्वविद्यालय** द्वारा **RTGS के माध्यम से भुगतान** करने का **शुभारम्भ डॉ. दिनेश शर्मा, माननीय उप मुख्यमंत्री एवं मंत्री, उच्च शिक्षा**, उत्तर प्रदेश के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

26. खेल-कूद में विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ-

* दिनांक 26-28 मई, 2017 तक **चीन के हांगकांग** में आयोजित **एशियन जूडो चैम्पियनशिप-2017 में इस विश्वविद्यालय के छात्र श्री विजय कुमार ने पांचवाँ स्थान हासिल किया।**
* दिनांक 24-30 जून, 2017 को **दक्षिण कोरिया** में आयोजित **विश्व ताइक्वान्डो चैम्पियनशिप-2017** में विश्वविद्यालय की **छात्रा सीमा कन्नौजिया ने पांचवाँ स्थान प्राप्त किया।**
* दिनांक 19-30 अगस्त, 2018 को **ताइपे, चीन** में आयोजित **वर्ल्ड यूनिवर्सिटी ताइक्वान्डो चैम्पियनशिप-2017** में विश्वविद्यालय की छात्र **सीमा कन्नौजिया ने प्रतिभाग किया।**
* अगस्त, 2017 में **बुडापेस्ट, हंगरी** में आयोजित **वर्ल्ड सीनियर जूडो चैम्पियनशिप-2017** में इस विश्वविद्यालय के छात्र **श्री विजय कुमार ने प्रतिभाग किया।**
* अप्रैल, 2018 में **ललितपुर, नेपाल** में आयोजित **दक्षिण एशिया चैम्पियनशिप-2018** में इस विश्वविद्यालय के छात्र **श्री विजय कुमार ने गोल्ड मेडल प्राप्त किया।**
* अगस्त, 2018 में **जकार्ता, इन्डोनेशिया** में आयोजित **18वाँ एशियन गेम-2018** में इस विश्वविद्यालय के **जूडो खिलाड़ी श्री विजय कुमार की टीम ने पांचवाँ स्थान प्राप्त किया।**
* नवम्बर, 2018 में **जयपुर** में आयोजित **कामनवेल्थ जूडो चैम्पियनशिप-2018** में विश्वविद्यालय के जूडो खिलाड़ी **श्री विजय कुमार ने गोल्ड मेडल प्राप्त किया।**
* नवम्बर, 2018 में **जयपुर** में आयोजित **एशियन जुडो ओपन हांग-कांग-2018** में विश्वविद्यालय के **जूडो खिलाड़ी श्री विजय कुमार ने ब्रांज मेडल प्राप्त किया।**
* दिनांक 22 से 24 दिसम्बर, 2019 तक छात्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर में आयोजित **अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय जूडो प्रतियोगिता में** इस विश्वविद्यालय की छात्रा **तुलिका मान ने 78 किलोभार वर्ग में स्वर्ण पदक**

हासिल किया।

* **कामनवेल्थ जूडो चैम्पियनशिप 2019** में **श्री विजय कुमार यादव** ने **स्वर्ण पदक** प्राप्त किया।
* **अखिल भारतीय अन्तरविश्वविद्यालय फ्री स्टाइल कुश्ती प्रतियोगिता** में **आयुष कुमार** ने पदक जीता।
* **13वें दक्षिण एशियाई खेलों** में **श्री विजय कुमार यादव एवं तूलिका मान** ने **स्वर्णपदक** जीता।
* **2020 ओलम्पिक क्वालीफाइंग इवेंट व एशियाई जूडो ओपन हांग-कांग-2019** में भी **श्री विजय कुमार यादव एवं तूलिका मान** दोनों खिलाड़ियों ने **कांस्य पदक** जीता।

27. युवा महोत्सव में विश्वविद्यालय की उपलब्धियाँ-

* **महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी** में आयोजित **उत्तर प्रदेश अन्तर विश्वविद्यालय युवा महोत्सव** में इस विश्वविद्यालय ने **03 स्वर्ण पदक, 03 रजत पदक, 02 कांस्य पदक सहित कुल 08 पदक** प्राप्त करते हुए **ओवर ऑल चैंपियन** का खिताब अपने नाम किया।
* **ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार** में आयोजित **34वां पूर्वी क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय युवा महोत्सव** में इस विश्वविद्यालय ने **06 स्वर्ण पदक, 01 रजत पदक एवं 02 कांस्य पदक** प्राप्त किया।
* **चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली, पंजाब** में आयोजित **34वां अंतर विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव** में इस विश्वविद्यालय ने **03 रजत पदक, 01 कांस्य पदक, 01 सांत्वना पदक सहित कुल 05 पदक** प्राप्त किया।
* सत्र 2018-19 युवा महोत्सव के सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि का सत्र है। अभी तक के युवा महोत्सव में विश्वविद्यालय का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रहा है।

28. प्रयोगशालाओं जीर्णोद्धार एवं 05 नये प्रयोगशालाओं का निर्माण-

इस **विश्वविद्यालय का संचालन 1956 में प्रारम्भ हुआ।** विश्वविद्यालय के ज्यादातर भवन उसी समय के हैं। प्रयोगशालाओं की दशा जर्जर अवस्था में है और इनके जीर्णोद्धार कराया गया, जो पूर्ण हो चुका है। वर्तमान आवश्यकता को देखते हुए **05 नये प्रयोगशालाओं का निर्माण कराया गया,** जिसमें **नैनो साइंस एवं नैनो टेक्नोलॉजी** के प्रयोगशाला भी शामिल हैं।

29. परिसर के मुख्य द्वार पर 100 फीट ऊँचे राष्ट्रीय ध्वज की स्थापना-

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर प्रदेश का ऐसा **पहला विश्वविद्यालय** है, जहाँ मुख्य द्वार पर जे.सी.आई., मिड टाउन, गोरखपुर संस्था के सहयोग से 100 **फीट ऊँचे राष्ट्रीय ध्वज** लगाया गया है, जिसका **लोकार्पण माननीय मुख्यमंत्री जी के कर-कमलों द्वारा** किया गया है।

30. पं. दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा का अनावरण-

दिनांक 24 सितम्बर, 2017 को **माननीय कुलाधिपति/श्री राज्यपाल, उ.प्र. श्री राम नाईक** एवं **माननीय मुख्यमंत्री श्री महन्त श्री योगी आदित्यनाथ जी** के करकमलों द्वारा **पं. दीनदयाल उपाध्याय** की **भव्य प्रतिमा का अनावरण** विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के सम्मुख किया गया। इस अवसर पर **डॉ. अरविन्द कुमार दीक्षित, कुलपति-डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा** एवं **श्री जगदीश उपासने, समूह सम्पादक पांचजन्य एवं आर्गेनाइजर, नई दिल्ली** भी उपस्थित रहे।

31. भवन निर्माण-

1. महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ शोधपीठ भवन का निर्माण-

दिनांक 30 नवम्बर, 2018 को **महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ भवन निर्माण का शिलान्यास** एवं **योग-संगम** के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ भवन निर्माण का शिलान्यास **मुख्य अतिथि महन्तश्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय मुख्यमंत्री, उ.प्र.** एवं **विशिष्ट अतिथि, प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह,** अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के कर-कमलों द्वारा किया गया।

2. नेपाली छात्रवास का निर्माण-

विश्वविद्यालय परिसर में पुरुषों के लिए नेपाली छात्रावास का निर्माण कराया जा रहा है, जो लगभग पूर्ण हो चुका है।

3. रोवर्स-रेंजर्स भवन का निर्माण-

रोवर्स-रेंजर्स के लिए बहुत दिनों से एक भवन की आवश्यकता थी। इसकी आवश्यकता को देखते हुए **रोवर्स-रेंजर्स भवन का निर्माण कराया जा रहा है**, जो शीघ्र ही पूर्ण हो जायेगा।

4. 02 महिला छात्रवासों का निर्माण-

परिसर में **02 महिला छात्रवासों का निर्माण कार्य चल रहा है**, जिसे शीघ्र ही पूर्ण कर लिया जायेगा।

5. ऑन लाइन प्रवेश प्रकोष्ठ भवन का निर्माण-

ऑन लाइन प्रवेश परीक्षा सम्पन्न कराने के लिए विश्वविद्यालय के पास अतिरिक्त भवन एवं कम्प्यूटर आदि की व्यवस्था नहीं थी। इसे ध्यान में रखकर परिसर में **ऑन लाइन प्रवेश प्रकोष्ठ भवन का निर्माण** कराया जा रहा है।

6. प्रशासनिक भवन का विस्तार-

प्रशासनिक भवन का विस्तारीकरण किया गया है, जिसमें वित्त विभाग का कार्य सम्पन्न हो रहा है।

32. एक मेगावाट क्षमता का सोलर पावर प्लांट की स्थापना-

26 अक्टूबर, 2018 को 37वें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर 01 **मेगावाट क्षमता के सोलर पावर प्लांण्ट** का **लोकार्पण माननीय कुलाधिपति महोदय के कर-कमलों द्वारा** किया गया। यह विश्वविद्यालय देज़ का पहला राज्य विश्वविद्यालय है, जहां सोलर पावर प्लांण्ट के माध्यम से 01 मेगावाट विद्युत का उत्पादन किया जा रहा है। इससे **विश्वविद्यालय की प्रति माह रू. 8.00 से 9.00 लाख की बचत हो रही है।**

पर्यावरण संरक्षण एवं उर्जा बचत हेतु पारम्परिक उपकरणों के स्थान पर LED का प्रयोग विश्वविद्यालय परिसर में किया जा रह है।

33. विश्वविद्यालय परिसर का सौन्दर्यीकरण-

विश्वविद्यालय के शैक्षिक परिसरों का सौंदर्यीकरण- **Clean, Green Campus** कराने के लिए **Public Private Partnership** के अन्तर्गत पार्कों को औद्योगिक एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों द्वारा गोद लिये जाने हेतु नियमावली तैयार की गयी है, जिसके अनुसार परिसर को **Clean and Green** करने के लिए विश्वविद्यालय एवं औद्योगिक प्रतिष्ठानों से MoU हुआ है। परिसर के विभिन्न स्थलों का सौंदर्यीकरण किया जा रहा है।

इस वर्ष 712 पौधरोपण किया गया, जिसमें पीपल, बरगद, नीम, अशोक, सेमर, अजुन, गुलमोहर, गूलर, अमलताश, कदम, आँवला, सीशम आदि विशेष रूप से हैं।

34. परिसर में प्रथम बार महिला शौचालयों का निर्माण-

पूरे विश्वविद्यालय परिसर में कोई भी महिला शौचालय नहीं था। जबकि यहाँ **12 हजार से अधिक विद्यार्थी हैं,** जिसमें **छात्राओं की संख्या 70 प्रतिशत** है। इस वर्ष **कुल स्वर्ण पदक पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या** 131 है, जिसमें से **छात्राओं की संख्या** 107 है। छात्राओं की अधिकता होने के बावजूद भी इस विश्वविद्यालय में महिला शौचालय नहीं था। इस समस्या के दृष्टिगत पुरुष एवं महिलाओं के लिये **90 शौचालयों का निर्माण कराया गया, जो शीघ्र ही प्रयोग में लाया जायेगा। छात्रावासों एवं परिसर में लगभग 250 शौचालयों की दशा जर्जर अवस्था में थे, जिनका जीर्णोद्धार किया गया।**

35. दीक्षान्त समारोह का आयोजन-

1. 19 दिसम्बर, 2017 को **36वाँ दीक्षान्त समारोह** आयोजन हुआ, जिसके **मुख्य अतिथि** प्रतिष्ठित वैज्ञानिक **प्रो. जयंत विष्णु नार्लीकर (Founder Director, IUCAA) थे तथा अध्यक्षता माननीय कुलाधिपति/श्री राज्यपाल श्री राम नाईक जी** ने की थी।
2. 26 अक्टूबर, 2018 को **37वाँ दीक्षान्त समारोह** आयोजन हुआ, जिसके **मुख्य अतिथि** ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक **प्रो. कै. शिवन, Chairman, Indian Space Research Organization (ISRO)** थे तथा **अध्यक्षता माननीय कुलाधिपति/श्री राज्यपाल श्री राम नाईक जी** ने की थी।
3. 23 अक्टूबर, 2019 को **38वाँ दीक्षान्त समारोह** आयोजन हुआ, जिसके **मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, प्रो. डी.पी. सिंह जी** थे तथा **अध्यक्षता माननीया कुलाधिपति/श्री राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी** ने की थी।

36. संगोष्ठी/वर्कज़ाप का आयोजन-

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में **विगत ढाई वर्षों में महत्वपूर्ण विषयों** पर **90 से अधिक सेमिनार एवं वर्कशाप** आयोजित किये गये।

37. सम्मान एवं पुरस्कार-

* उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा रसायनशास्त्र विभाग के आचार्य **प्रो. एस.के. सेनगुप्ता** को वर्ष 2017 में उनके शिक्षण एवं शोधकार्य के विशेष योगदान के लिए **शिक्षकश्री सम्मान** से सम्मानित किया गया।

* **प्रो. ओ.पी. पाण्डेय,** रसायनशास्त्र विभाग को वर्ष 2018 में उनके शिक्षण एवं शोध कार्य के विशेष योगदान के लिए **शिक्षकश्री सम्मान** से सम्मानित किया गया।

* ललित कला एवं संगीत विभाग के कृतकार्य अध्यक्ष एवं आचार्य **प्रो. राजेश्वर आचार्य को भारत सरकार ने पद्मश्री से अलंकृत किया है।**

* **इसी विभाग के आचार्य रहे प्रो. मनोज कुमार सिंह को वर्ष 2018 का उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का कला भूषण सम्मान मिला है।**

* इसी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के कृतकार्य आचार्य **प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी** को साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने इस वर्ष **'महत्तर सदस्यता सम्मान'** से अलंकृत किया है।

* विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष, **प्रो. मुरली मनोहर पाठक** को उनके द्वारा संस्कृत विद्या के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये महनीय कार्यों के लिए 27 मई, 2019 को **हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज** द्वारा **महामहोपाध्याय की मानद उपाधि** से सम्मानित किया गया।

* **प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी,** पूर्व अधिष्ठाता, कला संकाय, (नव-नियुक्त कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश) को दिनांक 30 दिसम्बर, 2019 को **उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार** से **सम्मानित किया गया।**

*****

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर : स्थापना एवं विकास-यात्रा

प्रो. विनोद कुमार सिंह

आजाद भारत में उत्तर प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय महायोगी गुरुश्रीगोरखनाथ की तपस्थली गोरखपुर में स्थापित हुआ। उल्लेख्य है कि महायोगी गोरखनाथ के ही नाम पर इस नगर का नाम गोरखपुर पड़ा। गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर नाम से विश्वविद्यालय की स्थापना हुयी। आज यह विश्वविद्यालय प्रसिद्ध राजनीतिक चिंतक, एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के नाम पर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के नाम से प्रतिष्ठित है। गोरखपुर में उच्च शिक्षा के इस प्रतिष्ठित केन्द्र की स्थापना शिवावतरी गुरुश्री गोरखनाथ एवं श्री गोरक्षपीठ के आशीर्वाद का प्रतिफल था।

भारत को आजादी मिलने के समय तक पूर्वी उत्तर प्रदेश में भारत केन्द्रित उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी। 1916 ई. मे महामना मदन मोहन मालवीय जी द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना ब्रिटिश शिक्षापद्धति के समानान्तर भारतीय संस्कृति एवं भारतीय समाज के अनुरूप उच्च शिक्षा पद्धति के विकास का एक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न था। इसी प्रकार मिशनरी विद्यालयों के समानान्तर भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि से विकसित होने वाली शिक्षा व्यवस्था की नींव तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने 1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के रूप में डाली।

भारत को जब आजादी मिली उस समय तक गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा तक के शिक्षण संस्थान खड़े किए जा चुके थे।

अध्यक्ष, शिक्षक-संघ, आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर-273009 उ.प्र.

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की स्थापना हो चुकी थी और महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की उच्च शिक्षा की परिकल्पनाओं को साकार करते हुए ये महाविद्यालय संचालित हो रहे थे। उल्लेखनीय है कि महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय आजाद भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक मात्र पहला महिला महाविद्यालय था। यद्यपि कि अमेरिकन मिशनरी के प्रयत्न से पूर्व से डिग्री कॉलेज के रूप में सेन्ट एन्ड्रयूज कॉलेज संचालित था और भारतीय संस्कृति से इसका कोई लगाव नहीं था।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में महामना मदन मोहन मालवीय के साथ गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ब्रिटिश राज में ही भारतीय संस्कृति के अनुरूप भारतीय शिक्षा पद्धति का खाका बुन रहे थे तथा शिक्षण संस्थानों की नींव रख रहे थे। गोरखपुर में दो महाविद्यालयों की स्थापना कर चुके महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज विश्वविद्यालय स्थापित करने का स्वप्न संजो चुके थे। गोरखपुर नगर के लगभग सभी प्रतिष्ठित एवं बड़े लोग उनके निकट सहयोगी थे। भाईजी हनुमान प्रसाद पोद्दार, सरदार सुरेन्द्र सिंह मजीठिया, श्री बब्बन मिश्र, श्री मधुसूदन दास, डॉ. सिंहासन सिंह, डॉ. एच.पी. शाही (सभी गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थापना-समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य) इत्यादि सभी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के पदाधिकारी एवं सदस्य थे। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने आजादी मिलते ही विश्वविद्यालय स्थापना का स्वप्न साकार करने के प्रयत्न प्रारम्भ कर दिए। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष डॉ. सर सुरेन्द्र सिंह मजीठिया एवं सदस्य भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार के साथ उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पन्त तथा शिक्षामंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द से मिलकर गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव रखा तथा सहमति प्राप्त की। त्तपश्चात् उत्तर प्रदेश के शिक्षामंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द गोरखपुर आए और श्री गोरखनाथ मन्दिर पहुँचे। इस अवसर पर जिलाधिकारी के रूप में श्री सुरति नारायण मणि त्रिपाठी भी उपस्थित थे। महन्त जी के साथ बात-चीत करते हुए डॉ. सम्पूर्णानन्द ने कहा कि 'यदि आप विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु प्राभूत धनराशि का प्रबन्ध कर लें तो प्रदेश सरकार यहाँ विश्वविद्यालय खोलने को तैयार है। मुख्यमंत्री श्री गोविन्द बल्लभ पन्त ने 25 लाख रूपया अथवा सम्पत्ति (भूमि-भवन) उपलब्ध कराने पर गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना की बात मान ली। अब महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु पच्चीस लाख रूपये जुटाने की अपनी कठीन परीक्षा पास करनी थी। उन्होंने कर्म सन्यासी की अपनी भूमिका निभाते हुए अपने दोनों महाविद्यालय (महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय) विश्वविद्यालय

की स्थापना यज्ञ में आहुति रूप में दान कर दी। सरकार द्वारा दोनों महाविद्यालयों की भूमि-भवन की कीमत 17 लाख रूपये आँका गया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष सरदार सुरेन्द्र सिंह मजीठिया के चीनी मिल के सीरे का 8 लाख रूपया मिलाकर महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा 25 लाख रूपये की मांग पूरी कर दी गई। तथ्य स्पष्ट है कि महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के दोनों महाविद्यालय यदि अपनी सारी सम्पत्ति सहित स्थापित होने वाले विश्वविद्यालय में विलीन न हुआ होता तो गोरखपुर में विश्वविद्यालय स्थापित करने की कल्पना पता नहीं कब साकार होती, होती भी या नहीं। कहना न होगा कि श्री गोरक्षपीठ के महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोरखपुर को पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक बड़ा शैक्षिक केन्द्र बनाया और गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर की स्थापना के प्रमुख सूत्रधार बनें।

गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होते ही नगर के सम्भ्रान्त नागरिकों की विश्वविद्यालय संस्थापना समिति का गठन हुआ। त्तकलीन जिलाधीश श्री सुरति नारायण मणि त्रिपाठी समिति के अध्यक्ष बनाए गए। महन्त दिग्विजयनाथ (मंत्री- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्), सरदार सुरेन्द्र सिंह मजीठिया (अध्यक्ष-महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्) उपाध्यक्ष बने। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सदस्य श्री मधुसूदन दास इस समिति के प्रधान-मंत्री बनाए गए। भाईजी हनुमान प्रसाद पोद्दार, डॉ. हरिप्रसाद शाही, श्री बब्बन मिश्रा, ठाकुर सिंहासन सिंह, श्री लक्ष्मीशंकर वर्मा, श्री पुरुषोत्तम दास रईस (सभी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सदस्य) विश्वविद्यालय संस्थापना समिति के सदस्य बने। श्री हरिहर प्रसाद दूबे, डॉ. सी.जे. चाको को इस समिति का मंत्री बनाया गया। श्री केशव प्रसाद श्रीवास्तव, श्री जगदम्बा प्रसाद, श्री रामनारायन लाल, श्री सुखदेव प्रसाद, श्री प्रसिद्ध नारायण मिश्र, श्री परमेश्वरी दयाल, डॉ. केदार नाथ लाहड़ी, श्री महादेव प्रसाद, राय राजेश्वरी प्रसाद, श्री कमलाकान्त नायक, श्री वशिष्ठ नारायण, खाँ बहादुर मुहम्मद जकी, श्री कैलाश चन्द्र बाजपेयी भी इस समिति के सदस्य बनाए गए।

विश्वविद्यालय संस्थापना की सभी औपचारिकताएँ पूर्ण होने के साथ 01 मई 1950 ई. को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री गोविन्द बल्लभ पंत ने गोरखपुर विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया और गोरखपुर विश्वविद्यालय को स्वतन्त्र भारत में स्थापित उत्तर प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त हुआ। प्रारम्भ में इस विश्वविद्यालय को ग्राम्य विश्वविद्यालय बनाने की योजना थी। लगभग 5-6 वर्ष तक विश्वविद्यालय के स्वरूप पर गहन विचार-विमर्श

चला। इसी बीच नजुल की लगभग 169.77 एकड़ भूमि का हस्तान्तरण विश्वविद्यालय के नाम हो गया। मई 1956 ई. में उत्तर प्रदेश की विधान सभा द्वारा गोरखपुर विश्वविद्यालय अधिनियम पारित हुआ तथा अगस्त 1956 ई. से प्रभावी हो गया। 1957 ई. तक 'पन्त ब्लाक' एवं 'नाथचन्द्रावत' छात्रावास का भवन बनकर तैयार हो गया। 11 अप्रैल 1957 ई. को श्री बी.एन. झा इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति बने। 01 सितम्बर 1957 ई. को स्नातकोत्तर स्तर के छः विषयों में कक्षाएं प्रारम्भ हुई। कला एवं विज्ञान के स्नातक स्तर के 22 विषयों की पढ़ाई जुलाई 1958 ई. में आरम्भ हो गयी। इस प्रकार गोरखपुर नगर में स्थापित यह विश्वविद्यालय वाराणसी से उत्तर एवं लखनऊ से पूरब उत्तर प्रदेश के विस्तृत क्षेत्र एवं नेपाल के तराई क्षेत्र के युवाओं की उच्च शिक्षा का एक प्रतिष्ठित केन्द्र बना। गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से 1959 ई. में प्रथम बैच निकला। विज्ञान विषयों में विद्यार्थियों का प्रथम वर्ग 1960 ई. में उत्तीर्ण होकर निकला। 1966 ई. तक 45 डिग्री कॉलेज गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त कर चुके थे। 1975 ई. में अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद की स्थापना के साथ गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों का एक हिस्सा अवध विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो गया। 1989 ई. में पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर की स्थापना कर सरयू नदी के दक्षिण के जनपदों के महाविद्यालयों को उससे सम्बद्ध कर दिया गया। 1997 ई. में विश्वविद्यालय अधिनियम में संशोधन कर इस विश्वविद्यालय का नाम एकात्म मानवत्राद के प्रणेता प्रतिष्ठित राजनीतिक-सामाजिक विचारक दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर कर दिया गया और यह विश्वविद्यालय दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के नाम से जाना जाने लगा। अभी 2015 ई. में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु की स्थापना हुयी है और बस्ती, सन्तकबीरनगर, सिद्धार्थनगर, महराजगंज के सभी महाविद्यालय नव-स्थापित विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कर दिए गए। अभी भी गोरखपुर, देवरिया तथा कुशीनगर जनपद के महाविद्यालय आज दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं। इन जनपदों के महाविद्यालयों की कुल संख्या 342 है। इनमें से 07 राजकीय महाविद्यालय, 21 अनुदानित महाविद्यालय 310 स्ववित्तपोषित तथा घटक महाविद्यालय (मेडिकल कालेज, डेन्टल कालेज, नर्सिंग कालेज तथा फिजियोथेरैपी कालेज) हैं।

गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर तक की विकास यात्रा में अब तक 37 कुलपतियों के कर्मठता से विश्वविद्यालय परिसर की अकादमिक यात्रा भी उत्कृष्टता की ओर उत्तरोत्तर विकसित होती गयी। युग पुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजय नाथ जी महराज गोरखपुर विश्वविद्यालय के आकार देने तक

महराज जी की भूमिका अद्वितीय रही है। इस बारे में अधिकांश जो इस विश्वविद्यालय के कुलपति रहे एवं विद्वतजन द्वारा जो बाते कही गई है वे बाते उदघृत कर रहा हूँ।

1. गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा 1948 ई. में स्थापित महाराणा प्रताप महाविद्यालय में मैं गणित का प्रवक्ता नियुक्त हुआ। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने अपने दोनों महाविद्यालय– महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय– दान में दे दिया। सम्पूर्ण भूमि, भवन, सम्पति, विद्यार्थी, शिक्षक विश्वविद्यालय में समाहित कर दिए गये। मैं भी विश्वविद्यालय के गणित विभाग का प्रवक्ता हो गया। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा दान स्वरूप दिए गये महाविद्यालयों के बगैर विश्वविद्यालय की स्थापना असम्भव थी। आज उस परिसर में विश्वविद्यालय की पुराना वाणिज्य विभाग एवं प्रबन्धन विभाग, शिक्षा संकाय, प्रौढ़ शिक्षा विभाग तथा एक महिला छात्रावास अवस्थित है।

प्रो. यू.पी. सिंह, पूर्व कुलपति
वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

2. गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर के मालवीय हैं। महामना मदनमोहन मालवीय जी ने काशी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की तो महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना कर इस क्षेत्र में शैक्षिक क्रान्ति का सूत्रपात किया।

प्रो. रेवतीरमण पाण्डेय, पूर्व कुलपति
04 दिसम्बर 2002 ई. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

3. श्री गोरक्षपीठ के लोक–कल्याण एवं सेवा अभियान का जीता–जागता उदाहरण है उसके द्वारा संचालित शिक्षण–प्रशिक्षण, तकनीकी एवं चिकित्सा संस्थान। गोरखपुर में शिक्षा व्यवस्था के वास्तविक सूत्रधार गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में नींव के पत्थर की तरह हमेशा उनका स्मरण किया जाता रहेगा।

प्रो. प्रतिमा अस्थाना, पूर्व कुलपति
10 दिसम्बर 1989 ई. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

4. गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका जग-जाहिर है। विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद में नामित सदस्य के माध्यम से महाराणा प्रताप शिक्षा परिपद का अनवरत सहयोग एवं योगदान विश्वविद्यालय को प्राप्त होता रहता है। वस्तुतः गोरखपुर विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के परिवार के सदस्य जैसा ही है। गोरखपुर विश्वविद्यालय अपने संस्थापक का सदैव ऋणी रहेगा।

प्रो. एस.एल. मलिक, पूर्व कुलपति
04 दिसम्बर 2009 ई. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

5. गोरखपुर विश्वविद्यालय संस्थापना समिति के सदस्य स्व. बब्बन मिश्र जी मेरे बाबा थे। वे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सदस्य भी थे। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के वे घनिष्ठ मित्र थे। वे बताते थे कि गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना की परिकल्पना महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की थी। उनके कहने पर सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज के पास गए थे और महन्त जी ने विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज को देने का प्रस्ताव किया। डॉ. सी.जे. चाको ने उस प्रस्ताव पर अपनी सहमति दी। किन्तु बाद में वे मुकर गए। तब महन्त जी ने महाराणा प्रताप महिला डिग्री कालेज भी देने का निश्चय किया और गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का सपना साकार हुआ।

प्रमथनाथ मिश्र, सदस्य-कार्य परिषद
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

6. गोरखपुर विश्वविद्यालय मौखिक मान्यता गोरखनाथ के पवित्र मन्दिर से ही प्राप्त हुयी थी। बात सन् 1948 की है जब नवम्बर में राज्य के शिक्षामंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द गोरखपुर आने के बाद गोरखनाथ मन्दिर गए तो (महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज) पूर्वांचल की शैक्षिणिक समस्याओं पर चर्चा करते हुए विश्वविद्यालय का प्रस्ताव उनके सम्मुख रखा। डॉ. सम्पूर्णानन्द इस बात पर राजी हुए कि यदि आप लोग पैसे का प्रबन्ध कर लें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। बाद में तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्दबल्लभ पंत ने 25 लाख रूपया जुटा लेने के बाद ही विश्वविद्यालय की मान्यता देने को कहा। इसके उपरान्त महन्त जी एक प्रस्ताव द्वारा महाराणा प्रताप डिग्री कालेज तथा महाराणा प्रताप महिला डिग्री कालेज को सारी सम्पत्ति सहित विश्वविद्यालय में विलीन होना स्वीकार कर लिया।

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पूर्व अध्यक्ष
1 अगस्त 1966 ई.पू. साहित्य अकादमी हिन्दी दैनिक

7. गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना का पूरा श्रेय महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को है। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की पहल और उनके अहर्निष प्रयत्न से ही गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हो सकी।

प्रो. सुरेन्द्र दूबे, कुलपति
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

8. महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने यदि अपने दो महाविद्यालयों सहित पूरी सम्पत्ति गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु दान न की होती तो गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का सपना अधूरा रहता। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने महन्त दिग्विजयनाथ जी के निर्देशन पर विश्वविद्यालय की स्थापना में अपना पूरा योगदान दिया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् तब से अब तक गोरखपुर विश्वविद्यालय को अपनी संस्थाओं की तरह ही संरक्षित एवं सर्वोर्धित करती रही है और कर रही है।

डॉ. श्रीकान्त दीक्षित, प्रति कुलपति
28 सितम्बर, 2018 ई. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

वर्तमान माननीय कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह से पूर्व माननीय कुलपति श्री भैरवनाथ झा, न्यायमूर्ति विन्ध्यवासिनी प्रसाद, डॉ. अविनाश चन्द्र चटर्जी, श्री मदन मोहन, रेवरेण्ड पी.जी. चाण्डी, श्री सी. बालकृष्णराव, न्यायमूर्ति गंगेश्वर प्रसाद, प्रो. देवेन्द्र शर्मा, प्रो. हरिशंकर चौधरी, श्री गिरीशचन्द्र चतुर्वेदी, प्रो. बेनी माधव शुक्ल, प्रो. विश्वम्भर दयाल गुप्त, प्रो. प्रतिमा अस्थाना, प्रो. भूमित्रदेव, प्रो. विश्वम्भर शरण पाठक, प्रो. राधेमोहन मिश्र, श्री केशवचन्द्र पाण्डेय, प्रो. रमेश कुमार मिश्र, प्रो. रेवती रमण पाण्डेय, प्रो. अरूण कुमार मित्तल, प्रो. अरूण कुमार, श्री राजीव कुमार, श्री पी.के महान्ति, प्रो. नामदेव एस. गजभिए, प्रो. एस. एल. मलिक, प्रो. प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद, प्रो. अशोक कुमार ने इस विश्वविद्यालय को निरन्तर उत्कृष्ट बनाए रखने में अपना-अपना अमूल्य योगदान दिया है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कुलपति पद पर नियुक्त होने वालो में प्रो. आर.पी. रस्तोगी (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी), प्रो. यू.पी. सिंह (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर), प्रो. एन.के. सान्याल व प्रो. आर.पी. मिश्रा (उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद), प्रो. रामअचल सिंह (डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद), डॉ. रजनीकान्त पाण्डेय (सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर), प्रो. राजेन्द्र प्रसाद (प्रो. राजेन्द्र सिंह (रजू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज) प्रमुखतः उल्लेखनीय है जिन्होंने अपने-अपने यशस्वी एवं सत्यनिष्ठ कार्यकाल से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर को प्रतिष्ठित किया। वर्तमान समय में इस विश्वविद्यालय के प्रो. सुरेन्द्र दूबे (सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु), प्रो. राजेन्द्र प्रसाद (प्रयागराज मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार), प्रो. के.एन. सिंह (उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद), प्रो. एस.पी.एम. त्रिपाठी (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश) वर्तमान में कुलपति पद पर अपनी सेवा दे रहे हैं। इस विश्वविद्यालय के ही प्रो. प्रताप सिंह (अंग्रेजी), प्रो. एन.के. सान्याल एवं प्रो. रामअचल सिंह (भौतिकी) ने उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। वर्तमान में इसी पर पर प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, प्राचीन इतिहास विभाग अपनी सेवा दे रहे हैं। गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से अवकाश प्राप्त प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी भारत वर्ष की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था, 'साहित्य अकादमी' नई दिल्ली, के अध्यक्ष का यशस्वी कार्यकाल के सभी साक्षी हैं तो हिन्दी विभाग के ही अवकाश प्राप्त प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ कार्यकारी अध्यक्ष। ध्यातव्य है कि उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ के अध्यक्ष माननीय मुख्यमंत्री, उ.प्र. हैं।

विश्वविद्यालय अपनी छः दशक की यात्रा पूरी करता हुआ पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्मशती वर्ष में पण्डित जी की जयंती के अवसर पर 12 फीट ऊँची एवं 1100 किलोग्राम वजन वाली कांस्य की एक भव्य प्रतिमा का अनावरण प्रशासकीय भवन के प्रागंण में दिनांक 24 सितम्बर, 2016 को माननीय कुलाधिपति श्री रामनाईक एवं पूज्य श्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त श्री योगी आदित्यनाथ एवं मुख्यमंत्री, उ.प्र. द्वारा किया गया। इस भव्यकृति के शिल्पी देश के विख्यात मूर्तिकार श्री उत्तम प्रचारने हैं। लगभग दो दशकों के बाद विश्वविद्यालय में सभी संवर्ग आचार्य, सहयुक्त आचार्य एवं सहायक आचार्य पर चयन प्रक्रिया पूरी करते हुए 152 सुयोग्य शिक्षकों ने विभिन्न विभागों कार्यभार ग्रहण किया। सभी प्रथम व द्वितीय चरण में नियुक्त आचार्यों, सहयुक्त आचार्यों एवं सहायक आचार्यों का स्थायीकरण हो चुका है, जिसकी वजह से परिसर में पठन-पाठन का माहौल बेहतर हुआ है। विश्वविद्यालय के कुछ विभागों के वर्षों से लम्बित प्रोन्नतियाँ मा. कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह जी द्वारा कराकर विश्वविद्यालय के इतिहास में एक ऐतिहासिक कार्य किया गया है।

माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं परम पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर ने 19 जून, 2018

को मुख्य परिसर के द्वार पर 100 फीट ऊँचे राष्ट्रध्वज का लोकार्पण किया गया। विश्वविद्यालय शोध एवं अध्ययन के क्षेत्र में अपने प्राध्यापकों के सदप्रयत्न एवं कठिन परिश्रम से राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट स्थान किया है। विज्ञान संकाय की अनुसंधानशालाओं ने देश को अनेकों वैज्ञानिक अर्पित किये हैं। कला, विधि, वाणिज्य, शिक्षा संकाय के आचार्यो ने राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने-अपने ज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय प्रतिष्ठा अर्जित की है। इसी क्रम में कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह जी के नवाचारी नेतृत्व में विश्वविद्यालय अनेक नये पाठ्यक्रमों को शुरू करने जा रहा है इसमें इसी सत्र से इटिग्रेटेड 05 वर्षीय विधि-पाठयक्रम में प्रवेश के लिए आवेदन की प्रक्रिया शुरू किया जा चुका है। इंजिनियरिंग और प्रौद्योगिकी संकाय के पाठ्यक्रमों को संचालित करने के लिए विश्वविद्यालय अपनी कार्यवाही शुरू कर चुका है।

विश्वविद्यालय में महायोगी श्रीगोरक्षनाथ के नाम पर शोधपीठ की स्थापना यथाशीघ्र होने जा रहा है। इस शोधपीठ की स्थापना से नाथ सम्प्रदाय द्वारा प्रवर्तित हठ योग साधना पूरे विश्व को प्रसारित होगी। इस कार्यपरिषद द्वारा शासित स्वायत-निकाय शोधपीठ में निदेशक के अतिरिक्त 27 शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर पदों के सृजन के स्वीकृत शासन द्वारा हो चुकी है। शासन-प्रशासन से समन्वय स्थापित करने एवं शोधपीठ के संचालन हेतु प्रो. रविशंकर सिंह, आचार्य, भौतिकी विभाग को विशेष कार्याधिकारी नियुक्त किया गया है। पंचम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस-21 जून, 2019 को महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ एवं अभिनव-दृष्टि (प्रज्ञा-प्रवाह) संगोष्ठी विषयक : योग : मानवता के भारतीय ज्ञान परम्परा का अतुल्य योगदान में मुख्य अतिथि के में रूप में परम पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्तश्री योगी आदिनाथ जी महाराज एवं माननीय मुख्यमंत्री उ.प्र. उपस्थित रहे। प्रो. डी.के. सिंह एवं डॉ. भारती सिंह द्वारा लिखित पुस्तक 'सृष्टि सृजन एवं योग का विज्ञान' का विमोचन माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. आर.एन. निर्झर तथा श्री रामाशीष जी (प्रज्ञा-प्रवाह) उपस्थित रहे।

वर्तमान कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह की मानवतायुक्त सहजता, सरलता एवं वैज्ञानिक व प्राविधिक दृष्टि से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने एक नयी दिशा प्राप्त की है। विश्वविद्यालय अपनी पूरी उर्जा एवं सृजनधर्मिता के साथ आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय को 152 प्रतिभाशाली शिक्षक प्राप्त हो गये है। इन नव-नियुक्त प्रतिभाओं के बल पर विश्वविद्यालय शोध एवं अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में नित-नूतन अध्याय लिखने को तैयार हो रहा है। पी.पी.पी. प्रारूप तहत् विश्वविद्यालय परिसर को हरा-भरा करने हेतु प्रयास शुरू किये गये जिसमें परिसर के लगभग 15 पार्को का सुन्दरीकरण किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय अत्याधुनिक तकनीक से परिपूर्ण होकर देश-दुनिया के श्रेष्ठतम विश्वविद्यालय से कदमताल पूरा करने के लिए तत्पर हैं। कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह जी के अहर्निश अथक परिश्रम तथा विश्वविद्यालय के आचार्यो, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लगन से विश्वविद्यालय का भावी कीर्तियुक्त भविष्य दिखाई देने लगा है।

*****

सुबहे-शाम, अदायें गोरखपुर

डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी

इस आलेख में हम अपने पाठकों को उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में बसे एक ऐसे नगर का दृश्यालोकन करने चल रहे है, जो कई कारणों से प्रदेश की राजधानी लखनऊ और यहाँ की सांस्कृतिक-राजधानी काशी से थोड़ा भिन्न है। यद्यपि इस शहर का नामकरण महान योगी गोरथनाथ के नाम पर है परन्तु उसकी कुछ विशेषतायें योगी गोरखनाथ के हठयोग से अलक प्रकार की है। आज को समय में इस गोरखपुर नगर के कुछ खास स्थानों में आपको रुबरु कराने चल रहे है जिनसे मुकम्मल जानकारी मिल जायेगी कि इस शहर की स्थिति लखनऊ और वाराणसी से क्यों भिन्न है। बनारस की सुबह और लखनऊ के शाम की चर्चा बहुत होती है। इन दोनों नगरों के सुबह-शाम की अपनी देश की निराली विशेषतायें है, इनके अपने अलग-अलग मिजाज है, अलग-अलग अंदाज है। लेकिन इनसे हटकर चलो उस नगर की तरफ जहाँ आज के समय में सुबह और शाम को गुजारने के लिये एक अलग ढंग की जमी और आशमाँ तैयार है। जिस आशमाँ में प्रदुषण की बारुदी गंध नहीं, ताजी हवाओं की महकता छुवन है, और जमी से तेजाबी बदबू नहीं : आँचल से उठने वाली सीधी महक है और है यहाँ के बनजोरबन की मस्ती और इसकी लयदार अदायगी। इस समय मेरे जेहन में रियाज खैराबादी की गोरखपुर नगर से तालुक्कात रखने वाली कुछ पंक्तियाँ उभर हरी है जो इस प्रकार हैं-

अवध की शाम, बनारस की सुबह के सदके
कि इक जहाँ से जुदा है अदा-एं-गोरखपुर
पुकारती है यही दिलफरे बियॉ इसकी
कि आ के हो जिसे जाया, न आए गोरखपुर।

तो चलिये आप सब लोगों को गोरखपुर नगर के बदले हालात में यहाँ के प्राकृतिक

मालती कुँज, सिद्धार्थ इन्कलेव विस्तार, एच.आई.जी.-II, 32, तारामण्डल, गोरखपुर

छटाओं और यहाँ के पार्कों की सैर सुबह और शाम के वक्त में अलग-अलग अन्दाज में करा रहे है। तो सबसे पहले चलें रामगढ़ झील की तरफ जहाँ का व्यू प्वाइन्ट (नया सबेरा) अपने दर्शकों का स्वागत करने के लिये पलक पावड़ें बिछाये स्वागतिका के रुप में खड़ा है। मन करता है कि इस झील के अतीत से भी थोड़ा सा परिचय आपका करा दें।

यह प्राकृतिक ताल इतिहासकार मोण्टगोमरी मार्टिन (सन् 1838) के समय छः मील लम्बा तथा 3 मील चौड़ा लगभग 18 वर्गमील के क्षेत्र में फैला हुआ था परन्तु आज यह सिंमटकर सात वर्ग किलोमीटर लगभग 1700 एकड़ में आ गया है। प्रख्यात इतिहासकार डॉ॰ राजबली पाण्डेय के अनुसार प्राचीनकाल में इस ताल के स्थान पर एक विशाल नगर था जो किसी ऋषि के शाप से धँस गया और उसमें जल भर जाने के कारण ताल बन गया। उनके अनुसार इस ताल के किनारे कोलियों की राजधानी रामग्राम थी। सम्भवतः इसी कारण ताल का नाम रामगढ़ ताल पड़ा। सदियों से उपेक्षित रामगढ़ ताल उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री स्व॰ वीरबहादुर सिंह के कार्यकाल में गोरखपुर नगर के रामगढ़ ताल को ही आधार बनाकर एक विशाल पर्यटन स्थल को मूर्तरूप देने के लिये एक महत्वाकांक्षी रामगढ़ परियोजना तैयार की गयी। परनतु सन् 1989 ई॰ में श्री सिंह की असामयिक मृत्यु ने गोरखपुर के इस योजना को सदा के लिये समाप्त कर दिया। फिर भी उनके सपनों में से बौध संग्रहालय, तारामण्डल और चंपादेवी पार्क तैयार हो ही गये।

कालान्तर में कल्यान सिंह के मुख्यमंत्रित्वकाल में पैडलेगंज से लगभग 3 किलोमीटर सर्किट हाउस वाले रोड पर नौकायान का निर्माण हुआ। नौका विहार पर दर्शकों के लिये कुछ नौकाओं की व्यवस्था भी की गई तथा बैठने के लिये लोहे के बड़े-बड़े बेंच भी लगवाये गये किन्तु सारी चींजे धीरे-धीरे अव्यवस्था की भेंट चढ़ गयी। न कहीं नौकाये रही ओर न बैठने के लिये बेंच। दूर-दूर तक प्रकाश की कहीं कोई व्यवस्था नहीं। शाम होते ही यह पूरा परिक्षेत्र धुप्प अँधेरे में डूब जाता था। यहाँ नौकायन के प्लेटफार्म पर चोरो, उच्चक्कों और नशेड़ियों का जमाबड़ा लगा रहता था। अलग-अलग सबेरे के समय कुछ लोग इस तरफ हवाखोरी के लिये आते रहते थे तो उनका मार्गावरोधा छुट्आ पशुओं द्वारा होता था। ताल के कीचड़ में लबालब सनी भैंसे व झील के किनारे की बँधे वाली सड़क पर मकलाते हुये रास्ता चलने वाले लोगों के कपड़ों पर अपनी पूँछ के बिजन से कीचड़ छिड़कती चलती थी। बँधे के अगल-बगल मेउड़ी, नरकट, कॉस-कूस के झाड़-झँरवाड़ बुरी तरह मार्गावरोध किये रहते थे। झंझाड़-झँरवाड़ों में से प्रायः जहरीले साँप निकलकर रास्ते पर घूमते दीख जाते थे। यह पूरा नौकायन तक का क्षेत्र पुरी तरह से गोबरपट्टी बना हुआ दुर्गम क्षेत्र बन गया था।

इस प्रकार यह झील उपेक्षा का शिकार होता गया। शहर के कई छोरों के गंदे नाले अपने बजबजोत सड़ान्ध भरे पानी इस ताल में गिराते रहे। लगभग पूरा ताल जलकुंभी से अच्छादित होता रहा। कोई ओर दुर्गंध के कारण झील का पानी धुलने को कौन कहे, देखने लायक भी नहीं रह गया था। नगरी के हृदयस्थली में बसा इतना पुराना प्रकृति की अनमोल सौगात यह ताल एक प्रकार से मृत हो उठा था लेकिन सब दिन जात न एक समान। इस ताल के भी सुदिन लौटे। ताल के प्राकृतिक विरासत और रमणीय स्थिति को देखते हुए सन् 2008 में यह नगर पर्यावरण मंच ने रैली करके इस ताल के संरक्षण हेतु नगरवासियों को जागरुक किया। फलस्वरुप तत्कालीय मण्डलायुक्त श्री पी.के. मोहन्ती ने इसके विकास हेतु एक योजना बनाकर केन्द्र सरकार को भेजा। किन्तु सरकार द्वारा योजना स्वीकृत हुई और केन्द्र सरकार इसे केन्द्रीय झील संरक्षण योजना के अन्तर्गत पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये संकल्पित हुई।

यद्यपि केन्द्र सरकार ने इस ताल के संरक्षण हेतु संकल्प लिया किन्तु इसमें कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हो रही थी। स्थिति लगभग खामोशी की चादर ओढ़ी हुई थी। इस ताल के सुन्दरीकरण में इजाफा पूज्य आदित्यनाथ योगी जी के मुख्यमंत्री बनने के बाद प्रारम्भ हुआ। योगी जी के सत्यप्रयास से इस रामगढ़ झील को आज वह मुकाम प्राप्त हो गया है जिसकी कल्पना कभी भी किसी गोरखपुरवासी ने नहीं की थी। आज इस बदले हुये हालात में इस झील के कायाकल्प को देखकर हर वह व्यक्ति चौक कर यही कहता है जिसे हमने पन्द्रह वर्ष पहले देखा था। क्या वही ताल है। आइये आपको हम पैडलेगंज से नौकाविहार केन्द्र और उसके आगे तक ताल की परिक्रमा करा रहे है। पैडलेगंज से आगे बढ़ने पर जहाँ वर्षा पहले आपको बदबू से नाक पर रुमाल लगाना पड़ता था, अब वह स्थिति बदल गई है। अगर आप अप्रैल–मई के महीने में पैडलेगंज से आगे ताल की छवि निहारेंगे तो आपका स्वागत वाटरप्यूफायर स्टेशन के पास बायी तरफ ताल में हजारों की संख्या में खिले हुये कमल के फूल करेंगे। ताल में दूर तक पसरे हुये पुरइन के पत्तों पर खिले हुये गुलाबी रंग के हजारे कमल फूल फूलों की घाटी का मनोरम दृश्य खड़ा कर देते हैं। संभवतः कमल बन से आच्छादित ऐसा ही कोई झील कभी, कविवर जयशंकर प्रसाद जी ने देखा होगा तभी तो 'आँसू' काव्य में उनके मुख से ऐसी पंक्ति रची गई होगी–

मुख कमल सजे थे, दो किसलय से पुरइन के
जल विन्दु सहश ठहरे कब, इन कानों में दुख किनके।

नौकायान तक फोरलेन की सड़क अपनी पूरी खूब सूरती के साथ पसरी हुई है। मई–जून में जब इस सड़क के पार्श्वभाग में लगे हुये गुलुमोहर अपने लाल–लाल फूलों से सज जाते हैं

तो लगता ऐसा है जैसे कोई श्यामवर्णी नायिका अपने जूड़े करे लाल फूलों के स्तवक से सजा रखी हो।

अब सीधे आपको ले चलते है पूज्य योगी जी के सौजन्य से नव निर्मित व्यू प्वाइन्ट पर जिसे बहुत से लोग गोरखपुर का जूहू-चौपाटी कह कर संबोधित करते हैं। इस व्यू प्वाइन्ट पर जब से लाईट एण्ड म्यूजिक का रंगीन फौब्बारा लग गया है तक से इस स्थान और झील का सौन्दर्य बड़ा ही नयनाभिराम हो उठा है। वैसे तो रंगीन फौब्बारों की छटा नौकायान से लेकर पैडलेगंज के पास तक झील के छटा को मनोहारी बना देता है। लेकिन नौका विहार के पास लगा यह विशाल फौब्बारा लाइट एण्ड म्यूजिक के माध्यम से गोरखपुर जनपद तथा इसके पाश्ववर्ती जनपदों के दो महापुरुषों भगवान बुद्ध की निर्वाण स्थली तथा मगहर में स्थिति संत कबीर के समाधिस्थली का भी विहगावलोकन हो जाता है। इसके अतिरिक्त इस शो में महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपस्थली गोरखनाथ मंदिर की भी छटा अवलोकित हो जाती है। इनके अतिरिक्त आज से सौ वर्ष पूर्व गोरखपुर की धरती पर पाँच वर्ष तक निवास किये हुये उपन्यास संम्राट मुंशी प्रेमचन्द, उर्दू जगत के मशहूर शायर रघुपति सहाय कि एवं तथा गीता प्रेस और गीता गार्डेन का भी सचित्र परिचय प्राप्त हो जाता है। पूरा दृश्य लगभग पौन घंटा तक दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर अपने में बाँधे रहता है। व्यू प्वाइन्ट के दृश्यावलोकन के साथ आर-पार सैकड़ों की संख्या में जो ठेले सजे रहते हैं। उनका लुत्फ बच्चे, नवजवान और बूढ़े सभी उठाते है। इसमें भुठ्ठा से लेकर नारियल पानी तक और भी नाना प्रकार के फास्ट फूड के व्यंजन तैयार मिलते है। मई-जून के महीनों में तो ताल के किनारों की सीढ़ियों पर बैठे लोग झील के लहरियों, रंगीन फौब्बारों की फुहारों का तो आनन्द लेते ही हैं, ताल के शीतल जल को छू कर आने वाली ठंडी-ठंडी हवाओं का आनन्द लेते हुये काफी देर तक बैठे रहते हैं।

नौकायन के शाम की छटा का एक संक्षिप्त परिचय तो अभी दे पाया हूँ। विस्तार से कहने पर कुछ ऐसे दृश्य का भी उल्लेख करना होगा जो ताल के किनारे बाहों में बाहें डाल मस्ती के साथ बतियाते दीख जाते हैं।

अब आप सब लोगों को हम इस क्षेत्र के प्रातःकालीन दृश्य का भी अवलोकन कराने के लिये ले चलते हैं। प्रातः बेला में हवाखोरी के उद्देश्य से जो लोग सर्किट हाउस के बगल में बसे हुए अम्बेडकर पार्क में जाया करते थे, वे सभी लोग अब नौकायन से पैडलेगंज की तरफ सैर करते दीखते हैं। हर्ष की बात तो यह है कि हवाखोरी करने वाले इस समूह में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक रहती है। नौका विहार के विस्तृत प्लेटफार्म पर अनेक लोग प्रणायाम और अनेक प्रकार के व्यायाम करते दीखते हैं। नौका विहार से आगे जिधर प्राणिउद्यान

की चहारदीवारी खड़ी है, बहुत से जिसमें उपकरण भी लगे हुये हैं जिन पर वृद्ध से लेकर नवजवान तक वर्जिश करते हुये दीखते हैं।

इसी नौकायन के प्लेटफार्म पर शुद्ध प्लस परिवार के सौजन्य से उत्तर प्रदेश का सबसे ऊँचा (जो ऊँचाई से 246 फीट है) राष्ट्रीय ध्वज लगा है जो संभवत: आगामी 26 जनवरी 2020 को माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा लोकार्पित होगा, ऐसी चर्चा हो रही है।

इसी राष्ट्रीय ध्वज के बगल में सीढ़ियों पर बैठकर श्रीमन्नारायपा समिति के सदस्य जिनकी संख्या लगभग 20 के आस-पास है श्रीमन्नारायपा का भजन समवेत स्वर में अत्यन्त आह्लादपूर्ण ढंग से विगत कई वर्षों से करते आ रहे हैं। इस समिति के कार्यक्रम के श्रृंखला में प्रवचन, कविता पाठ और एक से एक लतीफा-जोक भी चलता रहता है। इनका कार्यक्रम इस प्लेटफार्म पर चहलकदमी करने वाले लोगों के लिये एक कौतुक का विषय भी बना रहता है।

अगर आप लोगों को पूरे परिक्षेत्र के प्रकाश व्यवस्था की जानकारी न दे तो बात अधूरी ही रह जायेगी। नौकायन के प्लेटफार्म से लेकर पूरे व्यू प्वाइन्ट के चबूतरे पर जिसकी लंबाई लगभग 9 किलोमीटर के दायरे में है, सोलर लाइट की व्यवस्था है जो बिजली के न रहने पर भी प्रकाशित होता रहता है तथा नौकायन से लेकर पैडलेगंज तक पूरे फोर लेन पर झालरदार रंगीन लाइट जलता हुआ अपनी मोहक-छटा सड़क से लेकर लोगों के मन तक बिखराता रहता है।

दर्शकों! रामगढ़ झील पर बने व्यू प्वाइन्ट के खूबसूरती का दीदार आप सब लोगों ने कर लिया है लेकिन एक बिन्दु की तरफ आप सबका ध्यान गया ही नहीं। उनकी चर्चा किये बिना झील का दृश्यावलोकन अधूरा ही कहलायेगा। वह आकर्षक बिन्दु है इस झील में प्रवासी पक्षियों का विहंगावलोकन। चलिये उनसे भी आप सब का साक्षात्कार हो जाय। प्रकृति में तापमान नीचे उतरने के साथ ही इस झील में प्रवासी पक्षियों की आमद शुरु हो जाती है। हिमालय के ऊपरी हिस्सों में सर्दियों में पानी बर्फ में तब्दील हो जाता है। लिहाजा भोजन की तलाश और प्रजनन के लिये प्रवासी पक्षी मैदानी भागों का रुख करते है। इस वर्ष रामगढ़ झील पहुँचने वाले पक्षियों में ईरान से रिवर टर्न और यूरोप से ब्लैक विंग स्टिलर पहुँच चुके है। इसके अलावा अफ्रीका से हैरीन डक भी झील में इक्का-दुक्का दीख रहे हैं। वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर चंदन प्रतीक बताते है कि इस पक्षियों की आमद पिछले कुछ वर्षों से विलम्ब से हो रही है। इसका कारण धरती का बढ़ता तापमान भी है। इसके अलावा हाल के वर्षों में रामगढ़

झील के आस-पास के एरिया में वाहनों का आवागमन और निर्माण कार्य ज्यादा बढ़ा है शोर और मानव हस्तक्षेप के कारण भी यहाँ पक्षियों की संख्या में कमी आई है। यह कमी गोरखपुर नगर से कुछ दूरी पर स्थित बखिरा झील में नहीं दीखती है। लेकिन अच्छी बात है कि रामगढ़ झील के संरक्षण को लेकर सरकार ने संवेदनशीलता दिखाई है। ताल में एसटीपी स्ट्रीट कर पाली डाला जा रहा है जिससे प्रदूषण कम हुआ है। इसके अलावा यहाँ लगाये गये फौब्बारों से भी प्रदूषण में कमी आई है।

इन तमाम अवरोधों के बावजूद इस वर्ष झील में कुछ दुर्लभ प्रजाति के पक्षियों का आगमन हुआ है। इनमें यूरोप महादीप से आने वाला कामन रेड लेक है। झील में इनके चार जोड़े दीख रहे है। दो से तीन माह तक झील में रहने वाला यह पक्षी काफी तेज आवाज निकालता है। प्रवास के दौरान यह पक्षी झील में प्रजनन भी करते हैं। इस समय ईरान से आया हुआ रिवर टर्न भी झील में दिखायी दे रहा है। यह पक्षी 38 से 45 सेंटीमीटर लम्बा होता है। इस वर्ष झील में इनकी संख्या 20 के आस-पास दिखाई दे रही है। सुरक्षा कारणों से यह पक्षी झील के किनारे नहीं बल्कि ताल के बीच में उथली जगह पर रहना पसंद करते हैं। इस वर्ष साउथ-ईस्ट एशिया से आने वाला लेसा विसलिंग डक भी दीख रहा है। सीटी जैसी आवाज निकालने के कारण इसे विसलिंग डक कहा जाता है।

इसमें संदेह नहीं कि यदि सतरह सौ एकड़ में फैले हुये रामगढ़ झील के अथाह जल को नैनीताल के झील या भोपाल के ताल की तरह और खूबसूरत रूप से सजा दिया जाय तो पूर्वांचल का एक प्रमुख पर्यटक केन्द्र बन सैलानियों को अपनी तरफ आकर्षित करेगा। प्रकृति के वरदान स्वरूप प्राप्त यह ताल आज हमारी प्रमुख प्राकृतिक विरासत और धरोहर है। इसे यथावत बनाए रखना इस जनपद के प्रत्येक निवासी का दायित्व है। खुशी है कि इस झील को सवारने में हमारे पूज्य योगी जी जो हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री भी हैं, लगे हुये हैं।

आइये अब हम अपने सभी पाठकों को नौकायान क्षेत्र से अलग एक दूसरे पार्क की सेर कराने के लिये चलते है जो बारहों महीने चाहे प्रभातकाल के बेला हो चाहे सायं बेला हो हमेशा गुलजार बना रहता है। इस पार्क के लिये यही कहा जा सकता है कि सुबहे या शाम यह चमन जहाँ भी रहे इसका हक है फस्ले बहार पर। इस पार्क का नाम है विन्ध्यवासिनी पार्क जिसे हुई पार्क या राजकीय उद्यान के नाम से भी जाना जाता है। हलाँकि आज समाचार पत्रों में इस पार्क के नाम परिवर्तन की बड़ी चर्चा हो रही है।

इस पार्क में प्रवेश करके इसका लुत्फ उठाने से पूर्व हम संक्षेप में इस पार्क के इतिहास

की जानकारी देना वांछित समझ रहे हैं। सन् 1895 में गोरखपुर के तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर मिस्टर हुई के प्रयास से इस पार्क का निर्माण हुआ। 35 एकड़ में स्थित हरियाली एवं अनेक प्रकार के फूलों एवं फलों से भरा यह पार्क अति रमणीय मनोहारी एवं सैलानियों के लिये मनोरंजन का एक सुरम्य उद्यान है। अपने प्रकृतिक स्वरुप में प्राचीनता के कारण यह पार्क शहर के एक अमूल्य प्राकृतिक विरासत एवं धरोहर है।

इस पार्क में सन् 1923 से रुद्रपुर (देवरिया जनपद) के पास के एक अतिप्राचीन मंदिर के भग्नावशेष से प्राप्त भगवान विष्णु की मूर्ति तथा भगवान सूर्य की मूर्ति स्थापित की गई है। प्राचीन इतिहास के विद्वानों के अनुसार ये मूर्तियाँ गुप्तकालीन (320 ई. से 350 ई.) समय की बनी हुई है। ये सभी मूर्तियाँ काले मालावार स्टोन को तराश करके बनाई गई है।

इस पार्क के उत्तरी मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर कुछ मीटर आगे मुख्य सड़क के बाये अंग्रेजी वास्तुकला में दो मंजिला गुम्बजदार एक छोटा सा भवन दिखाई पड़ता है। आस-पास के कुछ पुराने वासिन्दों के अनुसार अंग्रेजी हुकुमत के समय इस इमारत पर सायं बेला में अंग्रेजी बैन्ड बजते थे। संभवतः इसीलिये इस इमारत को बैण्ड स्टेण्ड भी कहा जाता है।

अंग्रेजी हुकुमत के समय इस पार्क में हवाखोरी के लिये अधिकांश अंग्रेज ही आया करते थे लेकिन आजादी के बाद नगर के अधिकांश संभ्रांत वर्ग के लोग जिसमें डॉक्टर, वकील, व्यापारी ज्यादा रहते थे प्रातःकालीन हवा का आनन्द उठाने के लिये इस पार्क में जाते रहे।

दर्शकों! अब इस पार्क का अद्भूत सुन्दरीकरण हो गया है। पूरे पार्क को हरियाली और खूबसूरत फूलों (विशेष रूप से गुलाब) से पाट दिया गया है। इसकी चाहरदीवारी नये सिरे से नये रूप में निर्मित हो गयी है। पार्क में एक तरफ विधायक निधि से एक विशाल हाल भी बना है जिसका नाम जीवन संध्या रखा गया है। इस हाल के अन्दर नियमित प्रातःकालीन बेला में बहुसंख्यक लोगों द्वारा योगासन, व्यायाम और अन्य कार्यक्रम चलते रहते हैं। योगासन करने वाले लगभग सभी वरिष्ठ नागरिक ही होते हैं अतः उनके द्वारा देश के महत्वपूर्ण घटनाओं और जीवन्त विषयों पर प्रातः विमर्श भी होता रहता है। इनके साथ में रहना केवल अपने प्रातः बेला का ही सदुपयोग नहीं अपितु पूरे दिन को तरोताजा रखने का एक मुकम्मल खुराक मिल जाता है।

पार्क में शाम का नजारा तो कुछ अलग ही फिजा दिखाता है। मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया ने लड़के-लड़कियों के बीच की दुरियों को काफी समाप्त कर दिया है। आज की युवतियाँ भी तमाम तरह की पारिवारिक और सामाजिक बर्जनाओं को ताक पर रखकर यहाँ अपने पुरुष मित्रों के साथ बैठकर घंटो बात-चीत करती दीखती हैं। इस बीच उनका एक दूसरे

के साथ आलिंगन और चुम्बन भी चलता रहता है। यद्यपि इस प्रकार की स्थिति दिल्ली, मुम्बई और कोलकाता जैसे शहरों में पिछले कई वर्षों से हैं। गोरखपुर पूर्वांचल का पिछड़ा हुआ नगर था। इस लिये यह स्थिति यहाँ पहले नहीं थी लेकिन आधुनिकता की बहती आँधी ने यहाँ के युवापीढ़ी को भी अपने आगोश में ले लिया है जिसके कारण इस प्रकार की हलचल यहाँ के लगभग सभी पार्कों में दीख जाती है। विन्ध्यवासिनी पार्क एकान्त परीक्षेत्र में है इसलिये इस पार्क के शाम इन्हीं रंगीनियों में डूब जाती है। वैसे दिल फेक स्वभाव वाले लोगों के लिये यह रंगीनी ज्यादा खुशगवार लगती है।

दर्शकों! गोरखपुर नगर बहुत से पार्क है जिनमें अम्बेडकर पार्क, वाटर पार्क, विस्मिल पार्क, लालडिग्गी पार्क, पंत पार्क और मुंशी प्रेमचन्द पार्क सुबह-शाम की सैर के लिये दर्शनीय मुकाम है। लेकिन यहाँ मैं तमाम पार्कों की सैर को अलहदा करते हुये मुंशी प्रेमचन्द पार्क का विशेष रूप से उल्लेख करना अभी वांछित समझ रहा हूँ।

तो आइये, आप सब लोगों को ले चलता हूँ मुंशी प्रेमचन्द पार्क के तरफ। यह पार्क नगर के दक्षिणी छोर पर आवास विकास कॉलोनी बेतिया हाता तथा गंगोत्री देवी बालिका महाविद्यालय के बगल में स्थित है। इस पार्क का नाम उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की स्मृतियों से जुड़ा है। जहाँ पर प्रेमचन्द पार्क बना है, वहीं मुंशी प्रेमचन्द अपने परिवार के साथ 19 अगस्त 1916 से 16 फरवरी सन् 1921 तक नार्मल स्कूल में अध्यापक के रूप में रहे। यही पर उन्होंने नगर के संभ्रान्त रईश हनुमान प्रसाद की प्रेरणा और सहयोग से उर्दू में प्रकाशित अपने उपन्यास बाजार हुश्न का अनुवाद हिन्दी में करके हिन्दी जगत के सम्मुख एक बेजोड़ उपन्यास 'सेवासदन' के रूप में दिया। जिसके प्रकाशन की सौवीं वर्षगाँठ इस वर्ष प्रेमचन्द साहित्य संस्थान के सौजन्य से मनायी गई है।

इस पार्क का मैदान भी दिन में बच्चों के खेलने के मैदान को रूप में प्रयुक्त होता था और रात अपराधकर्मियों का शरणगाह होता था। जुआड़ी और स्मैकियों का भी यहाँ अड्डा लगा रहता था। लेकिन बीरबहादुर सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तो उनके प्रयास से इस दर्शनीय पार्क और प्रेमचन्द निकेतन का उद्घाटन संबत् 2045 पौष शुक्ल एकादशी दिन मंगलवार वदनुसार 17 जनवरी सन् 1989 को उस समय संचारमंत्री भारत सरकार के पद रहते हुये हुआ। उनके द्वारा किया गया यह नेक कार्य मुंशी प्रेमचन्द की स्मृति को तथा इस नगर के गौरवशाली अतीत को सजोने का एक महान कार्य था। इसी प्रेमचन्द निकेतन में कालान्तर में एक पुस्तकालय की भी स्थापना हुई जिसमें हजार से ऊपर की अनमोल पुस्तकें सुरक्षित रखी गई है।

इस पार्क के रौनक केवल शाम और सबेरे टहलनेवाले लोगों की आवाजाही तक ही सीमित नहीं है। यहाँ प्रेमचन्द साहित्य संस्थान के सौजन्य से समय-समय पर विचारगोष्ठियाँ और साहित्यिक विमर्श होते रहते हैं। इस संस्थान के बैनर तले प्रेमचन्द जयन्ती के अवसर पर उनकी कहानियों पर आधारित नाटकों का मंचन भी होता रहता है।

इस पार्क में घूमने वाले लोगों में वरिष्ठ नागरिकों की एक लम्बी संख्या है। उन लोगों के द्वारा एक वरिष्ठ नागरिक परिषद नामक संस्था भी पंजीकृत की गई है। वर्तमान में इस परिषद के अध्यक्ष दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के समाज शास्त्र विषय के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर प्रभाशंकर पाण्डेय जी हैं। इस परिषद के सौजन्य से वरिष्ठ नागरिक दिवस के अवसर पर कुछ कार्यक्रम भी होते रहते हैं।

नगर निगम के सौजन्य से इस पार्क की व्यवस्था काबिलेतारीफ है। पार्क में अनेक प्रकार के छायादार वृक्ष, खूबसूरत फूल तथा लता-बल्लरियाँ झूमती हुई दिखाई देती है। पार्क में बैठने के लिये बैंच भी सुव्यवस्थित ढंग से लगे हुये हैं। पार्क में पानी की भी व्यवस्था सुन्दर ढंग से बनी है। पार्क के मुख्य द्वार पर कैंटीन की व्यवस्था है जहाँ आदेश देने पर बेयरा मनोनुकूल खाने-पीने की चीजें सप्लाई कर देता है। शाम के समय रंगीन मिजाज के लोग भी पार्क में चहलकदमी करते हुये दिखाई दे जाते हैं। कुल मिलाकर इस पार्क की रंगीनियाँ अम्बेडकर पार्क और विन्ध्यवासिनी पार्क से कमतर ही है।

दर्शकों! इस आलेख के लघु कलेवर में मैंने गोरखपुर नगर के कुछ खास-खास पार्कों की सैर करा दी। गोरखपुर नगर के वासियों और इस परिक्षेत्र के वासियों के समक्ष कुछ अपील करते समय मेरे जेहन में स्व. 'बेखटक' मिर्जापुरी के एक गजल की पंक्ति उभर रही है। जिसका मतला है-

दूर काफी रह चुके हैं, पास अब कुछ आइए।
हो सके तो आसमाँ को भी जमीं पर लाइये।।

दोस्तों! मैं आप लोगों को आसमाँ को जमीं पर उतारने की नहीं करना चाहता। मैं इस गजल की पंक्ति के साथ स्वर मिलाते हुये यह गुजारिश करुँगा-

बंद गलियों के निवासी, अब खुली हवा संग आइये।
हो सके तो सुबहो-शाम, पार्कों में तशरीफ लाइये।।

*****

उत्तर प्रदेश सरकार की महायोजनायें (वर्ष 2019) और गोरखपुर नगर निगम का विकास

डॉ. सचिन राय

भारतवर्ष की स्थानीय संस्थाओं को मोटे तौर से दो श्रेणियों में रखा जा सकता है- (1) नगरों की देखभाल करने वाली संस्थाएँ; (2) ग्रामीण क्षेत्रों की देख-रेख करने वाली संस्थाएँ। नगरों को देखभाल करने वाली संस्थाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है:- (i) नगर निगम (ii) नगर पालिका (iii) नगर-क्षेत्र व सूचित क्षेत्र समितियाँ। नगर निगम को ही सिटी कारपोरेशन या महानगर पालिका या महानगर निगम कहते हैं। भारत में सबसे पहले सन् 1687 ई. में मद्रास में कॉर्पोरेशन (नगर निगम) की स्थापना की गई थी। इसके बाद बम्बई और कलकत्ता के नगर निगम संगठित किये गए।

प्रत्येक नगर निगम में नागरिकों के द्वारा चुने गए प्रतिनिधि होते हैं। इन प्रतिनिधियों का चुनाव मताधिकार द्वारा होता है। नगर निगम के लिए सभासद की संख्या सरकार द्वारा निश्चित की जाती है। कुछ स्थान विशेष जातियों के लिए सुरक्षित रखे जाते हैं। कुछ विशिष्ट सभासदों का भी चुनाव किया जाता है। इन विशिष्ट सभासदों का चुनाव जनता द्वारा चुने गए सभासद करते हैं- हर 9 सभासद पर एक विशिष्ट सभासद होता है। सभासद होने के लिए यह आवश्यक है कि वह कोई पागल या दिवालिया न हो और महानगर पालिका के किसी लाभ के पद या सरकारी नौकरी में न हो। प्रत्येक नगर निगम में एक नगर प्रमुख और एक अपर-नगर प्रमुख होता है। नगर प्रमुख के चुनाव के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह नगर निगम का निर्वाचित सदस्य ही हो। इसके अतिरिक्त एक उप-नगर प्रमुख होता है जिसका कार्यकाल महानगर पालिका कार्यालय के बराबर अर्थात् 5 वर्ष होता है।

सदस्य, गोरखपुर नगर निगम इतिहास लेखन समिति

नगर महापालिकाओं के दिन-प्रतिदिन के कार्य-भार को हल्का करने के लिए कुछ समितियों का गठन किया जाता है। इन समितियों में मुख्य हैं :- **कार्यकारिणी समिति** - कार्यकारिणी समिति में 12 सदस्य होते हैं जिनका निर्वाचन महानगर पालिका अपने सभासदों एवं विशिष्ट सभासदों में से करती है। इस समिति का अध्यक्ष उप-नगरप्रमुख होता है। यह समिति महानगर पालिका के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए उत्तरदायी होती है। **विकास समिति**- विकास समिति में भी 12 सदस्य होते हैं, इसमें 10 सदस्य सभासदों और विशिष्ट सभासदों में से निर्वाचित होते हैं।

प्रत्येक महानगर पालिका के लिए राज्य सरकार एक मुख्य प्रशासकीय अधिकारी की नियुक्ति करती है। यह एक बहुत ही अनुभवी अधिकारी होता है। इसकी नियुक्ति तीन वर्ष के लिए की जाती है और बाद में इसकी कालावधि को बढ़ाया भी जा सकता है। महानगर पालिका, मुख्य प्रशासकीय अधिकारी के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पास करके उसे हटा भी सकती है। महानगर पालिका की कार्यपालिका शक्ति इसी अधिकारी के हाथ में होती है। मुख्य लेखा परीक्षक को छोड़कर अन्य सभी अधिकारी उसके नियंत्रण में कार्य करते हैं। मुख्य नगर अधिकारी के अतिरिक्त महानगर पालिका में अन्य कर्मचारी भी होते हैं जिनमें प्रमुख हैं उपनगर अधिकारी, सहायक नगर अधिकारी, नगर अभियन्ता, नगर स्वास्थ्य अधिकारी, मुख्य नगर लेखा परीक्षक। नगर निगम मुख्य रूप से 4 प्रकार के कार्य करती है-

1. सार्वजनिक रक्षा- सड़कों एवं गलियों का निर्माण व मरम्मत, रोशनी का प्रबन्ध, जल का प्रबंध, आग से बचाव का प्रबंध आदि।
2. सार्वजनिक स्वास्थ्य- जनता और स्वास्थ्य के लिए भी नगर निगम उत्तरदायी होती हैं जैसे संक्रामक रोगों की रोकथाम, दवाईखानों एवं चिकित्सालयों का प्रबन्ध आदि।
3. सार्वजनिक शिक्षा
4. सार्वजनिक सुविधाएँ

नगर निगम के आय के साधन हैं- संपत्ति कर, सवारी गाड़ियों पर कर, चुंगी, मकान एवं भूमि कर, पानी एवं बिजली कर, सफाई पर कर, शिक्षा शुल्क, मनोरंजन आदि पर कर, राज्य के सहायता, ऋण, व्यापार आदि इसके साथ ही नगर निगम की सम्पत्ति।

प्रत्येक महानगर पालिका पर राज्य सरकार का नियंत्रण होता है। राज्य सरकार महानगरपालिका अथवा उसकी किसी भी समिति की किसी भी कार्यवाही के सम्बन्ध में सूचना माँग सकती है।

वह महानगर पालिका अथवा उसके किसी विभाग के निरीक्षण हेतु कर्मचारियों को नियुक्त करके रिपोर्ट माँग सकती है। उसे यह भी अधिकार है कि महानगर पालिका को किसी भी कार्य को करने का आदेश दें। यदि सरकार किसी प्रस्ताव को जनहित की दृष्टि से उचित नहीं समझती तो वह उसे लागू होने से रोक सकती है। राज्य सरकार, यदि यह समझती है कि महानगर पालिका अपने कार्यों को ठीक प्रकार से नहीं कर रही है अथवा अपने अधिकार का दुरूपयोग कर रही है तो वह नगर निगम को भंग भी कर सकती है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि महानगर पालिका पर राज्य सरकार का काफी नियंत्रण रहता है और महापालिकाएँ राज्य सरकार की इच्छा के विपरीत कार्य नहीं कर सकती।

योगी आदित्यनाथ जी महाराज के मुख्यमंत्री बनने के बाद उनके क्षेत्र गोरखपुर के नगर निगम के विकास के लिए शहर की जनता में एक नवीन अपेक्षा जगी है इसके पहले के इतिहास का जिक्र किये बगैर एक तथ्य गोरखपुर नगर निगम का विजन डॉक्यूमेंट जो पिछली सरकार के समय आया था पूर्णत: असफल दिखाई दिया। सरकार ने इसके लिए कुछ कार्य नहीं किया।

योगी आदित्यनाथ जी महाराज के मुख्यमंत्री बनने के बाद जो नगर निगम के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं उससे समस्त नगरवासी लाभान्वित हो रहे हैं तथा नगर निगम का विकास हो रहा है। इन विकास की योजनाओं को निम्नवत देखा जा सकता है।

नगर निगम के नये भवन का शिलान्यास

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 16 नवंबर को नगर निगम परिसर में नए कार्यालय भवन का भूमि पूजन करने के अलावा विभिन्न विभागीय कार्यों का शिलान्यास, लोकार्पण एवं प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के लाभार्थियों को आवासों की सौगात देने का कार्य किये। उनके साथ नगर विकास मंत्री आशुतोष टंडन भी रहे। इसको लेकर नगर निगम की सभी भवनों की रंगाई और पुताई के साथ पूरे परिसर में सफाई अभियान चलाया जा रहा है। वहीं नगर निगम की ओर से मुख्यमंत्री के यात्रा रूट से अतिक्रमण, अवैध बैनर और होर्डिंग भी हटाए गए। मुख्यमंत्री जी लगभग 24 करोड़ की लागत से बनने वाले नए कार्यालय भवन का शिलान्यास पुराने स्टोर की जमीन पर भूमि पूजन किये। इसको लेकर स्टोर की सफाई की पूरी व्यवस्था हुई। स्टोर में रखे गए सामानों को प्रस्तावित पार्किंग स्थल के पास रखा गया है। सामान अधिक होने के कारण पार्क रोड स्थित जमीन पर भी तार बाड़ बनाकर रखा गया है। शिलान्यास स्थल के मेयर सीताराम जायसवाल, नगर आयुक्त अंजनी कुमार सिंह तथा कार्यदायी संस्था सी एंड डीएस के

अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को भी निरीक्षण किया और निर्देश दिया।

पहली बार निगम परिसर में आये उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

योगी आदित्यनाथ नगर निगम में आने वाले पहले मुख्यमंत्री बने। मेयर सीताराम जायसवाल ने बताया कि पहली बार किसी मुख्यमंत्री के आने से नया भवन मिलने की खुशी दोगुनी हो गई है। नगर निगम कार्यालय भवन काफी पुराना हो गया है। नया भवन बनने से बड़ी सहूलियत होगी। पार्किंग की सुविधा होने से जाम से भी निजात मिलेगी। व्यावसायिक उपयोग भी होगा जिससे नगर निगम की आय भी बढ़ेगी। नगर आयुक्त अंजनी कुमार सिंह ने कहा कि नगर निगम कार्यालय के लिए नया भवन मिलना सौभाग्य है। नया भवन आधुनिक तकनीकी से सुसज्जित होगा। मुख्यमंत्री ने जो सौगात दी है वह गोरखपुर के विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

दो साल में नगर निगम का नया भवन बनकर तैयार हो जाएगा। शासन ने इस नई बिल्डिंग के लिए करीब 23.45 करोड़ रूपये के बजट को मंजूरी दे दी है। कुल 90 हजार वर्ग फीट में बनने वाला भवन सात मंजिला होगा। इसमें तीन मंजिला अंडरग्राउंड पार्किंग होगी। लंबे अरसे से नगर निगम क्षेत्र के विस्तार की कवायद चल रही है। वार्डों की संख्या भी बढ़कर तकरीबन 100 होने वाली है। ऐसे में नए भवन की जरूरत को देखते हुए छह साल पहले 2013 में नगर निगम कार्यकारिणी एवं बोर्ड ने इसके लिए मंजूरी दी थी। नगर निगम स्टोर की जमीन पर इसके निर्माण का निर्णय लिया गया है। करीब छह साल से मामला लंबित होने की वजह से मेयर सीताराम जायसवल ने प्रमुख सचिव, नगर विकास मनोज सिंह के सामने इस मामले को रखा, जिस पर उन्होंने सहमति दे दी थी। सरकार इसमें पूर्णत: सहयोग कर रही है। नगर निगम की वर्तमान बिल्डिंग के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए उसे संरक्षण के लिए सुरक्षित कर लिया जाएगा। निगम के कैंपस में स्थित तालाब में लाइट एंड साउंड शो शुरू हो गया है।

अंडरग्राउंड तीन मंजिला पार्किंग में रखी जा सकती हैं करीब 240 गाड़ियां

नगर निगम के चीफ इंजीनियर सुरेश चंद से बात करने पर यह जानकारी मिली की नई बिल्डिंग में सभी तरह की आधुनिक सुविधाओं का ख्याल रखा जाएगा। उन्होंने बताया कि नगर निगम का प्रस्तावित भवन सात मंजिला होगा, जिसमें तीन मंजिला अंडरग्राउंड पार्किंग बनाई जाएगी। हरेक मंजिल में करीब 70 से 80 गाड़ियां रखी जा सकेंगी। वहीं सदन बालकनीनुमा बनाई जाएगी। जिसमें नीचे पार्षदों और नगर निगम के अधिकारियों के बैठने की

जगह होगी। ऊपरी मंजिल पर दर्शक दीर्घा के अलावा पत्रकारों के बैठने की व्यवस्था रहेगी। ग्राउंड फ्लोर पर दुकानें बनाई जाएंगी, जिसे नगर निगम किराए पर देगा। शासन से नगर निगम के नए भवन के लिए बजट की स्वीकृति मिल गई है। कोशिश रहेगी एक से सवा साल में यह तैयार हो जाए।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) रूड़की की मदद से गोरखपुर को जलभराव की समस्या से निजात दिलाई जाएगी। नगर निगम और जीडीए ने मिलकर इसकी जिम्मेदारी आईआईटी के विशेषज्ञों को दी है जो लाइट डिटेक्शन एंड रेजिंग (लिडार) तकनीक से नगर निगम सहित 500 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का सर्वे करेंगे। इसके जरिये वे नाला, जलभराव की मैपिंग कर रिपोर्ट बनाएंगे, फिर जलभराव से निजात की कवायद शुरू होगी।

तेज बारिश में शहर के ज्यादातर इलाकों में जलभराव हो जाता है। इस समस्या से स्थायी निजात दिलाने की जिम्मेदारी शासन ने नगर निगम को दी थी। नगर निगम ने जीडीए को कार्यदायी संस्था बनाकर **'मास्टर ड्रेनेज प्लान ऑफ सिटी' की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) बनाने की जिम्मेदारी दी।** जीडीए ने डीपीआर भी तैयार कर ली है। इसके तहत नालों का ऐसा जाल तैयार किया जाना है, जिसकी मदद से बारिश का पानी नियोजित ढंग से शहर से बाहर निकाला जा सके। इस डीपीआर को प्रभावी तरीके से अमल में लाने के लिए ही आईआईटी रूड़की के विशेषज्ञों की मदद ली जा रही है।

जल भराव से निपटने के लिए जीडीए ने मास्टर प्लान बनाया है। आई आई टी रूड़की के विशेषज्ञ शहर की मैपिंग करेंगे। इस पर जो भी खर्च आएगा, उसे जीडीए और नगर निगम 50-50 फीसदी वहन करेंगे। 500 वर्ग किलोमीटर में हेलीकॉप्टर से सर्वे होगा। इसमें लिडार तकनीक की मदद ली जायेगी। डीपीआर बनने के बाद टेंडर निकाला जाएगा। इसमें देश के बड़ी एजेंसियों के शामिल होने की उम्मीद है। नगर निगम क्षेत्र के अलावा भविष्य में शहर के विस्तार की संभावना को देखते हुए आई आई टी के विशेषज्ञों की मदद ली जा रही है। प्रदेश कैबिनेट की ओर से नगर निगम गोरखपुर के सीमा विस्तार को स्वीकृति देने के साथ ही 31 गांवों में विकास की नई राह खुल गई है।

नगर निगम के सीमा का विस्तार

अधिसूचना जारी होने के बाद ये गांव नगर निगम का हिस्सा बन जाएंगे। फिर सरकार की विभिन्न योजनाओं से इन इलाकों की सुविधाएं मिल सकेंगी। सीमा विस्तार के बाद नगर

निगम के वार्डों की संख्या 70 से बढ़कर 90 हो सकती है। सिक्टौर तप्पा हवेली, रानीडीहा, खोराबार उर्फ सूबाबाजार, जंगल सिकरी उर्फ खोराबार, भरवलिया बुजुर्ग, कजाकपुर, बड़गो, मनहट, गायघाट बुजुर्ग, पथरा, बाघरानी, गायघाट खुर्द, सेमरा देवी प्रसाद, गुलरिहा, मुंडिला उर्फ मुंडेरा, मिर्जापुर तप्पा खुटहन, करमहा उर्फ कम्हरिया, जंगल तिकोनिया नंबर–1, जंगल बहादुर अली, नुरूद्दीन चक, चकरा दोयम, रामपुर तप्पा हवेली, सेंदुली बिंदुली, कठवतिया उर्फ कठउर, पिपरा तप्पा हवेली, झरवा, हरसेवकपुर नंबर दो, लक्ष्मीपुर तप्पा कस्बा, उमरपुर तप्पा खुटहन, जंगल हकीम नंबर–21 ।

करीब 65 वर्ग किलोमीटर बढ़ जाएगा नगर निगम का दायरा

विस्तार के बाद नगर निगम का दायरा भी तकरीबन 65 वर्ग किलोमीटर बढ़ जाएगा। अभी नगर निगम का दायरा 147 वर्ग किमी में है, विस्तार के बाद यह 210 वर्ग किमी हो जाएगा। मतदाताओं की संख्या भी बढ़ जाएगी। अभी नगर निगम के मतदाताओं की संख्या करीब नौ लाख है, यह संख्या बढ़कर 15 लाख हो जाएगी। नए विस्तार में दो से तीन गांव या मोहल्ले मिलकर एक वार्ड बनाया जाएगा। ऐसे में वार्डों की संख्या बढ़कर 90 हो जाने की उम्मीद है। अभी शहर में 70 निर्वाचित और 10 मनोनीत पार्षद हैं। विस्तार के बाद 90 निर्वाचित और मनोनीत पार्षदों की संख्या बढ़कर 15 हो जाएगी। वर्ष 2000 में नगर निगम का अंतिम बार विस्तार हुआ था। इसके पहले नगर निगम में कुल 60 वार्ड थे। उस समय सिंघड़िया, झरना टोला, जेल बाईपास शाहपुर, खजांची चौराहा, राप्तीनगर 10 नंबर बोरिंग, रसूलपुर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस नगर, नदी के किनारे के बांध, महेवा, आजाद चौक, पैडलेगंज के बीच का क्षेत्र नगर निगम में था। विस्तार के बाद चारों तरफ एक–एक किलोमीटर का दायरा बढ़ गया था। 2011 की जनगणना के अनुसार गोरखपुर शहर की आबादी 6.85 लाख और जिले की आबादी 44.41 लाख है। इस हिसाब से यहाँ पर शहरी आबादी केवल 15 फीसदी हैं जबकि नए परिसीमन में शहरी आबादी 30 प्रतिशत होनी चाहिए।

दायरा बढ़ने के बाद गोरखपुर नगर निगम को केन्द्र की कई योजनाओं का फायदा मिलने लगेगा। दरअसल 10 लाख से कम जनसंख्या होने की वजह से गोरखपुर नगर निगम को केन्द्र सरकार के जवाहर लाल नेहरू नेशनल अर्बन रिन्यूअल मिशन (जेएनएनयूआरएम) का लाभ नहीं मिलता है। जनगणना 2011 के अनुसार नगर निगम क्षेत्र गोरखपुर की जनसंख्या करीब सात लाख है, लेकिन वर्तमान में यह 13–14 लाख के पास पहुंच गई है। दायरा बढ़ने पर जनसंख्या भी बढ़ेगी और इसका फायदा नगर निगम को मिलेगा। गजट नोटिफिकेशन के साथ ही 31 गांव

नगर निगम सीमा में शामिल हो जाएंगे। ऐसे में इन गांवों में प्रधान चुने जाने का प्रावधान भी समाप्त हो जाएगा। नवंबर 2020 में पंचायत का चुनाव प्रस्तावित है। नगर निगम क्षेत्र में इन गांवों के शामिल हो जाने के बाद यहां प्रधान का चुनाव नहीं होगा।

शहर में सी सी कैमरे से होगी ट्रैफिक की निगरानी

आइसीसीसी और आइटीएमएस के लिए तैयारियां हुई तेज, 50 प्वांइट पर पांच-पांच कैमरे लगाए जायेगें।

नगर निगम ने शहर को स्मार्ट व सेफ बनाने के लिए सिटी सर्विलांस को लेकर तेजी दिखानी शुरू कर दी है। नगर आयुक्त ने कैमरे जल्द उपलब्ध कराने के लिए रिलायंस जियो को पत्र लिखा है। रिलायंस जियो शहर के 50 स्थानों पर नि:शुल्क पांच-पांच कैमरे लगाएगा। **इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (आइसीसीसी) और इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम (आईटीएमएस)** को एक्टिव करने के लिए कैमरे व नेटवर्किंग पर काम शुरू कर दिया गया है। शहर में 80 स्थानों पर कैमरे लगाए जाने हैं। हर स्थान पर पांच कैमरे लगेंगे। 50 स्थान पर लगाए जाने वाले कैमरे रिलायंस जियो इंफोकाम उपलब्ध कराएगा। कैमरे उपलब्ध कराने के लिए नगर निगम ने रिलायंस जियो लखनऊ के असिस्टेंट वाइसप्रेसीडेंट लखनऊ को पत्र लिखा है। सिटी सर्विलांस के लिए 80 स्थानों पर लगाए जाने वाले कैमरों के लिए नेटवर्क कनेक्टिविटी भी जरूरी होगी। इससे ट्रैफिक पुलिस को काफी सहूलियत होगी। साथ ही निगरानी भी की जा सकेगी। निगम प्रशासन ने नेटवर्क कनेक्टिविटी उपलब्ध कराने के लिए रिलायंस जियो, बीएसएनएल तथा एयरटेल से रेट उपलब्ध कराने को कहा है। जिस कंपनी का रेट सबसे कम होगा उसकी सेवाएं ली जाएंगी।

पुलिस लाइन में बनेगा कमांड एंड कंट्रोल सेंटर

कैमरों के जरिये संदिग्ध गतिविधियों व यातायात पर नजर रखने के लिए पुलिस लाइन में कमांड एंड कंट्रोल सेंटर बनाया जाएगा। इसके लिए एलईडी वाल बनाई जाएगी। जिस पर कैमरों से प्राप्त वीडियो को देखकर एक्शन लिया जाएगा।

सिटी सर्विलांस के तहत शहर के 80 स्थानों पर कैमरे लगाए जाने हैं। रिलायंस जियो 50 स्थानों पर नि:शुल्क कैमरे उपलब्ध कराएगा। शेष 30 स्थानों पर कैमरे लगाने के लिए शासन से धन की मांग की जाएगी। नेटवर्क कनेक्टिविटी के लिए एयरटेल, बीएसएनएल व रिलायंस जियो को पत्र लिखकर रेट मांगा गया है।

गोरखपुर नगर निगम को चार जोन में बांटा गया है तथा अलग–अलग अधिकारी नियुक्त हुए हैं ताकि नगर की व्यवस्था को सही ढंग से चलाया जा सके।

हाउस टैक्स से लेकर रेंट जमा करने और सफाई से लेकर नाली–सड़क निर्माण को लेकर अब नगर निगम नहीं आना होगा। नगर निगम को चार जोन में बांट कर अधिकारियों की नियुक्ति कर दी गई है। जल्द ही चारों जोन में कार्यालय का निर्माण कार्य भी शुरू हो जाएगा।

स्मार्ट सिटी के प्रमुख अवसंरचनाओं के लिए गोरखपुर नगर निगम के कार्य

गोरखपुर शहर को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने के लिए नई सरकार आने पर लोगों में उम्मीदें बढ़ गयी हैं। प्रदेश सरकार ने इसके लिए बजट की घोषणा कर दी है। कुछ कमियों के कारण वर्ष 2015 में शुरू हुई केन्द्र सरकार की स्मार्ट सिटी योजना में गोरखपुर शामिल नहीं हो पाया था। वर्तमान सरकार अब उन सभी मानकों पर कार्य कर रही है जिससे गोरखपुर को स्मार्ट सिटी बनाया जा सके। स्मार्ट सिटी में सीवर लाइन, सालिड वेस्ट मैनेजमेंट, 24 घंटे बिजली व पानी, ट्रीटमेंट प्लांट, सफाई आदि अनिवार्य रूप से होना चाहिए। शहर में सीवर लाइन बिछाने का काम चल रहा है। सालिड वेस्ट मैनेजमेंट पर नगर निगम प्रशासन काम कर रहा है। इस सम्बन्ध में महापौर सीताराम जायसवाल का कहना है कि गोरखपुर को स्मार्ट सिटी बनाने के लिए मुख्यमंत्री जी का काफी सहयोग मिल रहा है।

मख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज का कहना है कि स्थानीय निकायों का विकास किया जाय तथा उन्हें स्वायत्तता दी जाय। नगर निगम को अपनी आय स्वयं जनरेट करने का प्रबन्ध करना चाहिए। इससे उनका आय का स्रोत बढ़ेगा और नगर निगम सही ढंग से कार्य कर पायेगा। उन्होंने जोर देकर कहा है कि नगर निगम की सम्पत्तियां कुछ दूसरे लोगों के आंखों में गड़ जा रही हैं और उस पर वे अपना अवैध अधिकार कर ले रहे हैं। हम इस तरह का कार्य किसी भी हालत में नहीं होने देगें। नगर निगम की सम्पत्ति नगर निगम के आय का स्रोत बनेंगीं। उन्होंने कहा कि नगर के पटरी व्यावसायियों को भी व्यवस्थित पुर्नवास दी जायेगी, नगर निगम के अंतर्गत सफाई कर्मियों पर भी उनका ध्यान है। उनके भी वेतन की व्यवस्था सही ढंग से करने पर जोर दिया जा रहा है ताकि वह अपना काम सही ढंग से करें।

अन्त में नगर निगम को जो मुख्य कार्य करने हैं वे निम्नवत हैं :-

- विदेशी पर्यटकों को देखते हुए गोरखपुर में बड़े होटलों का निर्माण जरूरी
- जन सामान्य के लिए प्रेक्षागृह का निर्माण

- दिव्यांगों को बढ़ावा देने के लिए मार्केट बनाया जाना जरूरी
- नालियों से अतिक्रमण हटाने के साथ पक्के नाले-नालियों का निर्माण
- ड्रेनेज के लिए मास्टर प्लान बनाने की आवश्यकता
- शहर की बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए मुख्य चौराहों का चौड़ीकरण एवं सुंदरीकरण
- गोरखपुर रेलवे स्टेशन से लखनऊ, कप्तानगंज और देवरिया जाने वाली रेलवे लाइनों पर कुछ जगह ओवरब्रिज का निर्माण
- खेलकूद को बढ़ावा देने के लिए उच्च स्तरीय स्टेडियम का निर्माण
- जाम खत्म करने के लिए बाहरी सीमा में रिंग रोड का निर्माण एवं इसे शहर के मुख्य सड़कों से जोड़ा जाए।
- महिलाओं के लिए सफलभ शौचालय तथा अपनी जगह पर निर्माण की व्यवस्था किया जाए। इसकी व्यवस्था जन सहयोग से किया जा रहा है।
- कुछ स्थानों पर अंडरग्राउंड पार्किंग का निर्माण
- ट्रांसपोर्टरों को ट्रांसपोर्टनगर में शिफ्ट किया जाना
- पीपीपी मोड में सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट की स्थापना

नगर निगम का मुख्य कार्य जनता के जीवन स्तर में सुधार हेतु जन सुविधाओं को विकसित करना और उसे समुचित स्तर पर बनाये रखना है। इस हेतु विभिन्न जन सुविधाओं तथा सफाई, पेयजल, जल निकासी, पथ प्रकाश एवं सड़क सुधार जैसे महत्वपूर्ण कार्य नगर के विभिन्न अंचलों में सम्पादित होते हैं, उसके रख-रखाव एवं स्तर बनाए रखने के बारे में जनता से संवाद बनाये रखने और उस पर त्वरित कार्यवाही हेतु एक ऐसा तंत्र विकसित किया जाना आवश्यक है, जो पूर्ण क्षमता के साथ स्वतः कार्य करे। इस उद्देश्य से जन संपर्क व्यवस्था ई-गवर्नेंस के माध्यम से विकसित की जा रही है। जिसके अन्तर्गत नगर के विभिन्न जन सेवा केन्द्रों, दूरभाष, इन्टरनेट एवं काल सेंटर के माध्यम से जन शिकायतें प्राप्त करने की व्यवस्था की जा रही है और इंटरनेट एवं नेटवर्किंग के जरिये तुरंत सम्बन्धित विभागों को जन शिकायतें पहुँचायी जायेगी एवं त्तसमय उनका निवारण करके जन शिकायत के बारे में समुचित जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध करा दी जायेगी। जिससे शिकायतकर्ता अपनी शिकायत के बारे में प्रगति की जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे। नगर निगम जनता के प्रति अपनी संवेदना को बनाये रखते हुए एक सशक्त जन शिकायत निवारण तंत्र विकसित कर रहा है। इसकी पूर्ण सफलता जनता के सक्रिय सहयोग से ही संभव होगा।

*****

पूर्वांचल फिर बन रहा 'चीनी का कटोरा'

'नीति और नीयत की सकारात्मकता से बदल रही गन्ना किसानों की नियति'

महेंद्र कुमार सिंह

कहते हैं जब नीयत में मिठास हो तो मीठे नतीजे जल्द ही मिलने शुरू हो जाते हैं। किसी जमाने में 'चीनी के कटोरे' के रूप में विख्यात 14 चीनी मिलों के प्रगतिशील साम्राज्य वाले पूर्वांचल को नजरंदाज कर देने वाली राजनीतिक कालिमा की नजर लग गई तो इनकी समृद्धि को ग्रहण लगा और संख्या भी घटने लगी। वोट बैंक की राजनीति और बाहुबल, जातिबल और धनबल की तिकड़ी ने राजनीति की मिठास को स्वार्थपूर्ति और सत्तालोलुपता के कड़वेपन में तब्दील कर दिया और इस कड़वेपन से विकास की इबारत मिटने लगी और बेबस किसानों के उदास चेहरों पर छाई चिंता की लकीरें बढ़ती रही।

चुनाव के मुद्दे गन्ने के मुरझाते खेतों और बन्द होती चीनी मिलों को अछूत मानकर कथित किसान नेताओं के निजी हितों को साधने के उपकरण बन गए और गन्ना किसानों के हाथों में मजबूरी की कौड़ियां, पलायन की बेबसी और तंगहाली की बदकिस्मती ही शेष रह गई। समाजवादी आंदोलन के प्रमुख केंद्र के रूप में नामी देवरिया तो चीनी उद्योग की बदहाली की दास्तान खामोशी से कहता रहा जिससे सुनने की सुध लंबे वक्त तक सत्ता के सामंतों को न रही।

कहावत है कि हर अंधेरी रात का अंत जरूर होता है और उम्मीद की सुनहरी किरणों वाला सूरज अपनी पूरी चमक से उगता जरूर है। ऐसा ही कुछ उत्तर प्रदेश में हुआ जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों प्रदेश का नेतृत्व आया। माननीय मुख्यमंत्री ने गन्ना

सहायक आचार्य, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

किसानों की बदहाली को लेकर संवेदनशीलता दिखाई और उसे अपनी सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल किया। गन्ना किसानों और चीनी मिलों के पुनरुद्धार के लिए त्रिसूत्रीय फॉर्मूला अपनाया गया। पहला, गन्ना किसानों के बकाए का पारदर्शी और त्वरित भुगतान जिससे किसानों का मनोबल बढ़े। दूसरा, बन्द पड़ी चीनी मिलों को पुनः चालू करना और चल रही चीनी मिलों के आधारभूत ढांचे में गुणात्मक सुधार करना और तीसरा चीनी उद्योग को और भी अधिक लाभप्रद बनाने हेतु गन्ने से चीनी के अलावा अन्य उत्पादों जैसे कागज, बिजली इथेनॉल आदि के उत्पादन पर भी ध्यान देना।

पूर्वांचल की दो प्रसिद्ध चीनी मिलें बस्ती जनपद की मुंडेरवा चीनी मिल और गोरखपुर जनपद की पिपराइच चीनी मिल, जो बंद हो चुकीं थीं उन्हें दोबारा शुरू करने के लिए सरकार बनते ही प्रयासों की शुरुआत कर दी गई। किसी जमाने में किसान आंदोलन और 03 किसानों के बलिदान की गवाह रही मुंडेरवा चीनी मिल की चिमनियों से निकलने वाला धुआं आज इस क्षेत्र के किसानों को सुकून देता है, इसका शिलान्यास माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा मार्च 2018 में हुआ था और आज यहां पचास हजार क्विंटल प्रतिदिन की पेराई क्षमता की नई यूनिट और 27 मेगावाट बिजली उत्पादन के प्लांट की रौनक साफ देखी जा सकती है जो 21 साल से बन्द पड़ी इस मिल के लिए किसी नए सवेरे से कम थोड़ी न है।

आंकड़े गवाही देते हैं कि वर्ष 2007 से 2016 के बीच प्रदेश में 28 चीनी मिलें बन्द हो गईं। एक बार बन्द हो चुकी चीनी मिल को दोबारा नवजीवन देने के लिए दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति और विकासवादी दूरदृष्टि की जरूरत होती है। योगी सरकार ने चरणबद्ध रूप में इन मिलों को चलाने की योजना का खाका खींचा है और इनमें से 11 मिलों को चिह्नित किया जा चुका है जिनपर काम की शुरुआत हो चुकी है और 07 मिलें तो चल भी रहीं हैं। भूमि विवादों से मिलों की मुक्ति, ऋणग्रस्ता एवं वित्त के अभाव से छुटकारा और गन्ना समितियों की राजनैतिक महत्वकांक्षाओं के नकारात्मक चरित्रों पर नियंत्रण योगी सरकार के एजेंडे में है। गन्ना किसानों को उनके अथक परिश्रम का सम्मानजनक और न्यायसंगत मूल्य मिले इसकी भी व्यवस्था योगी सरकार ने कर दी है और इसकी शुरुआत इसी वर्ष से हो गई जब चीनी मिलों ने 14 दिनों के अंदर किसानों को भुगतान करना शुरू कर दिया और अबतक 547.84 करोड़ रुपयों का भुगतान किया भी जा चुका है।

आंकड़े पुनः गवाही देते हैं कि राज्य में अबतक चीनी मिलों द्वारा लगभग 55 लाख टन गन्ने की पेराई के बाद लगभग 5.5 लाख टन चीनी उत्पादित की जा चुकी है।

गन्ना किसान आज अपने खेतों में खड़ी गन्ने की फसल को देखकर दिल से खुश होते हैं और चीनी मिलों की चल रही चिमनियों से निकलते धुएं के गुबार उनके मनोबल को बढ़ाते हैं। इसके पीछे माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में बनी ठोस कार्ययोजना है जिसकी परिणति यह है कि आज प्रस्तावित 119 चीनी मिलों में से अब तक 75 मिलों की शुरुआत हो चुकी है और यह यात्रा अभी भी जारी है।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ का मानना है कि केवल काम करना और काम से संतुष्ट हो जाना पर्याप्त नहीं बल्कि काम की ऐसी व्यवस्था बनाना अधिक महत्वपूर्ण है जो दीर्घकालिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए सत्त चलायमान हो। और इसी भावना से चीनी मिलों के उद्धार का यह प्रयास कभी रुके नहीं इसके लिए प्रदेश सरकार ने विशेषज्ञों की समिति के सहयोग से प्रभावी योजना बनाने पर कार्य करना आरंभ कर दिया है जिससे बहुआयामी विकास के प्रतिमानों पर केंद्रित होकर चीनी मिलें स्थायित्व की दिशागामी हो सकें।

*****

वर्ष 2019 में गोरखपुर की औद्योगिक प्रगति संभावनायें एवं सुझाव

एस.के. अग्रवाल

विगत वर्ष 2019 गोरखपुर जनपद के औद्योगिक विकास के लिए सफलतम वर्ष रहा है। वर्ष 2018 तक गोरखपुर में औद्योगिक, पूंजीनिवेश 2000 करोड़ रूपये का था। प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित इन्वेस्टर समिट के फलस्वरूप वर्ष 2019 में गोरखपुर जनपद में 1200 करोड़ की लागत से विभिन्न औद्योगिक इकाइयों ने कार्य प्रारम्भ कर दिया है। गोरखपुर जनपद में औद्योगिक विकास का केन्द्र गीडा में 1500 करोड़ रूपये की लागत से 500 उद्योग कार्यरत हैं। वर्ष 2019 में जनपद में जो महत्वपूर्ण उद्योग स्थापित हुए हैं उनमें गैलेंट इस्पात का विस्तार, अंकुर स्टील का निर्माण कार्य, शुद्ध हाइजिन प्रोडक्ट की सैनेटरी नैपकिन इकाई, इंडियन ऑयल का बाटलिंग प्लांट, धुरियापार में इथेनॉल प्लांट का शिलान्यास, पिपराइच चीनी मिल का उद्घाटन, नारायणी लेमिनेट्स, एस.डी. पैकेजिंग, एहसान एग्रो, मोदी केमिकल्स की नयी इकाई एवं 2 फ्लोर मिलों की स्थापना मुख्य है। गोरखपुर का खाद कारखाना एवं गैस पाइप लाइन जिसकी लागत 22 हजार करोड़ रूपये है, स्थापित हो चुका है और वर्ष 2020 में उत्पादन भी प्रारम्भ कर देगा।

वर्ष 2019 औद्योगिक भूमि की उपलब्धता की दृष्टि से सफलतम वर्ष रहा है। इस वर्ष 51 उद्यमियों को 191 एकड भूमि उपलब्ध करायी गयी है। भीटीरावत एवं कालेसर में 500 एकड़ भूमि का अधिग्रहण अंतिम चरण में है। इसके अतिरिक्ति राज्य सरकार द्वारा 7000 एकड़ औद्योगिक भूमि पूर्वांचल एक्सप्रेस वे के साथ विकसित की जा रही है।

अवस्थापना सुविधाओं की दृष्टि से 2019 में कोलकता, बंगलूरू, हैदराबाद, मुम्बई के

पूर्व अध्यक्ष, चेम्बर ऑफ इण्डस्ट्रीज, गोरखपुर

लिए हवाई सेवा प्रारम्भ होने से बाहर के उद्यमियों का आवागमन बढ़ा है। सुविधाजनक आवागमन के लिए जनपद के चारों ओर चौड़ी सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है। जंगल कौड़िया कालेसर के बीच पुल का निर्माण लगभग पूरा होने से नेपाल से आने वाले यात्रियों को लखनऊ जाने में सुविधा होगी। रेल यातायात की दृष्टि से भी गोरखपुर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। गोरखपुर कैंट स्टेशन को उच्चीकृत किया जा रहा है। गीडा के महत्व को देखते हुए सहजनवा रेलवे स्टेशन का भी विस्तार प्रस्तावित है। पर्यटन की दृष्टि से रामगढ़ताल मुम्बई का मैरीन ड्राइव कहलाने लगा है। गोरखनाथ मंदिर में लाइट एंड साउण्ड शो, चिड़ियाघर, नौका विहार ऐसे अनेक स्थल हैं जो गोरखपुर में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देंगे।

औद्योगिक विकास की गोरखपुर जनपद में अपार संभावनाये हैं। रेलवे पर आधारित उद्योग, फर्टिलाइजर पर आधारित पैकेजिंग उद्योग, चीनी मिलों पर आधारित भारी मशीनरी उद्योग, फैब्रिकेशन एवं कास्टिंग उद्योग के लिए यह जनपद उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त गोरखपुर जनपद में परम्परागत टेक्सटाइल उद्योग, फूड प्रोसेसिंग उद्योग, कृषि पर आधारित उद्योग एवं वन उपज पर आधारित उद्योग रोजगार के अनेकों अवसर उपलब्ध करायेंगे। गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 27 एवं 28 पर स्थित है और महत्वपूर्ण स्वर्ग चतुर्भुज का भाग है। यह पूर्वांचल, उत्तरी बिहार एवं नेपाल की 20 करोड़ जनता का केन्द्रबिन्दु है। यहां सस्ता श्रम, 24 घंटे विद्युत आपूर्ति, पानी की प्रचुरता और भूमि की उपलब्धता है जोकि औद्योगिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। कृषि पर आधारित उद्योगों के लिए यहां प्रचुर मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध है।

गोरखपुर में दवा का बड़ा बाजार है। प्रदेश सरकार ने भी गोरखपुर को फार्मा जोन घोषित किया है। इस जनपद में दवा की खपत सालाना लगभग 2000 करोड़ रूपये की है। यहां दवा उत्पादन की मात्र एक इकाई है। यहां के कई उद्यमियों ने दवा उत्पादन की इकाइयां हिमांचल, उत्तरांचल, पंजाब, गुजरात में स्थापित की हुयी हैं। प्रदेश सरकार द्वारा फार्मा जोन की स्थापना करके इन प्रदेशों की भांति सुविधा देकर यहां दवा उद्योग को विकसित किया जा सकता है। इसी प्रकार गोरखपुर में पशु आहार की खपत लगभग 600 टन प्रतिमाह है जबकि यहां स्थापित इकाइयों का उत्पादन 200 टन प्रतिमाह है। पोल्ट्रीफीड एवं पशुआहार उद्योग की भी यहां अपार संभावनाएं हैं।

वर्ष 2020 में गोरखपुर में मेगा फूड प्रोसेसिंग पार्क, टेक्सटाइल पार्क एवं इंफोर्मेशनल टेक्नालोजी पार्क की स्थापना की संभावना है जिसके लिए गीडा द्वारा भूमि उपलब्ध करायी

जाएगी। गीडा में इंटरनेशनल बस टर्मिनल की स्थापना का प्रस्ताव गीडा बोर्ड ने स्वीकृत किया है। गोरखपुर चावल एवं गेहूँ उत्पादन का मुख्य केन्द्र है। इस उद्योग में निर्यात की अपार संभावना है। सरकार द्वारा चावल उद्योग के लिए रिसर्च सेंटर स्थापित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार निर्यात को बढ़ावा देने के लिए यहां ड्राईपोर्ट की स्थापना भी आवश्यक है।

प्रदेश सरकार द्वारा औद्योगिक नीति एवं टेक्सटाइल, फार्मा, फूड प्रोसेसिंग एवं अन्य उद्योगों के लिए पारदर्शी उद्योग नीति बनाकर सराहनीय कार्य किया गया है। इन नीतियों के लागू होने के बाद से प्रदेश में औद्योगिक विकास का वातावरण बना है। सरकार ने 5 करोड़ रूपये से कम लागत वाले 156 श्रेणी के उद्योगों को प्रदूषण की दृष्टि से श्वेत श्रेणी में लाकर उनको इंस्पेक्टर राज से मुक्त किया है। एक जिला एक उत्पाद (ODOP) योजना से जिलों के पारंपरिक उद्योगों एवं कारीगरों को विश्व के बाजार में स्थापित करने का सराहनीय कदम उठाया है।

गोरखपुर एवं निकटवर्ती संतकबीर नगर में लगभग 30 हजार बुनकर हैं और 8000 पावरलूम लगे हैं। ये बुनकर स्कूल ड्रेस का कपड़ा तैयार करते हैं। गोरखपुर में उत्पादित स्कूल ड्रेस की सरकारी खरीद इन बुनकरों से सुनिश्चित की जाए जिससे अन्य बुनकर भी पावरलूम उद्योग लगाने के लिए आकर्षित होंगे। टेक्सटाइल उद्योग के लिए यहां कुशल श्रमिक एवं कारीगर उपलब्ध हैं। असंगठित क्षेत्र में यहां रेडीमेड गारमेंट, यार्न डाइंग की सूक्ष्म इकाइयां कार्यरत हैं। गोरखपुर की बड़ी आबादी की खपत को देखते हुए यहां मेडिकल टेक्सटाइल, एकाइलिंक यार्न, कारपेट, फोम, होजरी की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

गोरखपुर जनपद के त्वरित औद्योगिक विकास एवं उद्यमियों को प्रोत्साहन देने के लिए निम्नलिखित कदम आवश्यक हैं :-

1. प्रदेश सरकार द्वारा गीडा को रिवाल्विंग फंड देकर रियायती दर पर औद्योगिक भूमि देना सुनिश्चित किया जाए।
2. केन्द्र सरकार द्वारा उत्तरांचल, हिमांचल, तेलंगाना एवं पूर्वोत्तर राज्यों के समक्ष गोरखपुर जनपद में उद्योगों की स्थापना के लिए आर्थिक पैकेज दिया जाए।
3. गीडा बोर्ड में उद्यमी को सदस्य के रूप में शामिल किया जाए। पूर्वांचल विकास परिषद में भी उद्यमी को सदस्यता दी जाए।
4. उद्यमियों की समस्याओं के निस्तारण के लिए उद्योग बंधु एक सक्षम माध्यम है। इन बैठकों को प्रभावी बनाने के लिए वर्ष में दो बार इन बैठकों की अध्यक्षता प्रभारी मंत्री

एवं प्रभारी प्रमुख सचिव द्वारा सुनिश्चित की जाए।

5. प्रदूषण, विद्युत, वाणिज्यकर, अग्निशमन, श्रम एवं अन्य उद्योग संबंधी विभागों के लिए समयबद्ध समाधान योजना लागू की जाए जिससे इकाइयों को विभागीय प्रक्रिया के पालन का अवसर मिले एवं नियमित होकर अपना उद्योग चला सकें।

6. गोरखपुर पूर्वांचल का प्रमुख केन्द्र है। इसके महत्व को देखते हुए यहां अपर आयुक्त उद्योग की नियुक्ति की जाए जो गोरखपुर, बस्ती एवं आजमगढ़ मंडल के औद्योगिक विकास को गति प्रदान कर सके।

7. प्रदेश के नये और पुराने मध्यम एवं लघु उद्योग को विद्युत दरों में 2 रूपये प्रति यूनिट की दर से छूट दी जाए जिससे यहां के उद्योग अन्य प्रदेशों के उद्योग से प्रतिस्पर्धा कर सके।

गोरखपुर जनपद औद्योगिक रूप से पिछड़े पूर्वांचल का केन्द्रबिन्दु जनपद है। इसके औद्योगिक विकास से इसके चारों ओर 100 किमी. क्षेत्र का स्वतः विकसित हो जाएगा। यहां तकनीकी शिक्षा की दृष्टि से 4 इंजीनियरिंग कालेज, 4 फार्मेसी कालेज होने से प्रतिभा उपलब्ध है। अतः प्रदेश सरकार द्वारा उद्योग विकास से संबंधित सभी प्रकार की अवस्थापना सुविधायें उपलब्ध करा कर गोरखपुर जनपद को केन्द्रबिंदु बनाकर पूर्वांचल का समग्र विकास करने की आवश्यकता है।

*****

गोरखपुर परिक्षेत्र में पौध-रोपण

प्रो. विनय कुमार सिंह

विकास की अंधी दौड़ में हमें लगता है कि हमें तकनीकी स्वर्ग मिल गया है। यह आने वाले वर्षों में हमारा सबसे बुरा समय होगा। चाहे इसे हम पसन्द करें या नही, हमने पहले ही खुद को प्रौद्योगिकी के एक चांदी के टुकड़े पर मौत के जबड़े में सौप दिया है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी अलग-अलग चीजें हैं। विज्ञान सत्य की खोज है तो तकनीकी, विलासता व जीवन शैली के सुधार के क्रम में पर्यावरणीय छेड़-छाड़, जिनमें मुख्यतः प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तथा रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, खाद्य योजकों, तथा रेडियेशन से पर्यावरण को निरन्तर प्रभावित किया जा रहा है। पिछले कुछ एक दशकों के दौरान पूरा विश्व वैश्विक उथल-पुथल और परिवर्तनों से गुजरा है। जनसंख्या भी तेजी से बढ़ी है। परिणामस्वरूप संसाधन घट गये हैं। पृथ्वी को हरे रंग के आवरण से वंचित किया गया है। औद्योगिक क्रांति, शहरीकरण, जनसंख्या में तेजी से वृद्धि, सड़कों पर वाहनों में भारी वृद्धि और मानव की अन्य गतिविधियों ने प्राकृतिक घटना के संतुलन को असंतुलित कर दिया है। प्रत्येक दिन आदमी द्वारा सैकड़ों पेड़ों की कटाई की जाती है जिसे फिर नही लगाया जाता है। मानव का इसी तरह से हस्तक्षेप पर्यावरण को बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचा चुका है। वायुमण्डल में उपस्थित आक्सीजन तथा कार्बनडाई आक्साइड के संतुलन को बनाये रखने में पेड़-पौधे ही हैं। वायुमण्डल में आक्सीजन की मात्रा लगभग 21 प्रतिशत और कार्बनडाई आक्साइड की मात्रा लगभग 0.041 प्रतिशत होती है। पृथ्वी पर उपस्थित प्रत्येक प्राणि आक्सीजन ग्रहण करते है, तथा कार्बनडाई आक्साइड बाहर मुक्त करते हैं। इस प्रक्रिया में आक्सीजन की बड़ी मात्रा प्रयुक्त होती है तथा कार्बनडाई आक्साइड की विशाल मात्रा वायुमण्डल में मुक्त होती है, फिर भी अनुपात लगभग स्थिर रहता है, इसका

आचार्य, प्राणि विज्ञान विभाग एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर-273009, उ.प्र.

कारण हमारे आस-पास पाये जाने वाले पेड़-पौधे हैं। ये पौधे प्रकाश संश्लेषण (इस प्रक्रिया में सूर्य की ऊर्जा, रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित होती है इसका उपयोग जीव-जन्तुओं जैसे पौधे, शैवाल व वैक्टिरिया आदि करते हैं) की क्रिया द्वारा कार्बनडाई आक्साइड का उपयोग कर अपना भोजन बनाते हैं और आक्सीजन को मुक्त करते हैं। इन दोनों ही गैसों में से किसी एक का भी वायुमण्डल में बढ़ना चिंता का विषय है, इसीलिए कहा जाता है कि जैव-विविधता, जलवायु संतुलन बनाये रखने के लिए जरूरी है। प्रोफेसर कोल एडवर्ड के शब्दों में **''आक्सीजन न सिर्फ जैव-विविधता में सहयोग करती है बल्कि जलवायु से जुड़े बाकी कारकों के उत्थान में सहयोग प्रदान करती है यह दोनों ही पक्ष स्वतंत्र हैं।''**

अब जबकि पर्यावरणीय संकट गहरा हो गया है, तो ऐसी परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए। आज हम सब चाहते है कि पर्यावरण की रक्षा होनी ही चाहिये। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति की हिस्सेदारी आवश्यक है क्योंकि पेड-पौधे आक्सीजन देकर जीवन प्रदान करते हैं, कोई भी प्राणि बिना आक्सीजन के जीवित नहीं रह सकता है। भविष्य को सुरक्षित रखने व वायुमण्डलीय गैसों में संतुलन बनाये रखने के लिए पौधों को सुरक्षित एवं संरक्षित करना ही होगा। **दीर्घकालिक पौधे जैसे- पीपल, नीम, बरगद के पौधे 20-22 घण्टे तक आक्सीजन देते हैं इनकी पत्तियों से एक घण्टे में 5 मिलीलीटर आक्सीजन उत्पन्न होता है।** पर्यावरणीय संकट से बाहर आने का एक मात्र उपाय वृक्षारोपण है। इस दिशा में पूज्य श्री गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री उ.प्र. सरकार के कुशल नेतृत्व में सचेष्ट व दृढ़-संकल्पित नजर आ रही है।

जनपद गोरखपुर को **7 जोन व 19 सेक्टर** में बाँट कर पौध-रोपण का कार्य किया जा रहा है। **गोरखपुर परिक्षेत्र का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 3488 वर्ग किलोमीटर है। इसमें लगभग 264828 हेक्टयर भूमि कृषि योग्य है वहीं पर सिंचित भूमि लगभग 198621 हेक्टयर है।** प्रदेश सरकार द्वारा इस वर्ष आम जनमानस को पौधरोपण अभियान के साथ जोड़ते हुए इसे **''पौधरोपण महाकुंभ''** का नाम दिया गया है। प्रदेश में लगभग 1500 पौधों की नर्सरी हैं जहां पर 80 से अधिक प्रजातियों के पौधे हैं। इनमें से मुख्य रूप से भारत में पाये जाने वाले **दीर्घजीवी पौधे आम, इमली, पीपल, बरगद, पाकड़, अर्जुन, सहजन, आंवला, जामुन, गुलर आदि हैं** जो पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है साथ ही आक्सीजन की मात्रा वायुमण्डल में अधिकाधिक मुक्त करते हैं। **जनपद गोरखपुर में पिछले वर्ष इतने ही समय में लगभग 15 लाख पौधे लगाये गये थे। इस वर्ष जनपद गोरखपुर**

में शासन द्वारा 45.44 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। 15 अगस्त, 2019 को विशेष अभियान चलाकर लगभग **24 लाख पौधे** लगाये। शेष पौधे दिसम्बर तक लगाकर लक्ष्य को पूर्ण कर लेना है। इनमें से **10.44 लाख** पौधे अकेले वन विभाग द्वारा लगाया जा रहा है बाकी लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए गैर-सरकारी संगठन व अन्य सरकारी विभागों को दिया गया है। सरकार द्वारा इन पौधों को लगाने के लिए एक मानक तय किया गया है कि पौधरोपण सामुदायिक स्थानों पर 625 पौधे प्रति हेक्टयर, सड़कों के किनारे 200 पौधे प्रतिकिलोमीटर, नहरों के किनारे 400 पौधे प्रतिकिलोमीटर तथा खेत की मेड़ों पर 200 पौधे प्रतिहेक्टयर के हिसाब से लगाये जाने चाहिए। पहली बार इन सभी पौधों की जिम्मेदारी 2 वर्ष के लिए निर्धारित की गयी है। यदि पौधा किन्हीं कारणों से सुख जाता है तो पुनः उसी स्थान पर नया पौधा लगाना होगा इसके लिए शासन द्वारा जीओ टैगिंग के माध्यम से निगरानी की जा रही है। शासन ने प्रदेश के सभी जनपदों में **पंचवटी व गांधी उपवन** स्थापित करने के लिए कहा है। गोरखपुर जनपद में वन विभाग द्वारा कैम्पियरगंज के अलीपुर गांव के पास गांधी उपवन में **5000 पौधे** व पंचवटी में **100 पौधे** लगाने के लिए भूमि आरक्षित किया है। पंचवटी में बेल, आंवला, अशोक, पीपल व बरगद के पौधे लगाये जाने हैं। गांधी उपवन में बरगद, नीम बबूल, साल, महुआ व परिजात (कल्पवृक्ष) जैसे पौधों का रोपण किया जाना है। वन विभाग का कहना है कि कल्पवृक्ष का पौधा उपलब्ध नहीं है। मैं बताना चाहता हूँ कि प्रो. डी.के. सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा इस वर्ष में कुल **88** परिजात (कल्पवृक्ष) के पौधे गोरखपुर के विभिन्न स्थानों में लगाये गये हैं। आपका व्रत कुल 11000 **पौधे** लगाने का है जिसमें **101 पौधे** कल्पवृक्ष लगाने का संकल्प है अब तक आपने कुल **3348 पौधे** अपने व्यक्तिगत संसाधन से जनपद गोरखपुर में लगाये हैं आप द्वारा सार्वजनिक स्थानों, विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय में पौधारोपण का कार्य किया गया है।

पौधरोपण महाकुंभ में शासन, सरकारी विभागों, गैर-सरकारी संगठनों के अलवा व्यक्तिगत रूचि लेते हुए आमजन मानस के लोगों ने सहभागिता किया। यहां पर एक नाम लेना चाहूंगा वह नाम है प्रो. डी.के. सिंह, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय से आचार्य के रूप में अवकाश प्राप्त करने के उपरांत पर्यावरण के खतरे को भांप कर पौधरोपण जैसे पुनीत कार्य के लिए आपने व्रत लिया आप द्वारा भारतीय मूल के पौधे को ही लगाने का संकल्प लिया गया, क्योंकि ये पौधे दीर्घजीवी, अधिक आक्सीजन देने वाले तथा इनमें अधिक अनुकुलन की क्षमता होने के कारण वायुमण्डल में से कार्बनडाई आक्साइड को भोजन के रूप में उपयोग कर

पर्यावरण को संतुलित करते हैं। पर्यावरणीय संरक्षण की बात करते हुए आप कहते है कि पौधों को काटने से एवं बढ़ती जनसंख्या के वजह से 2025 तक पीने के पानी के उपयोग 120 प्रतिशत तक बढ़ जायेगी जिसका ज्यादा प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप पर पड़ेगा। प्रमुख नदियों का अस्तिव खतरे में होगी तथा एक दशक के अन्दर गोरखपुर परिक्षेत्र में भी पानी का संकट गहरायेगा। पर्यावरण संतुलन के लिए वृक्षारोपण एक महा अभियान के रूप में चलाने जाने की जरूरत है। सरकार इस दिशा में कदम बढ़ा चुकी है। अनुमानतः 20वीं शताब्दी के आरम्भ में पृथ्वी पर जितने वृक्ष थे उतना यदि हम वृक्षारोपण कर लें तो 100 मिलियन मैट्रिक टन कार्बनडाई आक्साइड की मात्रा को वायुमण्डल से कम कर सकते हैं। प्रो. डी.के. सिंह जो पौधे अपने संसाधन से उपलब्ध कराते हैं उनमें मुख्यतः परिजात, कपूर, सीताअशोक, रूद्राक्ष, तेजपत्ता, गुलर, पाकड़, पीपल, बरगद, मौलश्री, नीम, आम, जामुन, नाशपाती, इमली, बेर आदि है। इनमें से अधिकांश पौधे ऐसे है जहां सकरात्मक ऊर्जा का संचरण होता है।

इसी क्रम में डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़ के ''मिशन मंझरिया'' के अन्तर्गत बी.एड. विभाग के सहयोग से पौधरोपण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में भी प्रो. डी.के. सिंह जी ने 101 मौलश्री के पौधे गांव मंझरिया में प्रत्येक परिवार को देकर लगवाया। आपने अपने उद्‌बोधान में कहा कि मानव जीवन के लिए पौधे अनिवार्य हैं। अधिक से अधिक पौधरोपण ही पर्यावरण का स्थायी समाधान। इस वर्ष आप द्वारा गुरूकुल महाविद्यालय ददरी, बड़हलगंज, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल, धूसड़, शहीदबन्धु सिंह महाविद्यालय, करीमनगर, सरदार नगर एवं सरस्वती विद्यामंदिर के विभिन्न संस्थानों ने पौधरोपण का कार्य किया गया। दिनांक 20.12.2019 को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के रोवर्स एवं रेंजर्स के प्रशिक्षण शिविर में अध्यक्षता करते हुए रोवर्स एवं रेंजर्स के समन्वयक प्रो. विनय कुमार सिंह को 5 पौधे प्रो. डी. के. सिंह ने दिया। इन पौधों में कपूर, रूद्राक्ष, तेजपत्ता व कल्पवृक्ष जिसे उसी दिन छात्रों द्वारा परिसर में लगाया गया।

वृक्षारोपण में सावधानियां :-

1. सस्ते व उच्चकोटि के पौधे नर्सरी द्वारा उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
2. वृक्षारोपण के लिए पौधों की प्रजातियों और उनके अनुपात का निर्धारण विषय का ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों से परामर्श कर किया जाना चाहिए।
3. प्रतिहेक्टयर पौधों की संख्या प्रत्येक प्रकार के पौधों की वानिकी का निर्धारण

विषय-विशेषज्ञ या तकनीकी ज्ञान वाले व्यक्ति के परामर्श के बाद ही किया जाना चाहिए।

4. पौधों की प्रजातियों के आधार पर वन भूमि/सामुदायिक भूमि और निजी भूमि पर वृक्षरोपण किया जाना चाहिए।

5. पौधों की प्रजातियों का चुनाव ऐसे हो जिससे इमारती लकड़ियों, जलाने योग्य लकड़ियाँ तथा फल देने वाले पौधे हो जो व्यक्ति के आमदनी को बढ़ा सके।

6. पौधों के रोगों के नियंत्रण के लिए बागवानी विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर जानकारी उपलब्ध कराते रहना चाहिए।

7. समय-समय पर निरीक्षण कर मृतपौधों का पुनः स्थापन, सुरक्षा, व जागरूकता आवश्यक है।

Give back to the Earth more than what is taken from it

*****

अशफ़ाक उल्लाह खां प्राणि उद्यान (चिड़ियाघर) : एक अनमोल उपहार

डॉ. संतोष कुमार सिंह

रामगढ़ताल के दक्षिणी-पूर्वी छोर के देवरिया बाईपास रोड पर अशफ़ाक उल्लाह खां प्राणि उद्यान का निर्माण कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है। वस्तुतः यह परियोजना सन् 2007 की है जब उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती जी थी। किन्तु यह परियोजना सिर्फ एक घोषणा बनकर रह गयी थी। गोरखपुर के लिए यह दिन सबसे सौभाग्य का दिन था जब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी श्री आदित्यनाथ जी ने शपथ ली। गोरखपुर ही नहीं बल्कि समूचे पूर्वांचल को जैसे अचानक ईश्वरीय वरदान प्राप्त हो गया। विकास की संभावनाएँ सच में तब्दील हो गयीं। चिड़ियाघर का निर्माण एक दशक से ठहरी और ठण्डी संभावना बनकर रह गया था। योगी श्री आदित्यनाथ जी के मुख्यमंत्री बनते ही यह परियोजना सक्रिय और मूर्त हो गयी। जून 2020 तक पूर्वांचल की जनता को अशफ़ाक उल्लाह खां प्राणि उद्यान लोकार्पित हो जायेगा।

अशफ़ाक उल्लाह खां प्राणि उद्यान का विस्तार 121.34 एकड़ भूमि पर है। जिसमें से 51 एकड़ भूमि पर विभिन्न प्रजातियों के पशु-पक्षी होंगे। 34 एकड़ भूमि वेटलैण्ड के रूप में, 29 एकड़ भूमि जंगल के रूप में तथा 7 एकड़ भूमि में हॉस्पिटल, रेजिडेन्स, फीड स्टोर, किचेन आदि की व्यवस्था की जायेगी। इस विस्तृत क्षेत्र को 36 इनक्लोजर्स की सहायता से कवर किया जायेगा।

प्राणि उद्यान का मुख्य द्वारउ जिसे इन्ट्रेंस प्लाजा के नाम से जाना जायेगा, 3850 वर्ग मीटर में तैसार किया जा रहा है। पूरा इन्ट्रेंस प्लाजा गोरखनाथ मंदिर की थीम पर डिजाइन किया

प्राचार्य, राधिका महाविद्यालय, मझगावाँ, गगहा, गोरखपुर

गया है। इन्ट्रेंस प्लाजा में क्लाकरूम, एम.पी. थियेटर, असेम्बली प्वाइन्ट, प्रशासनिक भवन, फोर डी थियेटर तथा चिल्ड्रेन्स एक्टिविटी प्लेस के दर्शन होंगे। जो अत्याधुनिक तकनीक से निर्मित होंगे। रहस्य, रोमांच, ज्ञान और मनोरंजन से भरपूर दुनिया का दर्शन होगा प्राणि उद्यान में।

इन्ट्रेंस प्लाजा के बाद साइनेज बिल्डिंग है जिसमें 1500 कि.ग्रा. की कांस्य की बुद्ध प्रतिमा की स्थापना होगी। साइनेज बिल्डिंग, कैफेटेरिया तथा कियास की डिजाइन बुद्धिस्ट थीम पर आधारित होगी। वस्तुतः बुद्ध धर्म और नाथ संप्रदाय दोनों अहिंसा और जीव दया के समर्थक रहे हैं। प्राणि उद्यान में लगभग 60 प्रजातियों के 200 से अधिक पशु-पक्षी होंगे।

चिड़ियाघर या जिसे आज हम प्राणि उद्यान कहते हैं इसकी अवधारणा का जन्म लगभग 3500 ई.पू. मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता में हुआ था। इस कालखण्ड में राजा कुछ जंगली जानवरों को जैसे शेर, बाघ, चीता, हाथी आदि को पालता था। इन पशुओं को पालने वाला राजा या सम्राट शक्तिशाली और ताकतवर माना जाता था। बहुधा राजा इन पशुओं की हिंसक लड़ाई का आनन्द लेते थे तथा कभी-कभी अपनी प्रजा या पदाधिकारी को दण्ड देने के लिए इन हिंसक पशुओं के सामने छोड़ देते थे। सभ्यता के विकास के साथ चिड़ियाघर की अवधारणा में भी परिवर्तन हुआ। जर्मनी, फ्रांस आदि देशों में आज न केवल विभिन्न प्रजातियों के पशु-पक्षी हैं बल्कि उन्हें लंबे समय तक जीवित और स्वास्थ्य रखने के उद्देश्य से उस तरह की वनस्पतियों को भी चिड़ियाघर या प्राणिउद्यान में रोपित किया जा रहा है। आधुनिक प्राणि उद्यान सिर्फ मनोरंजन और रोमांच के केन्द्र नहीं हैं बल्कि जीवविज्ञानियों के लिए शोध और नयी खोज के केन्द्र बन गये हैं।

गोरखपुर का अशफ़ाक उल्लाह खां प्राणि उद्यान समूचे पूर्वांचल के साथ बिहार और नेपाल के लिए एक मुख्य पर्यटन स्थल साबित होगा। एक तरफ रामगढ़ताल की विस्तृत, धवल-तरंगित जलराशि तो दूसरी तरफ विभिन्न प्रजातियों के कौतुहलकारी जीव। पर्यटक दिन के उजाले में प्राणि उद्यान का आनन्द लेंगे तो शाम ढलते ही नौकाविहार और लाइट एण्ड साउण्ड शो को। पर्यटन की दृष्टि से प्राणि उद्यान गोरखपुर शहर के लिए एक अनमोल विरासत है।

*****

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संसथान (एम्स)

शुरू हुआ असाध्य रोगों से मुक्ति का निर्णायक संघर्ष

प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा

प्रतिदिन तकरीबन एक हजार रोगियों का पंजीकरण. ओपीडी में हर रोज औसतन बारह सौ से ज्यादा मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श, जांच और परीक्षण। बमुश्किल 8 महीनों में 2,69,235 रोगियों का पंजीकरण और इसी अवधि में 92,419 रोगियों का इलाज।

ये आंकड़े किसी जिले के स्वास्थ्य केन्द्रों की प्रगति आख्या पंजिका के नहीं बल्कि अकेले अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संसथान, गोरखपुर के हैं जिसने अपनी सक्रियता आरम्भ होने के आठ महीनों के भीतर ही यह साबित कर दिया है कि वह सचमुच आजादी के बाद का इस अंचल को मिला 'सबसे बड़ा उपहार' है। एक ऐसा उपहार जिससे न सिर्फ गोरखपुर बल्कि महाराजगंज, कुशीनगर, देवरिया सहित पूर्वांचल के करीब 20 जिलों और नेपाल, पश्चिमी बिहार के भी मरीज लाभान्वित हो रहे हैं।

लगभग हर क्षेत्र में देश को अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं और सरकारी चिकित्सा प्रणाली को लेकर हमेशा से ही सवाल उठते रहे हैं। देश की आबादी का पांचवां हिस्सा लम्बे समय से बेहतर स्वास्थ्य देखभाल से वंचित रहा है जिसके चलते वह देश के सामजिक और आर्थिक विकास में चाहते हुए भी वैसा योगदान नहीं कर पाया जैसा वह कर सकता था। पूर्वी उत्तर प्रदेश में हालत और भी बुरे रहे हैं। आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की बड़ी संख्या और इलाके में गंदगी तथा बेहद लापरवाह सरकारी ढांचे की मिली जुली साजिशों के चलते रोगों और दावा कम्पनियों के लिए यह स्वर्णिम आखेट स्थली रहा है।

प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

और इसीलिए जब केंद्र सरकार ने 2016 में गोरखपुर एम्स की स्थापना का निर्णय लिया तो पूर्वांचल से लेकर सीमावर्ती बिहार और नेपाल तक के नागरिकों में खुशी की लहर दौड़ गयी। रोगों की बहुतायत और प्रभावी सरकारी स्वास्थ्य तंत्र न होने से गंभीर रोगों के लिए दिल्ली और मुम्बई तक की दौड़ लगाते लोगों के लिए यह वरदान से कम नहीं था।

ऐसा बहुत कम बार हो पाता है कि महत्वाकांक्षी जन कल्याणकारी योजनायें नियत समय से जमीन पर मूर्त रूप लें लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को इस बात का श्रेय जाता है जिन्होंने लगातार दौरों और सतत निगरानी से इस योजना को बेहद कम समय में मूर्तमान कराया। प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी के लिए भी यह परियोजना कितनी अहम थी इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि घोषणा से लेकर शुभारम्भ तक उन्होंने अपनी उपस्थिति और पर्यवेक्षण बनाये रखा।

एम्स के उपनिदेशक (प्रशासन) श्री अश्विनी कुमार माहौर के मुताबिक गोरखपुर में एम्स की स्थापना के मुख्य रूप से तीन उद्देश्य हैं- पहला, इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों विशेषकर आम आदमी या वंचित वर्ग के व्यक्तियों के लिए उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध कराना। दूसरा- चिकित्सा शिक्षा के एक सर्वश्रेष्ठ केंद्र के रूप में काम करना और तीसरा- क्लीनिकल रिसर्च और बेसिक रिसर्च के एक ऐसे उत्कृष्ट शोध संस्थान के रूप में कार्य करना जहां कम लागत वाले ऐसे नवाचारी स्वास्थ्य संबंधी उपकरण और चिकित्सा रणनीतियां तैयार करना जिससे रोगों की पहचान और उसके इलाज में प्रभावी मदद मिल सके।

स्वाभाविक रूप से इस परियोजना का आकार बड़ा है। लगभग 100 एकड़ क्षेत्र में विस्तारित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान गोरखपुर में 720 बेड के मुख्य अस्पताल के अतिरिक्त 30 बेड का आयुष अस्पताल भी प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त यहाँ 100 सीटों वाला मेडिकल कॉलेज और 30 सीटों वाला नर्सिंग कॉलेज भी होगा।

लगभग 1011 करोड़ रु. की अनुमानित लागत वाले गोरखपुर एम्स में 500 व्यक्तियों की क्षमता वाले एक ऑडिटोरियम के अतिरिक्त 152 व्यक्तियों के लिए रात्रि विश्रामालय और एक बड़े शॉपिंग काम्पलेक्स की स्थापना भी प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त एक गेस्ट हाउस भी निर्माणाधीन है जिसमें 8 सिंगल रूम और 5 सुइट के अलावा 2 स्पेशल सुइट भी होंगे।

संस्थान में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए छात्रावासों का निर्माण चल रहा है। अंडर ग्रेजुएट विद्यार्थियों के लिए 246 सीटों वाले ब्वायज हॉस्टल तथा 120 सीटों वाले गर्ल्स हॉस्टल के अलावा परिसर में विवाहित विद्यार्थियों, पुरुष तथा महिला विद्यार्थियों के लिए अलग अलग 150 सीटों वाले हॉस्टल भी होंगे। संसथान में कार्यरत अधिकारियों, चिकित्साकर्मियों तथा

अन्य संवर्गों के कार्मिकों के लिए परिसर में टाइप-2 के 96, टाइप-3 के 32, टाइप-4 के 24 तथा टाइप-5 के 24 आवास भी निर्माणाधीन हैं।

अपनी स्थापना के बाद से ही गोरखपुर एम्स अनवरत अपने दायित्व निर्वहन में जुट गया है। उप निदेशक (प्रशासन) श्री माहौर के मुताबिक अब तक बारह विभागों क्रमशः मेडिसिन, जनरल सर्जरी, डेंटल, पीडियाट्रिक, गायन्कोलोजी, ओर्थोपेडिक, डेर्मेटोलोजी, सायिकियाट्रिक, आप्थैलमिक, ईएनटी, रेडियोलोजी और डायग्नोस्टिक्स में ओपीडी सेवाएँ प्रारंभ की जा चुकी हैं। इन विभागों में फिलहाल 28 चिकित्सक अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। शीघ्र ही चिकित्सकों के 124 विज्ञापित पदों पर भी नियुक्ति हो जाएगी।

गोरखपुर एम्स पूरी तरह पेपरलेस पद्धति और कम्प्यूटरीकृत प्रणाली पर केन्द्रित है।गोरखपुर एम्स में पहले दिन से ओपीडी से लेकर जांच तक की सुविधा ऑन लाइन कर दी है। इसकी सुविधा मरीजों को मिलना शुरू हो गई है। एम्स में रजिस्ट्रेशन के लिए सिर्फ कंप्यूटर या मोबाइल और इंटरनेट कनेक्शन की जरूरत है। गूगल पर http://aiimsgorakhpur.in लिंक को खोलने पर 'पेशेंट रजिस्ट्रेशन' टैब दिखेगा। पेशेंट रजिस्ट्रेशन पर क्लिक करने के बाद एम्स रजिस्ट्रेशन का फार्मेट खुलेगा। इस फार्मेट में जरूरी सूचनाएं भरने से रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया पूरी होने पर मरीज को पेशेंट रजिस्ट्रेशन नंबर आवंटित होगा। रजिस्ट्रेशन नंबर के प्रिंटआउट को एम्स ले जाना होगा। जहां रजिस्ट्रेशन काउंटर पर रजिस्ट्रेशन नंबर दिखाने व 20 रुपये शुल्क जमा करने पर मरीज को एम्स का रजिस्ट्रेशन कार्ड मिल जाता है। इसका सबसे बड़ा फायदा दूरदराज के इलाकों में रहने वाले मरीजों और उनके परिजनों को हुआ है जो सिर्फ पंजीकरण कराने के लिए लम्बी दूरी की यात्रा और परेशानी का शिकार होते।

योजना के मुताबिक कुल 4 चरणों में एम्स का विकास और विस्तार प्रस्तावित है। प्रथम चरण में 25 फरवरी 2019 को आयुष और 21 अक्टूबर को मुख्य अस्पताल में ओपीडी शुरू हो चुकी है। दूसरे चरण में अगस्त माह से मेडिकल कालेज आरम्भ हो गया। 2 अक्टूबर से एमबीबीएस प्रथम वर्ष की कक्षाएं भी आरम्भ हो चुकी हैं। फरवरी 2020 में यह पूरी तरह क्रियाशील हो जायेगा। तीसरे चरण में मई तक 300 बेड का अस्पताल काम करना शुरू कर देगा। चौथे चरण में इसी साल अक्टूबर तक यह परियोजना पूर्ण आकार ग्रहण कर लेगी. पूर्वी उत्तर प्रदेश के निवासियों के लिए वह दिन असाध्य रोगों और महामारियों के विरुद्ध संघर्ष में विजय का निर्णायक दिन होगा।

*****

खाद कारखाना : विकास की राह में महत्वाकांक्षी कदम

पुरुषोत्तम राय

अभी तक राजनीति की खेती में खाद का काम करने वाला गोरखपुर का खाद कारखाना है अब किसानों की हालत सुधारेगा। इसे उनकी आय बढ़ेगी और सहजता से सही और समय से यूरिया की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। वर्षों से बंद पड़ा खाद कारखाना शुरू होगा, इसकी उम्मीद भी धुंधली हो गई थी। पर, अब नया खाद कारखाना वजूद में आ चुका है। काम की गति तेज है और समय से पूरी भी होगी। इस क्षेत्र के किसानों के लिए यह किसी तोहफे से कम नहीं है। और यह तोहफा किसान हितैषी और तेजी से फैसले लेने वाली राजनीति का ही सुखद प्रतिफल है। ढाई दशक बाद गोरखपुर की पहचान बन चुके खाद कारखाना से किसानों की खुशहाली की खाद निकलेगी।

एक हादसे के बाद बंद हुआ खाद कारखाना गोरखपुर की पहचान हुआ करता था। धीरे-धीरे बंद कारखाना कबाड़ का शक्ल अख्तियार करने लगा। अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोगों का रोजगार भी छिन गया। जहां रात-दिन चहल-पहल रहती थी वहां पर सन्नाटा छा गया। मशीनों की आवाज खामोश हो गई। लंबे समय तक जब खाद कारखाना को लेकर कोई हलचल नहीं हुई तो लोगों की उम्मीदों पर भी पानी फिर गया। साल-दर-साल बीते और खाद कारखाना इतिहास बनता गया। लेकिन खाद कारखाना को लेकर राजनीति के अखाड़े में खूब दांव चले गये। खूब वादें हुए और तालियां भी बजीं। पर अफसोस, यह सब चुनावी प्राचार का हिस्सा ही साबित होता रहा।

22 जुलाई 2016 को जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गोरखपुर में एम्स के साथ-साथ खाद कारखाने की आधारशिला रखी तो उम्मीद की कोंपलें फिर फूटनी शुरू हुई। कारखाने के निर्माण

वरिष्ठ पत्रकार, राष्ट्रीय सहारा, गोरखपुर

की जिम्मेदारी पांच कंपनियों एनटीपीसी, सीआईएल, आईओसीएल, एफसीआईएल व एचएफसीएल के ज्वाइंट वेंचर हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (एचयूआरएल) को सौंपी गई। खाद कारखाना का निर्माण 27 फरवरी 2018 में शुरू हुआ। निर्माण पूरा करने के लिए 36 माह की अवधि निर्धारित की गई है। एचयूआरएल प्रशासन का दावा है कि 26 फरवरी 2021 को हर हाल में खाद का उत्पादन शुरू कर दिया जाएगा। प्रतिदिन 3850 मीट्रिक टन नीम कोटेड यूरिया का उत्पादन किया जाएगा।

कुतुब की मनार से भी ऊंचा है प्रीलिंग टावर

देश में सबसे अच्छी व गुणवत्तायुक्त यूरिया का उत्पादन गोरखपुर खाद कारखाना में होगा। इसके लिए यहां देश के सबसे ऊँचा प्रीलिंग टावर (जहां यूरिया बनती है) का निर्माण कराया गया है। इसकी ऊँचाई 149.2 मीटर है। अभी तक देश का सबसे ऊँचा प्रीलिंग टावर चंबल फर्टिलाइजर कोटा में था, जिसकी ऊँचाई 141.5 मीटर है। प्रीलिंग टावर कुतुब मिनार से भी ऊंचा है। गोरखपुर के खाद कारखाना का निर्माण जापान की कंपनी टोयो करा रही है। यहां सबसे अच्छी यूरिया का उत्पादन हो, इसके लिए कंपनी ने प्रीलिंग टावर की खास डिजाइन की है। इसीलिए इसकी ऊँचाई बढ़ाई गई है। प्रीलिंग टावर की ऊँचाई जितनी अधिक होती है, यूरिया के दाने उतने छोटे व गुणवत्ता युक्त बनते हैं। ऐसे बनेगी यूरिया खाद कारखाना में – पहले यूरिया का घोल तैयार किया जाएगा। इसे प्रीलिंग टावर में ऊपर से एक मशीन के जरिये डाला जाएगा। ऊपर से घोल नीचे की तरफ आएगा और नीचे से हवा ऊपर की ओर जाएगी। हवा के रीएक्शन से घोल यूरिया दाने के रूप में बदल कर नीचे गिरेगा। गोरखपुर में बनने वाली यूरिया नीम कोटेड होगी।

पहले शुरू हो जाएगी मार्केटिंग

हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (एचयूआरएल) का खाद कारखाना में उत्पादन फरवरी 2021 में शुरू होगा लेकिन पूर्वांचल के किसानों को 2020 से ही खाद मिलने लगेगी। यह मार्केटिंग का हिस्सा होगा। देश के अन्य खाद कारखानों से खाद मंगा कर बेची जाएगी। 3850 मिट्रिक टन नीम कोटेड यूरिया का प्रतिदिन उत्पादन होगा।

*****

व्यापार-वाणिज्य

उत्साहवर्धक नीतियों एवं एयर-कनेक्टिविटी से बदल रहा परिदृश्य

अजेय कुमार गुप्ता

सांस्कृतिक धरोहर, परंपगयें, इतिहास और आम जनता मे व्याप्त सोच विचार और व्यवहार के साथ-साथ किसी क्षेत्र की जनता की दीर्घकालीन खुशहाली का निर्धारण उसकी आर्थिक गतिविधियों और आर्थिक उपलब्धियों से ही होता है। आर्थिक उपलब्धियों का भी अधिकांश भाग उस क्षेत्र के नैसर्गिक संसाधन तथा उनके उत्तम सदुपयोग और विदोहन पर निर्भर करता है। इन्हें ही हम आर्थिक गतिविधियों के दो छोर कह सकते हैं। इन दो छोरों को संतुलित करने का कार्य उस क्षेत्र की व्यापारिक और वाणिज्यिक गतिविधि करती है। व्यापारिक गतिविधि से तात्पर्य अपने व्यापार अथवा उपभोग के उद्देश्य से थोक तथा फुटकर क्रय विक्रय से हैं। वाणिज्यिक गतिविधि से तात्पर्य उक्त क्रय विक्रय को संभव बनाने वाली आधारभूत अवसंरचना व सहायक संस्थाओं जैसे सड़क, रेल, बैंक, बीमा, परिवहन व संप्रेषण जैसी अनिवार्य सेवाओं से हैं जिसके बगैर व्यापारिक गतिविधियां संभव नहीं हो पाती। इस प्रकार किसी क्षेत्र और उसकी जनता की खुशहाली और आर्थिक प्रगति के सूचक और निर्धारक दोनों ही यही व्यापारिक और वाणिज्यिक गतिविधि होते हैं। प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है की इस कड़ी के दोनों छोर, उपलब्ध नैसर्गिक संसाधन तथा उनका समुचित विदोहन, तथा बीच में स्थित व्यापारिक और वाणिज्यिक गतिविधियों का नियंत्रण पूरी तरह सरकार के ही हाथ में है। परंतु वास्तविकता यह है कि सरकार के अनेक प्रयासों के साथ-साथ स्थानीय लोगों में व्याप्त उद्यमिता तथा कुशलता से ही नैसर्गिक संसाधन व उनका विदोहन सुनिश्चित

प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

हो पाता है तथा वस्तुओं व सेवाओं की व्याप्त मांग व पूर्ति से व्यापार व वाणिज्य की दिशा एवं दशा नियंत्रित होती हैं। वस्तुओं की मांग और पूर्ति बहुत हद तक लोगों की उपभोग प्रवृत्ति तथा उनके व्यय एवं बचत की आदत से प्रभावित होती है। व्यापार और वाणिज्य को प्रभावित करने वाले सिक्के का यह तो हुआ एक पहलू। दूसरा पहलू बनता है जब यह तीनों ही मिलकर देश विदेश के विनियोजकों/व्यापारियों को आकर्षित करते हैं। यही आगे चलकर उस क्षेत्र में विनियोजन और व्यापारिक कार्यों का विस्तार करते हैं और इन तीनों ही गतिविधियों की दशा एवं दिशा अपने ढंग से भी निर्धारित करने लगते हैं। व्यापार और वाणिज्य को तय करने वाले दोनों पहलू एक दूसरे को आपस में परस्पर भी प्रभावित करने लगते हैं। एक तीसरी शक्ति का यहां उल्लेख आवश्यक है जिसे बाजार की ताकत कहते हैं। दूसरे शब्दों में बाजार में मांग और पूर्ति इस शक्ति का केंद्र बिंदु हैं।

सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं और इतिहास के दृष्टिकोण से गोरखपुर सदैव ही एक अत्यंत समृद्ध जनपद रहा है। गोरखपुर मूलतः एक कृषि प्रधान क्षेत्र रहा है। सन 1901 की जनगणना के अनुसार जब गोरखपुर और देवरिया एक ही जनपद थे, यहां की 71.6% जनता [कुल जनसंख्या 29,338,685] कृषि पर निर्भर थी जो बढ़कर 1911 में 88.1% जनता [कुल जनसंख्या 32,01,180] तथा 1921 में 91.8% जनता [कुल जनसंख्या 32,66,830] हो गई। 1951 में यह प्रतिशत गिरकर 88.5% हो गया जो उत्तर प्रदेश के समग्र अनुपात 74.2 की तुलना में अब अब भी ज्यादा थी। सातवां दशक भीषण सूखा के कारण अत्यंत उथल-पुथल भरा रहा, परंतु उसी के पश्चात् हरित क्रांति का सूत्रपात हुआ जिससे कृषि उत्पादन में हुई अभूतपूर्व वृद्धि न केवल कृषि मे, बल्कि व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में भी नए युग का सूत्रपात करती है। ऐसा लोगों की बढ़ी हुई आय और उससे उत्पन्न व्यापक मांग के परिणाम स्वरूप संभव हुआ। गोरखपुर गजेटियर का अध्ययन करने पर सत्रहवीं शताब्दी से लेकर आज तक की व्यापार वाणिज्य से संबंधित सिलसिलेवार सूचनाएं भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।

गोरखपुर जनपद में वर्ष 1854 में अनाज इत्यादि के मूल्य सर्वाधिक कम रहे। उस समय एक रुपए मे गेहूं 28 सेर, चावल 26.6 सेर, जौ 43.9 सेर और चना 40.7 सेर की दर से बेचे जाते थे। वर्ष 1861 के बाद से ही सरकारी आंकड़ों का रख रखाव प्रारंभ हुआ जिससे उसके पश्चात नियमित आंकड़े प्राप्त होते रहे। इन आंकड़ों से किसी भी एक दशक के औसत मूल्य के आधार पर (दशक के दौरान अनेक दैवीय विपदाओं से उत्पन्न उच्चावचन समाप्त करने के उद्देश्य से) मूल्यों में होने वाले उतार चढ़ाव का लेखा जोखा रखा जाता। गोरखपुर जनपद में

1868-69 और 1873-74 के भयंकर सूखा के बाद ही मूल्यों में तीव्र वृद्धि प्रारम्भ हुई। मँहगाई के परिणामस्वरुप उस समय प्रति एक रुपये के बदले चावल 18.93 सेर, गेहूँ 17.89 सेर, जौ 25.85 सेर तथा चना 22.28 सेर की दर से बिका।

प्राकृतिक आपदाओं जैसे सूखा और महामारी पर संपूर्ण विश्व में ही उन्नीसवीं शताब्दी के छठे-सातवें दशक से विजय हासिल होने लगा था। खाद, कीटनाशकों तथा उन्नत बीज के आगमन और व्यापक प्रयोग से कृषि उत्पादनों में भारी वृद्धि एक तरफ अनेक सामाजिक अभिशाप जैसे भुखमरी पर नियंत्रण तथा दूसरी तरफ लोगों के आय में वृद्धि के माध्यम से मांग में होने वाली उत्तरोत्तर वृद्धि व्यापार और वाणिज्य का परिदृश्य भी तेजी से बदलने लगा। विज्ञान के माध्यम से होने वाले नित नए आविष्कार और नई तकनीकें कृषि और निर्माण दोनों ही क्षेत्रों में सफलता के नए आयाम जोड़ते चले गए। इन सब के बीच उन्हीं दिनों विंसलो टेलर का वैज्ञानिक प्रबंध तथा हेनरी फेयोल का आधुनिक प्रबंध सिद्धांत उद्योग धंधों को ऐसे पंख लगाने लगे जिससे होने वाला चौतरफा आर्थिक और सामाजिक लाभ उपभोक्ता संस्कृति का मार्ग प्रशस्त करने लगे।

भारत मे वर्ष 1961 में फर्टिलाइजर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया की स्थापना के साथ गोरखपुर में भी इसकी एक इकाई स्थापित हुई। गोरखपुर के इस खाद कारखाने की उत्पन्न आवश्यकता के कारण ही गोरखपुर रेल परिक्षेत्र को जोड़ने वाले मुख्य लाइन 1981 से 1991 के बीच ब्रॉडगेज में परिवर्तित किये गये। इसका व्यापक परिणाम यह हुआ कि देश प्रदेश के महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र गोरखपुर से तीव्र और सुविधाजनक रेल मार्ग के माध्यम से जुड़ते चले गए। भारतीय रेल द्वारा उपलब्ध कराए गए इस महत्वपूर्ण यात्री और वाणिज्यिक परिवहन की अभूतपूर्व सुविधा के कारण गोरखपुर में व्यवसाय के नए-नए अवसर उत्पन्न हुए। नब्बे के दशक में संपूर्ण भारत में आयी टेलीकम्युनिकेशन क्रांति जिसका वाहक भारतीय दूरसंचार निगम (BSNL) बना, उससे भी गोरखपुर अछूता ना रहा। सूचना क्रांति के इस नए दूत ने इस क्षेत्र के युवकों को एसटीडी पीसीओ बूथ के माध्यम से रोजगार मुहैया कराया तो दूसरी तरफ व्यवसाय से लेकर सामान्य लोगों को दूरदराज इलाकों से जोड़कर अत्यंत कम खर्च में अधिकाधिक बातचीत करने की सुविधा प्रदान की। इसका व्यापक लाभ छोटे बड़े सभी व्यवसायियों को हुआ जिन्हें कम व्यय में ही अपने व्यापार का दायरा और मात्रा दोनों ही बढ़ाने में मदद मिला।

इक्कीसवीं सदी का परिदृश्य

इस प्रकार व्यावसायिक अवसरों के बढ़ने के कारण आसपास के शहरों तथा प्रदेशों से भी अधिकाधिक लोगों का यहां आगमन उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया। निरंतर बढ़ती जनसंख्या की बढ़ती मांग और उसकी आपूर्ति के लिए नये नये व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना होने लगी। पहले से ही मौजूद प्रतिष्ठानों का व्यवसाय भी इस क्रम में निरंतर फलते फूलते प्रगति के रूप में प्रस्फुटित हुआ। नई सदी, 21वीं सदी में यद्यपि गोरखपुर जनपद में होने वाली जनसंख्या वृद्धि दर पिछली अर्धशताब्दी की तुलना मे कम हुई परंतु गुणात्मक दर से निरंतर बढ़ती जनसंख्या और उसकी दिन प्रतिदिन की आवश्यक मांगों के दबाव में व्यापारिक एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों सहित उनकी गतिविधियों का ज्यादा तीव्र गति से बढ़ना स्वाभाविक ही था। स्थानीय तथा दूर प्रदेशों के उद्यमियों को भी यहां अनेक अवसर नजर आए जिसका परिणाम यह हुआ की यहां नए व्यापारिक एवं वाणिज्यिक नव प्रयोग भी प्रारंभ हो गए। सिटी मॉल जैसे बृहद व्यापारिक केंद्रों संबंधी विचार को तो जैसे पंख लगना शुरू हो गया। शहर में जगह-जगह नए-नए मॉल खुलने की चर्चाएं आम होने लगीं। पुराने और जर्जर सिनेमा हॉल आधुनिक मॉल में तब्दील होने लगे। सेवा-व्यापार के नए प्रयोग जो कोरियर सुविधाएं, परिवहन सेवाएं तथा मोबाइल संप्रेषण से संबंधित थी जनपद में तेजी से उनका आगमन होने लगा।

आउटसोर्सिंग के माध्यम से प्रारंभ हुए व्यापार के नए अवसर नवयुवकों के लिए भी आजीविका के नए मार्ग खोलना प्रारंभ कर दिए। क्रांतिकारी तकनीकी परिवर्तनों जैसे कंप्यूटर और इंटरनेट का बढ़ता प्रयोग व्यापार एवं वाणिज्य के लिए तो जैसे वरदान बनकर ही हमारे शहर में अवतरित हुए। इंटरनेट और कंप्यूटर कार्य के लिए खुलते प्रत्येक गली मोहल्लों के साइबर कैफे व्यापारियों से लेकर सामान्य लोगों और यहां तक कि छात्र-छात्राओं को भी अत्यंत कम खर्च में अनेक प्रकार के सामान्य और विशेष दोनों प्रकार के अवसर मुहैया कराने लगे। साइबर कैफे की सेवाओं के गिरते दरों ने लोगों की उत्पादकता व नव प्रयोग को खूब प्रोत्साहित किया। व्यवसाय के लिए तो यह नए वरदान साबित हुए। इसी इंटरनेट का सहारा लेकर बैंकों द्वारा इंटरनेट बैंकिंग तथा मोबाइल कंपनियों द्वारा इंटरनेट को मोबाइल तक पहुंचा देने की क्षमता व्यापार को नई दिशा दिखाने लगी। अनेक व्यापारी क्रियाकलाप अब घर बैठे या साइबर कैफे की मदद से, और बाद में तो यहां तक की मोबाइल ऐप के माध्यम से ही 24*7 संभव होने लग गए।

मोबाइल टेक्नोलॉजी के माध्यम से इक्कीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के प्रारंभ होते ही

व्यापार और वाणिज्य के हिस्से एक नई विधा जुड़ी। इसे मोबाइल इंटीग्रेटर सेवाओं का नाम दिया गया। एक ऐसा व्यवसायिक प्रतिष्ठान जो इंटरनेट के माध्यम से किसी एक सेक्टर के अनेक उत्पादकों या सेवा प्रदाताओं को विश्वसनीयता के साथ जोड़ लेता है और ग्राहकों की मांग पर अपने विशेषज्ञता के आधार पर उनमें से किसी एक या अधिक से एक ही समय मे जोड़कर व्यवसायिक लेनदेन संपन्न कराता है। उदाहरणस्वरुप, स्विग्गी और जोमैटो सदृश्य कंपनियों के माध्यम से खानपान रेस्टोरेंट और स्थानीय भोजन संबंधी लेनदेन के लिए मध्यस्थ जैसा कार्य- ट्रिवागो, ओयो, इक्सिगो या गोइबिबो द्वारा होटल, ट्रेन या हवाई सेवाएं बुक करना। स्विग्गी और जोमैटो जैसी इंटीग्रेटर कंपनियों के माध्यम से लाखों नवयुवकों को त्वरित रोजगार भी प्राप्त हुआ। गोरखपुर के मुख्य बाजारों में हजारों युवक युवतियां इस कार्य में संलग्न कभी भी देखे जा सकते हैं।

ई-कॉमर्स के जरिए घर बैठे ही देश-विदेश से क्रय विक्रय करना व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी विधा साबित हुयी है। गोरखपुर के दूरदराज इलाकों जैसे महाराजगंज के टेराकोटा कला वस्तुओं का व्यापार, वहीं से ई-कॉमर्स के माध्यम से विश्व के अनेक हिस्सों मे करना। यद्यपि आज इनकी प्रतिशत्ता कुल व्यवसाय की 4% तक सीमित है, परंतु भविष्य में इनके बड़ी तेजी से बढ़ने की व्यापक संभावना है। गोरखपुर मे टेराकोटा व्यवसाय के अतिरिक्त कला और कौशल आधारित कुछ उद्यमी व्यवसाय की नई विधाा ई-कॉमर्स के माध्यम से निरंतर अपना व्यवसाय बढ़ा रहे हैं। अनेक व्यवसाई अमेजॉन और फ्लिपकार्ट के माध्यम से भी तेजी से जुड़ रहे हैं। गोरखपुर में भी व्यवसायियों में इस तरह की नई विधाओं में रुचि दिखाते हुए इन्हें अपनाने की होड़ लगी है। अतः इससे जुड़े अनेक लाभों का भरपूर प्रयोग कर किसी से भी पीछे न रहने के लिए हमारा गोरखपुर भी कमर कस चुका है।

हवाई सेवाओं ने तेज की वाणिज्यिक गतिविधियाँ

वाणिज्यिक संरचना को बल प्रदान करने में मूलभूत अवसंरचनाओं में परिवहन, तथा उसमें भी हवाई मार्ग परिवहन अग्रणी है। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में देश के अंदर होने वाले हवाई क्रांति से लाभान्वित होने वाला संभवतः हमारा शहर पहली पंक्ति में गिना जाएगा। सूबे के मुखिया, गोरखपुर के ही गोरक्षनाथ मंदिर के पूज्य मठाधीश तथा हमारे प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप ही महायोगी गुरु गोरखनाथ एयर टर्मिनल हवाई अड्डा वायुसेना के सुरक्षा-हवाई अड्डा होने के बावजूद तीव्र गति तैयार हो सका। यहां से बेंगलुरु, मुंबई, हैदराबाद, दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ, प्रयागराज

जैसे अनेक महत्वपूर्ण उड़ानों का प्रारंभ होना भी व्यापार व वाणिज्य के लिए तो किसी वरदान से कम नहीं। देश के अन्य हिस्सों की तरह गोरखपुर की भी जनता इन सभी सुविधाओं का भरपूर प्रयोग करने में किसी से भी पीछे न रही, इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही रहा कि गोरखपुर जनपद में व्यापार एवं वाणिज्य के विकास की दर देश व प्रदेश के कई हिस्सों से बेहतर रही। नई शताब्दी में जनसंख्या वृद्धि के बावजूद प्रति व्यक्ति आय में निरंतर अर्जित वृद्धि इसका सरलतम प्रमाण है।

महानगर के एक उद्यमी गौरव अग्रवाल का कहना है कि यदि पिछले कुछ दशकों में गोरखपुर के उद्यमियों को और उनके उत्साह को समुचित तवज्जो मिलती तो अनेक सफल व्यवसाईयों का पलायन यहां से रोका जा सकता था, जो निश्चय ही यहां की व्यापारिक गतिविधियों को आज की बदली परिस्थितियों में अत्यंत बल प्रदान करता। परंतु अब सरकारी स्तर पर बदलते सोच से उन्हें आशा की लकीरें दिख रही हैं। गोरखपुर में पूंजी की कोई कमी नहीं है, आवश्यकता है तो सिर्फ उस विश्वास की जो व्यापारियों में सिर्फ सरकार द्वारा ही जगाई जा सकती है। यहां के व्यापारियों का उत्साह तथा सामाजिक सरोकार की भावना तो पिछले दिनों ही उसके द्वारा गोलघर, माया बाजार और मोहद्दीपुर में उपलब्ध कराए अपनी ही जगह में से 'अपनी जगह' जैसे अनुष्ठानों से जग जाहिर होता है। 'अपनी जगह' बाजार में आने वाली उन महिलाओं के लिए प्रसाधान तथा ब्रेस्ट फीडिंग की सुविधा मुहैया करने से संबंधित है जो अनेक प्रयासों के बावजूद शहर के प्रमुख बाजारों में एक बड़ी कमी के रूप में खटकती रही है। स्पष्ट है कि गोरखपुर और इसके आसपास के क्षेत्र में व्यापार और वाणिज्य के विकास हेतु आवश्यक ऐसे सभी अनिवार्य त्तव उपलब्ध हैं जिनमें जनता, व्यापारी, तथा स्थानीय प्रशासन का सहयोगपूर्ण दृष्टिकोण मिश्रित हो जाए तो इसमें कोई शक नहीं कि भविष्य की अनेक चुनौतियों के बावजूद विकास का यह अतिमहत्वपूर्ण पहलू किसी भी दृष्टिकोण से कमजोर नहीं पड़ेगा।

*****

बाबा राघव दास मेडिकल कालेज, गोरखपुर

अवस्थापना सुविधाओं एवं मानक स्वास्थ्य सेवाओं की प्रतिबद्धता

गणेश कुमार

पूर्वी उत्तर प्रदेश गोरखपुर जनपद में स्थित बाबा राघव दास मेडिकल कालेज की नींव 8 नवम्बर 1969 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री चन्द्रभान गुप्ता के द्वारा रखी गयी तथा इसका नामकरण इस क्षेत्र में कार्यरत सर्वोदय नेता, समाजसेवी तथा स्वाधीनता संग्राम सेनानी बाबा राघव दास के नाम पर रखा गया। यह प्रारम्भ से ही अपने शैक्षणिक कार्यों के लिए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है।

इस कालेज में सन् अगस्त 1972 से प्रथम बार 50 एम.बी.बी.एस. छात्रों का शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ तथा सन् 1981 से परास्नातक स्तर का भी शिक्षण प्रशिक्षण प्रारम्भ हो गया। वर्तमान में यहां पर प्रत्येक वर्ष 150 स्नातक तथा 72 से ज्यादा परास्नातक छात्रों का प्रवेश हो रहा है। छात्रों के लिये इस महाविद्यालय में समुचित छात्रावास व अन्य सुविधाएं उपलब्ध है।

यहाँ का नेहरू चिकित्सालय पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार तथा समीपवर्ती नेपाल के लगभग पाँच करोड़ जनसंख्या के चिकित्सकीय व स्वास्थ्य देख-भाल में अनवरत प्रयासरत है। इस कालेज का पूरा क्षेत्रफल लगभग 147.6 एकड़ है तथा इसमें लगभग 15 हजार वर्गमीटर पर भवन निर्माण किया गया है। लगभग 950 बिस्तर उपलब्ध है। इस वर्ष संस्था में लगभग 6.50 लाख मरीज यहाँ पर इलाज के लिये आए तथा इनमें से लगभग 55 हजार मरीज भर्ती हुए। यहाँ पर कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए परिसर में ही आवास उपलब्ध है।

प्रधानाचार्य, बाबा राघव दास मेडिकल कालेज व नेहरू चिकित्सालय, गोरखपुर

बी.आर.डी. मेडिकल कालेज गोरखपुर में सभी आवश्यक विभाग कार्य कर रहे है तथा लगभग 145 चिकित्सा शिक्षक इन विभागों में कार्यरत है।

इस कालेज में लगभग सभी तरह के जाँच उपलब्ध है। इसके लिये एक सेन्ट्रल पैथालोजी, 5 अल्ट्रासाउन्ड मशीन, 5 एक्स–रे मशीन, एक 64 स्लाइस सी.टी. स्कैन तथा एक उच्चकोटि की एम.आर.आई. मशीन एवं डिजिटल एक्स–रे मशीन स्थापित है। यहाँ पर पूर्णत: सुसज्जित 14 आपरेशन थिएटर एवं आई.सी.यू., पी.आई.सी.यू., एन.आई.सी.यू., एस.आई.सी. यू. एवं आई.सी.सी.यू. उपलब्ध है। इस संस्था में गेस्ट हाऊस नहीं था जिससे यहाँ आने वाले, चिकित्सा शिक्षकों, शासकीय, विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। मेरे कार्यकाल में इसका भी निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया गया जो शीघ्र ही बनकर तैयार हो जायेगा।

अनेक वर्षों के बाद इस महाविद्यालय में मैनें दिसम्बर, 2017 में नियमित प्रधानाचार्य के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। प्रदेश के ऊर्जावान व कर्मठ मा. मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ जी महराज, उ.प्र. के कुशल निर्देशन में इस महाविद्यालय के निरंतर विकास का कार्य किया जा रहा है। इसके फलस्वरूप एम.बी.बी.एस. की 100 सीटों को एम.सी.आई. से मान्यता मिली तथा सत्र 2019–20 से 100 के स्थान पर 150 सीटों पर स्नातक छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हुआ है। यहां के अधिकांश परास्नातक उपाधियां एम.सी.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई है। बहुत से विभागों में इसकी सीटें बढ़ी हैं तथा रेडियोलाजी जैसे महत्वपूर्ण विभाग में 24 वर्षों के बाद परास्नातक की 03 सीटें एम.सी.आई. द्वारा प्रवेश हेतु अनुमति दी गई है। मानसिक रोग विभाग एवं फोरेन्सिक मेडिसिन विभाग में पहली बार परास्नातक का शिक्षण प्रशिक्षण प्रारम्भ होने वाला है।

छात्रों की सुविधा के लिये 50 कमरों वाला मैरिड छात्रावास, 100 कमरों वाला पी.जी. छात्रों के लिये छात्रावास तथा 100 कमरों वाला पी.जी. छात्राओं के लिये छात्रावास बन गया है व इसमें छात्र अधिवासित हो गये है। मरीजों के तीमारदारों के लिये 108 बिस्तर वाला रैन बसेरा पूर्णत: क्रियाशील है तथा जल्दी ही 125 बिस्तर वाला नया रैन बसेरा का निर्माण कार्य पूर्ण होने वाला है।

मरीजों की सुविधा के लिये रजिस्ट्रेशन काउन्टर व दवा वितरण के लिये अलग से एक वातानुकूलित हॉल बनाया गया है। चिकित्सालय में ई–हास्पिटल की व्यवस्था की गई है जिसके द्वारा कोई भी घर बैठकर अपना रजिस्ट्रेशन करा सकता है। प्रसव सुविधा को बेहतर बनाने के

लिये नया लेबर काम्पलेक्स निर्माणाधीन है तथा 14 आपरेशन थियेटर माडूलर किये जा रहे है।

मेडिकल कालेज परिसर में ही पी.एम.एस.एस.वाई. के अन्तर्गत 200 बेड का सुपर स्पेशियलिटी चिकित्सालय कार्य करने लगा है। वर्ष 2019 में यहां पर लगभग 21232 मरीजों का इलाज किया गया है। 500 बिस्तर वाला बाल चिकित्सालय वर्ष 2020-21 में प्रारम्भ होने वाला है।

मेडिकल कालेज परिसर में ही आर.एम.आर.सी. कार्य करने लगा है तथा इसके लिये भवन निर्माण का कार्य तेजी से हो रहा है। दिव्यांग बच्चों व व्यक्तियों के लिये भारत सरकार के सी.आर.सी. का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है। महाविद्यालय की सड़क, ड्रेनेज, बिजली आपूर्ति आदि जैसी मूलभूत सुविधाओं में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। मस्तिष्क ज्वर जैसी गम्भीर बीमारी में बहुत कमी आई है तथा साथ ही साथ इससे होने वाली मृत्युदर व अपंगतादर में भी काफी कमी आई है। इस वर्ष इन्सेफेलाइटिस की मृत्युदर 10 प्रतिशत रह गयी है। हमारे कार्यकाल में चिकित्सालय में रोग निदान एवं उपचार की सुगम व्यवस्था की गयी है तथा चिकित्सालय एवं परिसर की साफ-सफाई में अभूतपूर्ण बदलाव आया है। कालेज परिसर में वर्ष 2019 में फार्मेसी कालेज में पठन/पाठन का कार्य शुरू किया गया है वर्तमान में यहां 60 विद्यार्थी अध्ययनरत है।

माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी महराज का इस विद्यालय के उत्तरोतर विकास में सदैव सहयोग मिलता रहा है व हम सभी को विश्वास है कि आने वाले समय में यह कालेज व चिकित्सालय देश के आधुनिकतम कालेजों में से एक होगा।

*****

स्वच्छता एवं प्रभावी पर्यवेक्षण से बदल रही तस्वीर

डा. ए.के. श्रीवास्तव

पूर्वी उत्तर प्रदेश का पूरा क्षेत्र जिसे धान का कटोरा भी कहा जाता है पिछले चार दशकों से दिमागी बुखार जैसी भयानक महामारी से जूझ रहा था। पिछले दो दशकों में सरकारों ने इस आपदा पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया। लम्बे समय तक बेहतर नियोजन के अभाव में सकारात्मक परिणाम नहीं आ सके। सन् 2005 में जब पूर्वान्चल के एकमात्र सुविधायुक्त मेडिकल संस्थान बाबा राघव दास मेडिकल कालेज में एक हजार से अधिक बच्चों के मरने की खबर आई, तब पूरे देश का ध्यान इस ओर गया। देशी-विदेशी मीडिया ने इस मौत के तांडव और सरकारी संसाधनों और प्रयासों में कमी का मुद्दा उठाया। इसी समय एक गैर-सरकारी संस्था ए.पी.पी.एल. ट्रस्ट ने इस त्रासद सत्य को बेहद वैज्ञानिक तरीके से तैयार प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों में दर्ज करना प्रारम्भ किया। उन्होंने इस बीमारी से जूझ रहे पीड़ित बच्चों, उनके परिवारों की आर्थिक-सामाजिक स्थिति, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच और गुणवत्ता, विकलांगता, पुर्नवास आदि 40 से अधिक बिन्दुओं पर आंकड़े दर्ज किये। सरकार ने अपने प्रयासों को बेहतर बनाया और एक वृहद टीकाकरण कार्यक्रम चलाया। टीकाकरण के दो साल के भीतर ही उसके सकारात्मक परिणाम आने शुरू हो गये, परन्तु इस विभीषिका से पूर्णतया छुटकारा नहीं मिल सका। स्वास्थ्य वैज्ञानिकों ने तब पाया कि टीकाकरण से मच्छर जनित जापानी इन्सेफ्लाईटिस पर तो प्रभावी नियंत्रण पाया गया, परन्तु अभी भी पीड़ितों की संख्या और मृत्यु दर में कमी नहीं आ पाई। उन्होंने पाया कि 100 में से 85 मामलों में यह मच्छर जनित न होकर किसी अन्य प्रकार के स्रोत से आई हैं। उस समय स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने इसे AES (एक्यूट इन्सेफ्लाटिस सिन्ड्रोम) कहा और आंशका व्यक्त की कि इसका कारण पीने का दूषित जल हो सकता है।

मुख्य न्यासी, एक्शन फॉर पीस, प्रॉस्पेरिटी एण्ड लिबर्टी (एपीपीएल) ट्रस्ट

ए.पी.पी.एल. ट्रस्ट ने इस वर्ष भी सुदूर ग्रामीण और शहरी अंचलों से आंकड़े एकत्र किये और अपनी रिपोर्ट मीडिया और सरकार को दी। ए.पी.पी.एल. ट्रस्ट ने अपनी सिफारिश में विभिन्न सरकारी विभागों में समन्वय और एक सामूहिक व समग्र दृष्टिकोण से कार्य करने का निवेदन किया। सरकारों की प्राथमिकता में यह हर वर्ष रहा और सारे प्रयासों के बावजूद इस बीमारी की विभीषिका में कमी नहीं आ पाई। ए.पी.पी.एल. ट्रस्ट ने साल दर साल इसके आंकड़े इकट्ठा किये और अपनी चार अध्ययन रिपोर्टों (2007, 2008, 2010 एवं 2011) को जारी भी किया। (विस्तृत रिपोर्ट के लिए (Website : www.appltrust.org)।

पिछले पाँच वर्षो में सरकार ने इस विषय से छूते विभिन्न आयामों के प्रति अपने सकारात्मक दृष्टिकोण से और स्वच्छता और स्वास्थ्य को लेकर अपने कार्यक्रमों से बदलाव लाने में सफलता पाई है। सरकार की स्वच्छ भारत योजना, उज्जवला योजना, ग्रामीण पेयजल योजना, ग्रामीण शौचालय योजना, बिजली की उपलब्धता के लिये प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना, सड़कों का जाल बिछाने जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण स्वास्थ्य और जीवनस्तर में गुणात्मक सुधार किया गया है। इस वर्ष हमने अपने अध्ययन में बहुत से सकारात्मक बदलाव दर्ज किये हैं। हमनें 2017 के उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर किये गये अपने सर्वेक्षण व अध्ययन के आंकड़ों का 2012 में किये गये अपने ही अध्ययन के आंकड़ों का एक तुलनात्मक अध्ययन किया है। हमने पाया कि लोगों की आय में 2012 से अब तक उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। 2012 में एक ओर जहां पीड़ित परिवारों की अधिकतम आय 5,000 – 10,000 के बीच के आय वर्ग में आते थे वही अब उनमें से केवल 60% ही इस आय वर्ग में आते है। उनमें से 24% अब 10,000 से 15,000 और 16% 15,000 और उससे उपर के आय वर्ग में आते हैं।

इस बीमारी को गरीबों की बीमारी भी कहा जाता था। **सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं की पहुँच ने इनके जीवन स्तर में व्यापक सुधार किये। एक ओर जहाँ स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता बढ़ी है वही 52 प्रतिशत लोगों को 20 घण्टे से अधिक बिजली मिल रही है। हमने पाया कि 82% लोगों के घर में शौचालय बन चुके है और इस्तेमाल में लाये जा रहे है। हमने अपने अध्ययन के दौरान लगभग 200 गांवों में पीड़ित परिवारों और समुदाय के लोगों से बातचीत की। इस दौरान 2018-19 के केवल 3 पीड़ित मिले।** लोगों ने बताया कि इस वर्ष इस बीमारी का कम प्रभाव देख गया। इस वर्ष के आंकड़े बताते है कि इस वर्ष 20 दिसम्बर तक इन्सेफ्लाईटिस (JE/AES) से 49 बच्चों सहित 63 लोगों की

मौत हुई और इस अवधि में कुल 615 मरीज भर्ती हुए। ये आंकड़े उत्साहवर्द्धक है और इस बात का प्रमाण है कि सरकार के समग्र और सामूहिक दृष्टिकोण ने योजनाओं की पहुँच और उनके लाभ को बढ़ाया हैं। लोगों के जीवन स्तर और रहन-सहन में व्यापक बदलाव आया है। ए.पी.पी.एल ट्रस्ट को इस बात का संतोष है कि हमने लगातार इस विषय पर कार्य किया और जमीनी हकीकत सरकार से साझा करके अपने दायित्व को पूरा किया। इस वर्ष के आंकड़े संतोष देने वाले रहे और अब हमें विश्वास है कि सरकार के विभिन्न विभागों के बेहतर आपसी समन्यवय एवं बेहतर नियोजन एवं क्रियान्वयन से आने वाले सालों में हम इस बीमारी से निजात पा सकेंगे।

*****

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

स्थापना एवं शुभारम्भ

डॉ. रुद्र प्रताप सिंह

उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा को एक आयाम देने की दृष्टि से वर्ष 1921 में माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश इलाहाबाद की स्थापना की गयी। इसके पूर्व माध्यमिक स्तर की परीक्षायें इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा संचालित की जाती थी। माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा प्रथम परीक्षा वर्ष 1923 में सम्पन्न करायी गयी जिसमें हाईस्कूल में 5655 परीक्षार्थी तथा इण्टरमीडिएट में 89 परीक्षार्थी कुल मिलाकर 5744 परीक्षार्थी पंजीकृत हुए थे। परीक्षार्थी की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही जिसके कारण वर्तमान समय में माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश विश्व की एक वृहत्तम परीक्षा कराने वाली संस्था के रूप में स्थापित है।

सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में माध्यमिक शिक्षा का विशेष महत्व है। किशोर बालक-बालिकाओं में ज्ञानवर्धन के साथ-साथ सामाजिक सद्गुणों का विकास, अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के प्रति जागरूकता, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास आदि चारित्रिक गुणों का विकास करना माध्यमिक शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

इण्टरमीडिएट शिक्षा अधिनियम के उपबन्धों के आधीन रहते हुए परिषद् मुख्यतः अपनी परीक्षाओं के प्रयोजनों के लिए मान्यता प्रदान करने, हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों को विहित करने, निर्धारित पाठ्यक्रमों की समाप्ति पर परीक्षाओं का संचालन, परीक्षाओं के परिणाम का पूर्णतः या अंशतः प्रकाशन करने या रोकने, हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षाओं के लिये राष्ट्रीकृत पाठ्य पुस्तकों का लेखन एवं प्रकाशन,

उपसचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

मूल्यांकन एवं पाठ्यक्रम निर्माण पर शोध करने से लेकर अन्य परिषद् की परीक्षाओं की समकक्षता का निर्धारण आदि दायित्वों का निष्पादन करता है।

वर्तमान समय में प्रत्येक वर्ष लगभग 65,00000 परीक्षार्थी माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश इलाहाबाद द्वारा संचालित हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षा में सम्मिलित होते हैं। वर्ष 1971 के पूर्व परिषद् द्वारा संचालित हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षाओं का सम्पूर्ण कार्य परिषद् के एक ही मुख्य कार्यालय, इलाहाबाद से सम्पन्न किया जाता था। परिषदीय परीक्षाओं में परीक्षार्थियों की संख्या में लगातार अभूतपूर्व वृद्धि के फलस्वरूप एक ही कार्यालय इलाहाबाद से परीक्षा का समस्त कार्य करने में अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ उत्पन्न होने लगी।। कठिनाईयों के निराकरण तथा स्थानीय जनता के हित को दृष्टिगत रखते हुए शासन की स्वीकृति से सन् 1972 से 1986 के मध्य चार क्षेत्रीय कार्यालयों – क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ (आगरा और मेरठ संभाग) वर्ष 1972, क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी (वाराणसी, गोरखपुर तथा फैजाबाद संभाग) वर्ष 1978, क्षेत्रीय कार्यालय बरेली (मुरादाबाद तथा बरेली संभाग) वर्ष 1981, क्षेत्रीय कार्यालय इलाहाबाद (इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ तथा झांसी संभाग) वर्ष 1986 में स्थापना की गयी।

क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी के अन्तर्गत पूर्वांचल को समायोजित करते हुए 24 जनपदों का दायित्व निर्धारित किया गया। परिषद् का कार्य पूर्व की तुलना में बहुत हद तक सुगम एवं आमजन के लिए सुविधाजनक हुआ परन्तु बिहार एवं नेपाल के सीमावर्ती पूर्वांचल के अनेक जनपदों की स्थिति में प्रभावी असर नहीं पड़ा। क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी का परिक्षेत्र अत्यन्त व्यापक होने के कारण कार्य का भार बढ़ने लगा तथा अनेकोंनेक प्रकार की कठिनाईयाँ बढ़ने लगी जिसके परिणामस्वरूप परिषदीय कार्यों की गुणवत्ता भी प्रभावित होने लगी। छात्रों के अंक-पत्रों, प्रमाण-पत्रों में होने वाली त्रुटियों के सुधार एवं संशोधन, प्रवजन प्रमाण-पत्र निर्गमन, सन्निरीक्षा एवं द्वितीय प्रमाण-पत्र आदि जारी कराने हेतु छात्रों एवं अभिभावकों को वाराणसी आना जाना दुर्गम एवं दुरूह होता गया। पुनः पूर्वांचल के जनपदों को समाहित करते हुए गोरखपुर में पाँचवे क्षेत्रीय कार्यालय को स्थापित करने की आवश्यकता सिद्दत से महसूस की जाने लगी। वस्तुतः सन् 2002 में क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर की औपचारिक घोषणा एवं शिलान्यास भी हुआ परन्तु कतिपय कारणों से मूर्त रूप नहीं ले सका। वर्ष 2017 में उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा पूर्वांचल के लगभग एक दर्जन जनपदों के विभिन्न स्कूलों एवं कालेजों में अध्ययन कर रहे छात्रों/छात्राओं एवं उनके

अभिभावकों को वर्षों से झेल रहे इन समस्याओं से निजात दिलाने के लिए क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी को विभाजित करते हुए पूर्वांचल के तीन मण्डलों गोरखपुर, बस्ती एवं देवीपाटन के ग्यारह जनपदों – गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज, कुशीनगर, बस्ती, संतकबीरनगर, सिद्धार्थनगर, गोण्डा, बलरामपुर, बहराईच एवं श्रावस्ती को पृथक कर क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर में स्थापित करने का महान निर्णय लेते हुए शासनादेश संख्या 6205/15-7-1(124)/98 दिनांक 13 मार्च, 2002 के अनुक्रम में शासन के पत्र संख्या (1)/15-7-2017 दिनांक 28 जून, 2017 निर्गत किया गया। तदोनुपालन में दिनांक 01.07.2017 को शासन द्वारा नियुक्त अपर सचिव एवं प्रभारी संयुक्त शिक्षा निदेशक श्री योगेन्द्र नाथ सिंह ने कार्य-भार ग्रहण कर क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर का विधिपूर्वक संचालन प्रारम्भ किया। नार्मल कैम्पस स्थित लगभग 4.5 करोड़ की लागत से निर्मित वर्तमान में क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर के प्रशासनिक भवन स्क्रूटनी हाल एवं अन्य आवासीय भवनों सहित कार्यालय परिसर का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री जी के कर कमलों द्वारा दिनांक 16 अक्टूबर, 2017 दिन सोमवार को किया गया। 60-40 के अनुपात में कर्मचारी क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी से स्थानान्तरित होकर आये एवं अधीनस्थ कर्मचारी चयन आयोग द्वारा चयनित कनिष्ठ सहायकों सहित एक पद अपर सचिव, एक पद उप सचिव एवं एक पद सहायक सचिव सहित सभी पदों पर अधिकारी एवं कर्मचारी पदस्थापित होकर अपने दायित्वों का त्तपरता से निर्वहन कर रहे हैं। क्षेत्रीय कार्यालय की कार्यपद्धति, समयबद्धता, गुणवत्ता, पारदर्शिता एवं सुचिता निरन्तर परिष्कृत होती जा रही है। गोरखपुर में क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित होने से एक तरफ जहाँ कार्य की गुणवत्ता में अभिवृद्धि हुयी है, वहीं दूसरी तरफ त्रुटियों की संभावना भी न्यून हुई है। क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर परिक्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले कुल 11 जनपदों से लगभग दस लाख परीक्षार्थी हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षा में संस्थागत एवं व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में सम्मिलित होते हैं। इन छात्र-छात्राओं के लिए गोरखपुर क्षेत्रीय कार्यालय मील का पत्थर साबित हुआ है। वर्ष 2018 एवं 2019 की परीक्षा सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने के उपरान्त वर्ष 2020 की बोर्ड परीक्षाओं के आयोजन की तैयारी पूर्ण हो चुकी है एवं प्रयोगात्मक परीक्षा का संचालन वर्तमान में गतिमान है।

क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर के संचालन से इस परिक्षेत्र में आने वाले पूर्वांचल के 11 जनपदों में संचालित लगभग 5500 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत लाखों छात्र-छात्राओं को सीधा लाभ पहुँचा है। साथ ही इस परिक्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले नवीन विद्यालय संचालकों को ऑनलाईन प्रक्रिया के अन्तर्गत जनपद स्तरीय त्रिसदस्यीय समिति द्वारा आख्या प्राप्त कर सैकड़ों विद्यालयों को समयबद्ध एवं पूर्ण पारदर्शिता के साथ मान्यता प्रदान कर गुणवत्तापरक

शिक्षा सभी को सुलभ करने की सरकार की कृतसंकल्पता को मजबूत आधारशिला प्रदान कर रहा है। शासन की मंशा के अनुरूप क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर एकल खिड़की समाधान (Single Window Clearance) व्यवस्था के तहत छात्र–छात्राओं की परिषदीय आवश्यकताओं की पूर्ति का लक्ष्य निर्धारित कर उनके द्वारा वाँछित संशोधन, प्रवजन प्रमाण–पत्र निर्गमन, अपूर्ण अथवा त्रुटिपूर्ण परीक्षाफल का संशोधन, सन्निरीक्षा से सम्बन्धित समस्याओं आदि का समाधान त्तपरता से कर रहा है। जनसूचना अधिकार अधिनियम–2005 के अन्तर्गत परीक्षार्थियों द्वारा उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन अथवा छायाप्रति निर्गत करने की व्यवस्था पूर्ण पारदर्शिता के साथ सुचारू रूप से संचालित है। जनहित गारण्टी अधिनियम–2011 को अंगीकार करते हुये माध्यमिक शिक्षा परिषद्, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर ऑनलाईन व्यवस्था के अन्तर्गत निम्नलिखित 9 प्रकार की सेवायें यथा - 1. मूल प्रमाण–पत्र जारी करना; 2. प्रमाण–पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि जारी करना; 3. मूल अंक पत्र जारी करना; 4. अंकपत्र की द्वितीय प्रतिलिपि जारी करना; 5. संशोधित प्रमाण–पत्र जारी करना; 6. संशोधित अंकपत्र जारी करना; 7. निरस्त "CANCELLED" परीक्षाफल का निराकरण करना; 8. रोके गये "WITHHELD" परीक्षाफल का निराकरण करना; 9. अपूर्ण अथवा त्रुटिपूर्ण परीक्षाफल का संशोधन करने को क्रियान्वित कर सम्बन्धित छात्र/छात्राओं की प्रत्यक्ष रूप से लाभांवित कर रहा है। उपरोक्त सातत्य में क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर में कार्यरत कुल 86 अधिकारी/कर्मचारी समन्वित रूप से 32 अनुभागों के क्रियान्वयन द्वारा पूर्वांचल के लाखों विद्यार्थियों/अभिभावकों को समग्र लाभ पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं।

*****

उच्च शिक्षा

नकलमुक्त परीक्षा और नये विद्याकेन्द्रों के आरम्भ का वर्ष

डॉ. अश्वनी कुमार मिश्रा

शिक्षा मानव व्यक्तित्व के निर्माण में विनियोजन तथा व्यक्ति के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के निर्माण एवं विकास की आधारशिला है। उच्च शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना है जो उच्चतम मानवीय मूल्यों यथा समता, समरसता, धर्म निरपेक्षता, परहित, कल्याण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता तथा विश्वस्तरीय ज्ञान आदि से युक्त तथा उनके अनुप्रयोग की क्षमता रखता हो। ऐसे में उच्च शिक्षा जगत की महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इस मार्ग में अनेक वैश्विक, स्थानीय एवं सामयिक प्रतिकूलताएं एवं सीमायें विद्यमान है। इन चुनौतियों का सामना करने तथा उच्च शिक्षा को अर्न्तराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सर्वसुलभ, प्रासंगिक, नैतिक, कौशलयुक्त, गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारपरक बनाने की दिशा में उच्च शिक्षा विभाग अग्रसर है तथा उच्च शिक्षा के विकास एवं गुणवत्ता संवर्धन हेतु कटिबद्ध है।

जनपद में हेतु दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर तथा इससे सम्बद्ध 2 शासकीय महाविद्यालय (पं. दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय सहजनवॉ, गोरखपुर तथा वीर बहादुर सिंह राजकीय महाविद्यालय कैम्पियरगंज, गोरखपुर), 11 अशासकीय सहायता प्राप्त महाविद्यालय तथा 141 स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के माध्यम से वर्तमान मे उच्च शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति की जा रही है।

मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, मा. उप मुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. दिनेश शर्मा जी तथा मा. राज्यमंत्री उच्च शिक्षा श्रीमती नीलिमा कटियार जी के मार्गदर्शन से उच्च

क्षेत्रीय उच्च शिक्षाधिकारी, गोरखपुर

शिक्षा विभाग ने नये प्रयोगों एवं नवीन संभावनाओं को वास्तविकता के धरातल पर कार्यक्रम में परिवर्तित करते हुए अनेक ऐतिहासिक कदम उठाये है।

प्रथम बार प्रदेश में राज्य विश्वविद्यालयीय परीक्षा 2018 एवं 2019 को नकल विहीन, पारदर्शी एवं भ्रष्टाचार मुक्त सम्पन्न कराने हेतु शासन के निर्देश पर उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज मे मॉनीटरिंग सेल/नियंत्रण कक्ष की स्थापना की गयी तथा निदेशक, उच्च शिक्षा को नोडल अधिकारी नामित किया गया तथा इसकी मानिटरिंग स्वयं मा. उपमुख्यमंत्री जी के साथ अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा द्वारा की जाती रही। प्रदेश के समस्त राज्य विश्वविद्यालयों के माननीय कुलपतियों, कुलसचिवों, परीक्षा नियंत्रकों, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधि कारियों, प्राचार्यों तथा मॉनीटरिंग सेल के अधिकारियों का अभूतपूर्व पारस्परिक समन्वयन एवं सहयोग रहा, जिससे नकल विहीन परीक्षा सुचितापूर्ण सकुशल सम्पन्न हुई तथा शासन के संकल्पों के अनुरूप निर्धारित समयान्तर्गत सभी राज्य विश्वविद्यालयों के परीक्षा परिणामों की घोषणा की गयी। नये सत्र में भी सभी उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा शैक्षणिक पंचांग के अनुरूप प्रवेश, पठन–पाठन, सह शैक्षणिक गतिविधियाँ एवं परीक्षा संचालन तथा परिणाम घोषित हो रहे है।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम–2016 के प्राविधानों के अनुपालन के क्रम में प्रत्येक शिक्षण संस्थानों में रैम्प तथा दिव्यांगजन अनुकूल प्रसाधन के निर्माण को बाध्यकारी बनाया गया है।

महायोगी श्री गुरू गोरक्षनाथ जी के लोकोपयोगी मन्तव्यों एवं उपदेशों को एकत्रित करके योगानुकूल सिद्धातों एवं प्रयोगों को जीवनोपयोगी कार्य तथा व्यवहार में परिवर्तित करने के लिए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में महायोगी गुरू गोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना की गयी है। साथ ही पं. दीन दयाल उपाध्याय के व्यक्तिव, कृत्तिव एवं चिन्तन पर शोध कार्य हेतु अन्य राज्य विश्वविद्यालयों के साथ दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में भी पं. दीन दयाल उपाध्याय शोध पीठ की स्थापना की गयी है।

विश्वविद्यालय से महाविद्यालयों को सम्बद्धता प्रदान करने हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र देने की प्रक्रिया वर्तमान सत्र से पारदर्शी ऑनलाइन माध्यम से कराई जा रही है। निजी क्षेत्र में विश्वविद्यालयों की स्थापना हेतु भूमि का मानक शासन द्वारा संशोधित कर कम कर दिया गया है जो क्रमशः नगरीय क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में 20 एकड़ एवं 50 एकड़ है। इससे गोरखपुर परिक्षेत्र में भी सरलतापूर्वक निजी विश्वविद्यालय स्थापित हो सकेंगे तथा गुणवत्तापरक स्किल डेवलपमेण्ट युक्त शिक्षा का प्रसार होगा। मा. मुख्यमंत्री जी के घोषणा के अन्तर्गत प्रदेश मे 49

नये राजकीय महाविद्यालयों की स्थापना की जा रही है। इसी क्रम में जनपद गोरखपुर के विकासखण्ड-जंगल कौड़िया, तहसील-कैम्पियरगंज, परगना हवेली के ग्राम-रसूलपुर चकिया में अपनी राष्ट्रवादी सोच से भारतीय समाज का निरन्तर उन्नयन करने वाले राष्ट्रसंत परम पूज्य महन्त श्री अवेद्यनाथ जी महराज के नाम पर ''महंत अवेद्यनाथ राजकीय महाविद्यालय, जंगल कौड़िया, गोरखपुर'' की स्थापना रू. 3034.73 लाख की मूल्यांकित लागत से की जा रही है, जिससे मुख्य भवन, ब्वायज हास्टल, गर्ल्स हास्टल एवं आडिटोरियम/मल्टीपरपज हाल का निर्माण 3.85 एकड़ भूमि पर कराया जा रहा है। साथ ही खेल विभाग द्वारा 4.00 एकड़ भूमि पर महंत अवेद्यनाथ जी महराज स्पोर्ट्स स्टेडियम रू. 1016.00 लाख की मूल्यांकित लागत से कराया जा रहा है, जिसका निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस महाविद्यालय तथा स्टेडियम का शिलान्यास मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा 21 मई, 2018 को किया गया है। महाविद्यालय तथा स्टेडियम के निर्माण से क्षेत्र के युवाओं को उच्च स्तरीय उच्च शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद की सुविधा उनके निवास के समीपस्थ क्षेत्र में उपलब्ध होगी जो अपनी विशिष्ट पारिवारिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के कारण घर से दूर जा कर उच्च शिक्षा ग्रहण करने एवं खेल का अभ्यास नहीं कर पाते है।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के अन्तर्गत जनपद गोरखपुर में दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के साथ-साथ राजकीय महाविद्यालय सहजनवाँ तथा राजकीय महाविद्यालय कैम्पियरगंज को आधारभूत सुविधाओं एवं नवीनीकरण हेतु अनुदान प्रदान किया गया है। जिससे नवीन संकाय, डिजिटल लाइब्रेरी, स्मार्ट क्लास, प्रयोगशाला इत्यादि का निर्माण कार्य पूर्ण कराया जा रहा है। स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के प्राचार्यो की नियुक्ति हेतु निर्धारित 15 वर्ष की अर्हकारी सेवा 400 ए.पी.आई. अंकों की अनिवार्य अर्हताओं में छूट प्रदान करने हेतु परिनियमों में संशोधन कर प्राविधान किये गये जिससे जनपद में स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के प्राचार्य के रिक्त पदों पर तैनाती सरलता से की जानी सम्भव हुई है।

प्रदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों के लिए राज्य पुरस्कार की योजना संचालित है, जिसके अन्तर्गत ''सरस्वती सम्मान'' तथा ''शिक्षक श्री'' पुरस्कार प्रदान किया जाता है। जनपद के कई शिक्षक इन पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके है। निःसंदेह शासन की इस पहल से शिक्षकों की गुणवत्ता एवं आत्मसम्मान में अभिवृद्धि होती है। शिक्षकों के लिए असाधारण अवकाश के अतिरिक्त विशेष अवकाश की व्यवस्था की गयी है।

विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों में गुणवत्ता लाये जाने हेतु भारत सरकार के मानकों के

अनुसार राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) बैगलुरू से मूल्यांकन कराये जाने की प्राथमिकता तय की गयी है। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह के निर्देशन में विश्वविद्यालय के IIQA के सम्वन्यक प्रो. सुधीर श्रीवास्तव के सम्वन्यकत्व में गोरखपुर परिक्षेत्र के उच्च शिक्षण संस्थानों को नैक से मूल्यांकन कराये जाने हेतु निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। दिनांक 07-12-2019 को विश्वविद्यालय में मा. कुलपति की अध्यक्षता में इसी प्रयोजन हेतु कार्यशाला आयोजित की गयी, जिसमें आगामी सत्रों में महाविद्यालयों के मूल्यांकन हेतु लक्ष्य निर्धारित किया गया। सत्र 2018-19 में गोरखपुर जनपद में बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पीपीगंज, गोरखपुर, महात्मा गाँधी पी.जी. कालेज, गोरखपुर तथा चन्द्रकांती रमावती महिला महाविद्यालय, गोरखपुर का मूल्यांकन कराया गया। वर्तमान सत्र में दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर की IIQA तथा SSR सबमिट हो चुकी है एवं NAAC पीयर टीम का भ्रमण प्रस्तावित है। सेण्ट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर का भी IIQA सबमिट हो चुका है।

विश्वविद्यालय के नैक मूल्यांकन की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। इसके अतिरिक्त जनपद में नेशनल पी.जी. कालेज, बड़हलगंज, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर, सेंट जोसेफ कालेज फार वूमेन, गोरखपुर वर्तमान में नैक से मूल्यांकित है एवं वैधता अवधि अवशेष है।

जनपद के उच्च शिक्षण संस्थानों में शासन के निर्देश के क्रम में 26-11-2019 को भारत का 70वाँ संविधान दिवस मनाया गया तथा बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर की जयन्ती दिनांक 14-04-2020 को समरसता दिवस के रूप में मनाये जाने का निर्णय लिया गया है। उपरोक्त तिथियों के मध्य में भारत के संविधान में उल्लिखित मौलिक कर्तव्यों के प्रति समस्त उच्च शैक्षणिक संस्थानों में क्विज, वाद-विाद, निबन्ध, संवाद, लेखन, ड्राइंग व पेंटिंग शपथ एवं मौलिक कर्तव्यों पर विभिन्न गतिविधियाँ/प्रतियोगिताएं आयोजित कराये जा रहे हैं।

जनपद के छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु युवा महोत्सव, खेलकूद, राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर, रोवर्स रेंजर्स, वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध, भाषण, स्वरचित काव्य पाठ, नृत्य, गीत-संगीत आदि कार्यक्रमों में भी अधिकाधिक सहभागिता सुनिश्चित की जा रही है। स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, एक भारत सशक्त भारत, फिट इंडिया, प्लास्टिक मुक्त भारत, समृद्ध पर्यावरण आदि संकल्पों को मूर्तरूप देने हेतु उच्च शिक्षा विभाग कटिबद्ध है।

*****

गोरखपुर का विकास - रेलवे एक अहम भागीदार

पंकज कुमार सिंह

आधारभूत संरचनाओं की मजबूती से नगर का विकास गति पकड़ता है। किसी भी नगर की आधारभूत संरचना में उसके परिवहन तंत्र का बहुत ही अहम योगदान है। पूर्वांचल के प्रमुख नगर गोरखपुर में परिवहन का ताना-बाना भी सुदृढ़ होता जा रहा है, क्योंकि पूर्वोत्तर रेलवे, जिसका यह मुख्यालय है, ने गोरखपुर एवं आसपास की सम्मानित जनता को उत्कृष्ट यात्रा सुविधा उपलब्ध कराकर क्षेत्र के विकास में रेलवे के योगदान को रेखांकित किया है।

ज्ञातव्य है कि गोरखपुर में रेल यातायात की नींव 1885 में पड़ी, जब 15 जनवरी, 1885 को सोनपुर-गोरखपुर-मनकापुर मीटर गेज रेल लाइन यात्री यातायात हेतु खोला गया। गोरखपुर-बढ़नी-गोण्डा लूप रेल खण्ड 1886 से 1896 के मध्य विभिन्न चरणों में खोला गया। 07 फरवरी, 1907 से गोरखपुर-छितौनी घाट लाइन पर यात्री यातायात शुरू हुआ। 1984 में कटिहार-गोरखपुर-लखनऊ खण्ड का आमान परिवर्तन पूरा हुआ । 1999 में गोरखपुर-नरकटियागंज खण्ड पर बड़ी लाइन का यातायात प्रारम्भ हुआ। 2009 में गोरखपुर-आनन्दनगर को बड़ी लाइन में बदला गया। गाड़ियों के संचलन के बढ़ते दबाव को देखते हुये विभिन्न चरणों में बाराबंकी-गोरखपुर-लखनऊ खण्ड का दोहरीकरण का कार्य 2014 में पूरा किया गया। गाड़ियों के द्रुतगामी एवं प्रदूषणरहित संचलन हेतु लखनऊ-गोरखपुर-छपरा खण्ड का विद्युतीकरण कार्य पूरा किया गया। छपरा-सीवान-भटनी तथा गोरखपुर-भटनी खण्ड के विद्युतीकरण का कार्य पूरा होने पर गोरखपुर से 22 नवम्बर, 2015 को गोरखपुर से सीवान हेतु विद्युत इंजन चालित विशेष गाड़ी चलायी गयी। 23 नवम्बर, 2015 से गोरखपुर-हटिया मौर्य एक्सप्रेस विद्युत इंजन से संचालित हो रही है। 25 अगस्त, 2016 को नई दिल्ली से चलने वाली 12554 डा. नई दिल्ली-बरौनी वैशाली एक्सप्रेस 26 अगस्त, 2016 को विद्युतीकृत लखनऊ-गोरखपुर-छपरा

मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे

खण्ड से होकर चलायी गयी। इसी के साथ लम्बी दूरी की गाडियों का विद्युत इंजन से संचलन प्रारम्भ हो गया। गोरखपुर कैंट-बाल्मिकीनगर खण्ड का विद्युतीकरण गत वर्ष पूरा हुआ। गोरखपुर-आनन्दनगर खण्ड का विद्युतीकरण कार्य तेजी से चल रहा है।

यात्री यातायात बढ़ने के साथ-साथ गोरखपुर जं. स्टेशन का विस्तार और विकास हुआ। गोरखपुर जं. बड़ी लाइन के माध्यम से देश के सभी महानगरों एवं प्रमुख नगरों से जुड़ गया है जिससे यहाँ की जनता को देश के किसी भी भाग में जाने की सीधी यात्रा सुविधा उपलब्ध हो गयी है। गोरखपुर ए-1 श्रेणी के स्टेशन पर प्रतिदिन 110 गाड़ियों के माध्यम से औसतन 40000 यात्रियों का प्रतिदिन आवागमन होता है। लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज विश्व का सबसे लम्बा प्लेटफार्म 1366.33 मीटर (रैम्प के साथ) जो पूर्वोत्तर रेलवे एवं गोरखपुर नगर का गौरव है। यहाँ एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने के लिये 03 पैदल उपरिगामी पुल, 04 एस्केलेटर एवं 07 लिफ्ट लगाये गये हैं। एस्केलेटर एवं लिफ्ट की स्थापना से वृद्ध, अस्वस्थ एवं महिला यात्रियों के साथ ही सामान्य यात्रियों को भी काफी सुविधा हुई है।

गोरखपुर जंक्शन स्टेशन पर विगत दो वर्षों में अनेक उन्नत एवं आधुनिकतम यात्री सुविधा उपलब्ध करायी गयी हैं। यहाँ पर कुल 10 प्लेटफार्म हैं तथा इन पर 24464 वर्गमीटर में छाजन लगाये गये हैं। स्टेशन पर लगभग 1100 यात्रियों को बैठने के लिये सीटें उपलब्ध कराई गई हैं। यात्रियों हेतु पीने योग्य पानी के लिये 161 नल तथा 11 वाटर कूलर लगाये गये हैं। यात्रियों की सुविधा के लिये पर्याप्त संख्या में प्रसाधन की व्यवस्था है। खानपान की सुविधा के लिये जन आहार, फूड प्लाजा तथा प्लेटफार्मों पर 25 वेंडिंग स्टाल कार्यरत है। यात्रियों को सुविधाजनक तरीके से यात्री टिकट उपलब्ध कराने हेतु यू.टी.एस. काउण्टरों के अतिरिक्त 12 ए.टी.वी.एम. लगाई गई है। आरक्षित टिकटों के लिये अलग कम्प्यूटरीकृत आरक्षण भवन है। यात्रियों को किफायती दर पर पीने हेतु स्वच्छ जल उपलब्ध कराने के लिये सभी प्लेटफार्मों पर वॉटर वेंडिंग मशीनें लगाई गई हैं।

गाड़ियों की प्रतीक्षा करने के लिये यहाँ पर 57 सीटों का वेटिंग हाल, 57 पुरुषों एवं 33 महिलाओं के बैठने के लिये अलग-अलग वातानुकूलित वेटिंग रूम तथा 55 यात्रियों को बैठने के लिये उच्च श्रेणी वेटिंग रूम, 17 रिटायरिंग रूम तथा 06 डॉरमेट्री की सुविधा उपलब्ध है। यात्री प्रतीक्षालय में 120 थ्री सीटर बेंचें, 19 सोफे, 11 टी-टेबुल, 13 लगेज रेक उपलब्ध कराये गये हैं। यात्रियों की सुविधा के लिये एक उच्च स्तरीय ए.सी. लाउन्ज बनाया गया है तथा फ्री वाइ-फाई की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है। यात्रियों की सुरक्षा के लिये एकीकृत सुरक्षा प्रणाली स्थापित कर दी गयी है। सर्कुलेटिंग एरिया को मानक के अनुरूप विकसित किया गया

है। यात्रियों को सीधे वाहन से प्लेटफार्म पर आने के लिये नवीनीकृत कैब-वे उपलब्ध है। नगर के उत्तरी छोर से आने वाले यात्रियों के लिये द्वितीय प्रवेश द्वार का निर्माण किया गया है। प्लेटफार्म संख्या-9 पर पुरुष एवं महिला यात्रियों के लिये वातानुकूलित हैंगिंग वेटिंग हाल बनाया गया है। स्टेशन पर साफ-सफाई का स्तर उच्च स्तरीय है। गाड़ियों में साफ-सुथरा लिनेन की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिये गोरखपुर जं. स्टेशन पर मशीनीकृत लाण्ड्री स्थापित की गयी है। गोरखपुर स्टेशन पर उच्चस्तरीय यात्री सुविधायें एक सत्त प्रक्रिया के रूप में उपलब्ध करायी जा रही हैं।

गोरखपुर नगर चौमुखी विस्तार को देखते हुये गोरखपुर जं. के निकटवर्ती स्टेशन गोरखपुर कैण्ट पर यात्री सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है और इसे सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है।

पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा गोरखपुर में 12वीं तक उत्कृष्ट शिक्षा हेतु 03 इण्टर कालेज चलाये जा रहे हैं, जिसमें दो सी.बी.एस.ई. बोर्ड एवं एक उ.प्र. बोर्ड से संचालित है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी ललित नारायण मिश्र रेलवे चिकित्सालय में उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। इस चिकित्सालय में माड्यूलर आपरेशन थियेटर बनाया गया है, जहाँ सर्जरी की आधुनिकतम सुविधायें उपलब्ध है। गोरखपुर में स्थापित पूर्वोत्तर रेलवे की 03 उत्पादन इकाईयों-यांत्रिक कारखाना, सिग्नल कारखाना एवं पुल कारखाना से क्षेत्र में सहायक उद्योगों को बढ़ावा मिल रहा है। इसके अतिरिक्त क्षेत्र में रेल खण्डों के विद्युतीकृत हो जाने के फलस्वरूप यहाँ विद्युत लोको के रख-रखाव हेतु 100 विद्युत लोको क्षमता के ए.सी. विद्युत लोको शेड का निर्माण किया गया है तथा शेड में विद्युत लोको के अनुरक्षण का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। नगर में बेहतर आवागमन हेतु नन्दानगर रेलवे क्रासिंग पर अण्डरपास का निर्माण किया जा चुका है तथा कौवाबाग रेलवे क्रासिंग पर अण्डरपास का निर्माण अन्तिम चरण में है।

यात्री यातायात के बढ़ते दबाव से उबरने के लिये डोमिनगढ़-गोरखपुर-कुसुम्ही स्टेशनों के मध्य तीसरी लाइन, दोहरीघाट-सहजनवा नई रेल लाइन को रेलवे बोर्ड द्वारा स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। इन परियोजनाओं के पूरा होने पर क्षेत्रीय विकास को गति मिलेगी।

रेल धराहरों से लोगों को अवगत कराने के लिये गोरखपुर में रेलवे म्यूजियम की स्थापना की गई है जहाँ रेल धरोहरों के साथ ही बच्चों के मनोरंजन हेतु ट्वाय-ट्रेन एवं अन्य मनोरंजन सुविधाओं का प्रावधान किया गया है, जो पूर्वांचलवासियों के आकर्षण का केन्द्र है।

*****

बदल गयी वनटांगिया की तस्वीर

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

देश की वन संपदा की नींव रखने वाले हजारों वनटांगिया परिवार पहले अंग्रेजी हुकूमत की यातनाओं का शिकार हुए और आजादी के बाद विगत 70 वर्ष तक सरकारी उपेक्षाओं का शिकार हो गये। यह भयावह विडम्बना ही कहा जा सकता है कि जिन लोगों ने अपने जीवन को दाँव पर लगाकर विपरीत मौसम और परिस्थितियों में भी अमूल्य पौधों को लगाकर भारत के पर्यावरणीय वातावरण की संरक्षा को संतृप्त किया, उन्हीं को कई दशकों तक सामान्य मानविकीय की मूलभूत सुविधा से न केवल वंचित किया गया वरन नागरिकता तक नहीं दी गयी। शायद वनटांगिया मजदूरों के लिए यह सुखद संयोग और उनका सौभाग्य ही था कि उन्हें अपनी लड़ाई में एक ऐसे धर्मयोगी और कर्मयोगी का नेतृत्व मिला जिसके कारण आज वनटांगिया समुदाय को न केवल भारत की नागरिकता मिली वरन वह देश की मुख्य धारा में जुड़कर विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर भी हो रहे हैं। वह नेतृत्व है तत्कालीन सांसद और वर्तमान में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज का जिनके अटूट दृढ़ इच्छा शक्ति और मानव सेवा के अनगिनत कार्यों के कारण ही सम्भव हो सका है। वनटांगिया समुदाय के लोग आज आम भारतीय की तरह सम्मान के साथ जीवन प्रकाश के पथ पर निरंतर अग्रसर हैं।

वनटांगिया समुदाय के सम्बन्ध में और वर्तमान स्थिति के विषय में कोई भी चर्चा तब तक पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं किया जा सकता जब तक कि उनके संघर्षों का इतिहास और गोरखपुर के तत्कालीन सांसद और वर्तमान मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी महाराज की अतुलनीय योगदान का उल्लेख न हो। गोरखपुर महोत्सव द्वारा प्रकाशित 'मंथन 2019' पत्रिका में 'वनटांगिया समुदाय : इतिहास, संघर्ष और सौगात' शीर्षक के अन्तर्गत लेख

राजनीतिशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

में विस्तार पूर्व चर्चा की गयी थी। उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए मंथन 2020 पत्रिका के माध्यम से वर्ष 2019 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कराये गये विकास कार्यों एवं योजनाओं के आधार पर इन गाँवों की बदलती तस्वीरों का उल्लेख करने का एक प्रयास है।

सन् 2017 वनटांगिया समाज के लिए वास्तव में एक नये सवेरे से कम नहीं था जब उन्हें राजस्व गाँव का दर्जा देते हुए जमीनों का अधिकार पत्र प्राप्त हुआ। हम सभी इससे भली-भाँति परिचित भी हैं कि यह सब कैसे सम्भव हो सका। मानव समाज विशेष रूप से वंचितों और शोषित के प्रति अनन्य पीड़ा और संवेदना रखने वाले गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनते ही वनटांगिया समाज जो उम्मीद और विश्वास जगा कर आज वहाँ की गाँव, गलियाँ, सड़कों और चेहरों पर स्पष्ट ही देखी जा सकती है। वर्षों से घोर प्रशासनिक उपेक्षा का दंश झेल रहे वनटांगिया मजदूरों के परिवारजनों, चाहे बुजुर्ग महिला-पुरुष हो, किलकारियाँ भरते बच्चे हों या युवा हो सभी यह महसूस कर रहे हैं कि उनका स्वप्न आज हकीकत में बदल रहा है। वनटांगिया मजदूरों के प्रति अगाध स्नेह का ही परिणाम है कि पिछले 16 वर्षों से लगातार दीपावली के दिन वर्तमान माननीय मुख्यमंत्री पूज्य महाराज जी प्रत्यक्ष रूप से बच्चों, नवजवानों और बुजुर्गों को अपना आशीर्वाद देते रहे हैं। मुख्यमंत्री बनने के बाद तो मानो वनटांगिया बस्तियों में विकास की गंगा बहने लगी है।

आज वनटांगिया बस्तियों की प्रगति और वहाँ का विकास देखने लायक है। जहाँ पहले बमुश्किल झुग्गी-झोपड़ी भी उन्हें नसीब नहीं थीं, आज चमचमाते पक्के मकान स्वयं विकास की कहानी कह रहे हैं। कुछ वर्ष पहले (लगभग तीन वर्ष) तक वनटांगिया मजदूरों के नम आँखें आज चमकते हुआ वहाँ देखने आने वालों का स्वागत रही हैं। गाँव में साफ-सुथरी इण्टरलॉकिंग और ईंट के खड़ंजों पर तेज दौड़ लगाते छोटे-छोटे बच्चों का आनन्द देखकर मन स्वयं रोमांचित ही उठता है। उनके मनोरंजन में इन सड़कों का महत्व सामान्य मानस से ही आसानी से समझा जा सकता है। प्रत्येक मकान के बगल में स्वच्छ शौचालयों का निर्माण और उसका प्रयोग प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के स्वच्छ भारत अभियान की कहानी स्वयं कह रहा है। खुले में शौचयुक्त कार्यक्रम वनटांगिया बस्तियों में फलीभूत हो सका है। शासन द्वारा अनुदानित 900 से अधिक शौचालय बनाए गए हैं। मुख्यमंत्री आवास योजना के अधीन 900 से अधिक पक्के मकान गोरखपुर के इन बस्तियों में बनटांगिया के लिए किसी राजमहल से कम की अनुभूति नहीं करा रहे हैं। उनकी पीढ़ियाँ गुजर गयी अपने घर का स्वप्न ही रह गया लेकिन आज जो बुजुर्ग जीवित हैं उनकी खुशी का ठिकाना नहीं है जब वे अपने परिवार जनों के साथ

अपने नवनिर्मित मकान में प्रवेश कर रहे हैं।

वनटांगिया मजदूरों की बस्तियों के विकास के पूरे रोड मैप की निगरानी उत्तर-प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज स्वयं कर रहे हैं। इसी कारण इतने कम समय में गोरखपुर के इन वनटांगिया मजदूरों की बस्तियों में विकास की गंगा बह निकली है। वनटांगिया बस्ती जो कभी घोर अंधकार का पर्याय बन चुकी थी वहाँ आज सौभाग्य बिजली कनेक्शन एवं उज्ज्वला योजना कनेक्शन द्वारा दुधिया रोशनी में जगमगा रहे हैं। इन बस्तियों के मासूम बच्चों लाइट के नीचे बैठकर पढ़ते देखकर किसी भी व्यक्ति को अपार सन्तोष होता होगा तो सहज ही अन्दाज लगाया जा सकता है कि वनटांगिया मजदूर यह सब देखकर कितना प्रसन्न हो रहे होंगे। एक समय था जब इन बस्तियों में उजाला का एक मात्र स्रोत सूर्य की किरणें ही थीं, वह भी पूरी नहीं। घने जंगलों के बीच बसे इन बस्तियों में सरकार द्वारा उपलब्ध उजाला वास्तव में उनके जीवन में उजाला ला दिया है।

वर्ष 2019 इन वनटांगिया समुदाय के लिए सुख, समृद्धि और सन्तोष का वर्ष रहा है। एक हजार से अधिक परिवारों को अंत्योदय श्रेणी के राशन कार्ड द्वारा खाने के लिए अन्न उपलब्ध कराना किसी बड़े पवित्र पुण्य कार्य से कम नहीं है। जब पूरे भारत वर्ष में वंचितों और गरीबों के लिए सरकार की ओर से विभिन्न सुविधा और सहयोग प्राप्त हो रहा था तब इन वनटांगिया मजदूरों को एक रत्ती भर अन्न एवं अन्य सामग्री उपलब्ध नहीं था। आज वह सभी सुविधाएँ इनको आसानी से उपलब्ध हो रही हैं। इन समुदायों में निराश्रित पेंशन, दिव्यांग पेंशन, वृद्धा पेंशन इत्यादि विविध जनकल्याणी योजनाओं के माध्यम से सरकार उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। कन्या सुमंगला योजना का लागू किया जाना सरकार के बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ अभियान की बड़ी योजना का क्रियान्वयन इनके उत्थान की कहानी स्वयं कह रही है।

पढ़ा लिखा समाज विकसित राष्ट्र की प्रथम शर्त है। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री का बच्चों की पढ़ाई पर विशेष जोर रहता भी है जो स्पष्ट उनके चिंतन और कार्यप्रणाली में दिखाई भी पड़ता है। जब इन वनटांगिया मजदूरों के बच्चों के पढ़ाई-लिखाई की कहीं किसी प्रकार की सुविधा सम्भव नहीं थी तब तत्कालीन सांसद और वर्तमान मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने मन्दिर की ओर से स्कूल का शेड एवं शिक्षक सहित उनके पढ़ने-लिखने के संसाधन 2006 से ही उपलब्ध कराया जा रहा है जो आज सरकारी स्कूल संचालित होने के बाद भी ठीक ढंग से चल रहा है। इस विद्यालय की स्थापना कराने के कारण उनके विरुद्ध वन विभाग ने मुकदमा पंजीकृत करा दिया था, फिर भी उन्होंने

निरंतर बच्चों की पढ़ाई के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ तत्कालीन सरकार के असंवेदनशील निर्णय के विरुद्ध हार नहीं मानी और विद्यालय का संचालन होता रहा। उन्हीं के इस पवित्र दृष्टि के कारण आज वहाँ सुंदर साफ सुथरा सरकारी विद्यालय डेस्क बेंच, ड्रेस से युक्त चल रहा है। वनटांगिया मजदूरों के बच्चे अन्य सरकारी स्कूलों के बच्चों के समान सम्मान और गर्व के साथ इस विद्यालय में पढ़ रहे हैं। इसी प्रकार पूरे बस्ती में सोलर लाइट, स्वच्छ पेयजल के लिए इण्डिया मार्का-2 हैण्डपम्प तथा टीटीएसपी की समुचित व्यवस्था विकसित गाँव की तस्वीर दिखा रही है। यह स्वच्छ जल वनटांगिया मजदूरों और उनके परिवार के लिए किसी अमृत जल से कम नहीं प्रतीत हो रहा है।

वनटांगिया बस्तियों के लोगों के लिए स्वरोजगार के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूह की स्थापना सरकार के संवेदना का एक और उदाहरण है। यह किसी सुखद आश्चर्य से कम नहीं है कि आज यहाँ की महिलाएँ प्रेस्ड पत्तल का निर्माण कर रही हैं। विविध प्रकार के अचार एवं मुरब्बा बना रही हैं। इसके लिए सरकार की ओर से निःशुल्क मशीन उपलब्ध करायी गयी है। शायद ही स्वप्न में भी कोई भी यह सोचे की वनटांगिया समुदाय की महिलाएँ कभी रैम्प पर कैटवाक कर सकती हैं। हाँ यह स्वप्न नहीं है वरन सत्य घटनाक्रम है। शहर के एक कार्यक्रम में जब इन बस्तियों की महिलाएँ रैम्प पर कैटवॉक की तो लोग दाँते तले अँगुलियाँ दबा लिए।

वनटांगिया बस्तियों में हुए उल्लेखनीय विकास और परिवर्तनों के विषय में बताते हुए 75 वर्षीय श्रीमती पतिराजी कहती हैं कि अगर महाराज जी हम लोगों के साथ नहीं होते तो यहाँ कुछ भी नहीं सम्भव हो पाता। हमारी तो पैदाइस ही इन्हीं जंगलों के क्यारियों में हुआ है। आज हमारी चार पीढ़ी यहाँ रह रही है। हम लोगों की अब जिन्दगी पूरी हो रही है लेकिन अपने बच्चों के सँवरते भविष्य की सम्भावनाएँ देखकर बेहद सन्तोष हो रहा है। पहले हमारी जिन्दगी एक क्यारी से दूसरे क्यारी के मध्य ही शुरू होती थी और समाप्त हो जाती थी, अब समय बदला है। महाराज जी हमलोगों के लिए देवता के समान हैं। शायद भगवान ने उन्हें इसीलिए इस धरती पर भेजा है। गाँव में सरकारी स्कूल, पानी की बहुत अच्छी व्यवस्था, निःशुल्क मकान, शौचालय आज सभी कुछ हम लोगों के पास हैं।

इसी प्रकार 35 वर्षीय श्रीमती संध्या जो महाराज जी द्वारा पूर्व में स्थापित हिन्दू विद्यापीठ में विगत 12 वर्षों से बच्चों को पढ़ा रही है, बताती है कि जो लोग इस गाँव को पहले देखे होंगे वह आज इसको पहचान नहीं पायेंगे। साफ सुथरी इण्टरलॉकिंग सड़कें, जगमगाती लाइटें,

आगनबाड़ी केन्द्र यह सब देखकर बहुत अच्छा लगता है।

55 वर्षीय श्रीमती शुभावती जो स्वयं सहायता समूह में प्रमुख रूप से सक्रिय है और पत्तल बनाने वाली योजना का नेतृत्व भी करती है, कहती है कि सरकार की ओर से अब तक 10 मशीन हम महिलाओं को स्वावलम्बन प्रदान करने के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करायी गयी है। आज यहाँ की महिलाएँ पत्तल और विविध प्रकार के आचार और मुरब्बे बना रही हैं। अब जरूरत केवल इनके बेचने की सुदृढ़ व्यवस्था की है। हम सब अपने परिवार के भरण पोषण में आज सहयोग करने की स्थिति में हैं।

इसी प्रकार लक्ष्मी, ममता, सुनिता, गीता आदि महिलाएं भी बताती हैं कि सरकार द्वारा नि:शुल्क प्रशिक्षण दिला कर अचार, मुरब्बा बनाने मे निपुण बनाकर हमें रोजगार उपलब्ध करना बड़ी बात है। इम आम, आंवला, मिक्स अचार बना रहे हैं। विविध प्रकार के मुरब्बे भी बना रहे हैं। इसकी शुरुआत पिछले महोत्सव में स्टाल लगाकर अपने उत्पादों को बेचने का अवसर मिला।

वनटांगिया बस्तियों में विकास के विषय में तिनकोनिया नं. तीन के मुखिया श्री राम गणेश ने उत्तर प्रदेश सरकार को धन्यवाद देते हुए कहा कि राजस्व गांव की मान्यता और उसके बाद सभी मूलभूत सुविधाओं की स्थापना महाराज जी के कारण ही हुआ है। वर्षों से बेहद खस्ताहाल में रहने वाला वनटांगिया समाज आज सम्मान के साथ आगे बढ़ रहा है। आज यह बस्ती गोरखपुर–कुशीनगर एवं गोरखपुर–पिराईच मार्ग से जुड़ गया है। पहले बरसात के समय गाँव से बाहर निकलना पहाड़ पार करने जैसा था, विशेष रूप में बीमार लोगों को रात में चिकित्सालय ले जाना अत्यन्त कठिन था। हम लोगों ने मुख्यमंत्री जी से गाँव में एक प्राथमिक उपवार केन्द्र की स्थापना के लिए आवेदन किया है।

वास्तव में वनटांगिया बस्तियों में हुए विकास कार्यों तथा वहाँ के लोगों के चेहरों को देखने के बाद बेहद सन्तोष होता है। एक समय था जब यह वनटांगिया समाज खानाबदोश का जीवन जीने के लिए मजबूर था, अब समय की सरकार और समाज दोनों उनके विकास के लिए आगे बढ़कर बहुत तीव्रता से कार्य कर रहे हैं। अंग्रेजों के कोड़े से रैम्प पर कैटवॉक तक की यात्रा के पीछे एक लम्बा इतिहास, कठिन संघर्ष और वर्तमान उत्तर प्रदेश सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वनटांगिया बस्तियों के लिए वर्ष 2019 उनके लिए प्रकाश–वर्ष के रूप में याद किया जायेगा।

*****

पशुपालन

गोवंश का संरक्षण-संवर्द्धन में भागीरथ प्रयासों का वर्ष

डा. संजय कुमार श्रीवास्तव

गौवंश का वैसे तो पूरी दुनिया में काफी महत्व है लेकिन भारत के संदर्भ में बात की जाये तो प्राचीन काल से यह अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। चाहे वह दूध का मामला हो या खेती के काम आने वाले बैलों का। वैदिक काल में गायों की संख्या व्यक्ति की समृद्धि का मानक हुआ करती थी। वैदिक संस्कृति संसार की सर्वोत्तम संस्कृति है। वेद के मनुष्य से अन्य प्राणियों के प्रति मित्रस्य चक्षषा समीक्षा महे - अर्थात् प्रत्येक प्राणि को अपना मित्र समझो, ऐसा व्यवहार करने का निर्देश दिया है।

अपने आसपास आपको आवारा और निराश्रित पशुओं के रूप में गौवंश ही सबसे ज्यादा दिखते और मिलते है। कितनी विडम्बना है कि जिस देश में गाय को माता का दर्जा दिया जाता है, उसी देश में गाय इतनी दयनीय स्थिति में है कि उसे अपना पेट भरने के लिए पालीथीन तक खाना पड़ता है। सामान्यत: पशु पालक/किसान/पशुप्रेमी गोवंश को तब तक ही अपने पास रखता है जब तक उसे उसमें दूध या उससे होने वाले बच्चे से लाभ की उम्मीद होती है वरना वह उसे सड़क पर छोड़ देता है। इंसान किस हद तक स्वार्थी हो चुका है इसकी कल्पना बहुत ही दयनीय है।

वर्ष 2019 के शुरूआत में राज्य सरकार ने निराश्रित गोवंश के लिए एक वृहद कार्य योजना की घोषणा की। प्रदेश के इतिहास में यह पहला मौका था जब किसी सरकार ने इस दुरूह कार्य को करने का बीड़ा उठाया। राज्य के समस्त ग्रामीण व शहरी स्थानीय निकायों - ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत, नगर

पशु चिकित्साधिकारी, गोरखपुर

पालिका, नगर निगमों में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना एवं उसके क्रियान्वयन के विस्तृत रूपरेखा बनायी गयी।

सरकार की निराश्रित गोवंश के लिए अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना एवं संचालन कार्यक्रम में विभिन्न विभागों (राजस्व, नगर विकास, सिंचाई, कृषि, गन्ना, उद्यान, ग्राम्य विकास, पंचायती राज्य, समाज कल्याण, वन विभाग, लघु सिंचाई, नेडा, गृह विभाग एवं पशुपालन विभाग) को शामिल किया गया। इस अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए पशुपालन विभाग को प्रदेश स्तर पर नोडल विभाग नामित किया है।

गोरखपुर में वर्तमान में 24 कांजी हाउस, 20 अस्थायी छोटे गौ आश्रय स्थल, एक वृहद गौ आश्रय स्थल– गाजेगढ़हा, गोला बाजार में, नगर निगम द्वारा संचालित – कान्हा उपवन, एक वृहद गौ आश्रय स्थल नगर पंचायत बड़हलगंज में, एक वृहद गौ आश्रय स्थल नगर पंचायत सहजनवां में बनाये गये है। इनमें कुल 2100 गोवंश रखे गये है। कुछ माह पूर्व लगभग 2700 गोवंश मधावलिया, महराजगंज को भी भेजे गये थे।

प्रत्येक अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल को समीप के पशुचिकित्सालय से जोड़ा गया है। जिससे पशुओं को 24 घंटे चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध रहे।

यह योजना पूर्ण रूप से सफल हो सके, इसके लिए सरकार ने विभिन्न विभागों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जोड़ा है। गौ आश्रय स्थल में रखे गये गोवंश के भरण–पोषण, आवास, पानी एवं ठंड से बचाव के लिए पुख्ता इंतजाम किये गये है। गौवंश की मौत न हो हो यही सबसे बड़ी प्राथमिकता है। पशुपालन विभाग के अधिकारी गौ आश्रय स्थलों पर लगातार रात में निरीक्षण कर रहे है। ठंड से बचाव के लिए मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डा. डी. के. शर्मा एवं उप मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डा. राजेश त्रिपाठी की पहल पर पशुपालन विभाग ने 'कपड़ा बैंक' (घर के पुराने कपड़े) योजना शुरू की है, जिसमें समाज से फटे–पुराने कपड़े खासतौर से मोटे कपड़े लेकर उसे सिलवा कर गौवंश के लिए ओढ़न तैयार कराये जा रहे जिससे ठंड से बचाव किया जा सके।

इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सरकार ने सहभागिता योजना शुरू की है, जिसमें प्रत्येक इच्छुक पशुपालक/किसान को चार निराश्रित पशु (गोवंश) मुफ्त में दिये जा रहे है और साथ ही 900/– प्रति पशु प्रति माह की दर से 3600/– महीना सीधे पशुपालक/किसान के खाते में सरकार द्वारा जमा कराये जा रहे है।

सरकार इन आश्रय स्थल को इच्छुक व्यक्ति/ट्रस्ट/एन.जी.ओ. को संचालन हेतु देने पर विचार कर रही है, बशर्ते वो सारी शर्तें पूरी करता हों। इस क्रम में वृहद गो आश्रय स्थल गाजेगढ़हा, गोला बाजार को प्रयोग के तौर पर 'ध्यान फाउन्डेशन' को संचालन हेतु दिया गया है।

वर्तमान में गोरखपुर शहर को इस वृहद कार्यक्रम से छुट्टा/निराश्रित गोवंश से छुटकारा मिलना शुरू भी हो गया है। अब सड़कों पर छुट्टा/निराश्रित पशुओं (गौवंश) की संख्या काफी कम हुई है। गौवंश द्वारा होने वाली दुर्घटनाओं में भी विशेष कमी आयी है।

पशुपालन विभाग ने अगस्त माह से पालतू गौवंश को चिन्हित कर शत-प्रतिशत टैगिंग योजना शुरू की है। पशुपालन विभाग एवं नगर निगम के संयुक्त तत्वावधान में लगभग चालीस वार्डो में समस्त गोवंश (पालतू) की शत-प्रतिशत टैगिंग की गयी है जिससे पशुओं को सड़क पर छोड़ने पर उनके मालिक की पहचान हो सकें और उन पर जुर्माना लगाया जा सके तथा उन्हें ऐसा न करने के लिए हतोत्साहित किया जाये।

जिलाधिकारी महोदय के प्रयास से जन भागीदारी हेतु एक संस्था का रजिस्ट्रेशन 'गोकुल अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल' कराया गया जिससे जुड़ कर लोग स्वेच्छा से दान दे सकें। इच्छुक दानदाता सीधे संबंधित बैंक खाते में अपनी धन राशि जमा करा सकते हैं। यदि कोई दानदाता कैश धनराशि देना चाहे तो मुख्य पशुचिकित्साधिकारी कार्यालय में धन जमा कर रसीद प्राप्त कर सकता है।

मण्डलायुक्त महोदय ने मधवलिया गो सदन के लिए एक वृहद कार्यक्रम की योजना बनाई है जिससे मधवलिया गौ सदन को गौ अनुसंधान केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सके। इस क्रम में एक स्वयंसेवी संस्था ए.पी.पी.एल. ने गौ संरक्षण, संवर्द्धन, स्वावलम्बन - सहभागिता विषयक संगोष्ठी का आयोजन पशुपालन विभाग के सहयोग से 'संवाद भवन', दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर में दिनांक 2 दिसम्बर 2019 को आयोजित किया। संगोष्ठी में श्री अजीत महापात्रा, गौ सह सेवा प्रमुख श्री सुनील मानसिंहका, सदस्य कामधेनु आयोग भारत सरकार, मण्डलायुक्त श्री जयंत नार्लिकर, जिलाधिकारी श्री के. विजयेन्द्र पाण्डियन, नगर आयुक्त, विभिन्न जिलों से आये मुख्य विकास अधिकारी, गोरखपुर के मुख्य प्रशुचिकित्साधिकारी डा. डी.के. शर्मा, डा. राजेश, डा. एस.के. सिंह, डा. साठे, डा. उपाध्याय एवं विभिन्न जिलों से आये पशु चिकित्साधिकारीगण, पशु पालक एवं किसानों ने इस संगोष्ठी में सहभागिता की। सभी वक्ताओं ने गोवंश के प्रति दया करने तथा सरकार द्वारा किये जा रहे

कार्यो में सहयोग के लिए जन सहभागिता सुनिश्चित करने पर बल दिया। श्री मानसिंहका एवं श्री अजीत महापात्रा ने विस्तार से बताया कि दूध न देने वाली गायें किस तरह पशुपालकों/किसानों के लिए लाभाकारी हो सकती हैं। श्री मानसिंहका ने इसके लिए गौ अनुसंधान केन्द्र देवलापार, नागपुर में नि:शुल्क प्रशिक्षण के लिए इच्छुक पशुपालकों/किसानों को आमंत्रित किया। जिलाधिकारी महोदय ने अपने उदबोधन में गोवंश के प्रति दया भाव रखने तथा पशुपालकों को सिर्फ दूध के लिए गो पालन के प्रति सचेत भी किया। मण्डलायुक्त महोदय ने कड़े शब्दों में पशुपालकों को सड़क पर छुटटा गोवंश न छोड़ने की हिदायत दी। साथ ही देवलापार की तरह मधवलिया गो सदन को भी गो अनुसंधान केन्द्र के रूप में विकसित करने हेतु निर्देश दिया।

500 एकड़ में फैले इस क्षेत्र को गो अनुसंधान एवं अभ्यारण के रूप में विकसित कर पर्यटन के क्षेत्र में एक गैर-परम्परागत स्थल के रूप में विकसित करना है, जिसमें देशी नस्ल की गायों एवं विलुप्तप्राय गौवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में एक सार्थक प्रयास हो सके।

गौ अनुसंधान केन्द्र के स्थापना से उस क्षेत्र में विकास के नये द्वार खुलेंगे। एक तरफ हमारी देशी नस्ल के प्रजातियों का संरक्षण एवं संवर्द्धन हो सकेगा एवं साथ ही साथ निराश्रित गोवंश को एक प्राकृतिक आश्रय स्थल भी मिल सकेगा। नये रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे तथा साथ ही लोगों को गौ पालन के लिए प्रोत्साहित भी किया जा सकेगा । पशुओं में बीमारियों से बचाव एवं अधिकतम उत्पादन हेतु अनुसंधान कार्य भी किये जा सकेंगे।

प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी ने गोरखपुर में एक पशुचिकित्सा महाविद्यालय खोलने की अनमुति देकर इस क्षेत्र में शैक्षणिक एवं तकनीकी विकास एवं लोगों के समृद्धि के लिए एक नया अवसर दिया है। चरगावां कृषि फार्म पर यह कालेज बनना सुनिश्चित है।

इस महाविद्यालय में दो कैम्पस होंगे। एक बड़ा कैम्पस 30.6 एकड़ का चरगावां ब्लाक में जिसमें शैक्षणिक कार्य, प्रशासनिक भवन, प्राचार्य, आचार्य एवं छात्र-छात्राओं के लिए आवासीय काम्पलेक्स, एक बड़ा डायग्नोस्टिक सेन्टर के साथ ओ.पी.डी. काम्पलेक्स, इनडोर एवं आउटडोर गेम के लिए मैदान, आडीटोरियम एवं और भी अन्य संसाधन प्रस्तावित है। लगभग 325 करोड़ की लागत से बनने वाले इस महाविद्यालय से इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से विकास की सम्भावनाएं बढ़ेगी।

महाविद्यालय में लगभग 80 छात्रों का चयन एक वर्ष में होगा। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय, मथुरा से सम्बद्ध यह महाविद्यालय पूर्वान्चल के लिए मील का पत्थर साबित होगा। सभी प्रकार पशु बीमारियों पर अनुसंधान के साथ-साथ पशुओं से मनुष्यों एवं मनुष्यों से पशुओं को होने वाले विभिन्न प्रकार के बीमारियों (जूनोटिक) पर लगाम लगाया जा सकेगा। पूर्वान्चल में 'नौकी बीमारी' के रूप में प्रसिद्ध 'जापानी इंसेफ्लाइटिस/ ए.ई.एस. बीमारी' पर शोध एवं उन्नमूलन हेतु बाबा राघव दास मेडिकल कालेज, एन.आई.वी., आई.सी.एम.आर. के साथ यह प्रस्तावित कालेज अहम भूमिका में होगा। साथ ही उच्च उत्पादन क्षमता वाले देशी गायों को पालने के लिए यहां के पशुपालकों को प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

विभाग अपनी दैनिक कार्यो यथा - चिकित्सा, बधिया, टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधान एवं चारा विकास को लक्ष्य के अनुरूप कर रहा है। साथ ही साथ विभाग ने पहली बार अतिरिक्त चारा विकास कार्यक्रम का आयोजन प्रत्येक पशु चिकित्सालय स्तर पर किया है जिसमें गोरखपुर जिले ने 60 कुंतल जई, 75 कुंतल यूरिया, 42 कुन्तल डी.ए.पी. का नि:शुल्क वितरण 600 पशुपालकों के बीच किया है।

जिले में अब तक कुल 13,50,000 टीकें पशुओं में लगाये जा चुके है और यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि शत-प्रतिशत पशुओं को आच्छादन इस योजना में हो सके।

भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना के अन्तर्गत गोरखपुर जिले में नि:शुल्क 20,000 सीमेन का लक्ष्य रखा गया है। प्रत्येक पशु चिकित्सालय के अंतर्गत 4 से 6 गावों का चयन किया गया है। इस स्कीम में प्रत्येक गोवंश को 3 बार नि:शुल्क कृत्रिम गर्भाधान (3 साइकिल में) करने का प्रावधान है।

नई सेक्सड सार्टेड सीमेन योजना जिसमें सिर्फ बछिया ही जन्मेंगी के अंतर्गत 347 गोवंश का कृत्रिम गर्भाधान किया जा चुका है। यह योजना आने वाले वर्षों में पशुपालकों/किसानों की आय तो बढ़ायेगी ही साथ ही साथ निराश्रित नर गोवंश से समाज को छुटकारा भी मिलेगा। इस सीमेन से जन्मी हुई बछिया अधिक उत्पादन एवं कम बीमारी वाली गाय होगी। विभाग द्वारा इस योजना के प्रचार-प्रसार के लिए व्यापक इंतजाम किये गये है।

सामान्य कृत्रि गर्भाधान से अब तक 1,45,477 पशुओं में कृत्रिमत गर्भाधान किया जा चुका है।

विभाग द्वारा प्रत्येक माह विभिन्न ग्राम पंचायतों में बहुद्देशीय कैम्प का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष लगभग 400 कैम्पों का आयोजन किया गया।

प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई पं. दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेला के अंतर्गत इस वर्ष ब्लाक स्तरीय 57 पशु आरोग्य मेले का आयोजन किया जा चुका है साथ ही साथ मण्डल स्तर पर एक वृहद पं. दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेले का आयोजन फरवरी 2020 में प्रस्तावित है।

सरकार की प्राथमिकताओं को देखते हुए पशुपालन विभाग मुख्य रूप से गो आश्रय स्थल, राष्ट्रीय गोकुल मिशन, सेक्सड सार्टेड मिशन, अतिरिक्त चारा बीज उत्पादन योजना पर विशेष ध्यान देते हुए समय-समय पर समीक्षा कर उचित निर्देश देता है। जिससे कि एक तरफ निराश्रित गोवंश को बचाया जा सके वही दूसरी तरफ गो पालकों को गो पालन हेतु विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा सके। गो पालन से जन सामान्य कैसे लाभ ले सकें यह भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। हमें आशा है कि हम सरकार के इस भागीरथ प्रयास की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करते रहेंगे।

*****

गोरखपुर के परिप्रेक्ष्य में न्यायपालिका

अशोक कुमार शुक्ल

राष्ट्र को अंग्रेजी दासता से मुक्ति दिलाने एवं स्वाधीन भारत में राष्ट्रीय मान बिन्दुओं एवं मानवीय मूल्यों के साथ-साथ राष्ट्र की अस्मिता को बचाये रखने के लिए जिन संवैधानिक संस्थाओं ने कुशलतापूर्वक कार्य किया, उनमें न्याय पालिका का स्थान सर्वोपरि है। पूर्व में कुशल एवं प्रभावी नेतृत्व की कमी के कारण ही न्याय पालिका पर कार्य का बोझ बढ़ा। ऐसे में अधिवक्ता समुदाय की समाज के प्रति जिम्मेदारी भी निरन्तर बढ़ती गयी।

जहाँ तक गोरखपुर में न्यायालय की स्थापना का प्रश्न है, सर्वप्रथम एक मुन्सिफ न्यायालय मंसूरगंज (पिपराईच) गोरखपुर में स्थापित की गयी थी जिसे 1862 में गोरखपुर मुख्यालय पर स्थानान्तरित कर दिया गया। कालान्तर में गोरखपुर में जनपद न्यायालय स्थापित हुआ। गोरखपुर के विभाजन के बाद क्रमशः 1945 में बस्ती, 1964 में देवरिया एवं 1990 में महराजगंज में भी जनपद न्यायालय की स्थापना कर दी गयी।

गोरखपुर के ख्यातिलब्ध अधिवक्ताओं की चर्चा प्रारम्भ करने के लिए स्व. चारूचन्द्र दास जी को श्रद्धापूर्वक नमन करना अपना दायित्व समझता हूँ। वर्ष 1892 में विधि व्यवसाय प्रारम्भ करके अल्प समय में ही उन्होंने जो उच्च मानदण्ड स्थापित किया उसकी चर्चा सुनकर गौरव की अनुभूति होती है। बहुत अल्प आयु में ही उनका देहावसान हो गया। परन्तु उससे पूर्व अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को उन्होंने क्षय रोगियों के समुचित उत्थान एवं इलाज हेतु समर्पित कर दिया। चारूचन्द्र दास ट्रस्ट आज भी इस दायित्व का निर्वहन कर रहा है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में गोरखपुर के अधिवक्ताओं की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। विधि व्यवसाय के जरिये केवल धनार्जन करना ही अधिवक्ताओं का कभी लक्ष्य नहीं रहा

एडवोकेट आन रिकार्ड, उच्च न्यायालय, लखनऊ

बल्कि जब-जब समाज की तरफ से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से आह्वान किया गया, अधिवक्ता समाज ने अपनी अग्रणी भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान 4 फरवरी 1922 को घटित ''चौरीचौरा काण्ड'' से सम्बन्धित पत्रावली सत्र वाद सं. 44/1922 राज्य बनाम अब्दुल्ला उर्फ सुचाई एवं 224 अन्य, की पत्रावली स्वयं में इस बात का प्रमाण है कि तत्कालीन वरिष्ठतम अधिवक्ताओं ने आंदोलनकारियों की तरफ से नि:शुल्क पैरवी की थी। तब से आज तक जब कभी भी राष्ट्र एवं समाज हित की बात आई तब यहाँ के अधिवक्ताओं ने हर प्रकार अग्रणी भूमिका निभाई है। करीब एक दशक पूर्व वर्ष 2007 में तत्कालीन राज्य सरकार के इशारे पर शासन, प्रशासन द्वारा अपनाई गई दमनकारी नीति के विरुद्ध जब पूर्वांचल में आन्दोलन खड़ा हुआ और यहाँ के जन प्रतिनिधियों सहित हजारों निर्दोष व्यक्तियों को मनगढ़न्त झूठे मुकदमे में कारागार में निरूद्ध कर दिया गया था, तब भी यहाँ के अधिवक्ताओं ने आन्दोलन की बागडोर अपने हाथ में लेकर न केवल नेतृत्व किया था बल्कि सम्पूर्ण दमनकारी प्रक्रिया को न्यायालय में चुनौती देकर सबको कारागार से मुक्त कराया था। इस प्रकार गोरखपुर के अधिवक्ताओं ने दायित्व बोध का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

गोरखपुर के ख्यातिलब्ध अधिवक्ताओं ने न केवल गोरखपुर अपितु पूर्वांचल के अनेक जनपदों में अपने विधिक ज्ञान से जो उच्च मानदण्ड स्थापित किया उस पर पूर्वांचल को और विशेष कर अधिवक्ता समुदाय को गर्व की अनुभूति होती है। जहाँ तक सिविल कोर्ट, गोरखपुर के अधिवक्ताओं की बात है उनमें कुछ विभूतियों का उल्लेख समीचीन होगा। स्व. मुन्शी हरिदत्त, मुन्शी नरसिंह प्रसाद, स्व. अयोध्या प्रसाद, मो. इस्माईल, पण्डित हरिहर प्रसाद दूबे, गुरू प्रसाद सरकार, ठाकुर सुखदेव प्रसाद, पं. बब्बन प्रसाद मिश्र, रघुवंश मणि, राय राजेश्वरी प्रसाद, रमाकान्त वर्मा, पं. रामदास धर दूबे, लक्ष्मी शंकर वर्मा, हरीश्चन्द्र मणि त्रिपाठी, पं. पारसनाथ मिश्र, चन्द्रभूषण श्रीवास्तव, पूर्व विधायक अवधेश कुमार श्रीवास्तव, प्यारे मोहन सरकार, पूर्व एम.एल.सी. स्व. कृष्णपाल सिंह आदि के योगदान को कदापि भुलाया नहीं जा सकता है। स्थानाभाव के कारण अन्य बहुत से नाम अंकित नहीं हो पा रहे हैं, इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। यहाँ के विभिन्न अधिवक्ताओं ने उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में एवं सांसद, विधायक, मंत्री आदि के रूप में न्यायजगत एवं समाज की सेवा में अमूल्य योगदान दिया है।

*****

गोरखपुर न्यायपालिका की वर्ष 2019 की उपलब्धियाँ

डॉ. सुभाष चन्द शुक्ल

मुकदमों का त्वरित निस्तारण, वादकारियों को सस्ता, सुलभ एवं पारदर्शी न्याय मिले यह कार्य अदालतों का है। अधिवक्ताओं के सहयोग के अभाव में यह कार्य सम्भव नहीं हो सकता।

गोरखपुर जनपद में न्यायालय की स्थापना सन् 1890 के आस-पास हो गयी थी। उस समय केवल एक अंग्रेज जज, एक मजिस्ट्रेट एवं एक मुन्सिफ की कोर्ट होती थी जहाँ सभी फौजदारी व दीवानी के मुकदमों का निपटारा किया जाता था। न्यायालय की भाषा उर्दू और अंग्रेजी हुआ करती थी। वादकारियों की सहायता के लिए अधिवक्तागण थे। उस समय 4 से 6 अधिवक्ता ही थे जिन्हें 'वकील साहेब' कहा जाता था।

बार एसोसिएशन सिविल कोर्ट की स्थापना 1895 में हुई थी। यहाँ के शुरुआती महत्वपूर्ण अधिवक्ताओं में स्व. चारूचन्द्र दास जी रहे जिन्होंने 1892 में यहाँ विधि व्यवसाय प्रारम्भ किया था। उनका कानूनी ज्ञान इतना विशद एवं न्यायालय की दृष्टि में उनका सम्मान इतना ऊँचा था। एक बार वह क्षयरोग से पीड़ित थे। कचहरी आने के असमर्थ थे, अदालतों को इसकी जानकारी हुई तब अदालत उनके घर लगी और मुकदमें की सुनवाई हुई।

वर्तमान समय में गोरखपुर जनपद में कमिश्नरी, कलेक्ट्री, सिविल कोर्ट, मुन्सिफ अदालत बाँसगाँव समेत छः तहसील अदालतें एवं गोला, कैम्पियरगंज, चौरीचौरा में ग्राम्य अदालतें कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त रेलदावा अधिकरण, आयकर, वाणिज्यकर, लेबर कोर्ट ट्रिब्यूनल की अदालतें कार्यरत हैं।

वर्ष 2019 में गोरखपुर जनपद में न्यायिक क्षेत्र में बेहतरीन उपलब्धि रही। वर्ष के प्रारम्भ

एडवोकेट, सिविल कोर्ट

में गोला, चौरीचौरा एवं कैम्पियरगंज तहसील में ग्राम्य न्यायालय का गठन हुआ जिसमें 2 साल तक की सजा के फौजदारी मुकदमें देखे जायेंगे। इन अदालतों के गठन से सुदूर ग्रामीण अँचल के वादकारियों को सुविधा होगी।

फरवरी मास में प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का आगमन सिविल कोर्ट बार में हुआ। मुख्यमंत्री के रूप में यहाँ वह दूसरी बार आए। उन्होंने कचहरी को हाईटेक बनाने का आश्वासन दिया और अधिवक्ताओं के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उन्हें वादी हितों को ध्यान में रखते हुए पूरे मनोयोग से कार्य करने की प्रेरणा दी।

8 दिसम्बर 2019 को सर्किट हाऊस में न्यायिक विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन हुआ। जिसमें आपराधिक एवं न्यायिक प्रक्रिया के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई। इसकी अध्यक्षता उच्च न्यायालय इलाहाबाद के न्यायमूर्ति वेद प्रकाश वैश्य ने की। कार्यशाला में उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति सलिल कुमार राय ने न्यायिक प्रकरण में Just (न्याय सम्मत), Fair (उचित) और Reasonable (तर्कपूर्ण) शब्द की व्याख्या को विस्तार से बताया। उदाहरण स्वरूप उन्होंने कहा कि 2 हजार रूपये के चोरी के मामले में अभियुक्त से 10 हजार रूपये का बाण्ड भरवाना उचित नहीं। अपराध की तीव्रता के अनुसार ही दण्ड मिलना चाहिए। कार्यशाला में आपराधिक दण्ड प्रक्रिया संहिता के तहत जमानत के प्रावधान, आपराधिक मामलों में अवयस्क की सुपुर्दगी, सिविल न्यायालय के अर्न्तनिहित शक्तियों की विस्तार से चर्चा हुयी। कार्यशाला में मंडल के सभी जनपदों के जिला जज एवं न्यायिक अधिकारी मौजूद रहे।

बार एसोसिएशन सिविल कोर्ट की कार्यकारिणी ने 50 साल विधि व्यवसाय पूरा करने वाले बार अधिवक्ताओं के लिए एक हजार रूपये मासिक पेंशन योजना लागू किया है। यह योजना कलेक्ट्री कचहरी में पहले से लागू है।

सिविल कोर्ट में आधारभूत संरचना का कार्य तेजी से चल रहा है। यहाँ 25 कक्षीय न्यायालय भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। सत्र अदालतों ने लगभग 30 गम्भीर अपराधी प्रवृति के मुकदमों में अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा सुनायी।

14 दिसम्बर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के त्तवावधान में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन दीवानी न्यायालय में हुआ। जिसकी अध्यक्षता जिला जज गोविन्द वल्लभ शर्मा ने की। जिसमें कुल 52000 मुकदमों का निस्तारण आपसी सुलह समझौते, जुर्माना स्वीकारोक्ति के आधार पर किया गया। पारिवारिक विवाद के 20 मुकदमों का निस्तारण कर पति-पत्नी की आपसी सहमति से उन्हें पुनः घर भेजा गसा है, जिसमें एक मुकदमा 20 वर्ष पुराना था।

वर्ष 2019 का कलेक्ट्री कचहरी का फर्जी शस्त्र लाईसेन्स प्रकरण काफी चर्चित रहा। इस प्रकरण में प्रशासन ने शस्त्र लिपिक राम सिंह, अशोक गुप्ता एवं रवि गन हाउस के संचालक रवि पाण्डेय समेत 2 दर्जन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराकर जेल भेजा। उक्त प्रकरण में दु:खद पक्ष भी रहा जिसमें खोराबार थाने के 10 निर्दोष लोगों को भी गिरफ्तार कर जेल भेजा जबकि उनके शस्त्र के लाइसेन्स सही थे। प्रशासन अपनी गलती स्वीकार कर उनके मुकदमें में फाईनल रिपोर्ट लगा रही है।

कलेक्ट्री कचहरी में सीलिंग का मामला भी विशेष चर्चा में रहा। शाहपुर क्षेत्र के विजय नाथ बनाम उ.प्र. सरकार के एक सीलिंग का मामला उच्च न्यायालय इलाहाबाद में चल रहा है। उक्त मामले में कोर्ट में मूल पत्रावली के साथ डी.एम. गोरखपुर को व्यक्तिगत रूप से तलब किया गया और कड़ी फटकार के साथ अवमानना की चेतावनी भी दी। फाईल नहीं मिली जिस पर डी.एम. ने पूर्व डी.जी.सी. समरजीत सिंह समेत पाँच कर्मचारियों के खिलाफ फाईल गायब करने का मुकदमा कैण्ट थाने में दर्ज करा दिया। फाईल की तलाश अभी भी जारी है।

वर्ष 2019 में बार एसोसिएशन सिविल कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता मधुसूदन त्रिपाठी उत्तर प्रदेश बार कौंसिल के सदस्य चुने गए। इसके पूर्व इस पद पर स्व. प्यारे मोहन सरकार, स्व. राम प्रताप शुक्ल एवं इन्दुभूषण रह चुके हैं।

सिविल कोर्ट में कुल 57 कोर्ट का क्षेत्राधिकार है जिसमें 10 कोर्ट पीठासीन अधिकारी के अभाव में खाली चल रही है। मौजूदा समय में लगभग 2.25 लाख मुकदमें विचाराधीन हैं।

वर्ष 2019 अधिवक्ताओं के लिए दु:खद भी रहा। फौजदारी के ख्यातिलब्ध अधिवक्ता कृष्णपाल सिंह, सिविल मामलों के वरिष्ठ अधिवक्ता वीरेन्द्र बहादुर खरे, कैलाशपति त्रिपाठी का निधन हो गया। ये सभी अधिवक्ता अपने पेशे में समर्पित अधिवक्ता होने के साथ-साथ गहरे सामाजिक सरोकार से भी सम्बद्ध थे। गोरखपुर सिविल कोर्ट के अधिवक्ता अपने सामाजिक सरोकारों के प्रति आज भी जागरूक हैं। दुनिया में कहीं भी अन्याय होता है अथवा मानवाधिकारों की हानि होती है तो यहाँ के अधिवक्ता मुखर हो उठते हैं। भारत में कहीं भी यदि प्राकृतिक आपदा आती है तो यहाँ के अधिवक्ताओं का सहयोग भाव रहता है। इसके साथ ही विचार गोष्ठियों के माध्यम से सरकार विभिन्न सामाजिक एवं प्रशासनिक मुद्दों पर सरकार का ध्यान भी आकृष्ट करने का कार्य करते हैं। इस प्रकार गोरखपुर नगर के वैचारिक, सामाजिक एवं विभिन्न संस्थाओं के निर्मिति में गोरखपुर के अधिवक्ताओं का योगदान रचनात्मक रहा है।

*****

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गोरखपुर की मीडिया

राजन राय

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। सामाजिक संबंधों का ताना-बाना बुनने का यह सशक्त जरिया है। लेकिन टीआरपी की होड़ में राष्ट्रीय स्तर पर मीडिया में भटकाव देखने को मिला है। कई बार तेजी की होड़ में गलत तथ्यों को सामने लाया गया। ऐसे हालात में भी गोरखपुर की मीडिया ने पत्रकारिता के मूल को जिंदा रखने की भरपूर कोशिश की है। ताजा उदाहरण जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को हटाने की बात हो या नागरिकता संशोधन कानून लागू करने का मसला रहा हो, गोरखपुर की प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने वास्तविकता को उजागर कर समाज में सकारात्मक संदेश दिया।

इस सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता है कि मौजूदा दौर में मीडिया जिस प्रकार से अपना काम कर रहा है, वह लोकतंत्र के लिए अच्छा संदेश नहीं है। ऐसे में जरूरत महसूस की जाती है कि मीडिया शोर न मचाकर वास्तविक मुद्दों पर रिपोर्टिंग की जाए। जनता के सामने वास्तविक तथ्यों को लाकर अपनी विश्वसनीयता को बनाए रखा जाय। गोरखपुर में कुछ उदाहरण है, जिससे यहां की मीडिया की भूमिका को समझा जा सकता है। उदाहरण स्वरूप जब उत्तर प्रदेश में असलहा के फर्जी लाइसेंस की जांच शुरू हुई तो गोरखपुर में पुलिस और प्रशासन ने ताबड़तोड़ कार्रवाई कर वाहवाही लूटी। लेकिन ऐसे समय में मीडिया की भूमिका शानदार रही। मीडिया ने अपने तीव्र पड़ताल जारी रखा और जेल की सलाखों के पीछे भेजे गए कुछ निर्दोषों की पीड़ा को भी प्रमुखता से उठाया। जांच-पड़ताल में जिन तथ्यों को छिपाया गया था, उसे प्रमुखता से उजागर किया। इसका असर भी देखने को मिला। जिन पहलुओं को मीडिया ने सामने लाया, प्रशासन और पुलिस ने उस पर पड़ताल शुरू की। जितने भी लोग जेल

अमर उजाला में वरिष्ठ पत्रकार

भेजे गए थे सभी के लाइसेंस सही पाए गए। मीडिया की यह भूमिका जनता तक गई। इससे विश्वसनीयता बढ़ी। दूसरा उदाहरण भी ताजा है। नागरिकता संशोधन कानून लागू होने के बाद गोरखपुर में जुमा की नमाज के बाद अल्पसंख्यक समाज के लोगों ने बवाल मचाया। अचानक हिंसक होकर पथराव शुरू किया। शहर की शांत आबोहवा को बिगाड़ने की कोशिश की। यहां भी मीडिया का कार्य बेहतर रहा। गोरखपुर में हुए बवाल के पीछे उपद्रवियों और साजिश रचने वाले लोगों की भूमिका को बड़े ही सटीक ढंग से उजागर किया ही, जनता की परेशानियों को सच्चाई के साथ शासन-सत्ता के सामने रखा। यहां एक बात का जिक्र करना जरूरी है कि राष्ट्रीय स्तर पर सरकार की ओर से चलाए गए स्वास्थ्य, शिक्षा, सफाई पर अभियान को भी आम जनता तक ले जाने में मीडिया मददगार बनी है। सफाई और योग को मीडिया ने प्रमुखता दी तो लोगों की आदत में शुमार होने लगा। जन सरोकारों से जुड़े इन मुद्दों पर गोरखपुर की मीडिया की भूमिका, शायद यही मीडिया की असल भूमिका भी होती है।

सोशल मीडिया के फायदे कम, खतरे ज्यादा

मीडिया की भूमिका की अगर बात हो तो सोशल मीडिया की जिक्र करना भी लाजिमी है। संवाद और सूचना का यह सबसे बड़ा मंच बन चुका है। सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित उपयोगों का एक ऐसा समूह है जो विचारधाराओं और तकनीकों के आधार पर निर्मित हुआ है। यह उपयोगकर्ताओं को सामग्री के सृजन और इसके आदान-प्रदान की सहूलियत प्रदान करता है। यानी आप खुद के विचार रखने के साथ-साथ दूसरों की बातों पर खुलकर अपनी राय भी व्यक्त कर पाते हैं।

स्थानीय स्तर पर इसकी उपयोगिता बढ़ी है। लेकिन फायदे कम और खतरे ज्यादा सामने आए हैं। फर्जी खबरें और फोटो को एडिट करके भी सोशल मीडिया के जरिए कुछ लोग अफवाहें भी फैलाते हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया के सामने यह बड़ी चुनौती है कि सही तथ्यों को सामने लाए। ऐसी अफवाह वाली खबरों को क्रास चेक करके असलियत जनता के सामने लाने की जिम्मेदारी के साथ जवाबदेही भी है। हालांकि राहत देने वाली बात यह है कि गोरखपुर की मीडिया ने बड़ी समझदारी से ऐसी मुसीबतों का सामना किया है।

*****

गोरखपुर के साहित्य-साधना का परिवेश

प्रो. दीपक प्रकाश त्यागी

गोरखपुर की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परम्परा की समृद्ध विरासत का बड़ा आधार उसकी साहित्यिक विरासत है। यह धरती सभ्यताओं की साक्षी है तो महान साहित्यिक परम्पराओं की गवाह भी। इस दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष नाथ साहित्य के प्रणेता गुरु गोरक्षनाथ की उपस्थिति है और यहीं से गोरखपुर की कविता के परिदृश्य को देखा जा सकता है। जहाँ तक महायोगी गुरु गोरक्षनाथ के आविर्भाव का प्रश्न है वह नौवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है। उनके जन्मस्थान को लेकर अनेक मत है, भिन्न-भिन्न अन्वेषकों के निष्कर्ष अलग-अलग हैं। बहरहाल गोरखनाथ का व्यक्तित्व अलौकिक एवं युगान्तरकारी है।

गोरक्षनाथ जी द्वारा रचित पुस्तकों की संख्या 28 बतायी गयी है, किन्तु उसमें अमनस्क, अमरौधशमनम, गोरक्षपद्धित, गौरक्ष संहिता, सिद्ध सिद्धान्त पद्धति सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। इन पुस्तकों के अतिरिक्त हिन्दी में भी गोरक्षनाथ जी की पुस्तकों का सम्पादन डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने गोरखबानी नाम से किया है। पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल जी ने गुरु गोरक्षनाथ रचित चालीस पुस्तकों का उल्लेख किया है। इन पुस्तकों में ये एक दार्शनिक के रूप में एक त्तवज्ञानी योगी के रूप में दिखाई देते हैं, जिन्होंने साधना ही नहीं जीवन समाज को सांस्कृतिक स्तर पर समृद्ध किया, समाज को सहिष्णु एवं संवादधर्मी बनाया उन्होंने खुले मन से वैचारिक बहस के लिए आमंत्रित किया-

"कोई वादी कोई विवादी जोगी की वाद न करना
अड़साठे तीरथ समंद समाने यू जोगी को मरुमसि जरनो"

श्री गोरखनाथ के साहित्य में उत्तर भारत की सांस्कृतिक विविधता का चित्र मिलता है तो उसकी बोली-बानी की सुगन्ध भी। गोरखनाथ ने एक ओर जहाँ गुरु को महत्व दिया 'गुरु

आचार्य, हिन्दी विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

बिन ग्यान न पाईला रे भाईला वहीं उन्होंने मन की शुद्धता एवं दृढ़ता को केवल योगी के लिए नहीं सम्पूर्ण मनुष्य जाति के लिए आवश्यक माना, रूढ़ियों एवं आडम्बरों को निरर्थक माना-

''पंथि चलै बलि पवना तूटै नाद बिन्द अरुवाई।
घटि ही भीतरि अड़सत तीरथ कहाँ भ्रमे रे भाई।।''

विकार मुक्त जीव ही साधना में सफल हो सकता है। विशुद्ध ब्रह्मचर्यमय जीवन ही योगी की पहचान है।

समग्रतः गुरु गोरक्षनाथ ने कठोर ब्रह्मचर्य, वाक्संयम, शारीरिक शौच, मानसिक शुद्धता, ज्ञान के प्रति निष्ठा, बाह्य आचरणों के प्रति अनादर, आन्तरिक शुद्धि और मद्यमांसादि के पूर्ण बहिष्कार द्वारा उत्तर भारत के सांस्कृतिक-धार्मिक पर्यावरण को शुद्ध एवं उदात्त बनाया। नैतिक एवं सात्विक भक्ति की ज्योति प्रज्वलित करके भक्ति आन्दोलन के लिए समृद्ध पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

गोरखनाथ का यह एक बड़ा प्रदेय है कि एक ऐसे समय में जब सात्विक वृत्ति एवं अखण्ड ब्रह्मचर्य भावना निम्नतम सीमा तक पहुँच गयी थी, भारतीय धर्म साधना अत्यन्त विशृंखलित थी, तब उन्होंने निर्भय हो कर अपने ज्ञान के तप, योग से साधु-गृहस्थ दोनों की कुरीतियों की चूर-चूर करके भारतीय धर्म-साधना को नयी प्राणशक्ति से अनुप्राणित किया। उन्होंने समझौता का रास्ता नहीं अपनाया, न लोक से न वेद से, परन्तु प्रचलित सभी साधना पद्धतियों से सार्थक त्तव ग्रहण करके साधना की शुद्ध सात्विक बनाया।

आदि कालीन साहित्य परम्परा के बाद भक्तिकाल की काव्य परम्परा में संत कबीर की भूमिका का खास महत्व है। गोरखपुर की सीमा से सटा मगहर उनकी अवधूत चेतना, क्रांतिकारी सामाजिक चेतना, नैतिक एवं सात्विक मूल दृष्टि का बड़ा केन्द्र है। मुझे लगता है कि गुरु गोरक्षनाथ की आध्यात्मिक एवं यौगिक शक्ति भी एक बड़ा कारण रहा होगा। उनके मगहर आगमन का हालाँकि कवि ने इनका कारण स्वयं बताया है:-

''लोका! तुम हो मति के भोरा।।
जो कासी तन तजे कबीरा, तो रामै कौन निहोरा।
का कासी का मगहर-ऊसर, हिरदय राम जो प्यारा।।''

गहरी एवं अविचलित आस्था, विश्वास, ब्रह्मचर्य, शील, सात्विकता, सदाचार, सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह की जो परम्परा गुरु गोरक्षनाथ के यहाँ थी, उसे संत कबीरदास ने आगे बढ़ाया। अनुभव की प्रामाणिकता, लोक संवेदना के साथ जागरण की जो यात्रा गोरखपुर

में शुरु हुई, उसे भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार ने अपनी सांस्कृतिक गरिमा, आध्यात्मिक चेतना, लोकग्राही चेतना से समृद्ध किया। दार्शनिक स्तर पर उनके पद गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के उदाहरण हैं, जहाँ राधा कृष्ण लीला का वर्णन है, दैन्य भाव की साधना है तो समर्पव, अगाध विश्वास, विनय-शीलता, ईश्वर की अहेतुकी कृपा की आकांक्षा भी है:-

"अब हरि ! एक भरोसो तेरो
नहिं कुछ साधन ध्यान-ज्ञान-भगति को, नहिं विराग उर हेरो।
अब ढावत अघात नहिं कबहूँ, मन विनय को चेरो।
इंद्रिय सकल भोगरत सन्तन बस न चलत कछु मेरो।"

'भाई जी' के छन्दों में तुलसीदास जी की 'विनय पत्रिका' के भाव-लोक की उपस्थिति दिखाई देती है, किन्तु राधा-कृष्ण की भक्ति की चेतना उनके लोक आराधक भाव की प्रतीक है।

इस सन्त परम्परा के बाद आधुनिक साहित्य की यात्रा में रामाधार त्रिपाठी, शिवरत्न लाल, रामाधार सिंह, सुधाविन्दु त्रिपाठी की भूमिका रेखांकित करने योग्य है। इस दौर के रचनाकारों के यहाँ साहित्य कर्म एवं देश निर्माण में कोई द्वैत नहीं है। रामाधार त्रिपाठी 'जीवन' जी का कवि कर्म किसान जीवन का सहचर है। त्रिपाठी जी ने कविता की शुरुआत ब्रज भाषा से की थी, किन्तु उनकी आगे की कविताओं में क्रान्ति, उमंग एवं शक्ति के आह्वान का स्वर है, 'गीतवेला' में उनके प्रणय गीत हैं। पौराणिकता का सन्दर्भ, समकालीन स्वर के साथ ही साथ किसानों की मर्म भरी आवाजें हैं, प्रकृति के विह्वल चित्र हैं तो आज़ादी के लिए मुक्ति की कामना का स्वर है। शिवरत्न लाल स्वतंत्रता आन्दोलन के नायकों में थे उनके यहाँ पत्नी को समर्पित एकान्त क्षण की कविताएँ हैं, आत्मीय एवं रागात्मक चेतना है तो 'रजकण' में राष्ट्रीय चेतना का ओजस्वी स्वर है। इसी कड़ी में ठाकुर रामाधार सिंह की भूमिका का खास अर्थ है, उन्होंने अनेक विधाओं में रचना की, किन्तु उनका मुख्य स्वर राष्ट्रवादी बंगाल के अकाल पर लिखी कविता 'बंगाल का अकाल' उल्लेखनीय है:-

"यह अकाल विकराल होकर
तेरे प्रिय प्राचीरों में
ताण्डव रच इन तीरों में
मरण मेघ का नग्न महोत्सव
लाया प्रलयकारी"

इन स्वतंत्रता सेनानियों की परम्परा में सुधाविन्दु त्रिपाठी भी हैं, जिन्होंने प्रेस एवं 'भारती' नामक पत्रिका के माध्यम से साहित्यिक वातावरण निर्मित करने में अपनी भूमिका का निर्वाह

किया। उनकी प्रतिमा बहुआयामी है। नाटक, उपन्यास के साथ ही कविता उनका प्रिय क्षेत्र था। बालमीकि रामायण का काव्यानुवाद (अपूर्ण), 'रामायण माहात्म्य' उनकी चर्चित कृति है। 'गरीब' महाकाव्य में भारतीय ग्रामीण जीवन के सन्दर्भ एवं संघर्ष देखे जा सकते हैं।

इस पीढ़ी के बाद के रचनाकारों हरिशंकर श्रीवास्तव, रामदरश मिश्र, पवहारी शरण त्रिपाठी 'अनिल', गंगा प्रसाद भट्ट 'सुकांत', रामविनायक सिंह, सत्यनारायण त्रिपाठी का उल्लेख किया जा सकता है। हरिशंकर श्रीवास्तव गोरखपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में कर्म से शिक्षक थे, किन्तु उनकी प्रकृति में साहित्य था। उनके यहाँ स्वच्छन्दतावादी भावुकता, आत्माभिव्यक्ति, जीवन के प्रति रोमांटिक दृष्टि के साथ भावुक स्नेह उनकी कविता की पहचान है। राम दरश मिश्र वैसे तो जन्म से गोरखपुरिया हैं, किन्तु उनका कर्मक्षेत्र दिल्ली रहा है। उनकी कविताओं, कथाओं में गोरखपुर का लोक दिखाई देता है। वे मानते है :-

''बस गया हूँ दोस्तों दिल्ली शहर के बीच यों तो
घर मेरा अब भी वही, हाँ, वही गोरखपुर है।''

सार्थक जीवन मूल्यों की तलाश उनका कविकर्म है। पवहारी शरण त्रिपाठी 'अनिल' के यहाँ गीत हैं और सहज सरल प्रेमानुभूति, सामाजिक समरसता का स्वर एवं आजादी की आकांक्षा उनके गीतों का लोक है। रामविनायक सिंह जन्म से वैसे तो काशी वाले हैं, किन्तु 1953 में एल.टी. कॉलेज में प्राध्यापक हुए बाद में पूर्वोत्तर रेलवे में हिन्दी पर्यवेक्षक, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी रहते हुए शहर को रचनात्मक रूप से समृद्ध किया। अनेक विधाओं में सक्रिय रहे, किन्तु गीत ही उनकी पहचान थी। भाषाविद् सत्यनारायण त्रिपाठी ने भी कविताएं, दोहे और गज़लों के माध्यम से गोरखपुर की रचनात्मकता को समृद्ध किया। प्रेम, रहस्य, नीति, लोक परम्परा, अन्योक्ति उनकी रचना की पहचान है।

विद्याधर द्विवेदी 'विज्ञ' ने गोरखपुर की कविता को नया तेवर दिया। मार्क्सवाद, प्रगतिवाद आदि की वैचारिक बहसों से जुड़े रहते हुए कविता की दुनिया में भी सक्रिय रहे। उनके यहाँ प्रकृति का संगीत, जीवन की सकारात्मक ऊर्जा है तो प्रेम की खोज, ग्रामीण कछार अंचल का बीहड़ यथार्थ भी है। उनके यहाँ ऐसी अनेक कविताएँ-गीत हैं, जहाँ उन्होंने स्वयं को समिधा बना दिया है:-

''दुनिया ने केवल स्वर माँगा
मैं पागल प्राण लुटा आया''

हृदय विकास पाण्डेय, रामसेवक श्रीवास्तव, हृदय चौरसिया, गणेशदत्त दुबे, सुरेन्द्र शास्त्री,

नरसिंह श्रीवास्तव की कविताओं में सामाजिक सरोकारों से जुड़ने की आकांक्षा, मूल्यपरकता, निजी प्रतिक्रियाएं, जीवन की निरन्तरता एवं समकालीनता का द्वन्द्व आदि का बहुआयामी स्वर मिलता है, किन्तु सातवें दशक की महत्वपूर्ण कविता को 'देवेन्द्र कुमार बंगाली' ने अपने गीतों से नयी पहचान दी। उनकी पहचान सहज, सरल, सीधे-साधे व्यक्ति की थी, किन्तु उनकी रचनात्मकता में अनुचित और कुव्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह, विरोध और प्रतिकार का स्वर गूँजता है। वे 'विपक्ष की आवाज़' के कवि हैं, किन्तु गम्भीरता और जिम्मेदारी उनकी कविता का स्वभाव है। इनके यहाँ दलित विमर्श की वैचारिकी भी है, किन्तु अभिव्यक्ति में संयम और गहराई के साथ वे सभी मनुष्य के पक्ष में खड़े हैं। इसलिए किसी शिविर में कैद नहीं थे। उनकी कविता समाज की समीक्षा है, जन प्रतिबद्धता है। गहरी राजनीतिक समझ उनकी कविता का स्वभाव है। उनके यहाँ –

''आगे एक अहसास है
जिसे पैदा करने की जरूरत है
अपने ही भीतर
हो सकता है
शरीर में जहाँ
साँस की नली है
उसी के आस-पास कोई तेल का चश्मा हो।''

इसी समय हरिहर सिंह, रामसिंह 'अनिल', श्रीकृष्ण श्रीवास्तव, सुरेन्द्र काले, यशवीर सिंह, उदयभान मिश्र भी लिख रहे थे, किन्तु माधव-मधुकर ने गोरखपुर के परिवेश को सर्जनात्मक एवं सुरुचिपूर्ण, विचारोत्तेजक बनाने के लिए स्वयं को अर्पित कर दिया। उनके गीतों- नवगीतों में एक संघर्षशील मन के सहज उद्‌गार हैं, भोगे-झेले एवं देखे हुए अनुभवों की संवेदनात्मक आवाज़ है। इसी कड़ी में शेखर गोरखपुरी, एम. प्रसाद मधुप, नरसिंह बहादुर चन्द कौशिक, विध्यवासिनी प्रसाद त्रिपाठी, विश्वनाथ पाण्डेय 'बेखटक मिर्जापुरी' आदि ने भी अपने गीतों-कविताओं के माध्यम से गोरखपुर की कविता को समृद्ध क्रिया, किन्तु जगदीश श्रीवास्तव 'अतृप्त', परमानन्द श्रीवास्तव, वेदप्रकाश पाण्डेय, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की भूमिका का नया अर्थ है। यह गोरखपुर की साहित्य यात्रा का विशिष्ट दौर है। इस से गोरखपुर को नयी पहचान मिलती है। जगदीश जी के यहाँ प्रेमानुभव का नितान्त आत्मीय रंग है तथा नये ढंग की रागचेतना भी है और शिल्प भी। कलात्मक प्रौढ़ता उनकी पहचान है, रोमांस के बावजूद उनके यहाँ यथार्थ की जमीन है। निजता के साथ सामाजिक अनुभव का सौन्दर्य है। परमानन्द

श्रीवास्तव ने नये मुहावरों के साथ कविता ही नहीं आलोचना को भी नयी धार दी। वे हमारे समय से संवाद रखने वाले ऐसे विलक्षण रचनाकार थे, जो सांकेतिकता, लाक्षणिकता एवं मितकथन के सौन्दर्य में विश्वास करते हैं। कविता का नया व्याकरण रचते हैं एवं युवा पीढ़ी की रचनात्मक सम्भावनाओं को रेखांकित करते हैं। प्रगतिशील आन्दोलन का हिस्सा होते हुए भी हर प्रकार की रूढ़ियों से मुक्त साहित्य के होल टाइमर कार्यकर्ता थे। साहित्य अकादमी के सदस्य के रूप में उनकी सक्रियता से सभी परिचित थे। व्यास सम्मान आदि सम्मानों से अलंकृत थे। इस दौर के रचनाकारों में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी उल्लेखनीय हैं। व्यास सम्मान, मूर्ति देवी पुरस्कार, साहित्य अकादमी महत्तर सम्मानों से अलंकृत विश्वनाथ जी कविता, आलोचना, आत्मकथा आदि विधाओं में सक्रिय हैं। उनकी कविता में उनका देखा हुआ भारत है। मनुष्य धर्मों, आस्था, विश्वास, रीति-रिवाज, संस्कार, प्रेम-परम्परा, उत्सर्ग, शेष प्रकृति से तादात्म्य आदि उनके कविकर्म की पहचान है। आलोचना में गहन आत्ममंथन है। इसी पीढ़ी के रचनाकारों में वेदप्रकाश पाण्डेय के यहाँ जीवनानुभवों का नैतिक एवं सात्विक परिवेश है। उनके दोहों में बेचैन, किन्तु अनुभवदग्ध मन की लोकहित पुकार है। वेदप्रकाश पाण्डेय के सम्पादन में प्रकाशित 'शहरनामा' उनकी साहित्य-साधना का आयाम है। आर.डी.एन. श्रीवास्तव, अब्दुर्रहमान गेहुँआसागरी, के.बी. लाल कुँवर, संकठा प्रसाद पाण्डेय 'शुष्क', दिनेश शंकर शुक्ल, श्याम नारायण मिश्र, श्रीमती अंजू शर्मा, जय प्रकाश नायक की रचनात्मकता का भी विशिष्ट अर्थ है, किन्तु कृष्णचन्द लाल, अनन्त मिश्र, गणेश पाण्डेय, प्रमोद कुमार, देवेन्द्र आर्य, कात्यायनी, रचना श्रीवास्तव, अनीता अग्रवाल, वेदप्रकाश, रंजना जायसवाल की भूमिका ने गोरखपुर की कविता को वैचारिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध किया। कृष्णचन्द लाल के यहाँ एक बौद्धिक जिरह है, तो समय-समाज का निर्मम यथार्थ, रागसिक्त मन का छन्द, अनन्त मिश्र के यहाँ सहज, स्वाभाविक विचारपूर्ण जीवन। इनके यहाँ भाव से विचार की यात्रा है तो गणेश पाण्डेय परम्परागत प्रचलित काव्यादर्शों के अनुसरणकर्त्ता नहीं हैं और न ही कविता को स्वयं-सम्पूर्ण कला मानकर बिम्ब-प्रतीक-रूपकों में भटकने वाले कलावादी। कविता उनके यहाँ तोड़-फोड़ करने वाला कला माध्यम भी है। 'जापानी बुखार' उनकी महत्वपूर्ण कविता है। प्रतिरोध प्रमोद कुमार की कविता का लक्ष्य नहीं, बल्कि स्वभाव है, क्योंकि उनका यथार्थबोध कठिन जिन्दगी की रगड़ से पैदा होता है। देवेन्द्र आर्य ने कविताएँ भी लिखीं, गीत भी, गज़ल भी और कुछ सार्थक आलोचनाएँ भी, किन्तु उनका स्वर गीतात्मक है, गज़ल उनका स्वभाव है, किन्तु कहीं भी प्रतिरोध का स्वर मद्धिम नहीं है। उनके यहाँ कविता मुक्तिधर्मी है, इसीलिए उनके छन्द सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक प्रश्नों पर ईमानदारी से जिरह करने के लिए तैयार करते हैं। अनिता अग्रवाल के यहाँ आम जिन्दगी की इच्छा सपने एवं सरोकार हैं, तो रंजना

जायसवाल के यहाँ स्त्री प्रश्नों की विकलता पाठक को बेचैन करती है। कविता की इस प्रौढ़ पीढ़ी के साथ ही, अजय श्रीवास्तव, श्रीधर मिश्र, उमेश त्रिपाठी, सुरेश चन्द, उमेश कुमार पटेल 'श्रीश' हिमांशु सहुलियार, केशव पाठक 'सृजन', प्राचीराज, आनन्द, प्रतिभा गुप्त, चेतना पाण्डेय, विनोद कुमार यादव की रचनात्मकता स्मरणीय है।

कथा साहित्य के क्षेत्र में गोरखपुर की भूमिका को नज़रअन्दाज नहीं किया जा सकता। प्रेमचन्द का सम्बन्ध यद्यपि कि वाराणसी से रहा किन्तु गोरखपुर उन्हें अपना मानता है। गोरखपुर नगर में वे दो बार आये। पहली बार 13 साल की उम्र में 1892 में अपने पिता श्री अजायब लाल, जो डाक विभाग में मुंशी थे एवं स्थानान्तरित होकर गोरखपुर आये थे। दूसरी यात्रा में 19 अगस्त 1916 से 16 फरवरी 1921 तक गोरखपुर में रहे। इन दोनों ही यात्राओं में गोरखपुर रहते हुए न केवल वे साहित्यिक संस्कार से समृद्ध हुए, बल्कि उनके रचनात्मक निर्माण की भूमि भी गोरखपुर है। गोरखपुर प्रेमचन्द की रचना में उपस्थित है, यहीं रहते हुए 'सेवासदन' लिखा गया, भले ही कथा की दुनिया में बनारस है, किन्तु यह गोरखपुर के परिवेश में निर्मित बनारस है। प्रेमचन्द से गोरखपुर के रिश्ते के दो महत्वपूर्ण सन्दर्भ हैं- एक दशरथ प्रसाद द्विवेदी का 'स्वदेश' एवं दूसरा मन्नन द्विवेदी गजपुरी की कथा संवेदना। दरअसल मन्नन द्विवेदी ही स्वदेश एवं प्रेमचन्द के रिश्ते में सेतु की तरह हैं। मन्नन द्विवेदी ग्रामीण संवेदना के कथाकार हैं। ग्रामीण जीवन की त्रासदी की दृष्टि से रामलाल (1917) एवं स्त्री जीवन की त्रासदी की दृष्टि से कल्याणी उपन्यास का ऐतिहासिक महत्त्व है। इसमें कोई दो राय नहीं, कि मनन्न द्विवेदी गजपुरी के यहाँ जो जनपदीय चेतना, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यचेतना एवं ऐतिहासिक-राजनीतिक चेतना है, उस पर गौरवान्वित हुआ जा सकता है। गजपुरी जी की इसी दृष्टि का विकास रामदरश मिश्र, रामदेव शुक्ल के यहाँ दिखाई देता है। अध्ययनशील एवं पौराणिक चेतना से सम्पन्न चर्चित कथाकार भगवान सिंह की शिक्षा-दीक्षा का केन्द्र गोरखपुर रहा है, किन्तु गोरखपुर वालों के लिए वे बाहरी ही रहे। भगवान सिंह ने गौतम बुद्ध के जीवन पर आधारित 'महाभिषग' उपन्यास लिखा तो 'अपने अपने राम' के माध्यम से रामकथा को नये समकालीन सन्दर्भ में प्रस्तुत किया। 'उन्माद' उनका चर्चित उपन्यास रहा है। आगे के कथाकारों में हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, गिरीशचन्द श्रीवास्तव, श्रीकृष्ण श्रीवास्तव, परमानन्द श्रीवास्तव की उपस्थिति ध्यान आकृष्ट करती है, किन्तु रामदेव शुक्ल ने 'ग्राम देवता' के माध्यम से अपनी समर्थ कथा दृष्टि का अहसास कराया, उनके यहाँ शिल्पगत प्रयोग भी है। उनकी कहानियों के सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण है। परमानन्द श्रीवास्तव के लिए कहानी अनेक विद्याओं का सम्मिश्रण है- जैसे डायरी, संस्मरण, रिपोर्ताज। अखबार का कालम भी उनके यहाँ कहानी की शक्त अरिन्तयार करते दिखाई देते हैं। उनकी कहानी अछूते अनुभव की कहानी है। विश्वजीत नारायण श्रीवास्तव,

हरिहर सिंह, एम कोठियावी राही, बादशाह हुसैन रिजवी, जय नारायण राय, डॉ. लालबहादुर वर्मा की उपस्थिति कथा के लिए महत्त्वपूर्ण है। मदन मोहन इस समय के चर्चित कथाकार हैं, जिनके पास खास सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि है, किन्तु उनका उपन्यास 'यहाँ एक जंगल था' विगत दिनों विशेष रूप से चर्चित रहा है। इनके यहाँ किस्सागोई भी है और नक्सल आन्दोलन का प्रभाव भी। कृष्णचन्द लाल गीत-गज़ल भी लिखते रहे, किन्तु उनकी कहानियों का संसार समृद्ध एवं रचनात्मक है। दरकते मानवीय मूल्यों की तलाश एवं भूमण्डलीकरण से उत्पन्न स्थितियों से प्रतिरोध उनके यहाँ दिखाई देता है। इसी कड़ी में रवि राय, राकेश भारतीय, दयानन्द पाण्डेय के साथ गणेश पाण्डेय की कथा दृष्टि का विशिष्ट सन्दर्भ है। 'अथ ऊदल कथा' उपन्यास के साथ 'पीली पत्तियाँ', कहानी संग्रह में जन-जीवन का यथार्थ दिखाई देता है, किन्तु पाखण्ड विखण्डन उनका स्वभाव है। कथा भाषा की ताजगी, मितकथन का सौन्दर्य उनके कथा शिल्प की पहचान है। पशु जीवन पर केन्द्रित 'रीफ' उपन्यास विशेष रूप से चर्चित रहा है।

अन्य कहानीकारों में लाल बहादुर के यहाँ भूमण्डलीकरण का यथार्थ, पूँजीवादी विसंगतियों से उत्पन्न स्थितियाँ दिखाई देती हैं तो रंजना जायसवाल के यहाँ कविता की दुनिया के स्त्री प्रश्नों की चिन्ता भी दिखाई देती है। प्रदीप मिश्र, दिनेश श्रीनेत, राजशेखर, अमित कुमार, उन्मेष कुमार सिन्हा की कथा दृष्टि में ताजगी है।

कविता, कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में गोरखपुर की भूमिका का महत्व है, तो निबन्ध, नाटक, आलोचना, आत्मकथा, संस्मरण जैसी गद्य-विद्याओं का भी संसार समृद्ध है। पं. गोपीनाथ तिवारी, तुलसी साहित्य एवं भक्ति साहित्य के मर्मज्ञ थे, किन्तु नाट्यालोचन एवं एकांकी लेखन में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। भगवती प्रसाद सिंह गम्भीर अन्वेषक थे। उनकी साहित्य साध ना का आदि और अन्त रामकथा ही है। रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय, मनीषी की लोकयात्रा, कल्याण-पथ : निर्माता और राही उनकी अदम्य कीर्ति और लोकप्रियता के साथ ही उनकी समर्थ अनुसंधान दृष्टि का प्रमाण हैं। देवर्षि सनाद्य का महत्व, काव्य-रचना, नाट्यरचना एवं साहित्य-समीक्षा की दृष्टि से रेखांकित करने योग्य है, किनतु रामचन्द्र तिवारी की विद्वता, आलोचक दृष्टि का निर्विवाद महत्व है। उनकी आलोचनात्मक उपलब्धि गोरखपुर का गौरव है।

निबन्धकार के रूप में विद्यानिवास मिश्र लोक दृष्टि सम्पन्न ललित निबन्धों के कारण गोरखपुर की उपलब्धि हैं। उनके यहाँ भारतीयता की तलाश का विशिष्ट स्वर है, परम्परा एवं आधुनिकता का संवाद है। सही अर्थ में वे भारतीय साहित्य-संसार के गौरव और गोरखपुर की अद्‌भुत मनीषा के ऐसे जीवन्त प्रमाण हैं, जिनके सामने कोई भी सम्मान-पुरस्कार छोटा हे। अन्य निबन्धकारों, आलोचकों में सत्यनारायण त्रिपाठी, ज्वाला प्रसाद खेतान, जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव,

परमान्द श्रीवास्तव, गिरीश रस्तोगी, रामदेव शुक्ल, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, वेदप्रकाश पाण्डेय, माता प्रसाद त्रिपाठी, अनन्त मिश्र, कृष्णचन्द लाल, सदानन्द प्रसाद गुप्त, कपिलदेव, सुरेन्द्र दुबे, चित्ररंजन मिश्र, रामदरश राय, देवेन्द्र आर्य, अनिल राय की भूमिका का भी महत्व है। नाट्य लेखन, नाट्यालोचन एवं रंगकर्म के क्षेत्र में गिरीश रस्तोगी एवं उनके 'रूपान्तर, नाट्यमंच का युगान्तरकारी महत्त्व है। उन्होंने गोरखपुर को समृद्ध एवं प्रयोगधर्मी रंगमंच दिया, अभिनेताओं, कलाकारों के लिए विशिष्ट रचनात्मक मंच तैयार किया, जिसे आगे चलकर अभियान आदि संस्थाओं ने आगे बढ़ाया। उपलब्धियों की इस यात्रा में रणविजय सिंह की भी भूमिका है। उन्होंने व्यंग्य को अपनी प्रमुख अभिव्यक्ति शैली के रूप में देश, समाज, सभ्यता की समीक्षा को अपने लेखन का विषय बनाया। उनकी व्यंजना शक्ति मार्मिक है, भाषा में ताजगी है।

गोरखपुर की हवा में भोजपुरी साहित्य की खास महक है। कविवर चंचरीक, मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी' रामअधार त्रिपाठी 'जीवन', पं. रामनवल मिश्र, त्रिलोकी नाथ उपाध्याय, गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश', रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी', सूर्यदेव पाठक पराग, अब्दुर्रहमान गेहुआँसागरी, अरुण गोरखपुरी, सत्यनारायण मिश्र 'संतन', वीरेन्द्र मिश्र 'दीपक' आदि ने अपनी दृष्टि से भोजपुरी समाज, संस्कृति को अपनी रचनाधर्मिता का विषय बनया है। रामनवल मिश्र के यहाँ ठेठ गँवई जीवन शैली एवं उसकी चुनौतियों की समझ है, गिरिजेश राय भाषा के उत्थान एवं भोजपुरिया संस्कृति के महत्व की रेखांकित करते रहे हैं। उन्होंने भोजपुरी फिल्म 'गोरखनाथ तोहें खिचड़ी चढ़इबो' के लिए संवाद भी लिखा था। रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी' के यहाँ तीक्ष्ण व्यंग्य शक्ति है तो गहरा समकालीन बोध भी। उनहोंने भोजपुरी साहित्य में अनेक प्रयोग भी किया है। सूर्यदेव पाठक पराग के यहाँ गीत, गज़ल, दोहा, सवैया, हाइक्कू सभी का शिल्प है, तो अब्दुर्रहमान 'गेहुआँसागरी' के यहाँ लोक संस्कृति में गहरी आस्था है, सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन' के यहाँ सादगी, सरलता एवं निश्छलता का सौन्दर्य दिखाई देता है। अनपढ़ गोरखपुरी के यहाँ हास्य व्यंग्य का सौन्दर्य हैं। नये रचनाकारों में फूलचन्द प्रसाद गुप्त, मुकेश श्रीवास्तव, रामकृपाल गुप्त, गोरखनाथ चौबे, कृष्ण मुरारी शुक्ल की भूमिका अभी निर्माण के दौर में है।

साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी गोरखपुर की भूमिका स्मरण योग्य है। 'स्वदेश' एवं कल्याण की यह भूमि है, जिसने अपनी ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक भूमिका से गोरखपुर को गौरवान्वित किया है। 1881 के दौर में 'रियाज़ुल' अखबार का क्रांतिकारी महत्व था। किन्तु 'कल्याण' अभी भी गोरखपुर की पहचान है। यहाँ से आरोग्य, आरती, राप्ती, पूर्वोत्तर रेलवे पत्रिका, शतदल, रचना, सम्प्रति, सम्भावना, निष्कर्ष, युगदृष्टि, भंगिमा का अपने दौर में महत्त्व रहा है। इस समय निकलने वाली पत्रिकाओं में 'योगवाणी' की विशिष्ट पहचान है। धर्म,

अध्यात्म, संस्कृति, सदाचार, मूल्य चेतना के निर्माण में इस पत्रिका का महत्व निर्विवाद है। दस्तावेज, नई रचना, रेल रश्मि, सहचर, अमृत कलश, बाल स्वर, सामयिक नेहा, संस्मृति सुधा, समन्वय, त्तसम निरन्तर, अपनी जमीन, प्रस्थान, विमर्श यात्रा ने साहित्यिक चेतना के निर्माण एवं विकास में अपनी भूमिका का निर्वाह किया है।

गोरखपुर की रचनात्मक स्वीकृति का प्रमाण यहाँ के लेखकों, रचनाकरों को मिलने वाला सम्मान है। हालाँकि सम्मान, पुरस्कार को रचनात्मक उपलब्धि एवं विशिष्टता का एकमात्र प्रमाण नहीं माना जा सकता। इस वर्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को साहित्य अकादमी ने अपने महत्तर सदस्यता सम्मान से अलंकृत किया तो ज्ञानपीठ ने भी उन्हें सम्मानित किया। अभी-अभी उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने प्रो. मनोज कुमार सिंह को कला भूषण सम्मान, रण विजय सिंह को श्री नारायण चतुर्वेदी सम्मान, आद्या प्रसाद द्विवेदी को साहित्य भूषण सम्मान, डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय को मधुलिमये स्मृति सम्मान, श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी को गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान, अनिता अग्रवाल को पं. विद्यानिवास मिश्र सम्मान, संजय सिंह को अर्जना पुरस्कार, रोशन एहतेशाम को सर्जना पुरस्कार से सम्मानित किया है। गोरखपुर की साहित्य यात्रा के लिए यह बड़ी उपलब्धि है कि गोरखपुर विश्वविद्यालय में 'महायोगी श्री गोरक्षनाथ शोध पीठ' का संचालन होने जा रहा है। इस पीठ के माध्यम से नाथ-साहित्य के अध्ययन-अध्यापन, शोध, आलोचना को नयी दृष्टि मिलेगी।

समग्रतः गोरखपुर की साहित्य-साधना गोरवपूर्ण है। वह समय से संवाद भी है और सभ्यता, संस्कृति के मूल्यांकन से सम्पृक्त भी है। ऐसे में गोरखपुर की पहचान मनुष्य को रचने की कोशिश एवं मनुष्य विरोधी स्थितियों की शिनाख्त करने वाली है।

अन्त में गुरु श्री गोरक्षनाथ का यह सन्देश उल्लेखनीय है-

''राति गई अध राति गई बालक एक पुकारै।
है कोई नगर में सूरा बाला का दुःख निवारैं।।
दिसटि पड़े ते सारी कीमति कीमति सबद उचार।
नाथ कथै अगोचर वाणी ताका वार न पार।''

अगोचर वाणी के अहसास के बीच संवाद की लौ प्रज्वलित करना गोरखपुर की साहित्य-साधना का लक्ष्य है।

*****

गोरखपुर का साहित्यिक स्पन्दन : एक सिंहावलोकन

प्रो. रामदरश राय

गोरखपुर की साहित्य-धारा कभी ऊसर-बंजर नहीं दिखी। साहित्य और संवेदना के आनुषंगिक चिन्तनघटक धर्म-दर्शन-योग-अध्यात्म और ध्यानसाधना के क्षेत्र में एक साथ जितनी महत् विभूतियाँ गोरखपुर और उसके पार्श्ववर्त्ती भू-भाग में दिखलायी पड़ती हैं उतनी अन्यत्र दुर्लभ-सी हैं। तीर्थंकर महावीर, महात्मा गौतम बुद्ध, महायोगी गुरु गोरक्षनाथ, सन्त कबीर, सूफी फकीर रोशन अली शाह, सिद्ध सन्त खाकी बाबा, भाई जी हनुमानप्रसाद पोद्दार, राधा बाबा जैसी मनीषी शख्सियत से प्रेरणा-ऊर्जा और उत्साह पाकर आधुनिकताबोध के आँगन में बैठे मिले फ़िराक़ गोरखपुरी, मजनू गोरखपुरी, मन्नन द्विवेदी, रामअधार त्रिपाठी 'जीवन', विद्याधर द्विवेदी 'विज्ञ', देवेन्द्रकुमार बंगाली आदि कवि-साहित्यकार। विश्वविद्यालयीय कवि-कथाकार-समालोचक-नाट्यविद्-भाषाविद् तथा प्रायः सभी विधाओं के वैदुष्य प्रतिमान के रूप में उभरे और जाने गये- प्रो. भगवतीप्रसाद सिंह, प्रो. रामचन्द्र तिवारी, प्रो. सत्यनारायण त्रिपाठी, प्रो. परमानन्द श्रीवास्तव, प्रो. जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव, प्रो. गिरीश रस्तोगी, प्रो. रामदेव शुक्ल, प्रो. विश्वनाथप्रसाद तिवारी, प्रो. कृष्णचन्द्र लाल और प्रो. अनन्त मिश्र जैसे लेखक-चिन्तक। महन्त अवेद्यनाथ, प्रो. विद्यानिवास मिश्र, अज्ञेय, मुंशी प्रेमचन्द, दशरथप्रसाद द्विवेदी, रियाज खैराबादी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बी.एस. नायपाल, मोती बी.ए., धरीक्षण मिश्र, रामानन्द राय 'गँवार', पं. रामनवल मिश्र जैसे संवेदना-सर्जक गोरखपुर की साहित्यिक शान रहे हैं। दिल्ली जा बसे प्रो. रामदरश मिश्र को गोरखपुर का ही मान लिया जाय तो यहाँ का पाट और चौड़ा दिखता है।

गोरखपुर का साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास प्रदीर्घ है, जिसे कुछ शब्दों और

अनद्यतन आचार्य, हिन्दी विभाग; संस्थापक निदेशक, पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, (उ.प्र.)-273009, चलभाष : 9839809558

सीमाबद्ध पृष्ठों में समेट पाना असम्भव है। महात्मा बुद्ध से लेकर आज तक की साहित्यिक धड़कन को पकड़ना, सृजन की आहट को सूँघना और मौन तथा सन्नाटे की इबारत को पढ़ना आकाश की लम्बाई-चौड़ाई नापना है। उल्लिखित नामावली तो मील का पत्थर मात्र है। जमीन में धँसे-गड़े तमाम साहित्यिक पड़ाव के पत्थर नये इतिहास-लेखन की माँग करते हैं। भूले-बिसरे, छूटे-अदेखे गाँव-कस्बे और गोरक्ष-अंचल के सहस्राधिक साहित्यकार अभिशप्त अहल्या की तरह जहाँ-तहाँ पड़े हैं, जिन्हें अपने उद्धार की कामना-प्रतीक्षा है, किसी तारक-उद्धारक-अन्वेषी श्रीराम की।

गत सदी की अन्तिम सन्ध्या। विगत वर्ष-पर्यन्त गोरखपुर के साहित्यिक स्पन्दन का आँखों देखा रेखांकन एक असमंजस-भरा कौतुक लग रहा है। तीन दर्जन से अधिक लेखक-रचनाकार और पाँच दर्जन से अधिक कृतियाँ किसी रंजक-रोचक-रंगीन चलचित्र की तरह आँखों के अतीत को बारम्बार जगा रही हैं। देह में विद्यमान साहित्य के परदादा साहित्यकारों ने अँगड़ाई अधिक ली है, भाषणों में शब्दयात्रा अधिक की है, मगर करवट कम बदला है। बहुत कुछ पाकर मानो वे आप्तकाम हो चुके हैं। गोरखपुर की गत सदी उनकी इस बेरुखी से नाशाद है। पचहत्तर-पार पर तुलसी का मानस आया। जीवन-मानवजीवन का संहिता बनकर। दरअसल, साहित्य का 'सर्वोत्तम' और 'सुन्दरम्' चौथेपन में छनकर छलकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम भी चौथेपन के सृजन थे। आयुर्वेद के मुताबिक आयुमध्य की उपसृष्टि वीर्यवान और प्रभविष्णु होती है। ऋद्ध अनुभव को सहेजने और पुनर्सृजन में उतारने की उत्कट अभिलाषा में व्रतबद्ध भी। इसीलिए इस आयु का सृजन ठोस-ठसक भरा और सम्प्रेरक होता है। किशोर और कुमारकाल की सृजनेच्छा जिज्ञासु-औत्सुक्यभरी-चंचल तथा विनोद-व्याकुल होती है। इस मनोविज्ञान और आयुशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में अनुशीलन करें तो साहित्य-सृजन का गत वर्ष तीनों शृंखलाओं में बैठा दिखेगा। पचहत्तर-पार ने नाम कमाया, यश बटोरा, सम्मान अर्जित किया, मगर साहित्येतिहास में दर्ज होने लायक लेखन कम दिया। मध्यआयु यानी पचास-पार की जमात ने साहित्य-सृजन में अधिक पराक्रम दिखलाया है। कई-एक ने रचनाओं को स्वयं छपवाकर गोरखपुर के साहित्यिक स्पन्दन को जीवन दिया है। पच्चीस और पचास की वय में खड़े युवा रचनाकारों ने तो कमाल किया है। रचे-छपे को गोरखपुर के साहित्यिक मंचों से सुनाया और तालियाँ-वाहवाही बटोरीं।

वर्ष उन्नीस के अन्त में बैठा हूँ, कागज-कलम के साथ। इस साक्ष्य को सहेजने के लिए कि विगत वर्षभर में रचनाकारों ने गोरखपुर को क्या सौंपा है और गोरखपुर ने भी सृजनशील

साधकों को कहाँ से कहाँ पहुँचाया।

सर्वेक्षण और सिंहावलोकन से तथ्य निकलकर आया है कि विगत तमाम वर्षों की तरह गत वर्ष भी काव्यसृजन में समृद्ध रहा है। गद्य-लेखन अल्प नहीं है, मगर यदा-कदा। लगता है कि आचार्य दण्डी प्रणीत **'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** का कसौटी-पाठ साहित्यकारों को भीत देता है, गद्य-अखाड़े में उतरने से। दबे पाँव, सहमे हुए कुछ लेखक उतरते भी हैं तो बेधड़क-निधड़क नहीं मिलते। निबन्ध-लेखन में मनोद्वन्द्व हो सकता है, कथालेखन में कैसा अन्तर्द्वन्द्व? मगर, मिला कि बीते वर्ष गोरखपुर की कथासृष्टि भी निर्बल और क्षीण दिखी। दो-चार कहानी-संग्रह तो आये, मगर यशवाहक युगविधा 'उपन्यास' का शिलान्यास तक किसी सृजेता ने नहीं किया। गद्य के समकालीन इस राजमार्ग के बगल में आत्मकथा, रेखाचित्र और यात्रा-संस्मरण का लघुपथ बनाकर जरूर प्रशंस्य प्रयास हुए हैं जिनकी चर्चा आगे के परिच्छेदों में की गयी है। हाँ, कुछ पत्रिकाओं ने गद्य की गरिमा बचा रखी है जिसमें प्रशस्त विचारगद्य छपते हैं। नाट्य-लेखन भी क्षीण और प्रसुप्त रहा है।

सर्वप्रथम गोरखपुर के वर्ष भर के काव्य-स्वयंवर का आँखों देखा चित्ररंग उभारने का प्रयास किया गया है। हिन्दी-कविता, भोजपुरी-कविता, दोहा, गीत, ग़ज़ल और काव्य-सर्जना की नयी रेखाओं से साक्षात्कार लिया गया है, जो 2019 में प्रकाशित हैं। 2018 की सान्ध्यबेला के उन काव्यग्रन्थों का भी जिक्र किया जा रहा है जो किसी उचित फोरम पर अनुत्कीर्ण अथवा अनदेखे रह गये हैं।

श्री नरसिंहबहादुर चन्द के तीन काव्यग्रन्थ लोकार्पित हुए- 'हरसिंगार' और 'वीरभोग्या वसुन्धरा' तथा 'संगम-स्वर'। आरम्भिक दो नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली तथा तीसरा प्रांजल पब्लिकेशन्स, लखनऊ से। आयुवृद्ध और अनुभवऋद्ध कवि चन्द का यह काव्यावदान गोरखपुर की साहित्यिक शान में अभिवृद्धि करता है। 'संगम' नामक साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्था के स्वामी कवि नरसिंहबहादुर एक स्वप्नदर्शी और समयपारखी साहित्यकार हैं। 'सरयू के स्वर' अभिसंज्ञा में सरयू-किनारे के सौ कवियों का वृहद् साझा काव्यग्रन्थ 2020 में आ रहा है।

श्री आर.डी.एन. श्रीवास्तव गोरखपुर के साहित्यिक वायुमण्डल को समुचित आक्सीजन देते रहते हैं। गीत ग़ज़ल, दोहा और व्यंग्य काव्यशैली के उस्ताद कवि के रूप में प्रतिष्ठित आ.डी.एन. साहब का नया ग़ज़ल-संग्रह 2019 को समृद्ध कर गया। 'साथ गुनगुनाएँगे' नामक उनका ग़ज़लकाव्य नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली की अमूल्य निधि बना। गोरखपुर में इस कृति के लोकार्पण का स्वयं साक्षी था। कवि और कृति दोनों की सभा ने प्रशंसा की।

दीनानाथ शुक्ल 'अमिताभ' का हिन्दी काव्यग्रन्थ 'धुधलका' गोरखपुर के काव्य-सौन्दर्य का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव बना। उ.प्र. हिन्दी संस्थान से पुरस्कृत यह नयी कृति भारतीय दर्शन और मानव के आत्मद्वन्द्व का मनोवैज्ञानिक आख्यान उपस्थित करती है। मौलिकत: गीतकार कवि 'अभिताभ' की यह कृति नयी कविता के मुक्त छन्द में अनोखी दखल है।

युवा कवि **अजय 'अनजान'** ने 'पहला कदम' के साथ गोरखपुर की काव्यधारा पर अपना पहला कदम रखा है। अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से प्रकाशित यह किताब बार-बार पढ़ी गयी और हर बार नया अर्थ सौंपती गयी। गोरखपुर के साहित्यिक मंचों से मुक्त काव्यपाठ करने वाले कवि 'अनजान' अब किसी के लिए अनजान नहीं हैं।

जवान **कवि बृजेश राय** की 'गुरुदक्षिणा' गोरखपुर को भा गयी। नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित यह काव्यकृति एक युवा कविमन की आत्मतड़प का इजहार लेकर खड़ी होती है जो समय और समाज के विद्रूप से आहत है। पता चला है कि गीता के गूढ़ युद्धदर्शन का हिन्दी काव्यानुवाद लेकर कवि बृजेश 2020 में भी दिखलायी पड़ेंगे।

आयु के मध्याह्न में खड़े **सत्यनारायण पाण्डेय** ने अपना कवि-उपनाम 'नारायण' रखते हुए प्रथम काव्यग्रन्थ 'कभी-कभी' गोरखपुर को सौंपा है। अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से छपकर आ चुकी यह काव्यकिताब प्रकृति और ग्रामीण पर्यावरण का अनावरण करती है। सुना है वर्ष बीस में उनका 'मृगशावक' कुलाचें भरने के लिए अँगड़ाई ले रहा है। 'नारायण' एक उत्साही और काव्यमानस के निश्छल कवि हैं।

अनुभवी ग़ज़लगो **वफा गोरखपुरी** का ग़ज़ल-संग्रह 'वफा किया है का करेंगे' 2019 में छपकर गोरखपुर में छा गया। दर्जनभर ग़ज़ल-संग्रहों के प्रणेता का साहब का गोरखपुर के लिए एक जान-पहिचाना नाम है। दर्द और नाजुकखयाली के लिए वफा की ग़ज़लें बेमिसाल हैं।

बागेश्वरी मिश्र 'बागीश' नगर के प्रबुद्ध कवियों में शुमार हैं। प्राय: सभी संस्थाओं के साहित्यिक अनुष्ठानों में अपनी काव्यहवि लेकर मौजूद मिलते हैं। विगत वर्ष रश्मि प्रकाशन, लखनऊ से कवि बागीश की काव्यकृति आयी- 'बहका हूँ बार-बार'। यह कृति अधिक पढ़ी और सुनी गयी। इस किताब से गोरखपुर का काव्यपाट चौड़ा हुआ है।

रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी' का भोजपुरी काव्यसंग्रह 'अबहिन कुछ बाकी बा' राजसूर्य प्रकाशन, नयी दिल्ली से छपकर आया तो लखनऊ से गोरखपुर तक वर्ष-पर्यन्त चर्चा-विमर्श

के केन्द्र में रहा। साधारण बात को असाधारण कला में और असाधारण सन्दर्भ को साधारण लोकव्यंजना में कह लेने की अनोखी कला का कोई स्वामी है तो वह 'जुगानी' भाई हैं। आकाज़वाणी से लेकर गोरखपुर के सभी साहित्य-कला मंचों से उन्हें सुनना सभी को सुखद प्रतीत होता है। व्यंग्य की बारीक उस्तादी उनकी निजी हैसियत है।

कवयित्री **नीलम वर्मा** का काव्यसंग्रह 'अरुणिमा' दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में दिल्ली से प्रकाशित होकर गोरखपुर पहुँचा। अखबार में लोकार्पण की खबर से मालूम हुआ कि स्त्री-मन के अन्तर्द्वन्द्व और समय की सामाजिक मनोरेखा को सलीके से काव्यबद्ध करने वाला यह एक समर्थ काव्यबन्ध है। समय के शिला पर अंकित अभिनव काव्यप्रतिभा है।

'साहित्य की तलाश' जैसा ग़ज़ल-संग्रह लेकर **कुमार शैल** और **प्रेमनाथ मिश्र** ने पिछले वर्ष मजबूत दस्तक दी है। इस साझा संकलन ने तमाम युवा ग़ज़लकारों को स्थान-अवसर देकर उनका उत्साहवर्द्धन किया है। ग़ज़लें अपने समय से संवाद करती हैं।

इन काव्यग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ और रचनाएँ सुधा संस्मृति संस्थान, गोरखपुर से प्रकाशित होकर गोरखपुर की काव्यश्री में जुड़ी हैं। उल्लेखनीय काव्यकृतियाँ हैं- 'तिनके की दाढ़ी' **(अंजू शर्मा)**, 'पीयूष प्रवाह' **(श्यामबिहारी मिश्र)**, 'छूट गया हूँ मैं **(श्रीधर मिश्र**) और 'मकरन्द' **(चन्द्रेश्वर परवाना**)।

अब कथा और कथेतर गद्य से एक संक्षिप्त साक्षात्कार।

छन्देतर साहित्य-शैली को गद्य मानकर और छन्दबद्ध काव्यसृजन को पद्य मानकर साहित्य-सृष्टि की शास्त्ररूढ़ि आज टूट चुकी है। गढ़ी हुई प्राचीन शास्त्रीय प्रतिमा अब चलन-प्रचलन से बहुत दूर पड़ गयी है। आज सभी साहित्यकार स्वाधीन-स्वतन्त्र हैं। गद्य को पद्य बनाकर और पद्य को गद्य बनाकर कह-लिख लेने की आत्ममुक्ति मिल चुकी है। जैसे स्त्री-पुरुष के जैविक अनुसन्धान से ही दोनों में प्रभेद सम्भव है और किसी बाह्य स्वभाव, हाव-भाव और बनावट में नहीं, वैसे ही गद्य-पद्य की आन्तरिक बुनावट को देखने-पढ़ने से भले ही इस प्रतीति को बल मिले कि यह गद्यभाषा है और यह पद्यभाषा। मगर बाह्य-रचना-विधान देखकर बहुत असम्भव है, यह बतला पाना कि यह गद्य है और वह पद्य है। हाँ पढ़ने के प्रवाह से गद्य-पद्य की शब्दमूर्ति का पृथक्-पृथक् पुरुषार्थबोध प्रतीयमान होता है।

तथापि, गोरखपुर में लिखित-प्रकाशित-विकसित गद्यमूर्ति से साक्षात्कार लिया जा रहा है जो सिर्फ एक वर्ष की लेखनी में उतरे हैं। अठारह की सरहद पर औत्सुक्यमुद्रा में खड़े किंचित्

गद्यग्रन्थ भी समाहित कर लिए गये हैं क्योंकि वे छपे अठारह में, मगर शब्दगंगा में उतरकर नहाने का अवसर पा सके उन्नीस में।

सबसे पहले लेखक **योगी आदित्यनाथ** की बात करते हैं। महन्तश्री संन्यासी-योगी-समाजसेवी-राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ आर्षवक्ता और आशुलेखक हैं। उनका गद्यसाहित्य अधिकतः नाथपन्थ, योगदर्शन और नाथपन्थी मनीषी-योगर्षियों पर केन्द्रित है। विगत वर्षों में उनके पाँच गद्यग्रन्थ मन्दिर की योजना में प्रकाशित होकर पाठक-समुदाय के सम्मुख आये। एक-'राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ', दो-'युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ', तीन-'योगिराज महन्त गम्भीरनाथ', चार- 'महायोगी गुरु गोरखनाथ' और पाँच-'श्री गोरखनाथ मन्दिर एवं गोरखपुर का इतिहास'। तमाम लेखकों के ग्रन्थों में लिखी गयी उनकी भूमिकाएँ प्रशस्त गद्य से साक्षात्कार देती हैं। योगी जी का साहित्य पढ़ने के बाद प्रतीत होता है कि वे प्रांजल गद्यभाषा और अभिव्यंजनाप्रधान गद्यशैली के समर्थ लेखक हैं।

डॉ. प्रदीप राव मूलतः प्राच्य इतिहास और संस्कृति के अध्येता हैं। परन्तु महायोगी गोरक्षनाथ शोधपीठ से प्रकाशित दो गद्यग्रन्थ उनकी साहित्य-मेधा से साक्षात्कार देते हैं-एक, 'नाथपन्थ' और दो, 'नाथपन्थ का समाजदर्शन'। पढ़ने और अनुशीलन करने के उपरान्त प्रतीत होता है कि डॉ. राव की हिन्दीभाषा विशेषतः हिन्दी गद्यभाषा पर अच्छी पकड़ है। इतिहास-संस्कृति, धर्म-दर्शन और समाज-राजनीति को व्यंजक गद्यभाषा में रख लेने की शैली-कला है।

डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त शिक्षक तो हिन्दी के हैं, मगर अधिकतः उनका लेखन भोजपुरी में है। कविता-निबन्ध-कहानी-आकाशवाणी और दूरदर्शन से जुड़े गुप्त जी की सर्वत्र अच्छी पकड़ भोजपुरी की भाषिक अभिव्यंजना में है। भोजपुरी और खड़ीबोली में समान गति-मति-यात्रा करने वाले फूलचन्द जी ठीक से पहिचाने जाते हैं भोजपुरी के साहित्य-मंचों पर और भोजपुरी-भाषा में लिखे ग्रन्थों में। भोजपुरी में गद्य-पद्य दोनों की सर्जनात्मक भाषा में वे पटु-पण्डित हैं। गत वर्ष में उनकी तीन गद्य-कृतियाँ गोरखपुर के साहित्य-जगत् से जुड़ीं। दो भोजपुरी में और एक हिन्दी में। एक-'आखिन देखी' (राजसूर्य प्रकाशन, नयी दिल्ली) दो-'महायोगी गोरखनाथ' (प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली) और तीन-'गोरखबानी अउर भोजपुरी' (महायोगी गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ)। तीनों गद्यग्रन्थ पठनीय, प्रेरक और संग्रहणीय हैं।

एक दर्जन हिन्दी-भोजपुरी के ग्रन्थ-प्रणेता **इं. राजेश्वर सिंह** गोरखपुर के साहित्यकार-मण्डल में किसी के लिए अपरिचित नहीं हैं। विचार-भाव और कल्पना की समेकित उपसृष्टि में श्री सिंह पटु-निष्णात हैं। रुचि गद्य-पद्य दोनों में है, परन्तु निखरा हुआ उनका भाषा-साहित्य गद्य

में दिखलायी देता है। पेशे से इंजीनियर और विज्ञान संवर्ग का अध्येता होने के बावजूद उनकी साहित्य-पकड़ पैनी है, व्यंजक और अर्थवाही है। विगत वर्ष में लोकायतन प्रकाशन, वाराणसी से छपकर उनके दो भोजपुरी गद्यग्रन्थ उदित हुए। दोनों ग्रन्थों ने गोरखपुर की भोजपुरी-भूमि को उर्वर बनाया है। एक है-'भोजपुरी भागवत कथासार' और दूसरा है-'रामपियारा साधू-सन्त'। श्रीमद्भागवतपुराण के सभी स्कन्धों को भोजपुरी में कथाबद्ध करना और इक्यावन रामभक्त सन्तों की भक्तिकथा का भोजपुरी में पुनराख्यान चुनौतीभरा दायित्व था, जिसे इं. राजेश्वर सिंह ने मनोयोगपूर्वक सम्पन्न किया है।

प्रो. रामदरश राय भाषाविज्ञान, लोकसाहित्य और हिन्दी काव्यभाषा के अध्येता आचार्य हैं। तीन दर्जन भाषाग्रन्थ-समीक्षाग्रन्थ-गद्यग्रन्थों में विस्तीर्ण भूमिका लिखने वाले डॉ. राय गोरखपुर के साहित्यिक वायुमण्डल को पुनर्नवा बनाने में सक्रिय योगदान कर रहे हैं। साहित्यिक संगोष्ठियों और मंचीय मांगलिक अनुष्ठानों में सहृदय सहभाग उनकी आकाँक्षा रहती है। कवि और कविता की खोज करने वाले प्रो. राय स्वयं काव्यसृजन नहीं करते, मगर अपनी समीक्षा और समालोचनात्मक भूमिका देकर उनकी पुनर्रचना जरूर करते हैं। गत वर्षों में 'शब्दपुरुष', 'काव्यपुरुष', और 'भोजपुरीपुरुष' जैसे मानग्रन्थों को तैयार कर आलोचनात्मक गद्यभाषा को प्रगल्भ बनाने में उन्होंने योग्यतम भूमिका निभायी है। 'पुण्डरीक-प्रहरी' जैसा व्यक्तित्त्व-विश्लेषी रेखाचित्रात्मक गद्यग्रन्थ लिखकर डॉ. राय ने राजभवन, उ.प्र. से भाषा-प्रशस्तिपत्र हासिल किया है। गोरखपुर के साहित्यजगत् का मान बढ़ा है।

कवि **ब्रजभूषण राय 'बृज'** का सद्यः प्रकाशित ललित निबन्धग्रन्थ आया है-'गोरी सोवे सेज पर'। अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर की यह गद्यनिधि अब गोरखपुर की साहित्यिक शान है। गद्य की एक अलसायी निबन्ध-विधा को जीवन्त बनाकर राय साहब ने लोककीर्ति पाने का हक हासिल किया है। चौंतीस निबन्धों की यह ललित गद्यमाला पठनीय-मननीय है। एक दर्जन काव्यग्रन्थों के प्रणेता कवि 'बृज' का गद्य-प्रांगण में उतरना गोरखपुर के लिए शुभकारक और शोभाकारक है।

डॉ. अजय 'अनजान' प्रकृत्या कवि हैं। काव्यसंग्रह-'पहला कदम' आ चुका है। परन्तु स्वाद और स्वभाव बदलते हुए उन्होंने 2019 में 'शब्दप्रहरी कुबेरनाथ राय' छपवा डाला। अभिधा प्रकाशन की आलोचनात्मक यह शोधकृति प्रांजल-प्रगल्भ गद्यभाषा की सौरभ-सुषमा से अभिमण्डित है। गोरखपुर का गद्य-क्षितिज इस ग्रन्थ को पाकर चमकीला बना है।

युवा साहित्यकार **डॉ. आमोदकुमार राय** ने आधा दर्जन अंग्रेजी-ग्रन्थ लिखने के बाद

हिन्दी में कुछ कर गुजरने का स्वप्न जगाया है। अंग्रेजी का महाविद्यालयीय प्राध्यापक होते हुए हिन्दी भाषा-साहित्य में दिलचस्पी दिखाना हिन्दी वालों के लिए सुखदायी है। इटली देश के आमन्त्रण पर डॉ. आमोद ने अकादमिक विदेश-यात्रा की। भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' लोकनाटक का विश्वनाट्य वैशिष्ट्य विषय पर अंग्रेजी में व्याख्यान दिया। लौटकर स्वदेश आने पर एक यात्रा-संस्मरण ग्रन्थ हिन्दी में लिख डाला-'राप्ती से रोम'। अभिधा प्रकाशन ने रुचि के साथ 2019 में इसे छापा और प्रकाशित किया। भारत और रोम के सांस्कृतिक उत्कर्ष को रेखांकित करने वाली यह एक बेजोड़ यात्रा-गद्यकृति है। वर्णन-शैली आकर्षक है। अस्तु, पठनीय है। हिन्दी के यात्रा-साहित्येतिहास में दर्ज होने लायक एक प्रामाणिक भाषाकृति।

डॉ. आद्याप्रसाद द्विवेदी का भोजपुरी कहानी-संग्रह 'नेह कऽ नाता' नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली और **डॉ. प्रेमशीला शुक्ल** का कहानी-संग्रह भोजपुरी में ही अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से छपकर आया। भोजपुरी भाषा-प्रेमियों को सुख मिला और गोरखपुर की भोजपुरी सृजनेच्छा को सम्प्रेरक शक्ति-सम्बल भी। भोजपुरी की कथाभूमि दोनों कहानी-ग्रन्थों से सम्पन्नतर हुई है। भोजपुरी की गद्य-मेखला प्रदीर्घ और रंजक बनी है।

डॉ. संजयन त्रिपाठी का आलोचनात्मक गवेषणाग्रन्थ 'भक्तिकाव्य में मिथकतत्त्व' तथा **डॉ. सन्ध्या राय** का आनुसन्धानिक प्रबन्ध 'हिन्दी नवजागरण और प्रेमचन्द का गद्यसाहित्य' उन्नीस में प्रकाशित होकर अधिक पढ़ा गया। प्रशंसित हुआ। दोनों गद्यग्रन्थ अभिधा प्रकाशन के सौजन्य से सामने आये। इसी शृंखला में **डॉ. शशिबाला मौर्य** का आलोचनात्मक कृतित्त्व भी आया। 'छायावादोत्तर हिन्दी कविता में प्रगतिशीलता' संज्ञक यह ग्रन्थ तथा उल्लिखित दोनों ग्रन्थ बीते साल की गद्य-विरासत हैं।

रामनरेश शर्मा 'शिक्षक' का 'ढेबरी' नामक भोजपुरी लघुकथा-संग्रह नमन प्रकाशन, दिल्ली और सुधा संस्मृति संस्थान के सौजन्य से साक्षीकृत हुआ। वर्ष उन्नीस के गोरखपुर को इस ग्रन्थ से साहित्यिक ऊर्जा हासिल हुई।

युवतर लेखक **डॉ. अंगदकुमार सिंह** ने गत वर्ष 'गोरखपुर का मीडिया-परिदृश्य' शीर्षक मीडिया-ग्रन्थ तैयार कर मीडिया की विचार-यात्रा और भाषिक प्रस्तुति पर गहन विमर्श किया है। वर्ल्ड पब्लिकेशन, लखनऊ से छपी यह किताब गोरखपुर के प्रिण्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर चटक रोशनी छोड़ती है। साथ ही मीडिया के समकालीन स्वभाव पर संवाद-प्रतिप्रश्न भी।

गोरखपुर के वरिष्ठ पत्रकार **संजय सिंह** की कृति 'जनतन्त्र की माया' ने अपनी स्वतन्त्र पहिचान बनायी। उ.प्र. हिन्दी संस्थान से अभी-अभी पुरस्कृत-प्रशंसित हुई है। समाज की

कुरीतियों और जनतन्त्र के विद्रूप सिस्टम पर कटाक्ष करने वाली यह एक अनोखी पुस्तिका है जो संजय सिंह के कॉलम-लेखन 'गड़बड़झाला' का संकलित किताबी रूप है। गोरखपुर का पत्रकारिता गद्य-जगत् इस पुस्तक से समृद्ध हुआ है।

डॉ. रामाज्ञा सिंह की अठारह-उन्नीस में दो पुस्तकें आयीं। अभिधा प्रकाशन, से छपकर आने वाले दोनों ग्रन्थ हैं-'हिन्दी का आत्मकथा साहित्य' और 'महादेवी वर्मा के रेखाचित्र'। दोनों ही गवेषण-ग्रन्थ हैं, मगर हिन्दी के आज के आत्मकथा साहित्य और रेखाचित्र विधा को समृद्ध करते हैं।

'भारतीय फलित ज्योतिष के सिद्धान्त' (**शरदचन्द मिश्र**), 'रामविलास शर्मा की कविताएँ (**अभिव्यंजना श्रीवास्तव**), 'मेरे शहर में' (**आई.एच. सिद्दिकी**), 'श्रीरामकथा मन्दाकिनी' (**डॉ. जयनारायण राय**), 'साक्षी है समुद्र' (**धर्मेन्द्र त्रिपाठी**) और 'भक्ति-भय-भूख की अन्तर्यात्रा' (**डॉ. नित्यानन्द श्रीवास्तव**) जैसे गद्य-ग्रन्थ, सुधा संस्मृति संस्थान, गोरखपुर से प्रकाशित होकर गोरखपुर के साहित्यिक मान बने। ये कृतियाँ सर्वत्र नहीं पहुँची, समीक्षकों के हाथ नहीं लगीं। मगर, शीर्षक साबित करते हैं कि गोरखपुर का गद्य-फलक साहित्य की स्वप्निल सम्भावना का स्वागत करता है।

'सुधाबिन्दु संस्थान' और 'सुधा संस्मृति संस्थान' के संचालक-स्वामी **पं. रवीन्द्रमोहन त्रिपाठी** के दो प्रशस्त गद्यग्रन्थ विगत वर्ष में गोरखपुर को मिले। 'तर्पण' संज्ञक संस्मरण ग्रन्थ और 'बाईस्कोप' अभिसंज्ञक आत्मकथा-ग्रन्थ। बड़े सलीके से साहित्यिक भाषा और व्यंजक शैली में गोरखपुर के पाठकों को मिली दोनों गद्य-कृतियाँ लेखक समुदाय को प्रोत्साहन देती हैं। उल्लेखनीय है कि रवीन्द्रमोहन त्रिपाठी एक उत्साही और शालीन लेखक-प्रकाशक और साहित्य-प्रसारक हैं।

गोरखपुर के साहित्यिक स्पन्दन को राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय फलक पर दृश्यमान करने का यशस्वी दायित्त्व निभाया है यहाँ की पत्रकारिता ने। गद्य-पद्य-रंगकर्म सभी को समेटकर छापने, प्रकाशित करने और संकलित सामग्री को दूरदेश तक प्रसारित करने में गोरखपुर का पत्र-साहित्य कभी बूढ़ा नहीं हुआ। गीताप्रेस के 'कल्याण' से लेकर आचार्य विश्वनाथप्रसाद तिवारी के 'दस्तावेज' और गोरक्षनाथ मन्दिर के 'योगवाणी' तक की सत्त शब्दयात्रा पोख्ता प्रमाण है।

वैसे तो 'कल्याण कल्पतरु', 'कल्याण', 'आरोग्य', 'आरती', 'राप्ती', ' पूर्वोत्तर रेलवे पत्रिका', 'शतदल', 'सम्प्रति', 'सम्भावना', 'निष्कर्ष', 'योगवाणी', 'दस्तावेज', 'नयी रचना', 'रेल रश्मि', 'सहचर', 'वसुन्धरा', ' अमृत कलश', 'बालस्वर', 'सामयिक नेहा', 'संस्मृति

सुधा', 'अपनी जमीन', 'समन्वय', 'प्रस्थान', 'शोधसंहिता', 'विमर्श', 'मानविकी', 'लोकसत्य', 'उद्भव', 'यात्रा', 'समाधान संवाद', और 'अभिलेख' जैसी लगभग तीन दर्जन से अधिक पत्रिकाएँ गोरखपुर का साहित्यिक पड़ाव बनाती हैं। मगर, 'कल्याण', 'योगवाणी', 'दस्तावेज', 'विमर्श', 'सामयिक नेहा' और 'संस्मृति सुधा' को छोड़कर नियमित किसी के अंक पढ़ने को नहीं मिलते। इन पत्रिकाओं ने समर्थ सम्पादकीय, लेख-प्रलेख और कविता छापकर गद्यभाषा को नयी शोभा-आभा दी है। सभी पत्रिकाओं को सत्त-शाश्वत-सक्रिय बने रहना चाहिए।

रंगकर्म की दृष्टि से गोरखपुर चहल-पहल भरा रहा है। गोरखपुर के संवेदनाशील मानस कों यहाँ के रंगमंच और नाट्यकर्म ने रोमांचित-आह्लादित किया है। 'आकाशवाणी' और 'दूरदर्शन' के अलावे 'मित्रमण्डली', 'दर्पण', 'इप्टा', 'मंजुश्री', 'रूपान्तर', 'युवासंगम', 'रंगाश्रम', 'लहर', 'अंगार', 'लोकरंग', 'रंगमण्डल', 'नटशिवा', 'दिशा', 'आइसा', 'विकल्प', 'नारीसभा' जैसी नाट्य-संस्थाओं के अतिरिक्त रेलवे ने 'जूनियर इंस्टीट्यूट' और 'सीनियर इंस्टीट्यूट' की स्थापना की। मगर, पत्र-पत्रिकाओं की तरह ही 'रूपान्तर' और 'अभियान' को छोड़कर प्रायः सभी अलसाये मिलते हैं। 'रूपान्तर' भी नाट्यविदुषी गिरीश रस्तोगी तक अधिक सक्रिय रहा, अब गतिमन्द है। हाँ श्रीनारायण पाण्डेय के निर्देशन में 'अभियान' का रंगाभियान सत्त-अविच्छिन्न बना हुआ है। निर्देशन-मंचन-प्रशिक्षण सब एक साथ। 2002 में स्थापित 'अभियान थियेटर ग्रुप' आज जिस मुकाम पर खड़ा है, वह गोरखपुर की शब्दकला और अभिनय-कला के लिए एक प्रतिमान है। यदि सिर्फ 2019 की बात करें तो 12 जनवरी 2019 को 'गोरखपुर महोत्सव' में 'अभियान थियेटर ग्रुप' ने अध्यक्ष श्रीनारायण पाण्डेय द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक 'विवेकानन्द कालिंग : शिकागो लाइव' का मंचन किया गया। इसी महीने में 26 जनवरी 2019 को प्रयागराज-महाकुम्भ के अन्तरराष्ट्रीय मंच पर राष्ट्रीय स्वयं संघ के विचारदर्शन पर आधारित 'संघं शरणं गच्छामि' का व्यंजक मंचन किया गया। गोरखपुर के रंगमंचीय इतिहास में पहली बार घटित हुआ कि सात दिवसीय अभियान थियेटर फेस्ट के आयोजन (21 से 27 दिसम्बर 19) में इसी एक संस्था ने सात दिन अलग-अलग नाटकों का मंचन किया। मंचित नाटक थे-'गगन दमामा बाज्यो', 'आत्मीयता', 'संघं शरणं गच्छामि', 'फन्दी', 'शबरी', 'नीयत एवं जी' तथा 'जैसी आपकी मर्जी'। सचमुच, 'अभियान के निदेशक और सभी कलाप्रवीण किरदार गोरखपुर के लिए अप्रमेय व्यक्तित्त्व हैं।

गोरखपुर में साहित्यिक संस्थाएँ तीन दर्जन से अधिक हैं। गीताप्रेस, गोरखनाथ मन्दिर, प्रेसक्लब, राजभाषा विभाग, संगम, भोजपुरी संगम, सुधाबिन्दु संस्थान, पूर्वांचल हिन्दी मंच,

अमृत कलश, गोरखपुर फिल्म सोसाइटी, इटैक, प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, जनवादी लेखक संघ, प्रगतिशील लेखक संघ, युवा चेतना समिति, भागीरथी, कविलोक, नांगलिया एजुकेशनल एवं हेल्थ एसोशिएसन, विद्याभारती, अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, आकाशवाणी और दूरदर्शन। सभी संस्थाओं ने गत वर्ष भर सैकड़ों पठनीय साहित्य दिया है। मगर, इनमें भी चार-छह को छोड़कर शेष के प्रताप शिथिल दिखे। संगम, भोजपुरी संगम, पूर्वांचल हिन्दी मंच, सुधाबिन्दु संस्थान, गोरखनाथ मन्दिर और प्रेस क्लब तथा प्रेमचन्द साहित्य संस्थान ने गोरखपुर का साहित्यिक स्वाभिमान सुरक्षित रखा है। इन संस्थाओं ने विगत वर्षभर साहित्यिक तापमान समशीतोष्ण बनाये रखा।

हाँ, विगत वर्षों में गोरखपुर में दो और साहित्यिक केन्द्र उभरे हैं-एक, 'श्रीगोरक्षनाथ साहित्यिक केन्द्र' दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज-परिसर में और दो, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़ में, 'गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र' के रूप में। इस अध्ययन-केन्द्र से वर्ष 2019 में 'लोकभाषा संवर्द्धन में नाथपन्थ का योगदान' विषयक साहित्यग्रन्थ छप चुका है। दोनों केन्द्र साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शृंखलाबद्ध योजना बनाकर शिक्षणेतर गतिविधियाँ जीवन्त रखते हैं। दिग्विजयनाथ में प्राचार्य **डॉ. शैलेन्द्रप्रताप सिंह** और जंगल धूसड़ में प्राचार्य **डॉ. प्रदीप राव** अकादमिक वातावरण के साथ-साथ साहित्यिक परिपार्श्व को स्पन्दित बनाये रखते हैं। इनमें भी जंगल धूसड़ ने अपनी साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा को राष्ट्रीय पहिचान में खड़ा कर दिया है। साहित्यिक संगोष्ठी और राष्ट्रीय व्याख्यान हर माह होते हैं।

गोरखपुर के साहित्यिक धरोहर और गौरव की दृष्टि से विगत वर्ष की महत्तर उपलब्धि रही है सात-आठ साहित्यकारों को उ.प्र. हिन्दी संस्थान का यशस्वी सम्मान प्राप्त करना। इस दृष्टि से डॉ. आद्याप्रसाद द्विवेदी को 'साहित्य भूषण', डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय को 'मधुलिमये साहित्य सम्मान', रणविजय सिंह को 'श्रीनारायण चतुर्वेदी सम्मान', प्रो. श्रीप्रकाशमणि त्रिपाठी को 'गणेशशंकर विद्यार्थी सम्मान' संजय सिंह, अनीता अग्रवाल, दीनानाथ शुक्ल, रोशन एहतेशाम को नामित सर्जना पुरस्कार निश्चयतः गोरखपुर की निजी उपलब्धि है। विश्वास है ये सभी साहित्यकार सत्त साहित्यरत रहते हुए संस्थान के सम्मान और गोरखपुर के शान की रक्षा करेंगे। 2019 में आचार्य विश्वनाथप्रसाद तिवारी को साहित्य अकादमी का 'महत्तर सम्मान' और ज्ञानपीठ का 'मूर्तिदेवी सम्मान' मिलना गोरखपुर के लिए गौरव की बात है।

साहित्यकार मित्रों! गोरखपुर के विगत वर्ष-पर्यन्त साहित्यिक हलचल की एक लघु

छायामूर्ति आपके सामने खड़ी की गयी है। चाहते हुए भी कृतियों और कृतिकारों को अधिक जमीन नहीं दी जा सकी। अवसर पाकर सभी का विस्तृत साहित्यिक लेखाजोखा प्रकाशित होगा। आप लिखें, छपें, प्रकाशित हों, ताकि वर्ष 2020 की साहित्यिक खतौनी में आपही का नाम दर्ज हो। सिर्फ ईनाम और शोहरत के लिए ही नहीं, तुलसी की तरह स्वान्तःसुखाय भी। कबीर और रहीम कोई ईनाम नहीं पाये, मगर लोकमानस की जबान पर श्रद्धेय बनकर चढ़े रहते हैं।

*****

साहित्य-संस्कृति एवं नवाचारी आयोजनों का वर्ष-2019

शैवाल शंकर श्रीवास्तव

गोरखपुर पूर्वांचल का एक महत्वपूर्ण नगर जनपद है यहां 12 विश्वविद्यालय, मेडिकल कॉलेज और एम्स जैसा चिकित्सा संस्थान स्थित है। यहाँ पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय, गीडा, आकाशवाणी, दूरदर्शन केंद्र, हवाई अड्डा, गीता प्रेस, रामगढ़ताल तथा गोरखनाथ मंदिर जैसा धर्म स्थल विद्यमान है। खाद-कारखाना, तारामंडल, बौद्ध-संग्रहालय, रेलवे म्यूजियम, स्पोर्ट्स कॉलेज के साथ शहीद अशफाक उल्लाह खान प्राणी उद्यान भी है। चारों ओर से फोरलेन से जुड़ा राप्ती-रोहिणी के संगम पर बसा हुआ गोरखपुर, संप्रति अपनी ऐतिहासिकता के साथ-साथ विकास के लिए भी राष्ट्रीय स्तर पर पहचान निर्मित कर चुका है। बड़े साहित्यकारों, विद्वानों, राजनेताओं, उद्योगपतियों, कलाकारों, खिलाड़ियों, शायरों और रंग कर्मियों के इस जिंदा शहर में आए दिन साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। वर्ष भर चलने वाले ऐसे कार्यक्रमों 2019 के विशेष संदर्भ में एक संक्षिप्त लेखा-जोखा यहां प्रस्तुत है।

साहित्य

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में प्रोफेसर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली का महत्तर सम्मान प्रदान किया गया। इस सम्मान कार्यक्रम में अकादमी के वर्तमान अध्यक्ष प्रोफेसर चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक वं सचिव डॉक्टर के श्रीनिवास राव उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री तिवारी के साहित्यिक अवदान पर आयोजित चर्चा में भाग लेने वालों में श्री अरुण कमल, प्रोफेसर रेवती आदि प्रमुख थे। इसी वर्ष साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को भारतीय

मीडिया एवम संस्कृतिकर्मी, मो.-8953002961

ज्ञानपीठ का 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' भी प्रदान करने की घोषणा हुई। साल भर साहित्यिक गतिविधियाँ विभिन्न संगठनों और व्यक्तिओं के प्रयास से होती रही। साहित्य के क्षेत्र में युवा पीढ़ी का आगे आना एक बहुत ही सुखद संदेश के रूप में उभरा। विगत कुछ वर्षों से शहर के युवा इस क्षेत्र में काफी रुचि ले रहे हैं और अपने लेखन को धार दे रहे हैं। कविता, गजल, शायरी, ओपेन माईक ईवेंट और ब्लाग लेखन से वह अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रदर्शन समय-समय पर करते रहे। 'राईटर्स अड्डा' ऐसे ही युवाओं का एक समूह है जिसने 'आगाज' ओपेन माईक ईवेंट, 'कारवा'-उर्दू, हिंदी पर आधारित छंद-बद्ध गीतमाला के साथ-साथ साहित्य सम्राट प्रेमचन्द की जयंती पर उनकी कहानी पर आधारित 'किस्सागोई' इत्यादि कार्यक्रम किए। उनके अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों में 'भोजपुरी ओपेन माईक' साहित्यिक वार्ता-'बैठकी' भी शामिल है। इस वर्ष प्रेमचंद साहित्य संस्थान, गोरखपुर और हिंदी विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के संयुक्त त्तवावधान में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी में नई दिल्ली, भागलपुर, वाराणसी आदि शहरों की विदुषियों और प्रख्यात विद्वानों के अतिरिक्त सिंगापुर और श्रीलंका के भी वक्ताओं ने हिस्सा लिया। विचार गोष्ठी का विषय था ''100 साल बाद सेवासदन- स्त्री मुक्ति का भारतीय पाठ''। इस कार्यक्रम में प्रो. रोहिणी अग्रवाल, प्रो. सुधा सिंह, प्रो. संध्या सिंह और प्रो. अवधेश प्रधान के विशेष व्याख्यान हुए। इसी क्रम में गुरु श्री गोरक्षनाथ शोध पीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित तथा उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा प्रायोजित 'प्राचीन भारत के वैज्ञानिक और उनके अवदान' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित आयोजित हुई जिसका उद्घाटन श्री हृदय नारायण दीक्षित, अध्यक्ष, उत्तर-प्रदेश, विधानसभा लखनऊ के ज्ञानगर्भित उच्च स्तरीय व्याख्यान से हुआ। प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त, प्रो. वी.के. सिंह, कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, प्रो. रविशंकर सिंह, प्रो. विनय कुमार सिंह और प्रोफेसर डी.के. सिंह सरीखे विद्वानों की उपस्थिति और वक्तव्य से प्राचीन भारत के महान वैज्ञानिक और उनके अवदानों पर विशेष से अनेक नए तथ्यों से श्रोताओं का परिचय हुआ। इसी तरह भारतीय दार्शनिक अनुसंध ान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा इतिहास विभाग गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'भारतीय संस्कृति में हनुमान प्रसाद पोद्दार का योगदान' विषय पर संगोष्ठी हुई जिसमें डॉ. बालमुकुंद पांडेय, डॉ. ओम जी उपाध्याय, प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, डॉ. प्रदीप राव के महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए। महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ में 'विज्ञान की नवीन प्रवृतियां' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित हुई। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक सप्ताह समारोह का समापन हुआ इस अवसर पर प्रदेश की राज्यपाल

महामहिम आनंदीबेन पटेल उपस्थित रहीं। इस अवसर पर आयोजित ''प्रतिभा सम्मान समारोह'' में 322 शिक्षक एवं छात्र पुरस्कृत हुए। 460 छात्रों को 'योग्यता एवं क्रीड़ा छात्रवृत्ति' प्रदान की गयी। कार्यक्रम में राज्यपाल और मुख्यमंत्री के हाथों विजन डॉक्यूमेंट 'साधना-पथ' और 'गोरक्ष-प्रभा' नामक पत्रिका का लोकार्पण भी हुआ।

हिंदी संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा गोरखपुर से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों प्रो. मनोज कुमार सिंह, डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी, डा. वेद प्रकाश पांडे, श्री रणविजय सिंह, प्रोफेसर श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी, श्रीमती रोशन एहतेशाम और डॉ. अनीता अग्रवाल को उनके साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक योगदान के लिए सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाना भी शहर के लिए गर्व का विषय रहा। इसी साल के अंत में नांगलिया अस्पताल गोरखपुर द्वारा प्रकाशित स्वास्थ्य पत्रिका 'नेहा' का वार्षिक अंक 'साहित्य वार्षिकी-2019' का लोकार्पण गोकुल अतिथि भवन में संपन्न हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी उपस्थित रहे। प्रो के.सी. लाल, प्रो. अनिल राय तथा डा. प्रदीप राव के महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए। साथ ही इस अवसर पर एक कवि सम्मेलन भी आयोजित हुआ।

गोरखपुर लिटरेरी फेस्टिवल - पिछले वर्ष गोरखपुर लिटरेरी फेस्टिवल के विभिन्न सत्रों में राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश, विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी, शिवकेश, नासिरा शर्मा, गीता श्री, प्रभात रंजन, अखिलेंद्र मिश्र इत्यादि की उपस्थिति ने शहर के साहित्यिक माहौल को एक गति प्रदान करने में महती भूमिका अदा की थी। इस आयोजन में राजनीति, मीडिया और कला क्षेत्र की राष्ट्रीय स्तर की विभूतियों की शिरकत ने शहर के साहित्यिक, कला और सांस्कृतिक वातावरण में एक हलचल पैदा कर दिया। इस श्रृंख्ला का नया संस्करण आगामी 1 तथा 2 फरवरी को प्रस्तावित है। गैलेंट और कुटुम्ब ग्लोबल द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन में मुनव्वर राना, शबीना अदीब, शकील आजमी, अंकिता सिंह और दिनेश बावरा की उपस्थिति रही। इसी तरह अन्य कवि सम्मेलनों में कुमार विश्वास, अंजुम रहबर, अरुन जैमिनी, अनिल चौबे, कविता तिवारी इत्यादी कवियों की कविताओं को शहरवासियों ने सुना।

रंगमंच - रंगमंच के लिए यह साल भी बहुत ही सफल रहा। शहर में विभिन्न रंगमंचीय प्रस्तुतियाँ तो हुई ही, बहुत से कलाकार और संस्थाए बाहर से भी अपनी प्रस्तुतियों के लिए आमंत्रित किए गए। गोरखपुर थियेटर एसोसियेशन के त्तवावधान में नाटकों की मासिक श्रृंख्ला अनवरत इस साल भी चलती रही और विभिन्न संस्थाओं द्वारा नाट्य प्रस्तुति हुई। अभियान थियेटर द्वारा रंगमंच को और प्रभावी बनाने की कड़ी में 'रूम थियेटर' की शुरुआत की गयी।

इस कड़ी में अब तक 43 नाटक प्रस्तुत किए जा चुके हैं जिसमें इस साल 12 नाट्य प्रस्तुतियाँ हो चुकी हैं। 'रूम थियेटर' के इस अभिनव प्रयोग से टिकट मूल्य रख कर नाटकों को आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनाने का भी माहौल तैयार किया जा रहा है। इस वर्ष इस संस्थान द्वारा गोरखपुर से लेकर अन्य शहरों में विभिन्न नाटकों का मंचन तो किया ही गया है साथ ही साथ नाट्य प्रशिक्षण संस्थान से नई पौध भी तैयार की जा रही है जिसमें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन.एस.डी.) में दो चयन क्रमशः दीक्षा तिवारी और मृणालिनी पांडेय भी उल्लेखनीय है। अभियान द्वारा इस वर्ष सात दिवसीय नाट्य महोत्सव भी आयोजित किया गया जिसमें नाट्य मंचन, विमर्श और अन्य कार्यक्रम हुए। प्रशिक्षण के क्षेत्र में सम्भव कला मंच द्वारा 'नाटक की पाठशाला' इंस्टिच्यूट की स्थापना नाट्य प्रशिक्षण के क्षेत्र के लिए एक सुखद खबर है। नाट्य प्रस्तुतियों में रंगमंडल संस्थान द्वारा अजीत प्रताप सिंह के निर्देशन में महात्मा गांधी की 150वीं जन्मतिथि पर 'बापू की हत्या हजारवी बार' का मंचन किया गया। साथ ही संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से 'साहिब कहाँ है' 'चकरघुईया' इत्यादि नाटकों का मंचन हुआ। दर्पण नाट्य संस्था द्वारा कवि रामधारी सिंह दिनकर के 150वें जन्म दिवस पर उनके गांव में उनकी कृति 'रश्मि-रथी' का मंचन भी गोरखपुर के कलाकारों द्वारा किया गया। संस्कार भारती द्वारा भी वर्ष भर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमे हिंदू नववर्ष के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में मानवेंद्र त्रिपाठी के निर्देशन में नाट्य मंचन हुआ। नव्य इंडिया और रंग थिएटर के निर्देशन में नाटक – 'बैले के बियाह' का लगातार तीन मंचन विभिन्न मंचो पर हुआ। 'ओपेन थियेटर' का जीर्णोद्धार सम्पन्न होकर रंगकर्मियो की प्रस्तुतियों के लिए तैयार है साथ ही अत्यंत उच्च सुविधाओं से परिपूर्ण प्रेक्षागृह भी पूर्णता की राह पर है।

शास्त्रीय, सुगम और लोक संगीतों की त्रिवेणी – इस त्रिवेणी की धारा भी विगत बीते साल खूब बही। संगीतज्ञ शरद मणि त्रिपाठी द्वारा सम्पादित पंडित राम नारायण मणि त्रिपाठी की संगीत रचनाओं का संकलन का विमोचन डी.वी.एन.पी.जी. कालेज के सभागार में हुआ और इस अवसर पर शास्त्रीय और सुगम संगीत की प्रस्तुति हुई जिसमें वाराणसी के प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतज्ञ प. देवाशीष डे की प्रस्तुति रही। इसी क्रम में ध्रुपद समारोह, नाथपंथी पदों के गायन की कार्यशाला, गोरखपुर के मशहूर संगीतकार स्व. राहत अली की स्मृति में शहर के गायकों और वादकों ने स्वरांजलि प्रस्तुत की। इसी तरह दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में शास्त्रीय, सुगम और लोक संगीत पर आधारित कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई। शहर में संगीतमय वातावरण बनाने के साथ ही साथ प्रशिक्षण के क्षेत्र में उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से भी विभिन्न आयोजन हुए। भोजपुरी एसोसियेशन आफ इंडिया (भाई) द्वारा लोक संगीत को

बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'के बनी माटी के लाल' कार्यक्रम आयोजित हुआ। पारम्परिक लोकगीतों की प्रस्तुति की इस प्रतियोगिता में पूर्वांचल के साथ ही साथ बिहार के प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें गोपालगंज के सुमित पांडेय विजयी हुए। भाई द्वारा लोक गीतों की कार्यशाला, देवी लोक गीतों की कार्यशाला के साथ होली के अवसर पर फगुआ कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। सुगम और शास्त्रीय गायन, वादन और नृत्य से जुड़ी संस्थान भी ऐसे आयोजनों में लगातार शामिल रहे। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, बौद्ध संग्रहालय पर लोकोत्सव कार्यक्रम में भी कत्थक से लेकर अन्य प्रस्तुतियाँ हुई। इंटरनेशनल डांस डे पर यामिनी कल्चरल इंस्टिच्यूट द्वारा कत्थक की अलग-2 विधाओं पर नृत्य प्रस्तुति के कार्यक्रम के साथ समय-2 पर अन्य आयोजन होते रहे।

टैलेंट हंट – डांस, सिंगिंग और अन्य के क्षेत्र में विविध टैलेंट हंट कार्यक्रम हुए। सनरोज संस्थान द्वारा लगातार टैलेंट हंट के कार्यक्रम होते रहे। रंगमडल द्वारा 'बेस्ट ड्रामेबाज' का भी आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ कलाकार विभांशु वैभव की उपस्थिति रही। लिरिक्स एकेडमी आफ म्युजिक भी लगातार संगीत पर आधारित टैलेंट हंट कार्यक्रम करते रहे। लैम्प फिस्टा, मानसून फीस्टा सीजन के तहत डांसिंग, सिंगिंग और वादन की विविध प्रस्तुति और वर्कशाप आयोजित किये जाते रहे। कैंसर जागरूकता अभियान के तहत कार्यक्रम, पर्यावरण संरक्षण जागरूकता के तहत चित्रकला प्रदर्शनी कार्यक्रम, कला और संस्कृति विषय पर संगोष्ठी का आयोजन, चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन, कला और संस्कृति में अभिरुचि रखने वाले प्रतिभागियों के लिए टैलेंट हंट कार्यक्रम, फैशन के क्षेत्र में भी रैम्प वाक इत्यादि टैलेंट हंट के कार्यक्रम भी शहर में काफी हुए जिसमें अदा फैशन शो, पूर्वी फेस्टिवल और मिस एंड मिसेज फैशन अपिटोम प्रमुख रहे।

*****

आकाशवाणी

गोरखपुर के 'मन की बात'

डॉ. अनामिका श्रीवास्तव

रेडियो को अक्सर बीते दिनों की बात कहके किनारे करने के चलन ने रेडियो के सामने एक चुनौती प्रस्तुत की है। उस चुनौती को रेडियो ने स्वीकार किया और आकाशवाणी की तकनीकी ने एफ.एम. चैनलों और हाल ही में इन्टरनेट पर उपलब्ध 'न्यूज ऑन एआईआर' एप के माध्यम से 24 घंटे, विश्व के किसी भी कोने में अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी। कन्टेन्ट के मामले में तो आकाशवाणी में प्राप्त सामग्री का शायद ही कोई संस्थान मुकाबला कर पाये, चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो, सुगम या लोक संगीत हो, नाटक, इन्टरव्यू, वार्तायें, परिचर्चायें या बीते वर्षों में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा की गई 'मन की बात' के अंक हों। आकाशवाणी के एप पर अब ये सभी सर्व सुलभ हैं। समय और स्थान की कोई पाबंदी नहीं। आप आकाशवाणी गोरखपुर को गेंगटोक में और लखनऊ को लद्दाख में सुन सकते हैं। आज का आकाशवाणी उपलब्धता के शिखर पर इस बदलाव का साक्षी बना।

चाहें हरित क्रान्ति हो, दुग्ध क्रांति हो, परिवार नियोजन, पर्यावरण, खेती की बातें, शिक्षा का प्रचार-प्रसार या बेटियों की सुरक्षा – आकाशवाणी ने समग्रता में जन-जन तक अपनी पहुँच को सुनिश्चित किया है।

हाल के वर्षों में आकाशवाणी गोरखपुर ने अपने एफ.एम. 100.1 चैनल पर कार्यक्रमों की विविधता से नये आयाम गढ़े हैं। पिछले दो वर्षों से गोरखपुर के प्रतिष्ठित खिचड़ी मेले की कमेंट्री मंदिर परिसर से एफ.एम. चैनल पर प्रसारित की जा रही है। जिससे जन-जन को यह कमेंट्री साधारण से मोबाइल पर भी सुनने के लिए उपलब्ध होती है।

कार्यक्रम प्रमुख, आकाशवाणी गोरखपुर

आकाशवाणी गोरखपुर के एफ.एम. चैनल पर प्रसारित हैलो डॉक्टर एवं 'इनसे मिलिए' कार्यक्रमों ने जन-जन तक अपनी विशेष पहुँच से अपनी उपयोगिता साबित की है।

पिछले वर्षों में राष्ट्रीय स्तर पर गोरखपुर आकाशवाणी के 'A' ग्रेड के कलाकार शिवदास चक्रवर्ती को शास्त्रीय संगीत एवं 'A' ग्रेड के लोक कलाकार गुलाब को लोक संगीत में भोजपुरी गीतों की प्रस्तुति को राष्ट्रीय स्तर के 'संगीत के अखिल भारतीय कार्यक्रम' में प्रस्तुति देने का अवसर प्राप्त हुआ।

आकाशवाणी ने संतकबीर नगर में कबीर गुरुद्वारा, कुशीनगर में भगवान बुद्ध की जयंती के विशेष अवसरों पर शानदार कार्यक्रम प्रस्तुत करके लोगों का मन मोहा। संतकबीर के 500वें जन्म दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की यात्रा पर आधारित राष्ट्रीय-स्तर पर प्रस्तारित रेडियो-रिपोर्ट को आकाशवाणी महानिदेशालय, दिल्ली से विशेष सराहना-पत्र आकाशवाणी को प्राप्त हुआ।

बाल दिवस पर आयोजित प्राथमिक विद्यालय तिलौली सरदारनगर एवं रामगढ़ताल पर दिव्यांग बच्चों के साथ प्रस्तुत कार्यक्रम भी जन-मन में अपना स्थान बनाने में सफल रहे। आकाशवाणी गोरखपुर में परिक्षेत्र से जुड़े साहित्यकार, कवियों एवं शायरों यथा फिराक गोरखपुरी, मुंशी प्रेमचन्द पर आधारित मुशायरा एवं संगोष्ठी भी गोरखपुर में सराहना का विषय बनी। आगामी 'खिचड़ी मेला 2020' पर आकाशवाणी गोरखपुर अपने एफ.एम. एवं प्राइमरी चैनल पर सजीव कमेंट्री प्रसारित करेगा। दिव्यांग जन की बेहतरी के लिए तेरह एपीसोड का एक विशेष सीरियल 'साथी हाथ बढ़ाना' सी.आर.सी. गोरखपुर के सहयोग से किया जायेगा।

*****

गोरखपुर अब विश्व-क्षितिज पर

डॉ. आमोद कुमार राय

गोरखपुर की साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतना तो पहले ही काफी समृद्ध थी किन्तु यह एक बौद्धिक अभिजात्य संकुचन में फँसी हुयी थी। ठीक यही दशा इसकी आर्थिक समृद्धि की भी थी। प्राकृतिक भूगर्भ जल और मेहनतकश किसानों के बावजूद गोरखपुर एक अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ और गैर नियोजित शहर लगता था। किन्तु समय ने पिछले वर्षों में यहाँ की अन्तर्निहित संभावनाओं को एक सुन्दर यथार्थ का धरातल दिया है। आज शहर की प्रत्येक आकांक्षा को उपयुक्त संसाधन, उपजाऊ परिवेश और श्रेष्ठ ढांचागत बुनियादी सुविधाएँ सहज ही उपलब्ध हैं। एकाएक देखते-देखते यह शहर आज भारतवर्ष के किसी भी बड़े और विकसित शहर से कंधे से कंधा मिलाकर अपनी आभा वैश्विक फलक पर बिखरने को उद्यत है।

अब तो गोरखपुर विश्वमानचित्र पर उभर उठा है। पहले भी गुरुगोरक्षनाथ, सन्त कबीरदास और गीताप्रेस की विश्वकल्याणी दृष्टि से धरती का प्रत्येक कोना जागृत-स्पन्दित था। अपरिचय और अगति की किसी अवसादमयी कुंठा से यह तपोधरा कभी रुग्ण और जराग्रस्त नही हुई। साधना, श्रम, इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास में सतत सक्रिय और 'चरैवेति' बनी रही। 'एकला चलो रे' की आत्मशक्ति में भी जीती रही है। बुद्ध को बल देने वाली प्राचीन नगरी यही है। महावीर को पार्श्ववर्ती प्रेरणा यही से प्राप्त हुई। घने वनों से आच्छादित गोरखपुर का परिपार्श्व वरुणदेव का लीलास्थल भी रही है। तड़ाग-सरोवर-बावली-सरिता के अवशेष साक्षी हैं। इस अँचल को 'तराई-क्षेत्र' की उपसंज्ञा भी इस तथ्य की पुष्टि करती है।

गोरखपुर कभी जरा-जर्जर नहीं हुआ। इस नगर को अनुभवसिद्ध पुरुषों ने सँभाला है तो

अँग्रेजी विभाग, बुद्ध पी.जी. कॉलेज, कुशीनगर, मो. 9450290843

समय के आगे-आगे चलकर तरुण-युवा ऊर्जा ने भी। बल्कि कहें कि युवतर उत्साह ने अधिक सजाया-सँभाला तो अत्युक्ति नहीं मानना चाहिए। परम्परा को आदर-सम्मान देनेवाला यहाँ का युवामानस नये से नये के प्रयोग में अपना सर्वस्व होम करता रहा है। मिटाकर नहीं, मिटकर यहाँ की क्षेत्रीय विरासत को सम्पन्नतर बनाता रहा है। संस्कृति, शिक्षा, समाजसेवा, राजनीति, धर्म, अध्यात्म, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, तकनीक, खेलकूद, योगविद्या, मल्लकला और शान्ति-अहिंसा जैसे विश्वजयी संदेश गोरखपुर से निकलकर सर्वत्र पहुँचे हैं। कालचक्र के प्रत्येक पड़ाव ने इस सांस्कृतिक धरा को कालजयी नायक प्रदान किये हैं। कभी बुद्ध के रूप में तो कभी महावीर के रूप में। कभी कबीर के रूप में तो कभी हनुमानप्रसाद पोद्दार और फिराक के रूप में। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मन्नन द्विवेदी और प्रेमचन्द यहीं की उपज-धरोहर रहे हैं। इन महापुरुषों के पगचिह्नों को चहक और अग्रगामी बनाने में आज हजारों साहित्य-मनीषा चिन्तनशील बनी हुई है।

शिक्षा, समाज, धर्म, अध्यात्म और राजनीति के क्षेत्र में विगत सौ वर्ष से गोरक्षपीठ ने ऐतिहासिक भूमिका निभायी है। युगपुरुष **ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ की संकल्पना और राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ** की समरस **लोकधर्मी व्यवहारनीति** के फलस्वरूप गोरखपुर में शिक्षा और सामाजिक समरसता के क्षेत्र में परिवर्तन ने बुनियादी करवट बदला है। पाँच-छः दशकों में इन दो महापुरुषों की लोकप्रतिमा अधिक भास्वर-प्रभावशाली दिखलाई पड़ी है। दोनों विभूतियों की विशाल विरासत आज एक ऐसे **कर्मवीर योगी-संन्यासी को प्राप्त हो चुकी है जो उसे दिन दोगुना रात चौगुना** नहीं, प्रत्युत अन्नतगुना की अभिवृद्धि दे रहा है। युवा योगनायक आज योगधर्म और राजधर्म की सुन्दर-सम्यक् भूमिका निभाते हुए गोरखपुर-वासियों के लिए किसी दशावतार से कम नहीं है। कहना उचित प्रतीत हो रहा है कि न सिर्फ गोरखपुर के लिए, अपितु प्रदेश, देश और आज की सम्पूर्ण दुनिया के लिए लोकधर्मी राजनीति और राजधर्मी लोकनीति का नया अध्याय सौपनें वाला कोई और नहीं, **युगनायक योगी आदित्यनाथ जी** हैं। 'योग-योगी' और 'शिक्षा-साहित्य' के सभी प्रमुख द्वार पर किसी सजग-जागृत विश्वप्रहरी की तरह।

मन्दिर के गोरक्षपीठ-प्रांगण में वर्ष-पर्यन्त चलनेवाले यौगिक-साहित्यिक-आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान गोरखपुर के संवेदनाभरे मानस को तरंगायित करते हैं। प्रत्यक्ष पहुँचकर देखने और मीडिया के पन्नों को पढ़ने के बाद सहज आभास मिल जाता है कि गोरखनाथ-मन्दिर की धूनी ही अखण्ड नहीं है, अपितु साहित्यिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महाव्रत भी

अखण्ड-शाश्वत-अहर्निश बने हुए हैं। इस धर्मपीठ को **'अधिमानस का विश्वविद्यापीठ'** कहना कथापि असंगत अथवा अनुचित नहीं होगा।

गोरखपुर अपना है। अपना गोरखपुर आज और सक्रिय है, प्रायः सभी क्षेत्रों में। साहित्य और राजनीति के अक्षत शिलाखण्ड पर मानो बैठा हुआ। अचिरावती साक्षी है। साहित्य के दो दर्जन से अधिक उपकेन्द्र और राजनीति के दर्जनभर से अधिक संगठन-घटक बराबर समुद्यत दिखलाई पड़ते हैं। अमृत-पान के लिए नहीं, कंठ में हलाहल डालने के लिए।

साहित्य की अकुलाहट-हलचल गोरखपुर की निजी पहिचान है। 'कल्याण' और 'दस्तावेज' जैसी पत्रिकाओं का नगर यही है। दोनों की वैश्विक पहिचान है। 'समन्वय', 'प्रस्थान', 'सहचर', 'हिन्दवी' और 'विमर्श' जैसी पत्रिकाओं ने यहाँ की साहित्यिक जमीन को ताकत प्रदान किया है। अब 'मंथन' (डॉ. प्रदीप राव), 'शोधसंहिता' (प्रो. रामदरश राय) और 'योगवाणी' (डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त) जैसी साहित्यिक-सांस्कृतिक अक्षरराशि लेकर पाठकों के मध्य संवाद बनाये रखने वाली गोरखपुर की नयी साहित्यिक विरासत को देखना तोषप्रद लग रहा है। सचमुच गोरखपुर में संवेदना की साहित्य-सरिता कभी सूखी नहीं दिखी।

'महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ' की स्थापना गोरखपुर के चिन्तक और अन्वेषी अध्येता जगत् को सक्रिय बनाने में योग्यतम भूमिका निभाने जा रहा है। अल्पकाल में ही इस पीठ की सक्रियता ने अपनी सार्थकता प्रकाशित कर दी है। विषयबद्ध आधे दर्जन पुस्तकों का प्रकाशन और शताधिक शोधालेख संग्रहीत करके विश्वविद्यालय के इस शोधपीठ ने अपनी मेधा-क्षमता और ऊर्जा का उज्ज्वलगामी भविष्य आभासित कर दिया है।

14-15 दिसम्बर, 2019 को दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के 'संवाद भवन' में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी में **'नाथपंथ विश्वकोश निर्माण'** की योजना पर गम्भीर मंथन-मनन और अपेक्षित निष्कर्ष निकालने की सुचेष्ठा शोधपीठ के निदेशक प्रो. रविशंकर सिंह द्वारा की गयी। डॉ. बलवन्त शान्तिलाल जानी, महन्त शिवनाथ जी, प्रो. विजय कृष्ण जी, प्रो. उदयप्रताप सिंह जी, प्रो. आर.डी. राय, प्रो. राजवन्त राव और डॉ. प्रदीप राव आदि के उद्बोधन ने शोधपीठ को एक नयी दिशा प्रदान की। विगत वर्ष के चिन्तन-मनन-अनुशीलन के क्षेत्र में गोरखपुर को मिला हुआ यह एक अप्रमेय उपहार है जिसका श्रेय उ.प्र. के सर्वप्रिय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दिया जायेगा।

गोरखपुर में साहित्यिक वातावरण के उपसृजन में पूर्वांचल हिन्दी मंच, प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, संगम-स्वर, भोजपुरी-संगम, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़

और प्रेस क्लब की सक्रिय भूमिका सत्त दिखलाई पड़ती है। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में नवस्थापित साहित्यिक-सांस्कृतिक केन्द्र नये सौन्दर्यबोध के साथ सक्रिय दिखलाई पड़ रहा है। इन साहित्यिक केन्द्रों से प्रत्येक सप्ताह कोई न कोई काव्यग्रन्थ, कथाग्रन्थ और आलोचनात्मक-निबन्धात्मक ग्रन्थ लोकार्पित होकर सामने आता है। यदि गत एक वर्ष मात्र की इस साहित्यिक विरासत को सहेज-समेट लिया जाय तो शताधिक ग्रन्थ गोरखपुर की ग्रन्थमाला में जुड़ जाएँगे। पत्र-पत्रकार, साहित्य-साहित्यकार, राजनीति-राजनीतिज्ञ, धर्म-धर्माचार्य, अध्यात्म-अध्यात्मिक और चिकित्सा-चिकित्सक गोरखपुर की स्वतन्त्र शान-पहिचान हैं। आज 'एम्स' का गोरखपुर में होना, 'रामगढ़ झील' का सुन्दर स्वरूप और 'राप्ती तट पर नवनिर्मित विस्तृत सुन्दर सीढ़ियाँ' किस गोरखपुरवासी को आकर्षित नहीं करते। हमें गर्व है-गोरखपुर में रहते हैं। हमें गर्व है-उत्तर प्रदेश में रहते हैं। हमें गर्व है-भारतवर्ष में रहते हैं।

*****

प्रमाणिक इतिहास लेखन के क्षेत्र में अग्रणी भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त

डॉ. अजय कुमार सिंह

गोरक्ष प्रान्त परिक्षेत्र अतीत एवं वर्तमान के ऐतिहासिक परम्परा की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध क्षेत्र है। भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त इतिहास के क्षेत्र में कार्यरत विद्वतजनों का एक राष्ट्रव्यापी संगठन है जो इतिहास, संस्कृति, परम्परा आदि के क्षेत्र में प्रामाणिक, तथ्यपरक तथा सर्वांगपूर्ण इतिहास लेखन तथा प्रकाशन आदि की दिशा में कार्यरत है। 'भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त' अखिल भारतीय स्तर की संस्था 'अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली' की प्रांतीय इकाई है। भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त का विस्तार 10 जनपदों में है। इन जनपदों में जनपदीय/क्षेत्रीय समितियां कार्यरत है जो जनपदीय इतिहास लेखन का कार्य देखती है। जनपदीय इतिहास लेखन के साथ साथ प्रारम्भ में इस समिति ने दो कार्य अपने हाथ में लिए-

1. संसार की प्राचीनतम भाषा संस्कृत, जिसे संसार की समस्त भाषाओं की जननी भी कहा जाता है, का प्रचार-प्रसार।
2. भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन एवं इसके निमित्त विषय सामग्री का संकलन।

भारतीय इतिहास लेखन का जो कार्य पूर्व में अंग्रजों के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ और वैज्ञानिक, वस्तुपरक शोध के नाम पर जिसे भारतीय इतिहासकारों ने भी अपनाया, वह अनेक स्थलों पर पूर्वाग्रह से प्रेरित, तथ्यों के अज्ञान अथवा जान-बूझकर की गई उपेक्षा पर आधारित है जिसके कारण भारतीय इतिहास में अनेक विसंगतियाँ एवं भ्रम उत्पन्न हो गए हैं। इतिहास लेखन में भारतीय स्रोतों की अवहेलना कर उसे तिरस्कृत किया गया। विदेशी आक्रमण के युगों

कोषाध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त

को उभारा गया। अन्धकार युग की कल्पना, मुस्लिम इतिहाकारों के दुराग्रह एवं दम्भपूर्ण उल्लेखों को ऐतिहासिक तथ्य की मान्यता, भारतीय परम्पराओं एवं साहित्यिक स्रोतों की उपेक्षा आदि से भारत का इतिहास विकृत हुआ है। उपर्युक्त विचारों की पृष्ठभूमि में भारतीय इतिहास संकलन समिति का उद्देश्य है भारतीय कालगणना के आधार पर सृष्टि रचना के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक के इतिहास का भारतीय चेतना के अनुरूप साक्ष्यों के आधार पर वास्तविक इतिहास का संकलन। यह पुनर्संकलन सत्य, सही, निष्पक्ष तथ्यों पर आधारित, किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से रहित, आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों और नवीनतम पुरातात्त्विक खोजों के आधार पर होगा। इस प्रकार हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा जीवन के अन्य सभी पक्षों को दर्शाते हुए हमारे देश का वास्तविक सूत्रबद्धात्मक तथा व्यापक इतिहास तैयार किया जायेगा। योजना का ध्येय वाक्य है– 'नामूलं लिख्यते किंचित'।

भारत को देखें एवं जाने बगैर भारत के जिस इतिहास को अंग्रेजों ने लिखा वही भारत के मानस को लगातार प्रमाणिक इतिहास के तौर पर पढ़ाया गया। भारतीय इतिहास के घटनाओं के वास्तविकता को छिपाने का हर संभव प्रयास हुआ। आज आवश्यकता है कि अतीत में घटित घटनाओं का वर्तमान में भारतीय चेतना के अनुरूप साक्ष्यों के आधार पर वास्तविक इतिहास तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर लेखन कार्य किया जाए। इस दिशा में भारतीय इतिहास संकलन समिति पिछले दशकों से सक्रिय रूप से क्रियाशील है।

समिति के उद्देश्य के प्रमुख बिन्दु निम्नवत् हैं–

1. भारतीय इतिहास में विद्यमान विकृतियों को दूर करना।
2. जिन विकृतियों के आधार पर भारतीय इतिहास की रचना की गई है, उन विकृतियों का खण्डन करके भारतीय इतिहास को भारतीय चेतना के अनुरूप साक्ष्यों के आधार पर वास्तविक इतिहास लेखन।
3. इतिहास लेखन के लिए प्राच्यविद्या की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित प्रकाशित/अप्रकाशित प्रामाणिक सामग्री का जिला तथा ग्राम स्तर पर संकलन।
4. महाभारत काल से लेकर वर्तमान तक और भारतीय कालगणना के आधार पर जिला सह भारतीय दृष्टिकोण एवं भारतीय कालगणना के आधार पर इतिहास लेखन की व्यवस्था करना।
5. एतदर्थ योग्य व्यक्तियों, संस्थाओं तथा संगठनों आदि से सम्पर्क स्थापित करते हुए

उन्हें संगठित एवं प्रेरित करना।

6. भारतीय संस्कृति, प्राच्यविद्या एवं पूर्वजों की विशिष्ट उपलब्धियों के प्रति सामान्य व्यक्ति के हृदय में आदर अनुराग, अभिरुचि एवं चेतना उत्पन्न करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना।

7. भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व से संबंधित अनुसंधानों को प्रोत्साहित करने के लिए संगोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं विशेष व्याख्यानों आदि का आयोजन करना।

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त भारतीय चेतना के अनुरूप साक्ष्यों के आधार पर वास्तविक इतिहास को समृद्ध बनाने के लिए दो प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करती है। पहला राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी का आयोजन और दूसरा 'इतिहास दिवस' के कार्यक्रम। 'इतिहास दिवस' के कार्यक्रम को लेकर समिति का मानना है कि हमारे इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं मूल उत्सव सहित राष्ट्रीय आन्दोलन के महापुरुष/घटना आज के युवा पीढ़ी के स्मृति में कहीं है ही नही। इसलिए 'इतिहास दिवस' के कार्यक्रम को विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों, स्कूलों में आयोजित किया जाय।

राष्ट्रीय स्तर के संगोष्ठी का आयोजन-

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त ने विविध विषयों पर आधारित 4 राष्ट्रीय संगोष्ठियों का सफल आयोजन किया। जिनका संक्षिप्त विवरण कुछ इस प्रकार से है-

1. सनातन संस्कृति के आधुनिक प्रणेता हनुमान प्रसाद पोद्दार, 27 जनवरी 2019, संवाद भवन, गोरखपुर विश्वविद्यालय, प्रायोजक भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

2. युग युगीन कुशीनगर, 31 अगस्त एवं 1 सितम्बर 2019, बुद्ध पी.जी. कालेज कुशीनगर। प्रायोजक भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।

3. रिविसिटिंग चौरी-चौरा : ए लोकल इवेंट ऑफ नेशनल डाइमेंशन, 23-24 नवम्बर 2019, संवाद भवन, गोरखपुर विश्वविद्यालय। प्रायोजक मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियन अध्ययन संस्थान, कोलकाता एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।

4. भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार, 3-4 जनवरी 2020, महाराणा प्रताप पी.जी.

कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर। प्रायोजक भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।

1. सनातन संस्कृति के आधुनिक प्रणेता हनुमान प्रसाद पोद्दार, 27 जनवरी 2019

भाई जी की मृत्यु के 50 वर्ष बाद पहली बार गोरक्ष प्रान्त में भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार के व्यक्तित्व, शिक्षा–साहित्य एवं धार्मिक समरसता में उनके योगदान, कार्य आदि पर विस्तृत चर्चा, देश के विभिन्न विद्वतजनों द्वारा किया गया। भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिन्होंने गोरखपुर को राष्ट्रीय के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय फलक पर पहचान दिलाई। विडम्बना देखिए कि ऐसा इतिहास पुरुष हमारे स्मृति और इतिहास के पन्नों से गायब कर दिया गया। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली ने ऐसे महापुरुष पर राष्ट्रीय संगोष्ठी कराने की जिम्मेदारी गोरक्ष प्रान्त के अध्यक्ष प्रोफेसर हिमांशु चतुर्वेदी को दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, तत्कालीन सदस्य सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् एवं भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुंद पाण्डेय, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष प्रोफेसर ईश्वर शरण विश्वकर्मा, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ के अध्यक्ष प्रोफेसर सदानंद प्रसाद गुप्ता, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के निदेशक डॉ. ओम जी उपाध्याय, भाई जी के जीवन काल के सहयोगी श्री हरिकृष्ण दुजारी जी जैसे मनीषी के साथ 70 प्रतिभागियों ने भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार जी के व्यक्तित्व, शिक्षा–साहित्य एवं धार्मिक समरसता में उनके योगदान आदि पर विस्तृत चर्चा की।

संगोष्ठी में भाई जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि आदरणीय पूज्य भाई जी सनातन भारतीय संस्कृति के संवाहक एवं अग्रदूत थे। सनातन धर्म एवं स्वदेशी विचारधारा से प्रभावित होकर भाई जी ने न सिर्फ गीता प्रेस की स्थापना करायी अपितु उक्त विचारधारा से प्रेरित होकर साहित्य सृजन का कार्य भी प्रारम्भ किया। यह भाई जी का ही अमानुष सदृश्य कार्य था कि वेद, पुराण, उपनिषद सहित अन्यान्य धार्मिक साहित्य भारतीय जनमानस के अन्तर्गत घर घर तक पहुँचा। भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म परम्परा के ऐसे अनन्य साधक भाई पूज्य जी अपनी इन्ही कृतियों एवं अपने दिव्य व्यक्तित्व के कारण भारतीय जनमानस में सदैव अमर रहेंगे। संगोष्ठी में विशिष्ट उपस्थिति के रूप में उपस्थित अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बालमुकुंद पाण्डेय ने कहा कि पूज्य हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने गीता प्रेस के माध्यम से न सिर्फ भारतीय

धर्म, दर्शन, संस्कृति को वैश्विक मंच पर स्थापित किया, अपितु इसका दुनियाभर में प्रचार प्रसार भी किया। पूज्य भाई जी ने भारत के घर-घर मे सीता-राम, लक्ष्मण, भरत को अपने साहित्य के माध्यम से स्थापित करके न सिर्फ समाज मे आदर्श धर्म एवं सच्चरित्रता की स्थापना की, अपितु समाज को भगवत गीता का अदम्य उपदेश उपलब्ध कराकर विश्व शांति का पाठ पढ़ाया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कुलपति प्रोफेसर विजय कृष्ण सिंह जी ने भाई जी के जीवन व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर और अधिक कार्य एवं शोध करने के लिए न सिर्फ भाई जी पर एक शोध पीठ की स्थापना की बात कही, अपितु साहित्य एवं धर्म से सम्बन्धित विषयों के पाठ्यक्रमों में भाई जी एवं उनके साहित्य को समाविष्ट करने की बात भी कही।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष प्रोफेसर ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने कहा, कि वास्तव में भाई जी आधुनिक युग के हनुमान थे, जिन्होंने भारत की सनातन संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाया। वो एक सांस्कृतिक दूत थे। भारत की कल्याणमयी परम्परा और संस्कृति की स्थापना के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कल्याण पत्रिका का संपादन किया। उद्घाटन सत्र के बाद चले दो अकादमिक सत्रों में भाई जी के व्यक्तित्व, उनके जीवन चरित्र, कार्यों आदि को केंद्र में रखते हुए 15 शोध-पत्रों का वाचन किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ के अध्यक्ष प्रोफेसर सदानंद प्रसाद गुप्ता ने कहा कि पूज्य भाई जी स्वयं तो उच्च कोटि के विद्वान तो थे ही, देश भर के अग्रिम पंक्ति के लेखकों, विचारकों एवं समाज-सुधारकों के साथ उनके अत्यंत आत्मीय सम्बन्ध थे, और इसी का परिणाम है कि उनके द्वारा सम्पादित पत्रिका कल्याण में देशभर के विद्वानों के उच्च कोटि के लेखों का संकलन प्राप्त होता है। इस अवसर पर सम्पूर्ण संगोष्ठी का कार्यवृत्ति संगोष्ठी संयोजक प्रोफेसर हिमांशु चतुर्वेदी ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के निदेशक डॉ. ओम जी उपाध्याय ने किया तथा संगोष्ठी में आये हुए अतिथियों के प्रति आभार इतिहास विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर निधि चतुर्वेदी ने किया।

2. ''युग युगीन कुशीनगर'' राष्ट्रीय संगोष्ठी 31 अगस्त एवं 1 सितम्बर, 2019

पौराणिक मान्यतानुसार राम के पुत्र कुश द्वारा कुशावती (वर्तमान कुशीनगर) नगर की स्थापना के उल्लेख प्राप्त होते है। प्राचीन काल से ही कुशीनगर भारत के राजनैतिक, सांस्कृतिक गतिविधियों का अविभाज्य अंग रहा है। कुशीनगर के ऐतिहासिक एवं समसामयिक महत्त्व पर

पहली बार अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली ने विस्तृत परिचर्चा के लिए एक राष्ट्रीय संगोष्ठी ''युग युगीन कुशीनगर'' विषय पर भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्ष प्रान्त के उपाध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश मंगलम को आयोजित करने की जिम्मेदारी दी। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन बुद्ध पी.जी. कालेज कुशीनगर में किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुंद पाण्डेय, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष प्रोफेसर ईश्वर शरण विश्वकर्मा, प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, अध्यक्ष भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त, डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के निदेशक डॉ. ओम जी उपाध्याय, प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी जैसे मनीषी विस्तृत चर्चा की। यह संगोष्ठी मुख्य रूप से 4 सत्रों में विभाजित थी। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों से करीब 125 प्रतिभागियों ने कुशीनगर के महत्त्व को रखा और विभिन्न आयामों पर परिचर्चा की।

3. रिविसिटिंग चौरी-चौरा : ए लोकल इवेंट ऑन नेशनल डाइमेंशन, 23 एवं 24 नवम्बर 2019

देश को स्वतंत्र कराने की दिशा में भारत में जो राष्ट्रवादी एवं क्रांतिकारी गतिविधियां संपन्न हुई उनमें चौरी चौरा की घटना ने पूर्वांचल सहित संपूर्ण देश के जनमानस को झिंझोड़ने का कार्य किया था। यह घटना कोई सामान्य घटना नहीं थी, बावजूद जनमानस को जगाने वाली इस घटना को पाश्चात्य एवं वामपंथी इतिहासकारों ने 'काण्ड' कहकर इसे इतिहास के पन्नों में दो लाइन में समेट दिया। वस्तुतः यह वह घटना थी जिसके परिणामस्वरूप जनमानस के उभरते ज्वार को देखते हुए महात्मा गांधी को अपना असहयोग आंदोलन स्थगित कर देना पड़ा था। देश तो 1947 में आजाद हो गया परंतु आजादी के 70 वर्ष बाद भी इस घटना में शहीद लोगों के परिजनों को न ही न्याय मिला और न ही उचित सम्मान। इस घटना को राष्ट्रीय स्तर पर न्याय दिलाने एवं इसके विविध पक्षों पर चर्चा करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली ने पुनः एक बार भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्ष प्रांत के अध्यक्ष प्रोफेसर हिमाशुं चतुर्वेदी को जिम्मेदारी दी। परिणामस्वरूप रिविजिटिंग चौरी चौरा : ए लोकल इवेंट ऑन नेशनल डायमेंशन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 23 एवं 24 नवंबर 2019 को किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन एवं समापन सत्र में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के चेयरमैन अरविंद पी. जामखेड़कर, आर्गेनाइजर के संपादक श्री प्रफुल्ल केतकर, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुंद पाण्डेय एवं उच्चत्तर शिक्षा सेवा आयोग उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष प्रोफेसर ईश्वर शरण विश्वकर्मा, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के शोध निदेशक डॉ. ओम जी उपाध्याय जैसे मनीषियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। संगोष्ठी में कुल 4 तकनीकी सत्र एवं एक समूह परिचर्चा सत्र का आयोजन हुआ जिसमें देश भर से उपस्थित 150 से अधिक विद्वानों ने इस विषय पर अपना मत रखते हुए कहा कि देश, काल, घटना और प्रभाव इतिहास के चार आयाम होते हैं और इन्हीं आधारों पर भारत के इतिहास का निरूपण किया जाना चाहिए। चौरी चौरा घटना की प्रचण्डता ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद को हिला कर रख दिया था। चौरी चौरा की घटना ने वस्तुतः भारतीय जनमानस की सांप्रदायिक एकता, आत्माभिमान जागरण, स्वशासन की क्षमता का प्रत्यक्षीकरण और आत्मावलंबन की क्षमता को उजागर करने का कार्य किया।

संगोष्ठी के दौरान एक मुक्त परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में चौरी चौरा घटना में शहीदों के परिवारजनों आदरणीय बृजराज जी, आदरणीय राम नारायण तिवारी जी और आदरणीय वेंकटेश भगवान दूबे सहित अन्यान्य लोगों को विद्वतजनों द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शहीदों के परिवारजनों ने सभा से तत्कालीन घटनाओं की परिस्थितियां एवं तदुपरांत के अपने अनुभवों को साझा किया।

संगोष्ठी में विद्वतजनों ने सर्वसम्मति से चौरी चौरा को राष्ट्रीय संरक्षण स्थल के रूप में नियोजित करने हेतु एक प्रस्ताव बनाकर सक्षम निकायों में भेजे जाने की संस्तुति की ताकि चौरी चौरा राष्ट्रीय फलक पर एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में स्थापित हो सके।

4. भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार, 3-4 जनवरी 2020

यदि समग्र विश्व की सभ्यता और संस्कृति का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाए तो निःसंदेह भारतीय संस्कृति का न्यूनाधिक वास हमें विश्व के हर क्षेत्र में दिखाई पड़ेगा। हिंदूकुश और हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित समुद्र पर्यंत भारतीय भूभाग में वैदिक नदियों के तट पर जिन सभ्यताओं का उदय हुआ उनकी शाखाएं वैश्विक स्तर पर प्रसारित हुई। भारतीय विचार दर्शन ने प्राचीन काल में विश्व में जो अपनी धाक जमाई थी उसका प्रमाण हम वर्तमान में चीन, जापान, अफगानिस्तान, इंडोनेशिया, कंबोडिया, वियतनाम आदि देशों में देख सकते हैं।

*पुमान् पुमांस परि पातु विश्वतः (ऋग्वेद 6.75.14)

*याश्च पश्यामि यांश्च न तेशु मा सुमतिं कृधि (अथर्ववेद 17.1.17)

शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति, पृथ्वी शान्तिरायः .....। (यजुर्वेद 36.17)

समानंमनः सह चित्तमेशाम्। (ऋग्वेद 10.191.3)

माता भूमिः पुत्रेऽहं पृथिव्याम् (अथर्ववेद 12.1.12)

इत्यादि विश्व भावना समेटे भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर विचार विमर्श एवं हो रहे शोधों से अवगत होने की दृष्टि से महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ ने भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी कराने का निर्णय लिया। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के आर्थिक सहयोग से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को रेखांकित करने एवं विश्व में उसके प्रसार की प्राचीन तथा वर्तमान प्रासंगिकता को प्रस्तुत कर लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाली रही।

संगोष्ठी का उद्घाटन एवं समापन सत्र में विश्व बुद्धिस्ट मिशन जापान के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मेघांकर रवि, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुंद पाण्डेय, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ. कुमार रत्नम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के संस्कृत विभाग के आचार्य प्रोफेसर संतोष कुमार शुक्ल, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष शीतला प्रसाद सिंह, प्रोफेसर विपुला दुबे, प्रोफेसर राजवंत राव, प्रोफेसर दिग्विजय नाथ मौर्य, प्रोफेसर प्रज्ञा चतुर्वेदी, डॉ. राम प्यारे मिश्र, इतिहास विभाग के प्रोफेसर मुकुंद शरण त्रिपाठी, प्रोफेसर हिमांशु चतुर्वेदी, प्रोफेसर निधि चतुर्वेदी, डॉ. मनोज तिवारी, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव आदि विद्वानों की सक्रिय उपस्थिति रही। साथ ही साथ देश भर से आए हुए 200 से ज्यादा विषय विशेषज्ञों एवं शोधार्थियों ने इस संगोष्ठी में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।

इतिहास दिवस कार्यक्रम के तहत विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला -

इतिहास दिवस के कार्यक्रम का आयोजन प्रत्येक माह में होता है। इतिहास दिवस किसी महापुरुष/घटना या क्षेत्रीय व्यक्तित्व/घटना पर आधारित होता है। इसके तहत वर्ष 2019 के कार्यक्रम निम्न है-

1. 23 जनवरी 2019 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर दीनदयाल

उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग द्वारा विशेष व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन **मुख्य वक्ता डॉ. हरेन्द्र शर्मा** रहे।

2. 19 फरवरी 2019 को शिवाजी महाराज की जयंती के अवसर पर राजेंद्र प्रसाद ताराचंद महाविद्यालय निचलौल महाराजगंज में भारतीय इतिहास के विकृत करने के कुछ प्रयास विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम **मुख्य वक्ता श्री सुबोध कुमार मिश्र** रहे।

3. 23 मार्च 2019, शहीद दिवस पर राघव प्रसाद मसाली देवी महिला महाविद्यालय में भगत सिंह एवं उनके विचार विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम, **मुख्य वक्ता डॉ. सच्चिदानन्द चौबे**

4. 14 अप्रैल 2019, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती पर हसराज राम लालदेई महाविद्यालय झुडिया, खजनी में डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं भारत विभाजन पर उनके विचार विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम, **मुख्य वक्ता डॉ. सर्वेश चन्द्र शुक्ल**

5. 9 मई 2019, महाराणा प्रताप जन्मोत्सव पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय, लक्ष्मीगंज, कुशीनगर, **मुख्य वक्ता डॉ. सचिन राय एवं डॉ. कन्हैया सिंह**

6. 9 जून 2019, अमर शहीद बिरसा मुंडा पुण्य दिवस पर जनजातीय इतिहास लेखन पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन इतिहास विभाग गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **मुख्य वक्ता डॉ. मनोज तिवारी**

7. महिला इतिहासकार: एक विमर्श, 25 जुलाई 2019 इतिहास विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, **मुख्य वक्ता, प्रो. विपुला दुबे एवं डॉ. बाल मुकुंद पाण्डेय**

8. 27 अगस्त 2019, जलियांवाला बाग नरसंहार: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन, विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, **मुख्य वक्ता प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी**

9. 26 सितम्बर, 2019, भारतीय संस्कृति, विचारधारा और वैश्विक दर्शन विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम, राम गिरीश राय महाविद्यालय, दुबौली, गोरखपुर, **मुख्य वक्ता डॉ. बाल मुकुंद पाण्डेय**

10. 21 अक्टूबर 2019, आजाद हिन्द फौज स्थापना दिवस विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम, चन्द्रगुप्त मौर्य प्रभावंश महिला महाविद्यालय, मथौली बनकटी, बस्ती, मुख्य

वक्ता, **डॉ. अजय कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार गौतम**

11. 4 नवम्बर 2019, वासुदेव बलवंत फडके जयंती, विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम, पी.डी. एकेडमी, देवरिया, **मुख्य वक्ता, डॉ. स्वेजा त्रिपाठी**

12. 19 दिसम्बर 2019, बलिदान दिवस, (रोशन सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां), विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय, लक्ष्मीगंज, कुशीनगर, **मुख्य वक्ता डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी**

गोरक्ष भूमि के अतीत एवं वर्तमान के इतिहास, संस्कृति, परम्परा को भारतीय चेतना के अनुरूप साक्ष्यों के आधार पर वास्तविक इतिहास संजोने की दृष्टि से भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त प्रकाशन की दृष्टि से एक शोध पत्रिका 'प्राच्य धारा' एवं पुस्तकों का प्रकाशन करती है।

*****

गोरखपुर में सँवर रहा है खेल

अरूणेश शाही

पूर्वांचल का केन्द्र गोरखपुर जो गोरक्षनाथ जी के नाम पर विश्व विख्यात हुआ। इस धरती को गोरक्षनाथ जी की तपस्थली मानी जाती है जिसको गोरक्षनाथ जी, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, कबीर जैसे महान सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, ऐसी धरती पर धार्मिक क्षेत्र के अलावा क्रीड़ा, खेलकूद, विज्ञान, चिकित्सा, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्रों में भी प्रतिभाएं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर ख्याति प्राप्त कर रहे है।

विषयानुरूप यहाँ पर खेलकूद क्रीड़ा से सम्बन्धित तक ही लेख को सीमित करते हुए यह बताना अनिवार्य है कि यहाँ के खेलकूद से सम्बन्धित विभूतियाँ एशिया और ओलम्पिक स्तर तक पूर्वांचल का नाम रोशन किए है, वह भी ऐसी परिस्थिति में जब खेलकूद के प्रशिक्षण एवं सुविधाओं के अवसर अपने निम्नतर स्तर पर रहे हो, हम उन सभी राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिभावान व्यक्तियों का सम्मान करते है जो उपरोक्त वर्णित निम्नतर सुविधाओं में सुविधा सम्पन्न, प्रशिक्षण सम्पन्न खिलाड़ियों को पराजित कर भारत को गौरवान्वित किए।

पूर्वांचल के ख्यातिलब्ध कुश्ती पहलवान भारतभीम स्व. जनार्दन सिंह, श्री दिनेश सिंह पहलवान, ओलम्पियन, पद्मश्री एवं द्रोणाचार्य सम्मान से सुशोभित श्री संजीव सिंह (तीरंदाजी), ओलम्पियन श्री आर.पी. सिंह (हॉकी), पन्नेलाल यादव, रामासरे यादव, अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती में पूर्वांचल का नाम रोशन किए, चन्द्रविजय सिंह की प्रतिभाओं को कौन नहीं जानता जिन्होंने कई बार अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में भारत का नेतृत्व किया और राष्ट्रीय कुश्ती प्रशिक्षक के रूप में रियोओलम्पिक में भारत टीम का नेतृत्व किए एवं पदक हासिल किए।

पूर्वांचल में खेलकूद, क्रीड़ा में तीव्रता और प्रतिभाओं की खोज हेतु गोरक्षपीठाधीश्वर

अध्यक्ष, जिला कबड्डी संघ, गोरखपुर

परम् पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज मुख्यमंत्री उ.प्र. ने विगत् 24 वर्षों में अपने भगीरथ प्रयास से सभी प्रकार के खेल आयोजनों को प्रोत्साहित कर दूर-दराज गांव के प्रतिभाओं को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मंच पर पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं, वो खुद भी अपने छात्र जीवन में एक अच्छे खिलाड़ी के रूप में भी जाने जाते रहे है, अब जबकि वह स्वत: मुख्यमंत्री उ.प्र. हैं तो पूर्वांचल के प्रतिभावान खिलाड़ियों को उच्चतर स्तर की सुविधा एवं खेल से सम्बन्धित साजो-सामान को उपलब्ध कराने में हिचकते नहीं हैं और इसका आधुनिकीकरण करके खिलाड़ियों को चाहे वह गरीब या सीमित संसाधनों के परिवेश से आया हो उसको विश्व स्तरीय सुविधा उपलब्ध करा रहे है, वहीं दूसरी तरु पुरस्कार राशि को बढ़ाकर विकसित राज्यों के स्तर तक लाने का हर सम्भव प्रयास कर रहे हैं।

गोरक्षनाथ मंदिर परिसर में नागपंचमी के अवसर पर प्रतिवर्ष कुश्ती का आयोजन होता है, जिसमें इस वर्ष गोरखपुर केसरी का खिताब जीतने वाला पहलवान अमरनाथ यादव उ.प्र. केसरी का खिताब भी अपने नाम करके राष्ट्रीय चैम्पियन बनकर राष्ट्र मण्डलीय कुश्ती प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल किया, इस वर्ष ग्रामीण क्षेत्र के गांव माड़ापार की बालिका पुष्पा यादव कैडेट वर्ल्ड चैम्पियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। गोरखपुर के दक्षिणांचल में स्थित ग्राम चतुर बन्दुआरी का ज्ञान सिंह व्यायामशाला जहाँ कुश्ती हाल का निर्माण जो अन्तर्राष्ट्रीय पहलवान श्री दिनेश सिंह की देख-रेख में चलता है, अपने परम वैभव पर पहुँच रहा है, जहाँ से जूनियर स्टेट कुश्ती चैम्पियन में विनय पासवान ने गोल्ड मेडल और वन्दना यादव ने महिला वर्ग में रजत पदक जीतकर गोरखपुर मण्डल का खाता खोला और प्रदेश में गोरखपुर का नाम रोशन किया।

श्री दिनेश सिंह पहलवान ने कुश्ती को जो पहले मिट्टी के अखाड़े पर होता रहा है, और कुछ सीमित लोगों की सहभागिता होती थी, को राष्ट्रीय स्तर तक आधुनिक साज-सज्जा से सम्पन्न करते हुए, गांव-गांव, दूर-दराज के प्रतिभाओं को खोज कर अपने अथक प्रयास से प्रदेश और राष्ट्र स्तर पर लाने का सफल प्रयोग कर रहे हैं।

इसी प्रकार पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर के आशीर्वाद और मार्गदर्शन में अरूणेश शाही जी जो स्वयं नेशनल एवं इण्टर-यूनिवर्सिटी स्तर के खिलाड़ी रहे है, ने उत्तर प्रदेश पुरुष एवं महिला कबड्डी चैम्पियनशिप का सफल आयोजन कराकर पूर्वांचल में कबड्डी की लोकप्रियता को घर-घर तक पहुँचाते हुए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर लाने का प्रयास कर रहे है, इनके अथक् प्रयास से प्रतिवर्ष परम् पूज्य महन्त अवेधनाथ महाराज अखिल भारतीय

प्राइजमनी पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन होता है जिसमें विजेता टीम को 02 लाख रू., उपविजेता टीम को 01 लाख रू. का नगद पुरस्कार, उ.प्र. खेल विभाग से दिया जाता है एवं तृतीय स्थान पाने वाली टीम को स्वयं श्री अरूणेश शाही, अध्यक्ष गोरखपुर जिला कबड्डी संघ द्वारा 51000 रू. नगद पुरस्कार दिया जाता है जिसमें राष्ट्रीय स्तर की 12 टीमें भाग लेती हैं, इसके साथ ही इस वर्ष पूर्वोत्तर रेलवे ने अन्तर रेलवे कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें कुल 15 टीमों ने भाग लिया एवं चैम्पियनशिप पूर्वोत्तर रेलवे को प्राप्त हुआ, पूर्वोत्तर रेलवे में अन्तर्राष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी सुनील, प्रवेश, श्रीकांत एवं अमित नागर भी कार्यरत हैं।

गोरखपुर के लिए यह वर्ष खेल जगत का गौरवमयी वर्ष रहा है। इसी वर्ष में परम् पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी के आशीर्वाद से वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज में हॉकी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का ऐस्टोटर्फ मैदान बनकर तैयार हुआ जो उ.प्र. में लखनऊ, कानपुर के बाद गोरखपुर में ही उपलब्ध है। ऐस्टोटर्फ हो जाने से इस मैदान पर धीरज सिंह हरीश, उपाध्यक्ष हॉकी संघ के अथक प्रयास से भारतीय हॉकी फेडरेशन एवं उ.प्र. हॉकी संघ के माध्यम से भारत बनाम फ्रांस अन्तर्राष्ट्रीय महिला हॉकी प्रतियोगिता का सफल आयोजन हुआ जिसका समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय मुख्यमंत्री उ.प्र. सरकार मुख्य अतिथि के रूप में तथा श्री जे.पी. नड्डा माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार विशिष्ट अतिथि के रूप में विराजमान रहकर, अपने कर-कमलों द्वारा हुआ।

*****

क्षितिज पर छाया अपना शहर, गर्व से कहें गोरखपुरी हैं हम

अजय कुमार सिंह एवं डॉ. प्रदीप कुमार राव

कोई शहर, जिला, प्रदेश या देश महान तब बनता है जब उसके नागरिक समाज का बड़ा हिस्सा इस दिशा में एक साथ सोचता और ऐसे नेतृत्व के साथ खड़ा होता है तो बिना थके, बिना रुके अनवरत प्रयत्नशील हो। लेकिन ऐसी परिस्थितियां हमेशा नहीं बन पातीं। व्यक्ति हो या क्षेत्र, प्रकृति राह में फूल हर वक्त नहीं बिछाती। ईश्वर की असीम अनुकम्पा और सदियों के पुण्य जुड़ते हैं तभी ऐसे अनुकूल वातावरण का निर्माण होता है। गोरखपुर के लिए यह अवसर जाने कितनी सदियां गुजर जाने के बाद आया है। प्राचीन भारत में आध्यात्मिक चेतना का वैश्विक केंद्र और स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कुछेक बार को छोड़कर सात दशकों तक देश-प्रदेश की सरकारों ने गोरखपुर के पिछड़ेपन और अभावों को खत्म करने के लिए समुचित प्रयत्न नहीं किए। अंग्रेज यहां से नौजवानों को गिरमिटिया मजदूर बनाकर ले जाते और अपने औपनिवेशिक साम्राज्य की भट्ठी में झोंक देते थे। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी यह क्षेत्र 'लेबर बेल्ट' ही बना रह गया। रेल, बस की छतों और हवाई जहाजों पर लदकर कोलकाता, मुंबई, चेन्नई, दिल्ली ही नहीं देश के कोने-कोने और बैंकाक, सिंगापुर, अरब के देशों में पूर्वांचल का मजदूर पहुंचता रहा। उन जगहों के विकास में अपनी जवानी झोंकता रहा। सरकारी नीतियां उसके सपनों का तेल निकालती रहीं। सुख और सम्मानपूर्वक जीवन जीते हुए जीवन के सर्वोच्च लक्ष्यों को हासिल करने की हमारी सामुदायिक चेतना को जागृत होने से रोकने के

*वरिष्ठ पत्रकार, हिन्दुस्तान समाचार पत्र, गोरखपुर

**प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

लिए तरह-तरह की साजिशें रची गईं। हमारे स्वर्णिम इतिहास और मेधा की उपेक्षा करते हुए अवसरों से वंचित रखने का ऐसा सिलसिला चलाया गया जिसने नागरिक समाज का सामूहिक आत्मविश्वास ही खत्म होता चला जाए। छोटी-छोटी सुविधाओं को तरसता समाज किसी तरह जीवन यापन की सोच से बाहर ही न आ पाए। बड़े शहरों और विदेशी अट्टालिकाओं, सुख सुविधाओं के किस्से उसकी जुबां पर हों लेकिन अपने यहां वैसी चीजों की कल्पना भी न कर सके। जिस धारा से बुद्ध, गोरखनाथ और कबीर ने दुनिया को नई राह दिखाई हो वहां के निवासियों की ऐसी दीनहीन दशा हमें मुँह चिढ़ा रही थी। विकास के पैमाने पर क्षेत्रीय असंतुलन उत्तर प्रदेश की सच्चाई बना हुआ था और सबसे बड़े दुःख की वजह यह थी कि कोई इसे दूर करने के बारे में सोचता भी न था। राजनीतिक दल और नेता हमारी विवशताओं पर अफसोस तो जताते थे लेकिन हालात बदलने को तैयार न थे। शायद वे मानते थे कि शिक्षा, रोजगार, उपचार, आवास और गुणवत्ता पूर्ण जीवन के लिए अच्छा वातावरण यदि सबको बिना किसी बिचौलिए के आसानी से मिलने लगा तो फिर झूठे सपने दिखाकर वोट की फसल उगाने और काटने का सिलसिला थम जाएगा। ऐसी संकीर्ण सोच से पीड़ित राजनेता गोरखपुर सहित समूचे पूर्वांचल के विकास को टालते जा रहे थे लेकिन कहते हैं न कि समय का पहिया कभी नहीं रुकता। कभी न कभी तो गोरखपुर और पूर्वांचल का भी समय आना ही था।

साल-2017 का विधानसभा चुनाव वह अहम मोड़ था जब गोरखपुर और पूर्वांचल के साथ-साथ पूरे प्रदेश के लिए अच्छे दिनों की शुरुआत हो गई। गोरखपुर का तो भाग्य ही खुल गया, क्योंकि प्रदेश की सबसे बड़ी कुर्सी पर उसके गोरक्षपीठाधीश्वर महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी आसीन हुए। श्री योगी आदित्यनाथ जी का मुख्यमंत्री बनना इस बात का द्योतक था कि अब उत्तर प्रदेश के सभी जिलों के हालात बदलेंगे। हाकिमों के यहां चक्कर लगाने की बजाए द्वार पर खड़ी सरकार का सुख सारे प्रदेश की जनता को मिलेगा और जब सबका समान ढंग से विकास का हो रहा हो तो गोरखपुर भी इससे अछूता न रह पाएगा। पिछले तीन साल गोरखपुर के साथ पूर्वांचल, बुंदेलखंड और पश्चिमी उत्तर प्रदेश ने यही देखा। प्रदेश के सारे जिले वीआईपी बनकर जगमगाने लगे। अब तक उपेक्षित रहने वाला गोरखपुर भी सारे चमकते जिलों के साथ अपनी चमक की निराली छटा बिखेरने लगा। फिर एक-एक करके नहीं बल्कि एक साथ विकास के इतने काम शुरू हो गए कि विरोधियों के पास भी उठाने को कोई मुद्दा न बचा। तेज गति के साथ विकास के क्षितिज पर छा जाने का सिलसिला 2017 से शुरू होकर

लगातार जारी है। 2017 और 2018 की उल्लेखनीय उपलब्धियों का जिक्र 'मंथन' के पिछले अंकों में हो चुका है। इस बार हम सिर्फ 2019 की बात करेंगे और यदि कहीं 2017, 2018 का जिक्र आएगा तो केवल संदर्भवश।

2019, गोरखपुर के लिए शानदार उपलब्धियों का साल रहा। शुरुआत तीन जनवरी को संग्रामपुर उनवल कस्बे से हुई जहां मुख्यमंत्री जी ने 35.68 करोड़ की परियोजनाओं का शिलान्यास किया। इसी कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जी ने एलान किया कि प्रदेश में जल्द ही 69 हजार शिक्षकों और 50 हजार पुलिसकर्मियों की भर्ती की जाएगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने वहां 1207 लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत उनके आवास के प्रमाण पत्र भी दिए। उनवल में जिन परियोजनाओं का शिलान्यास किया गया उनमें संग्रामपुर नगर पंचायत का कार्यालय भवन, पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर विकास योजना के तहत विभिन्न सड़कों और गलियों की इंटरलॉकिंग, पथ प्रकाश की व्यवस्था, अंत्येष्टि स्थल आदि के निर्माण कार्य प्रमुख रूप से शामिल थे। योगी जी की सरकार ने सत्ता में आते ही उनवल को नगर पंचायत घोषित किया था। अब यहां तेजी से विकास हो रहा है। लोगों की मांग को देखते हुए उनवल कस्बे में बाईपास बनाया जा रहा है। इससे संग्रामपुरवासियों को जाम से मुक्ति मिलेगी। कस्बे के चौराहे का भी सौन्दर्यीकरण सरकार करा रही है। शिलान्यास कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के जिन लाभार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित कर दिए गए हैं, जिला प्रशासन और अन्य सम्बन्धित विभाग मिलकर शीघ्रता और गुणवत्तापूर्ण ढंग से उनके आवास तैयार कराएं। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जी ने राज्य सरकार की भेदभाव रहित कार्यशैली का उल्लेख करते हुए यह भी बताया कि वर्तमान राज्य सरकार बिना किसी भेदभाव के रोस्टर के अनुरूप प्रदेश के सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करा रही है। 3.5 लाख राशन कार्ड वितरण का कार्य भी युद्ध स्तर पर चल रहा है। इसमें कार्ड धारक को 35 किलो राशन उपलब्ध कराया जा रहा है। गोरखपुर में तेजी से बन रहे एम्स का निर्माण पूरा हो जाने से लोगों को यहां मिलने वाली उच्च स्तर की स्वास्थ्य सुविधाओं और फर्टिलाइजर कारखाने का निर्माण पूरा हो जाने से युवाओं को मिलने वाले रोजगार का भी उल्लेख इस कार्यक्रम में हुआ। इसके साथ ही धुरियापार में एथेनॉल प्लाण्ट लगने से हजारों नौजवानों को रोजगार मिलने और गोरखपुर में पीएनजी के जरिए घर-घर सस्ती रसोई गैस पहुंचाने की भी बात हुई।

जन काज किए बिना सरकार को नहीं विश्राम

जैसे हनुमान जी कहते हैं कि 'राम काज किए बिना, मोहे कहां विश्राम' वैसे ही भगवान श्रीराम के आदर्शों पर चलते हुए प्रदेश में रामराज्य स्थापित करने की कोशिश कर रहे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने 'जन काज किए बिना सरकार को कहां विश्राम' को अपना सूत्रवाक्य बना लिया है। मुख्यमंत्री जी जब भी गोरखपुर या किसी अन्य जिले के दौरे पर होते हैं अपने एक-एक पल का सदुपयोग करते हैं। तीन जनवरी को उनवल कस्बे में 35.68 करोड़ की योजनाओं का शिलान्यास करने के अगले ही दिन यानि चार जनवरी 2019 को उन्होंने गोरखपुर के नुमाइश ग्राउंड में वृद्धजन, निराश्रित महिलाओं तथा दिव्यांगजन को नई पेंशन के कुल 31,549 स्वीकृति पत्र वितरित किए। 4500 गरीब असहायों को कम्बल दिए। दिव्यांगजन को 1,990 कृत्रिम अंग, सहायक उपकरण दिए। 923 लाख रुपए की लागत की 112 परियोजनाओं का शिलान्यास किया। 68 प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 75.7294 लाख रुपए से स्थापित 2473 डेस्क-बेंच और 1.75 लाख रुपए से 4 प्राथमिक विद्यालयों में निर्मित 5 शौचालयों का लोकार्पण किया। इसके अलावा शादी अनुदान योजना के तहत अनुसूचित जाति के 366, सामान्य वर्ग के 56 और पिछड़ा वर्ग के 930 लाभार्थियों को प्रमाण पत्र दिए।

अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के लिए काम कर रही सरकार

नुमाइश ग्राउंड की सभा में मुख्यमंत्री जी ने दो अत्यंत महत्वपूर्ण बातें कहीं। पहली कि विकास का कोई विकल्प नहीं है। दूसरी कि राज्य सरकार समाज में अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की चिंता कर रही है। योजनाएं उसे केंद्र में रखकर संचालित की जा रही हैं। सरकार की सफलता का पैमाना वह अंतिम व्यक्ति है। सोच यह है कि यदि समाज का अंतिम व्यक्ति खुशहाल है तो माना जाएगा कि सरकार सही दिशा में बढ़ रही है। यह सच है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अगुवाई में चल रही केन्द्र और मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी की अगुवाई में चल रही राज्य सरकार ने गरीबों के हित में अनेक योजनाएं लागू की हैं। प्रदेश सरकार बिना भेदभाव जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए निरंतर काम कर रही है। मुख्यमंत्री जी ने अधिकारियों को निर्देशित कर रखा है कि लोकहित में कराए जा रहे काम गुणवत्तायुक्त और समयबद्ध ढंग से पूरे किए जाएं। नुमाइश ग्राउंड के कार्यक्रम में नई पेंशन के कुल 31,549 स्वीकृति पत्र वितरित किए गए जिनमें 19,330 वृद्धावस्था पेंशन, 10,694 निराश्रित-विधवा पेंशन और 1,525 दिव्यांग पेंशन के

स्वीकृति पत्र लाभार्थियों को दिए गए। साथ ही, दिव्यांगजन को 1,990 कृत्रिम अंग-सहायक उपकरण दिए गए जिनमें से लगभग 20 लाभार्थियों को मुख्यमंत्री जी ने स्वयं स्वीकृति पत्र और उपकरण दिए। कार्यक्रम में बताया गया कि जिले में अभी तक 69,604 लोग वृद्धावस्था पेंशन, 45,836 लोग निराश्रित विधवा पेंशन तथा 22,797 लोग दिव्यांग पेंशन से लाभान्वित हो रहे थे। चार जनवरी को इसके अलावा 31,549 नए लाभार्थियों को विभिन्न पेंशनों से आच्छादित करने के लिए स्वीकृति पत्र वितरित किए गए। मुख्यमंत्री जी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि कोई भी पात्र लाभार्थी पेंशन योजना से वंचित नहीं होना चाहिए। इस कार्यक्रम से पहले भी गोरखपुर में दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग उपलब्ध कराने के लिए शिविरों का आयोजन किया गया था। नुमाइश ग्राउंड में एक साथ 140 दिव्यांगजन को मोटराइज़्ड ट्राईसाइकिल, 300 ट्राइसाइकिल, 200 व्हीलचेयर, 400 बैसाखी, 50 ब्लाइन्ड छड़ी, 400 कान की मशीन, 500 कृत्रिम अंग उपलब्ध कराये गए। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जी ने विधायकों और जन प्रतिनिधियों से भी अपेक्षा की कि वे भी दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग-सहायक उपकरण उपलब्ध कराने में अपनी निधि से सहायता करें।

बदल रहा है गोरखपुर

गोरखपुर बदल रहा है। नए साल में अत्याधुनिक प्राणि उद्यान का तोहफा शहरवासियों को मिल जाएगा। अत्याधुनिक वाटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, प्रेक्षागृह की स्थापना की जा रही है। मुख्यमंत्री जी ने इन योजनाओं को तेजी से पूरा करने के निर्देश अधिकारियों को दिए हैं। क्षेत्रफल और खूबसूरती के लिहाज से देश का महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल बन सकने में समर्थ रामगढ़झील को अब तक यूं ही छोड़ दिया गया था। अब यह उत्तर प्रदेश का प्रमुख पर्यटन केन्द्र बन रहा है। विकास की ये योजनाएं गोरखपुर को एक अलग पहचान दिला रही हैं। गोरखपुर में एम्स का निर्माण भी तेजी से चल रहा है। 12 विभागों की ओपीडी शुरू हो चुकी है। आम आदमी की स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर दिशा में बढ़ रही हैं। बीआरडी मेडिकल कालेज में भी बड़े पैमाने पर परिवर्तन कर अनेक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। गोरखपुर से नेपाल, महराजगंज, कुशीनगर, देवरिया, वाराणसी सहित कई स्थानों को फोरलेन मार्ग से और विभिन्न महानगरों को वायु सेवा से जोड़ा जा रहा है। 26 वर्षों से बन्द चल रहा फर्टिलाइजर कारखाना जल्द ही चालू होने वाला है। इससे किसानों को खाद की उपलब्धता के साथ-साथ हजारों नौजवानों को रोजगार मिलेगा।

नए और पुराने का संगम गोरखपुर महोत्सव

सरकारी उपेक्षा के चलते पूर्व में गोरखपुर में महोत्सव कभी-कभार ही होते थे। योगी जी की सरकार बनने के बाद 2018 से लगातार गोरखपुर महोत्सव न सिर्फ हो रहा है बल्कि यह हर बार नए आयाम भी गढ़ रहा है। महोत्सव में अपनी विरासत के साथ-साथ विकास के प्रदर्शन का मौका भी शहरवासियों को मिल रहा है। यह महोत्सव मुख्यमंत्री जी की उस सोच की परिणति है जो कहती है कि **'संस्कृति किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है और राष्ट्र एक जीता जागता स्वरूप होता है।'**

गोरखनाथ मंदिर में सदियों से लगने वाले खिचड़ी मेले की तरह गोरखपुर महोत्सव भी पूर्वांचल की विरासत, यहां के गीत, संगीत, कला, संस्कृति, शिल्प के प्रदर्शन का केंद्र बन गया है। यहां सरकारी और गैरसरकारी दोनों क्षेत्रों के लोगों को अपनी उपलब्धियां प्रदर्शित करने का मौका मिलता है। महोत्सव में समाज के सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व मिल रहा है। ऐसे ही महोत्सव प्रदेश के सभी जिलों में आयोजित किए जा रहे हैं। लोगों को जोड़ा जा रहा है। महोत्सव में हर स्तर के कलाकारों को मंच दिया जा रहा है। गोरखपुर महोत्सव के आयोजन में पर्यटन विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पर्यटन केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि रोजगार के नए अवसरों और संस्कृति को समझने का अवसर देता है।

उत्तर प्रदेश, पर्यटन के क्षेत्र में देश में दूसरे स्थान पर है। प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। गोरखपुर और आसपास के क्षेत्रों में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। गोरखपुर में इधर लिटरेचर फेस्टिवल, एडवेंचर स्पोर्ट्स और वॉटर स्पोर्ट्स आदि पर तेजी से काम हो रहा है। पर्यटन के विकास की दृष्टि से चिलुआताल के सौन्दर्यीकरण की कार्ययोजना बनाई गई है। गोरखपुर महोत्सव में पुस्तक मेला और बुक रीडिंग फेस्टिवल भी आयोजित किया जा रहा है। 70 से अधिक विद्यालयों में लाइब्रेरी शुरू की जा रही हैं। महोत्सव की अलग-अलग प्रतियोगिताओं में पिछले साल लगभग 50 हजार छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनी, नृत्य संगीत और टैलेण्ट हंट जैसी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। इसमें खेल-कूद की विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं।

जिला महिला चिकित्सालय की क्षमता कई गुना बढ़ी

जनवरी 2019 में ही मुख्यमंत्री जी ने गोरखपुर के जिला महिला चिकित्सालय परिसर में 50.75 करोड़ रुपए की लागत की नौ परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। जे.

ई.-ए.ई.एस. रोग की रोकथाम और इसकी कार्ययोजना सम्बन्धी पुस्तक का विमोचन भी किया। 50.75 करोड़ रुपयों में से 45.56 करोड़ रुपए की लागत की छह परियोजनाओं का लोकार्पण और 5.19 करोड़ रुपए की लागत की तीन परियोजनाओं का शिलान्यास हुआ। लोकार्पित 100 शैय्यायुक्त एम.सी.एच. विंग और 100 शैय्यायुक्त क्षय रोग सह सामान्य चिकित्सालय और तीन मिनी पी.आई.सी.यू. आम लोगों को महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में काफी उपयोगी होगा। इन स्वास्थ्य सुविधाओं से केवल गोरखपुर नहीं, बल्कि नेपाल, बिहार और बस्ती, आजमगढ़ आदि मण्डलों के मरीज भी लाभान्वित होंगे। 100 शैय्या एम.सी.एच. विंग और क्षय रोग सह सामान्य चिकित्सालय का काम समय से पूरा हुआ है। जब योजना समयबद्ध ढंग से पूरी होती है तो रिवाइज इस्टीमेट की आवश्यकता नहीं होती है। लागत नहीं बढ़ती। लोकार्पित परियोजनाओं में 100 शैय्यायुक्त एम.सी.एच विंग महिला चिकित्सालय, 100 बेड के टीबी हॉस्पिटल का निर्माण, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र अरांव जगदीश उरूवा, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पिपरौली, चौरी चौरा और गगहा में मिनी पी.आई.सी.यू. की स्थापना और शिलान्यास परियोजनाओं में जिला चिकित्सालय में एम.आर.आई. मशीन की स्थापना, जिला महिला चिकित्सालय में ओ.टी. उच्चीकरण, मॉड्युलर ओ.टी. की स्थापना और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जिला पुरुष चिकित्सालय में ओ.टी. का उच्चीकरण, मॉड्युलर ओ.टी. की स्थापना शामिल रहा। योगी जी की सरकार बनने के बाद स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में प्रदेश अग्रणी भूमिका में आ गया है। इंसेफेलाइटिस की रोकथाम में काफी सफलता मिली है। आने वाले समय में इसे पूरी तरह से उन्मूलित करने की दिशा में तेजी से काम चल रहा है। 2019 में 25 फरवरी से फिर से जे.ई. टीकाकरण का पहला चरण चलाया गया। दूसरा चरण 15 मई से 15 जून और तीसरा चरण एक जुलाई से 31 जुलाई तक चलाया गया। इंसेफेलाइटिस पर नियंत्रण पाने के लिए पांच विभाग–पंचायती राज, स्वास्थ्य, बेसिक शिक्षा, आईसीडीएस और आपूर्ति विभाग आपसी समन्वय बनाकर काम कर रहे हैं। सरकार इस बारे में लोगों को जागरूक भी कर रही है कि बीमारी के प्रति सावधानी बरतें और इंसेफेलाइटिस के लक्षण दिखते ही मरीज को तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर ले जाकर इलाज शुरू करा दें।

एक साल में 58 प्रतिशत कम हो गई बीमारी

बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज में सुविधाओं का व्यापक विस्तार किया गया है। वहां पर विषाणुजनित बीमारी की खोज के लिए नया रिसर्च सेन्टर बनाया गया है। इसे सरकारी प्रयासों का असर ही कहेंगे कि इंसेफेलाइटिस की बीमारी पर लगभग विजय पा ली गई। गोरखपुर का

यह क्षेत्र लगभग चार दशकों से इस बीमारी के चपेट में था और अबोध कच्चे काल-कवलित हो रहे थे।

ठंड में सड़क पर सोने की मजबूरी खत्म हुई

गरीबों, असहायों, जरूरतमंदों की मदद करना सबसे पुनीत काम है। उन्हें समय से आवश्यकतानुरूप साधन मुहैया कराना सबका दायित्व है। योगी जी की सरकार ने अपने इस दायित्व को समझते हुए रैन बसेरों की व्यवस्था को शानदार बना दिया है। साफ-सुथरे बिस्तर, अलमारी, टेलीविजन सहित सभी बुनियादी सुविधाएं वहां दी गई हैं। मुख्यमंत्री जी ने जनवरी और दिसम्बर में बड़े पैमाने पर कंबल वितरण भी किया। उन्होंने हर विकास खण्ड और जिला स्तर पर दीन दुखियों, जरूरतमंदों को सुविधा मुहैया कराने का निर्देश दिया है। गरीबों के उत्थान और उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने को सरकार ने अपनी प्राथमिकता में रखा है।

मेले में मिलने लगे रोजगार

14 जनवरी को गोरखपुर विश्वविद्यालय के दीक्षा भवन में हुए कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जी ने 5,800 युवाओं को नियुक्ति पत्र दिलाए। 10 युवाओं को उन्होंने खुद अपने हाथ से नियुक्ति पत्र दिए। ये रोजगार युवाओं को रोजगार मेले में मिले। आज समाज में यह सोच बढ़ रही है कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं है। हमारी सोच काम को छोटा या बड़ा बनाती है। आज समाज के बड़े-बड़े लोग सेवा का कार्य कर रहे हैं। युवाओं को रोजगार दिलाना प्रदेश सरकार की उच्च प्राथमिकताओं में से है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शुरू किए गए प्रधानमंत्री स्किल डेवलपमेन्ट कार्यक्रम के तहत देश के युवाओं को हुनरमंद बनाया जा रहा है। युवा अपने हुनर के बल पर अच्छा रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। प्रदेश सरकार इस पर लगातार काम कर रही है। प्रदेश सरकार पुलिसकर्मियों की भर्ती में 20 प्रतिशत महिलाओं को शामिल कर रही है। इसके अतिरिक्त गोरखपुर, बदायूं और लखनऊ में महिला पी.ए.सी. की बटालियन बनाई जा रही हैं। प्रदेश में नौकरियों की कोई कमी नहीं है। यह धारणा बलवती हुई है कि युवा अपनी पूरी मेहनत के साथ प्रयास करें तो उन्हें रोजगार जरूर मिलेगा। बस शर्त यह है कि लक्ष्य निर्धारित करें और पूरी मेहनत से आगे बढ़ें। इसके लिए शॉर्टकट पर विश्वास न करें। मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता है। युवाओं के पास यह एक अवसर है। केन्द्र और प्रदेश सरकार की नौकरियों में बिना भेदभाव के पूरी पादर्शिता के साथ भर्तियां की जा रही हैं। इन्वेस्टर्स समिट से प्रदेश में हो रहे निवेश द्वारा स्थापित होने वाले उद्यमों से लगभग 2 लाख युवाओं को प्रत्यक्ष

और 10 लाख युवाओं को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध हो रहा है। इसके साथ ही, 'एक जिला-एक उत्पाद' योजना के तहत उद्यमियों-कारीगरों को प्रोत्साहित भी किया जा रहा है। गोरखपुर में इस योजना के तहत टेराकोटा शिल्पकारों को मदद दी जा रही है। प्रदेश सरकार नौकरी के साथ-साथ सुरक्षा की गारण्टी भी दे रही है। प्रदेश में 300 सरकारी तथा 2,800 गैर सरकारी संस्थाएं हैं, जो युवाओं को हुनरमंद बना रही हैं।

पूरी हुई खिलाड़ियों की बहुत पुरानी मांग

कहते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। इस युक्ति में विश्वास करने वाले मुख्यमंत्री जी ने 28 जनवरी 2019 को वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कालेज परिसर में सिंथेटिक हॉकी मैदान और कुश्ती हॉल सहित 36.54 करोड़ रुपए की लागत वाली 17 परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इनमें से 24.98 करोड़ रुपए की लागत से आठ परियोजनाओं का लोकार्पण और 11.56 करोड़ रुपए की लागत से नौ परियोजनाओं का शिलान्यास मुख्यमंत्री जी ने किया। लोकार्पित परियोजनाओं में आबकारी भवन, पुलिस विभाग में क्राइम ब्रान्च ऑफिस, वीरबहादुर सिंह स्पोर्ट्स कालेज में एस्ट्रो टर्फ हॉकी मैदान, कुश्ती हॉल, राजकीय महिला पॉलीटेक्निक में सी.सी. इन्टरलॉकिंग टाइल्स, सदर तहसील में आवासीय भवन, सुभाष भवन में मेस, टॉयलेट, सीवरेज, कॉमन रूम का जीर्णोद्धार, गीडा सेक्टर 5 न्यू गोरखपुर में आवासीय योजना में 5 पार्कों के निर्माण का काम शामिल रहा।

जिन नौ परियोजनाओं का शिलान्यास किया गया उनमें शहीद स्मारक डोहरिया कला के सौन्दर्यीकरण, कैम्पियरगंज में ग्राम बरगदही स्थित शिव मंदिर के पर्यटन विकास के काम, सन्त रविदास मंदिर अलवापुर के सौन्दर्यीकरण के काम, कैम्पियरगंज के ग्राम कल्याणपुर में बैसही देवी मंदिर के सौन्दर्यीकरण के काम, कैम्पियरगंज के ग्राम सुम्भाखोर में समय माता मंदिर और पोखरे के सौन्दर्यीकरण का काम, तहसील बांसगांव स्थित ग्राम तिघरा में तालाब के सौन्दर्यीकरण का काम, भरोहिया शिव मंदिर कैम्पियरगंज, मण्डलीय कारागार में पं. राम प्रसाद बिस्मिल शहीद स्मारक के सौन्दर्यीकरण और पर्यटन विकास के काम और शहीद स्मारक चौरी-चौरा में पर्यटन विकास और सौन्दर्यीकरण के काम शामिल रहे।

खिलाड़ियों को प्रोत्साहन की चल रहीं योजनाएं

प्रदेश सरकार ने खिलाड़ियों के प्रोत्साहन की कई योजनाएं बनाई हैं। प्रदेश के खिलाड़ी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन और पदक अर्जित कर प्रदेश

और देश का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं। खिलाड़ियों की समस्याओं का निराकरण प्रमुखता के आधार पर किया जा रहा है क्योंकि सुविधा के अभाव में खिलाड़ी अपनी क्षमता का भरपूर प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। खेल सुविधाओं को विकसित करने की दिशा में निरन्तर काम किया जा रहा है।

प्रदेश सरकार द्वारा ओलम्पिक गेम्स में प्रतिभाग करने या पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को प्रोत्साहन और पुरस्कार की धनराशि दी जाती है। जिसके अन्तर्गत स्वर्ण पदक विजेता को छह करोड़ रुपए, रजत पदक विजेता को चार करोड़ रुपए, कांस्य पदक के लिए 2 करोड़ रुपए की प्रोत्साहन-पुरस्कार राशि दी जाती है। इसी प्रकार एशियन और कॉमनवेल्थ गेम्स में प्रतिभाग करने या पदक जीतने वाले विजेता खिलाड़ियों को स्वर्ण पदक के लिए 50 लाख, रजत पदक विजेता के लिए 30 लाख रुपए और कांस्य पदक के लिए 15 लाख रुपए की प्रोत्साहन-पुरस्कार राशि दी जाती है।

राज्य सरकार द्वारा 24 जनवरी 2019 को 'उत्तर प्रदेश दिवस' पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विभिन्न खेलों के एक-एक खिलाड़ी को प्रदेश का सर्वोच्च पुरस्कार, पुरुष वर्ग में लक्ष्मण पुरस्कार और महिला वर्ग में रानी लक्ष्मी बाई पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके तहत अलंकृत होने वाले खिलाड़ियों को प्रशस्ति पत्र, लक्ष्मण-रानी लक्ष्मी बाई की कांस्य प्रतिमा और 3.11 लाख रुपए की धनराशि दी गई। खेलों को विकसित करने के लिए राजस्व एवं खेल विभाग हर गांव में खेल का मैदान स्थापित कर रहा है। राज्य सरकार द्वारा किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पदक प्राप्त करने वाले खिलाड़ी को राजपत्रित अधिकारी के रूप में नियुक्ति देने तथा स्पोर्ट्स कोटे की रिक्तियों को तत्काल प्रभाव से भरे जाने के भी निर्देश दिए गए हैं। खेल का वातावरण बनाने तथा आधुनिक सुविधाएं प्रदान कर उसे निरन्तर विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है।

बीमारियों के खात्मे के लिए चलाया अभियान

चार दशक तक पूर्वांचल के मासूमों पर कहर बरपाने वाली इंसेफेलाइटिस की भयावह तस्वीरें कौन भुला सकता है। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने गोरखपुर का सांसद रहते इस बीमारी के खिलाफ सड़क से संसद तक लड़ाई लड़ी थी। प्रदेश में सरकार बनने के बाद उन्होंने इस बीमारी के खिलाफ अभियान छेड़ दिया। 10 फरवरी को संचारी रोग पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। मुख्यमंत्री जी ने गोरखपुर में 33 सारथी वाहनों को हरी झण्डी दिखाकर

रवाना किया। इसके साथ ही, उन्होंने आई.सी.ई. मटेरियल (प्रचार साहित्य) का विमोचन भी किया। इंसेफेलाइटिस और संचारी रोग से बचाव और उसके उपचार के बारे में जानकारी देने के लिए 10 फरवरी से 28 फरवरी तक जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। 25 फरवरी को इंसेफेलाइटिस का टीकाकरण भी कराया गया। इसके साथ ही, फाईलेरिया से बचाव के लिए भी अभियान चलाया गया। अभियान के तहत लोगों को स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता के प्रति खास तौर पर जागरूक किया गया। इसके पूर्व में भी नगर विकास, बाल विकास, चिकित्सा विभाग और विभिन्न विभागों के द्वारा अभियान चलाया गया था जिसके अच्छे परिणाम आए थे। 2019 में भी अभियान चलाकर लोगों को इंसेफेलाइटिस व संचारी रोग से बचाव के लिए जागरूक किया गया। अभियान में आशा कार्यकत्रियों ने घर-घर जाकर लोगों के दरवाजे पर दस्तक देकर बुखार, सफाई और संचारी रोगों के बारे में जानकारी दी।

अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी मैच का गवाह बना गोरखपुर

साल-2019 में गोरखपुर में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कोई प्रतियोगिता आयोजित की गई। भारत फ्रांस के महिला हॉकी मैच में भारत ने 3-2 से विजय प्राप्त की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने स्पोर्ट्स कॉलेज में आयोजित भारत और फ्रांस की महिला टीमों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी मैच के समापन कार्यक्रम में विजयी भारतीय टीम को बधाई देते हुए कहा कि खिलाड़ी खेल भावना से खेलें। इसमें कोई द्वेश की भावना नहीं होनी चाहिए। खिलाड़ियों को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराकर आगे लाने के लिए प्रदेश सरकार लगातार प्रयत्नशील है। विभिन्न प्रतियोगिताओं में पदक लाने वाले खिलाड़ियों को पुरस्कृत करने के साथ ही उन्हें राजपत्रित अधिकारी भी बनाया जा रहा है। कार्यक्रम में केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जे.पी. नड्डा जी ने भी खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार 'खेलो इण्डिया' के तहत खिलाड़ियों को लगातार प्रोत्साहित कर रही है। साधारण बैकग्राउण्ड से आने वाले खिलाड़ियों को आगे लाने के लिए कई योजनाएं भी चलाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि गोरखपुर में अधिक से अधिक मैचों का आयोजन होना चाहिए। खेल निदेशक श्री आर.पी. सिंह ने बताया कि स्पोर्ट्स कॉलेज में चेंजरूम और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश सरकार ने पांच करोड़ रुपए स्वीकृत किए हैं।

गन्ना फिर बना कैश क्राप, किसानों के चेहरे की रौनक लौटी

किसी जमाने में उत्तर प्रदेश खासतौर से पूर्वांचल को चीनी का कटोरा कहा जाता था।

गन्ना यहां की मुख्य फसलों में से थी जिसे कैश क्राप के तौर पर जाना जाता था। लेकिन सरकारों की अदूरदर्शितापूर्ण नीतियों ने चीनी मिलों और गन्ना किसानों को बर्बाद कर दिया। मिलों पर करोड़ों का गन्ना मूल्य बकाया चढ़ गया। किसान खेतों में खड़ी गन्ने की फसल जलाने पर मजबूर हुए। मिलों पर ताला लटकने लगा। पूर्व की सरकारों ने इस स्थिति को बदलने की बजाए चीनी मिलों को औने-पौने दामों पर बेचना शुरू कर दिया। सांसद रहते मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने गन्ना किसानों की दुर्दशा के खिलाफ अनेकों बार संसद में आवाज बुलंद की। स्वाभाविक था कि जब वे मुख्यमंत्री बने तो कड़ाई से किसानों का भुगतान कराना सुनिश्चित किया। इसके साथ ही बंद पड़ी चीनी मिलों का जीर्णोद्धार कर उन्हें दोबारा चलाने का सिलसिला भी चल पड़ा। नए सिरे से बनीं मिलें सिर्फ चीनी नहीं एथेनॉल का भी उत्पादन कर रही हैं। इससे किसानों और उद्योग दोनों को फायदा हुआ है। पिपराइच चीनी मिल में पेराई शुरू हो चुकी है। मिल के चालू होने से 500 लोगों को प्रत्यक्ष रूप से तथा 5,000 लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिला है। साथ ही 40,000 गन्ना किसान लाभान्वित हो रहे हैं। चीनी मिल में प्रतिदिन 50,000 कुन्तल पेराई की व्यवस्था की गई है। भविष्य में इसकी पेराई क्षमता को बढ़ाकर 75,000 कुन्तल प्रतिदिन करने की योजना है। इस शुगर मिल में किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं हो रहा है। गन्ना विभाग द्वारा किसानों में जागरूकता के लिए गोष्ठियां आयोजित की गईं। इनका उद्देश्य किसानों द्वारा उन्नत किस्म का गन्ना उत्पादन कर अच्छा लाभ प्राप्त कराना था। वर्ष 2020 के पेराई सत्र में चीनी मिल को गन्ने की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी और मार्च, 2020 के मध्य से प्रारम्भ होने वाले पेराई सत्र में किसानों के अवशेष गन्ने की खपत चीनी मिल में होगी।

प्रधानमंत्री जी ने गोरखपुर को दीं कई सौगातें

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने साल-2014 की तरह साल 2019 में भी अपने चुनाव अभियान की शुरुआत गोरखपुर से की। इस बार भाजपा को 2014 से भी बड़ी सफलता मिली। 24 फरवरी 2019 को मानबेला के मंच से प्रधानमंत्री जी ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के शुभारंभ के साथ-साथ गोरखपुर की लगभग 10 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। गोरखपुर एम्स की ओपीडी, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक, एक लाख लीटर दैनिक क्षमता की डेयरी, गोरखपुर कैण्ट-कप्तानगंज-वाल्मीकिनगर रेल खण्ड के विद्युतीकरण सहित करीब 10 परियोजनाओं का लोकार्पण हुआ। काण्डला से गोरखपुर एलपीजी परियोजना सहित तीन परियोजनाओं का

शिलान्यास हुआ। एलान हुआ कि वर्ष 2020 में गोरखपुर कारखाना खाद के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने में अपना योगदान देने लगेगा। कारखाने में युद्ध स्तर पर काम चल रहा है।

गोरखपुर एम्स में पहले बैच की पढ़ाई के लिये प्रवेश शुरू होने के साथ ही बीआरडी मेडिकल कॉलेज में न्यूरोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, यूरोलॉजी, न्यूरो सर्जरी, गैस्ट्रोलॉजी, सर्जरी, ऑन्कोलॉजी और कार्डियोलॉजी जैसी आठ सुपर स्पेशियलिटी सुविधाएं शुरू हुईं। गोरखपुर का खाद कारखाना वर्ष 1990 से बन्द था। प्रधानमंत्री जी ने जुलाई, 2016 में इसके पुनरोद्धार की नींव रखी थी। इसका लगभग 90 प्रतिशत काम अब पूरा हो चुका है। जल्द ही यह उर्वरक के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने में अपना योगदान देने लगेगा।

प्रधानमंत्री जी द्वारा गोरखपुर में जिन परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया, उनमें बीआरडी मेडिकल कॉलेज के सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का उच्चीकरण, गोरखपुर कैण्ट–कप्तानगंज–वाल्मीकिनगर खण्ड विद्युतीकरण, एससी इलेक्ट्रिक लोको शेड का निर्माण, दुग्ध संघ गोरखपुर परिसर में एक लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता की पूर्ण स्वचालित डेयरी, रोहिन नदी पर डोमिनगढ़ गाहासाड मार्ग के डोमिनगढ़ घाट पर सेतु एवं सेतु के पहुंच मार्ग, अतिरिक्त पहुंच मार्ग एवं सुरक्षात्मक निर्माण कार्य, एम्स के आयुष भवन में ओपीडी का संचालन, एम्स परिसर में 33/11 केवी विद्युत उप केन्द्र क्षमता के एमबीए का निर्माण, बीआरडी मेडिकल कॉलेज में 100 क्षमता वाले पीजी गर्ल्स छात्रवास का निर्माण, रामगढ़ताल परियोजना के अन्तर्गत सर्किट हाउस के निकट पार्क का निर्माण एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य तथा बीआरडी मेडिकल कॉलेज में 50 क्षमता वाले पीजी मैरिड छात्रावास का निर्माण शामिल रहा। इसके अलावा प्रधानमंत्री जी ने कांडला से गोरखपुर एलपीजी पाइपलाइन के निर्माण, सोनौली गोरखपुर मार्ग के किलोमीटर 81.420 (जंगल कौड़िया) से किलोमीटर 98.945 (मोहद्दीपुर चौराहा) तक फोरलेन सीसी रोड के निर्माण औरा राप्तीनगर विस्तार आवासीय योजना में चार मंजिला सेमी फिनिश्ड एफोर्डेबल (जी–3) 480 एलआईजी भवनों के निर्माण की कार्य परियोजनाओं का शिलान्यास किया। एम्स में एमबीबीएस के प्रथम वर्ष में 50 छात्र-छात्राओं का प्रवेश हुआ, जिसमें 32 छात्र तथा 18 छात्राएं हैं। 2020 में 100 छात्र-छात्राओं का प्रवेश होगा। एम्स में 12 विभागों की ओपीडी प्रारम्भ हो चुकी है। यहां प्रतिदिन 1200–1300 मरीज आते हैं। अब तक करीब 27 लाख मरीजों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन हो चुका है। रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया निरन्तर जारी है।

क्रांतिवीर शहीद बंधु सिंह को सम्मान

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने 18 फरवरी 2019 को गोरखपुर सरदार नगर विकास खण्ड के करमहा गांव में शहीद बंधु सिंह डिग्री कॉलेज के भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने अमर शहीद बाबू बंधु सिंह की प्रतिमा का अनावरण भी किया।

बाबू बंधु सिंह अंग्रेजों के लिए दहशत के पर्याय थे। वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में गोरखपुर का नेतृत्व करते हुए बाबू बंधु सिंह ने अंग्रेजों के सामने जो चुनौती पैदा की उससे अंग्रेज अधिकारियों के छक्के छूट गये। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बर्बर अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ मध्य व उत्तर भारत में भड़के सशक्त जन विद्रोही समर के नायक बाबू बंधु सिंह अपनी अनूठी शैली के कारण फिरंगियों में दहशत और भय का पर्याय बन गये थे। बाबू बंधु सिंह चौरी-चौरा क्षेत्र डुमरी के निवासी थे। बंधु सिंह ने गुलामी को कभी स्वीकार नहीं किया। देश की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। अपना सर्वस्व न्यौछावर कर विदेशी शासकों का मुकाबला किया। हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ गए। वीरगति को प्राप्त हो गए, लेकिन गुलामी स्वीकार नहीं की। मुख्यमंत्री जी के आदेश से बंधु सिंह के योगदान को पाठ्यक्रमों का हिस्सा बनाने की प्रक्रिया भी शुरू हुई है।

लौह पुरुष की स्वचालित प्रतिमा

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने 18 फरवरी 2019 को ही गोलघर काली मंदिर के पास सिविल लाइन्स चौराहे के सौन्दर्यीकरण कार्य का लोकार्पण किया। उन्होंने लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण भी किया। यह सरदार वल्लभ भाई पटेल की देश की पहली स्वचलित प्रतिमा है, जो 24 घंटे घूमती रहती है।

तकनीक से संवर रही किसानों की तकदीर

कृषि प्रधान देश होने के बावजूद हमारे किसानों की हालत कभी ठीक नहीं रही तो इसकी वजह ये है कि सरकारों ने कभी किसानों की वास्तविक समस्याओं पर ध्यान ही नहीं दिया। आधुनिक समय में खेती किसानी में तकनीक का इस्तेमाल और आवश्यकता बढ़ती जा रही है। इस आवश्यकता को समझते हुए दो मार्च 2019 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी और भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी ने महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र चौक माफी (पीपीगंज) के प्रशासनिक भवन का लोकार्पण और

दो दिवसीय पूर्वांचल किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में विभिन्न प्रान्तों और जनपदों के सम्बन्धित विभागों के लगभग 100 स्टाल लगाए गए थे। मुख्यमंत्री जी का मानना है कि किसानों की उन्नति से ही देश और प्रदेश का विकास किया जा सकता है। वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के संकल्प को साकार रूप देने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्रों को संचालित किया जा रहा है। इन केन्द्रों के माध्यम से किसानों के जीवन में व्यापक परिवर्तन लाया जा सकता है। उनका जीवन खुशहाल बनाया जा सकता है। कृषि उत्पादन में सत्त वृद्धि हेतु नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों तथा अन्य जानकारियों से किसानों को नियमित आधार पर अवगत कराने का प्रयास योगी जी की सरकार कर रही है।

किसानों के जीवन मे आमूल-चूल परिवर्तन लाने के उद्देश्य से दो वर्ष पूर्व कृषि विज्ञान केन्द्र की आधारशिला रखी गई थी, जिसके प्रशासनिक भवन का लोकार्पण दो मार्च को हुआ। किसानों के जीवन में परिवर्तन लाने में कृषि विज्ञान केन्द्र एक सशक्त माध्यम है। शासन की योजनाओं का लाभ किसानों को मिले और उन्हें तकनीकी जानकारी प्राप्त हो इस उद्देश्य से केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेश को 20 नये कृषि विज्ञान केन्द्र दिये गये हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र कम से कम दो-दो गांव को गोद लेकर कृषकों को प्रशिक्षित कर रहे हैं। इससे किसानों में तकनीकी कृषि की जानकारी बढ़ रही और उनका उन्नयन हो रहा है। सरकार द्वारा किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य भी न्यूनतम समर्थन मूल्य के माध्यम से दिलाया जा रहा है।

आईसीआईसीआई एकेडमी फॉर स्किल्स का उद्घाटन

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने चार मार्च 2019 को गोरखपुर के चरगावां आईटीआई में आईसीआईसीआई एकेडमी फॉर स्किल्स का उद्घाटन किया। प्रदेश में इस प्रकार के केन्द्र खुलना अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। आईसीआईसीआई संस्था द्वारा यह दूसरा केन्द्र गोरखपुर में स्थापित किया गया है। पूरे देश में इसकी 300 से अधिक शाखाएं हैं। आईटीआई चरगावां प्रदेश में कौशल विकास मिशन की अग्रणी संस्थाओं में शामिल है। इस प्रकार के सेण्टर बनने से रोजगार के लिए नौजवानों को निश्चित रूप से एक बेहतर मंच मिला है। वे कौशल विकास में प्रशिक्षित होकर रोजगार प्राप्त कर पा रहे हैं। प्रदेश में 300 से अधिक सरकारी आईटीआई तथा 2800 से अधिक निजी क्षेत्र के आईटीआई व कौशल विकास केन्द्र मौजूद हैं। जहां से प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में नौजवान प्रशिक्षित होकर निकल रहे हैं। विगत वर्षों से उनके प्लेसमेण्ट के लिए भी कार्य किया जा रहा है। आईसीआईसीआई जैसी संस्था के

जुड़ने से इसमें गति आएगी। प्रदेश सरकार द्वारा ढाई लाख लोगों को सरकारी नौकरियां दी गई हैं। इसके साथ ही करोड़ों रुपए के निवेश से विभिन्न क्षेत्रों के विकास हेतु कार्य किया गया है। प्रदेश के परम्परागत उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए 'एक जनपद, एक उत्पाद' योजना के तहत 78 हजार से अधिक युवाओं को मुद्रा योजना एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के माध्यम से सहायता प्रदान की गई है। सरकार द्वारा सौभाग्य योजना के तहत ढाई लाख घरों में विद्युत कनेक्शन दिए गए हैं। आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रों में अधिक से अधिक लोगों को प्रशिक्षित कर हुनरमंद बनाने का काम चल रहा है। गोरखपुर के सेंटर में शुरुआती तौर पर एक वर्ष में 320 छात्रों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में प्रासंगिक व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ जीवन कौशल जैसे-शिष्टाचार और व्यवहार, संचार, बुनियादी अंग्रेजी और वित्तीय साक्षरता शामिल है। प्रशिक्षण की अवधि 12 सप्ताह है। समाज के वंचित वर्ग के युवा, जिन्होंने कम से कम आठवीं तक पढ़ाई की है और जिनकी आयु 18 वर्ष से 30 वर्ष के बीच है, वे इलेक्ट्रिकल एण्ड होम एप्लायन्सेज रिपेयर पाठ्यक्रम के लिए पात्र हैं, जबकि विक्रय कौशल के लिए 10वीं कक्षा तक की न्यूनतम शिक्षा होनी चाहिए। राष्ट्र के विकास में योगदान करने की यह सबसे अच्छी पहल है। इससे लोगों को देश की आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए सक्षम बनाया जा रहा है।

गोरखपुर में स्पिरिचुअल सर्किट व स्वदेश दर्शन योजना के

गोरखपुर में स्पिरिचुअल सर्किट व स्वदेश दर्शन योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2018-19 में भारत सरकार द्वारा पर्यटन विकास की कई योजनाएं स्वीकृत की गई हैं। इन परियोजनाओं का क्रियान्वयन पर्यटकों के लिए सुविधाओं के विकास और पर्यटन सम्बन्धी गतिविधियों के माध्यम से रोजगार सृजन हेतु किया जा रहा है।

बुढ़िया माता मंदिर तक पहुंचना हुआ आसान

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने गोरखपुर कसया पिच मार्ग से ग्राम रजही मार्ग व ग्राम रजही वाया बुढ़िया माता मंदिर मार्ग पर 89 लाख रुपए की लागत से निर्मित 1300 मीटर के इण्टरलॉकिंग कार्य का लोकार्पण 22 जून को किया। उन्होंने बुढ़िया माता मंदिर में स्थित तालाब में जल संरक्षण के अन्तर्गत जलकुम्भी की सफाई में श्रमदान भी किया। बुढ़िया माता के इस पुराने पोखरे का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। जल संरक्षण आज की आवश्यकता है। संसाधनों से भरपूर पूर्वी उत्तर प्रदेश में जल संकट की स्थिति कभी न आए इसके लिए लोगों को सतह

के पानी के प्रयोग के साथ-साथ बरसात के पानी का भी संचय करना होगा। मनरेगा के तहत तालाब योजना में हर ग्राम पंचायत में पुराने तालाबों को ठीक कराया जा रहा है। सभी सरकारी भवनों में भी रेन वॉटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था कर वर्षा के जल को संचय करने की आवश्यकता है।

जुलाई में फिर चला संचारी रोग नियंत्रण अभियान

एक जुलाई से 31 जुलाई, 2019 तक प्रदेश में एक बार फिर संचारी रोग नियंत्रण अभियान चलाया गया। अभियान में 12 विभागों को सम्मिलित किया गया। स्वास्थ्य विभाग को नोडल विभाग बनाया गया था।

धूमधाम से मनाया गया पांचवां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

पांचवा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस गोरखपुर में धूमधाम से मनाया गया। 15 जून से 21 जून तक गोरखनाथ मन्दिर में साप्ताहिक योग शिविर सम्पन्न हुआ। 21 जून को इस राष्ट्रीय शिविर का समारोप उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने किया। 21 जून 2019 को इस मौके पर गोरखपुर विश्वविद्यालय के दीक्षा भवन में 'योग : मानवता को भारतीय ज्ञान परम्परा का अतुल्य योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्यमंत्री जी भी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि योग का मतलब जोड़ना होता है, योग की इस परम्परा से भारत ने पूरी दुनिया को जोड़ा है। योग शुद्धि को प्रेरणा देता है और हमें निरोग रखता है। साथ ही, योग हमारा उन्नयन भी करता है। नैतिक आधार को मजबूत करने हेतु योग की परम्परा को सभी को अपनाना होगा। योग के अलग-अलग सोपान सिद्धि को प्राप्त करने का माध्यम होता है। योग एक आन्दोलन ले रहा है, जिसे पूरी दुनिया ने अपनाया है। इस अवसर पर उन्होंने 'सृष्टि सृजन एवं योग विज्ञान' पुस्तिका का विमोचन भी किया। 21 जून, 2016 को पहला योग दिवस आयोजित हुआ, जिसमें 193 देश योग के साथ जुड़े। योग की सभी विधाओं के मूल में शुद्धि से परम्परा की शुरुआत होती है और बिना शुद्धि के हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं, योग शुद्धि की प्रेरणा देता है।

एमएमएमयूटी को मिलीं सौगातें

साल-2019 में मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय को कई सौगातें मिलीं। 22 जून को मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने गोरखपुर के मदन मोहन मालवीय

प्राविधिक विश्वविद्यालय में 12.05 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले प्रशासनिक भवन एवं 07.84 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले 210 बेड के महिला छात्रावास का शिलान्यास किया। भौतिकी एवं पदार्थ विज्ञान, रसायन एवं पर्यावरण विज्ञान, गणित संगणन तथा मानविकी एवं प्रबंध विज्ञान विभाग का भी शुभारम्भ किया।

गोरखपुर में कान्हा उपवन और गोशाला

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने छह जुलाई 2019 को महेवा में लगभग 8.50 करोड़ रुपए की लागत से नौ एकड़ में निर्मित कान्हा उपवन और गोशाला का लोकार्पण किया। निराश्रित गोवंशों के लिए प्रदेश सरकार की योजना के तहत इस गोआश्रय स्थलों का निर्माण कराया गया है। यहां पर 1000 से 1500 पशुओं की रहने की व्यवस्था है। इस गोआश्रय स्थल का निर्माण हो जाने से महानगर में छुट्टा पशुओं से होनी वाली कठिनाइयों से मुक्ति मिलेगी। प्रदेश सरकार द्वारा किसानों की फसलों की रक्षा के लिए गांवों में भी गोशाला का निर्माण तेजी से कराया जा रहा है। गोआश्रय स्थल पर रहने वाले पशुओं के गोबर से कहीं-कहीं कम्पोस्ट खाद बनाने के लिए भी काम किया जा रहा है। कम्पोस्ट खाद की बिक्री से गोशाला स्वावलम्बी तथा आत्मनिर्भर होगी।

राजघाट पर बन रहा चौड़ा घाट

राज्य सरकार राजघाट पर घाट निर्माण परियोजना के तहत सौ मीटर लम्बे और 78 मीटर चौड़े घाट का निर्माण करा रही है। 1869.71 लाख रुपए की लागत से 100 मीटर लम्बा और 78 मीटर चौड़ा घाट बनाया जा रहा है। परियोजना की निर्माण एजेंसी-कार्यदायी संस्था ड्रेनेज खण्ड है। इसका निर्माण कार्य 9 मार्च, 2019 से प्रारम्भ हुआ है तथा 31 मार्च, 2020 तक यह कार्य पूर्ण होने का लक्ष्य रखा गया है। मुख्यमंत्री जी ने शमशान घाट पर शेड बनाने के साथ-साथ चबूतरे का निर्माण करने का भी निर्देश दिया है ताकि दाह संस्कार में लोगों को कोई असुविधा न हो।

गुरुद्वारों का हो रहा सौन्दर्यीकरण

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने 31 जुलाई 2019 को मोहद्दीपुर में 13962.93 लाख रुपए की लागत से कुल 10 परियोजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास किया। इसमें 575.45 लाख रुपए की लागत से तीन परियोजनाओं का शिलान्यास और 13387.48 लाख

रुपए की लागत से सात परियोजनाओं का लोकार्पण शामिल था। जिन तीन परियोजनाओं का शिलान्यास किया गया उसमें 305 लाख रुपए की लागत से जिला सूचना कार्यालय भवन/सूचना संकुल का निर्माण कार्य, 176.13 लाख रुपए की लागत से मोहद्दीपुर गुरुद्वारा स्थल के सौन्दर्यीकरण कार्य तथा 94.32 लाख रुपए की लागत से जटाशंकर गुरुद्वारा स्थल का सौन्दर्यीकरण कार्य शामिल हैं। मुख्यमंत्री जी द्वारा जिन 07 परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया उसमें स्पोर्ट्स स्टेडियम में खेल अवस्थापनाओं के विकास एवं सुदृढ़ीकरण, वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज में ड्रेनेज सिस्टम का निर्माण, राजकीय पॉलीटेक्निक गोरखपुर में 60 सीटेड छात्रावास का निर्माण, जनपद में 200 व्यक्तियों की क्षमता के बैरक के निर्माण कार्य, नन्दानगर अण्डरपास के निर्माण, एयरपोर्ट से सर्किट हाउस तक सड़क का फोरलेन में चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण, कलेक्ट्रेट परिसर में आमजन के बैठने हेतु दक्षिणी पश्चिमी प्रवेश द्वार के निकट पार्क फौव्वारा का निर्माण और पार्क में बैठने के लिए सीसी पैडेस्टल बेंच का काम शामिल था।

मुक्तेश्वरनाथ, कालीबाड़ी सहित कई मंदिरों का जीर्णोद्धार

मुख्यमंत्री जी ने 31 जुलाई 2019 को मुक्तेश्वरनाथ मंदिर परिसर स्थल में 653.43 लाख रुपए की परियोजनाओं का लोकार्पण तथा 503.13 लाख रुपए के कार्यों का शिलान्यास किया। लोकार्पित होने वाली परियोजनाओं में 384.52 लाख रुपए की गोरखपुर देवरिया उप मार्ग का सुदृढ़ीकरण व 268.91 लाख रुपए का आजाद चौक मिर्जापुर में सीसी रोड के निर्माण का काम शामिल था। जिन कामों का शिलान्यास हुआ उनमें 23.94 लाख रुपए की लागत से गोरखपुर कालीबाड़ी मंदिर स्थल का सौन्दर्यीकरण, 219.35 लाख रुपए की लागत से मुक्तेश्वरनाथ मंदिर स्थल के सौन्दर्यीकरण का कार्य तथा 259.84 लाख रुपए की लागत से सूर्यकुण्ड धाम के सौन्दर्यीकरण का कार्य शामिल था। शिलान्यास और लोकार्पित की गई परियोजनाओं की कुल लागत 1156.56 लाख रुपए थी।

नौसढ़ में मिला नया अत्याधुनिक बस स्टेशन

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने एक अगस्त 2019 को नौसढ़ में 284.58 लाख रुपये की लागत से निर्मित बस स्टेशन का लोकार्पण किया। नौसढ़ बस स्टेशन के बन जाने से वाराणसी, प्रयागराज, मऊ, आजमगढ़, बड़हलगंज, दोहरीघाट इत्यादि स्थानों के लिए आने-जाने की बेहतर सुविधा मिलने लगी। बस स्टेशन के संचालित होने से अस्थायी तौर पर लग रहे जाम

की समस्या से निजात मिली। नौसढ़ बस स्टेशन पर यात्रियों को शुद्ध पेयजल, टिकट काउण्टर, शौचालय आदि सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इसके अलावा यहां पर पूछताछ केन्द्र व वेटिंग हॉल का भी निर्माण किया गया है। बस स्टेशन से एल.ई.डी. स्क्रीन पर बसों के आवागमन की जानकारी लगातार मिलती रहती है। नौसढ़ बस स्टेशन का निर्माण कार्य अक्टूबर 2017 में प्रारम्भ हुआ और लक्ष्य के अनुसार समय से जुलाई, 2019 में पूर्ण हुआ। चहारदीवारी का कार्य भी पूर्ण है। बस स्टेशन का निर्माण राजकीय निर्माण निगम द्वारा कराया गया है। मुख्यमंत्री जी का हमेशा इस बात पर जोर रहता है कि काम समय पर पूरे किए जाएं ताकि उनकी लागत न बढ़े और लोगों को बिना देरी सुविधाओं का लाभ मिल सके।

पर्यटन से जुड़े धर्मस्थल

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने एक अगस्त को ही भौवापार में 623.55 लाख रुपये की लागत से श्री मुंजेश्वरनाथ शिव मंदिर के सौन्दर्यीकरण के लिए कराए जाने वाले कार्यों का शिलान्यास तथा 100 करोड़ रुपये से अधिक की लागत की विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री जी का मानना है कि धर्मस्थल केवल हमारी आस्था के प्रतीक नहीं है, बल्कि एकात्मकता का आधार भी हैं। इस प्रकार के पावन स्थल पर एकत्र होने से न केवल ऊर्जा प्राप्त होती है, बल्कि इससे राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को सम्बल भी मिलता है। पर्यटन विकास के माध्यम से रोजगार सृजन भी होता है। पर्यटन के विकास में सरकार के साथ-साथ निजी क्षेत्र भी आगे आ रहा है, जिससे पर्यटन को नई ऊंचाई मिल रही है।

एमएमएमयूटी के दीक्षान्त समारोह में राज्यपाल, मुख्यमंत्री संग शामिल हुए इंफोसिस के संस्थापक

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के 22 अगस्त 2019 को आयोजित दीक्षान्त समारोह में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के साथ ही इन्फोसिस के संस्थापक एन.आर. नारायणमूर्ति भी शामिल हुए। इस अवसर पर राज्यपाल जी ने 34 गोल्ड मेडल वितरित किए।

कैशकेड और मल्टीमीडिया फ्लोटिंग फाउण्टेन से गुलजार हुई रामगढ़झील

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने 30 अगस्त 2019 को रामगढ़झील में 11.96 करोड़ रुपए की लागत के कार्यों का लोकार्पण किया। इनमें भारत सरकार के राष्ट्रीय झील संरक्षण

कार्यक्रम एवं नगर विकास विभाग के रामगढ़ताल के संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण की योजना के अन्तर्गत रामगढ़ताल में स्थापित 25 फ्लोटिंग कैशकेड फाउण्टेन, एक मल्टीमीडिया फ्लोटिंग फाउण्टेन तथा 450 किलोवॉट सोलर पावर प्लाण्ट का लोकार्पण शामिल था। सुरक्षा के लिए रामगढ़ताल थाना की स्थापना भी की गई है।

सूर्यकुंडधाम जगमगाया, पर्यटन स्थल के तौर पर हो रहा विकसित

मान्यता है कि भगवान राम ने नगर भ्रमण के दौरान एक रात्रि सूर्यकुंड धाम में विश्राम किया था। अगली सुबह उन्होंने यहां सूर्यदेव को दीपदान किया। तबसे सूर्यकुंड धाम के प्रति लोगों की आस्था है। हर साल दीपावली पर लोग यहां हजारों-लाखों दीपों का दान करते हैं। 18 अगस्त 2019 को मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने सूर्यकुण्ड धाम मंदिर में दर्शन किया और 5529.87 लाख रुपए की लागत से कुल छह परियोजनाओं का शिलान्यास व लोकार्पण किया। इनमें 259.84 लाख रुपए की लागत से सूर्यकुण्ड स्थल का पर्यटन विकास परियोजना का शिलान्यास तथा 5270.03 लाख रुपए की लागत की 05 परियोजनाओं का लोकार्पण शामिल है। मुख्यमंत्री जी द्वारा जिन परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया, उनमें 1245.70 लाख रुपए की लागत से बीआरडी मेडिकल कॉलेज में इलेक्ट्रिक सेफ्टी का कार्य, 94.65 लाख रुपए की लागत से वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज में आरसीसी रोड का निर्माण कार्य, 3678.00 लाख रुपए की लागत से गोरखपुर-पिपराईच-कप्तानगंज मार्ग, 173.86 लाख रुपए की लागत से ग्राम सभा जंगल औराही में गजराज टोला के सिवान से श्याम टोला तक सम्पर्क मार्ग का नव निर्माण कार्य तथा 77.82 लाख रुपए की लागत से डोमिनगढ़ पश्चिम रेलवे के बगल में दक्षिण सिउरिया तक सम्पर्क मार्ग शामिल था।

तरकुलहा देवी मंदिर का हो रहा जीर्णोद्धार

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने 29 सितम्बर 2019 को माँ तरकुलहा देवी के दर्शन किए। इस दौरान उन्होंने 2.13 करोड़ रुपए की लागत से तरकुलहा मंदिर के जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण के कामों का शिलान्यास किया। उन्होंने अधिकारियों को शिलान्यास किये गये कार्यों को समय से पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने मंदिर का जीर्णोद्धार कराने के साथ-साथ मंदिर के पास शहीद बंधु सिंह की भव्य प्रतिमा भी स्थापित करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि शहीद बंधु सिंह के नाम पर एक स्मारक निर्मित किया जाएगा, जिसके लिए धनराशि अलग से उपलब्ध करायी जाएगी। तरकुलहा देवी स्थल पर बुनियादी सुविधाएं भी मुहैया कराई जाएंगी।

गीडा में शुरू हुआ आईओसी का बाटलिंग प्लांट

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी एवं केन्द्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने 18 सितम्बर 2019 को गीडा, में 204 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के बॉटलिंग प्लाण्ट का उद्घाटन किया। 38 एकड़ में निर्मित इस बॉटलिंग प्लाण्ट की क्षमता 120 टीएमटीपीए है। यहां प्रतिदिन दो शिफ्टों में 68 हजार सिलेण्डर भरे जा रहे हैं। यह प्लाण्ट प्रदेश के 11 जिलों गोरखपुर, कुशीनगर, बलिया, देवरिया, महराजगंज, संतकबीरनगर, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर, श्रावस्ती, गोण्डा और बस्ती के बाजारों को एल.पी.जी. की आपूर्ति कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सहयोग से निर्मित यह प्लाण्ट गोरखपुर एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिए काफी लाभकारी सिद्ध हो रहा है। जनवरी 2015 में इसका शिलान्यास हुआ। 18 सितम्बर 2019 को लोकार्पण हुआ। गोरखपुर में पाइप्ड नेचुरल गैस की प्रक्रिया भी तेजी से चल रही है। इस पाइपलाइन का काम पूरा हो जाने से लोगों के घरों में सुरक्षित और विश्वसनीय खाना पकाने वाला ईंधन पहुंचने लगेगा। रोजगार तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा भी मिलेगा।

सात हजार करोड़ से खाद कारखाना बनकर लगभग तैयार

गोरखपुर में 7000 करोड़ रुपये की लागत से हिन्दुस्तान उर्वरक रसायन लिमिटेड कारखाने का काम अंतिम चरण में है। 2020 में इसके पूरी तरह तैयार हो जाने की सम्भावना है। पूर्वांचल और गोरखपुरवासियों में 26 वर्षों से खाद कारखाना के बन्द होने से निराशाजनक स्थिति उत्पन्न हो गई थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जुलाई 2016 में इसका शिलान्यास कर इस स्थिति को दूर किया। यह कारखाना नवम्बर, 2020 तक बनकर तैयार हो जायेगा तथा फरवरी 2021 से उत्पादन प्रारम्भ होगा। इसके माध्यम से किसानों, नौजवानों और स्थानीय नागरिकों को रोजगार उपलब्ध होगा।

धुरियापार चीनी मिल में बनेगा बायोफ्यूल

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी और केन्द्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी ने 18 सितम्बर 2019 को ही धुरियापार चीनी मिल प्रांगण में 1200 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले बायोफ्यूल प्लाण्ट का शिलान्यास किया। उन्होंने बीपीसीएल बॉटलिंग प्लाण्ट बैतालपुर, गेल की गोरखपुर-वाराणसी गैस पाइप लाइन तथा टोरेन्ट गैस की सीजीडी प्रोजेक्ट सहित 43.20 करोड़ रुपये की लागत की 11 सड़क परियोजनाओं का

लोकार्पण भी किया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में उद्योगों का अभाव था। इस अभाव को दूर करने के लिए प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में पेट्रोलियम मंत्रालय की ओर से बायोफ्यूल प्लाण्ट दिया गया है। यह परियोजना दो चरणों में पूर्ण होगी। प्रथम चरण में लगभग 150 करोड़ रुपये की लागत से कॉम्प्रेस्ड बायो गैस संयत्र की स्थापना की जायेगी, जो प्रतिदिन 200 टन भूसे के साथ मवेशियों का गोबर, गन्ने का अपशिष्ट लेकर ईंधान का निर्माण करेगा। दूसरे चरण में लगभग 900 करोड़ रुपये की लागत से 2जी एथेनॉल संयत्र की स्थापना की जायेगी, जिसकी क्षमता 100 केएल प्रतिदिन होगी। किसानों की फसलों और मवेशियों के गोबर आदि का भी मूल्य प्राप्त होगा। उनकी आय में वृद्धि होगी। पाइप लाइन के बन जाने से आने वाले समय में पानी की तरह गैस की भी आपूर्ति होगी। इस क्षेत्र के विकास के लिए पूर्वान्चल एक्सप्रेस-वे को लिंक एक्सप्रेस-वे से जोड़ा जा रहा है, जिससे इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को काफी सुविधा होगी। लिंक एक्सप्रेस-वे के आस-पास औद्योगिक गलियारा भी तैयार किया जा रहा है, जिससे यहां पर उद्योग लगेंगे और लोगों को रोजगार उपलब्ध होगा।

दिवाली पर वनटांगियों को दिए नए तोहफे

यूं तो मुख्यमंत्री बनते ही गोरक्षपीठाधीश्वर श्री योगी आदित्यनाथ जी ने आजादी के पहले से जुल्मो सितम के शिकार बन रहे वनटांगियों के गांवों को राजस्व ग्राम का दर्जा देकर मुंह मांगी मुराद पूरी कर दी थी लेकिन उसके बाद भी हर साल दिवाली मनाने उनके बीच पहुंचने पर वह कुछ न कुछ तोहफा जरूर देते हैं। 27 अक्तूबर 2019 को मुख्यमंत्री जी ने दीपावली के मौके पर ग्राम पंचायत तिकोनिया नम्बर-3 में वनटांगिया ग्राम के विकास के लिए 1.32 करोड़ रुपए की लागत की सात परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया। इसमें एक परियोजना का शिलान्यास और छह परियोजनाओं का लोकार्पण शामिल रहा। इसके अलावा उन्होंने मुख्यमंत्री ग्रामीण आवास योजना के अन्तर्गत 10 लाभार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किये। इसके साथ ही प्राइमरी स्कूल के बच्चों द्वारा हैण्डवॉश डेमो कार्यक्रम के प्रस्तुतिकरण पर बच्चों को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री जी ने गोरखपुर के पांच वनटांगियां राजस्व ग्रामों और महराजगंज के एक वनटांगिया राजस्व ग्राम के मुखिया सहित अन्य संस्थाओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये। गोरखपुर की चयनित 05 वनटांगिया बस्तियों को राजस्व ग्राम का दर्जा दिया गया है। मुख्यमंत्री आवास योजनान्तर्गत इन सभी गावों में कुल 791 आवास निर्माण कराने का लक्ष्य निर्धारित है, जिसके तहत 694 आवास का निर्माण पूर्ण हो चुका है तथा 97 निर्माणाधीन है। दो साल पहले इन गावों में पक्का मकान, शौचालय, पेंशन, मालिकाना हक, हैण्डपम्प, सड़क,

बिजली आदि की सुविधा नहीं थी। प्रदेश सरकार ने इन गावों में विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध करा दी हैं। इन ग्रामों के बच्चों को शिक्षा का लाभ मिल रहा है। उन्हें नि:शुल्क यूनिफार्म, बैग, स्वेटर आदि भी उपलब्ध हो रहा है।

पिपराइच में 5,000 टीसीडी पेराई क्षमता की नई चीनी मिल शुरू

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने 17 नवम्बर 2019 को पिपराइच में 5000 टीसीडी पेराई क्षमता की नई चीनी मिल और 27 मेगावाट क्षमता के को-जनरेशन प्लान्ट का लोकार्पण किया। उन्होंने चीनी मिल के शुभारम्भ के साथ-साथ कुशीनगर के हाटा मझने नाला से पिपराइच मार्ग तथा परतावल-पिपराइच मार्ग के चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण कार्य का शिलान्यास भी किया। पूर्ववर्ती सरकारों ने चीनी मिलों को बन्द कर, उन्हें बेचने का काम किया था। इससे गन्ना किसानों को भयंकर नुकसान हुआ। साथ ही, क्षेत्र का विकास भी ठप हो गया। वर्ष 2011 में यह चीनी मिल भी बन्द कर दी गयी थी। योगी जी की सरकार ने पिपराइच चीनी मिल को पुन: निर्मित कर संचालित करने का निर्णय लिया। पुनर्निर्माण में पिपराइच चीनी मिल की पेराई क्षमता प्रतिदिन 8,000 कुन्तल से बढ़ाकर 50,000 कुन्तल प्रतिदिन कर दी गई है। पिपराइच चीनी मिल में चीनी के साथ-साथ 27 मेगावाट बिजली का उत्पादन भी हो रहा है। इसमें दो से तीन मेगावाट बिजली का प्रयोग चीनी मिल में किया जा रहा है। शेष बिजली आसपास के क्षेत्र के प्रयोग में आएगी। पिपराइच चीनी मिल में सल्फरलेस शुगर प्लान्ट से चीनी का निर्माण होगा। मिल में बिजली के उत्पादन से 30 करोड़ रुपये की बचत होगी। इससे किसानों के गन्ना मूल्य का समय से भुगतान होगा। दूसरे चरण में चीनी मिल में अत्याधुनिक डिस्टलरी का निर्माण कराया जाएगा। इस चीनी मिल के चलने से हजारों की संख्या में नौजवानों को रोजगार मिल रहा है। इससे किसानों की आय में भी वृद्धि भी हुई है। प्रदेश में किसानों के 76 हजार करोड़ रुपये के बकाया गन्ना मूल्य का भुगतान कराया जा चुका है। मुख्यमंत्री जी ने कहा है कि किसानों की पाई-पाई का भुगतान कराया जाएगा। राज्य सरकार द्वारा किसानों की सुविधा के लिए ठोस व्यवस्था की जा रही है। किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलाने के लिए क्रय केन्द्र खोले गये हैं, जहां न्यूनतम समर्थन मूल्य के आधार पर किसानों की उपज की खरीद की जा रही है। किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का लाभ दिलाया जा रहा है। सभी लघु एवं सीमान्त किसानों का एक लाख रुपये तक का कर्ज भी माफ किया गया है।

गोरखपुर नगर निगम को मिलेगा नया भवन

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने 16 नवम्बर 2019 को नगर निगम परिसर में आयोजित एक कार्यक्रम में सामुदायिक सुविधा केन्द्र-सदन भवन और नगर निगम के कार्यालय भवन सहित कुल 182.65 करोड़ रुपये लागत की 233 परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। कार्यक्रम में 127.18 करोड़ रुपये लागत की 180 परियोजनाओं का शिलान्यास तथा 55.47 करोड़ रुपये लागत की 53 परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के 12 लाभार्थियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किया। नगर निगम का भवन लगभग 122 वर्ष पुराना था। नगर निगम गोरखपुर के नवीन भवन के साथ ही बेहतर व्यवस्था बनाने की मांग थी। नये भवन के निर्माण के साथ ही, गोरखपुर महानगर का दायरा भी बढ़ेगा तथा नगरवासियों को बेहतर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि नगर निगम, गोरखपुर का बहुत ही गौरवशाली इतिहास है। इसलिए नगर निगम के पुराने भवन को संग्रहालय के रूप में विकसित किया जायेगा, जिससे लोगों को नगर निगम के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त हो। नगर निगम के नये भवन में नगर निगम का सदन एवं कार्यालय, पार्षदों की बैठक के लिए मीटिंग हाल के साथ ही, पार्किंग की बेहतर व्यवस्था रहेगी। नगर निगम के नवीन भवन में गोरखपुर की संस्कृति की झलक दिखाई देगी।

पीपीगंज मेहदावल मार्ग पर राप्ती नदी पर शुरू हुआ नया पुल

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने तीन सितम्बर 2019 को गोरखपुर में कैम्पियरगंज तहसील के ग्राम बान (बढ़या ठाठर) में पीपीगंज मेहदावल मार्ग पर राप्ती नदी सेतु बढ़या ठाठर का लोकार्पण किया। उन्होंने जनपद गोरखपुर और संतकबीरनगर की 14863.91 लाख रुपए की कुल नौ परियोजनाओं का लोकार्पण तथा 3056.21 लाख रुपए की पांच परियोजनाओं का शिलान्यास भी किया। बढ़या-ठाठर पुल की मांग गोरखपुर और संतकबीरनगर के इस क्षेत्र के नागरिक काफी समय से कर रहे थे। इस पुल के बन जाने से आस-पास के लोगों को काफी सहूलियत हुई।

सिटी ऑफ नॉलेज का विजन डाक्यूमेंट जारी

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह हर साल 4 दिसम्बर से 10 दिसम्बर तक मनाया जाता है। 2018 में इस समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे राष्ट्रपति श्री

रामनाथ कोविंद जी। उन्होंने शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष यानि 2032 तक गोरखपुर को 'सिटी ऑफ नॉलेज' बनाने का आह्वान किया था। 10 सितम्बर 2019 आयोजित शिक्षा परिषद के 87वें संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन कार्यक्रम में आईं राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी और मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 'साधना पथ' नाम से बने विजन डाक्यूमेंट का लोकार्पण किया। इसे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने तैयार किया है। साधना पथ में गोरखनाथ मंदिर और उसकी सभी संस्थाओं के बारे में विस्तार से जानकारी देने के साथ ही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के जन्म, विकास यात्रा और भविष्य की कार्ययोजना की रूपरेखा दी गई है। शिक्षा परिषद के मंत्री के रूप में शिक्षण संस्थाओं के संचालन के लिए मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के 21 सूत्री दिशा निर्देशों के साथ ही शिक्षा को राष्ट्र समाज के लिए समर्पित ईश्वरीय कार्य बताया गया है। दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल जी ने कहा कि शिक्षा बच्चों के भावी जीवन के लिए उपयोगी होती है। पुरस्कार से प्रेरणा मिलती है। उन्होंने शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क विकसित होता है। इसके लिए भोजन, खेल, स्वच्छता, शिक्षा आदि आवश्यक है। राज्यपाल जी ने स्कूलों, कॉलेजों के प्राचार्यों से कहा कि वे समय-समय पर छात्राओं का हीमोग्लोबीन अवश्य चेक कराएं और यदि उनमें कोई एनीमिक पाया जाता है, तो उसका इलाज कराएं। उन्होंने कहा कि अच्छे स्वास्थ्य से बच्चों को सभी क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। राज्य सरकार शिक्षा के लिए अनेक सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। पूरे विश्व में प्रतिस्पर्धा है, इसके लिए विद्यार्थियों को सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के साथ तैयार होना होगा। उन्होंने कहा कि छात्र-छात्राओं की शिक्षा में असमानता नहीं होनी चाहिए। राज्यपाल जी ने कहा कि जीवन में अनुशासन का होना आवश्यक है। महापुरुषों ने अनुशासन को प्राथमिकता दी है। इसके साथ ही, अध्ययन की भी आदत डालनी चाहिए और विषय के अलावा अन्य लाभकारी पुस्तकों का भी अध्ययन करना चाहिए। हमें अपना काम स्वयं करना चाहिए। उन्होंने पानी बचाने पर चर्चा करते हुए कहा कि जल का हमारे जीवन में काफी महत्व है। उन्होंने बेहतर पर्यावरण के दृष्टिगत प्लास्टिक का प्रयोग न करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अच्छे संस्कार से अच्छा इंसान बनता है। अच्छाई-बुराई की आदत घर से ही पनपती है। इसलिए बच्चों को सर्वदा अच्छाई की आदत डालनी चाहिए। अभिभावक बच्चों के विषय चयन हेतु दबाव न डालें, बल्कि उनकी इच्छा के अनुरूप विषय व दिशा चुनने दें। इस अवसर पर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी शिक्षा परिज़द के गठन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास के उद्देश्य से सन् 1932 में ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद में राष्ट्र एवं समाज को समर्पित ज्ञानवान नागरिक तैयार करने का प्रयास किया जाता है। वर्ष 1950 में गोरखपुर विश्वविद्यालय की आधारशिला में ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ का योगदान रहा। वर्तमान में शिक्षा परिषद की चार दर्जन शिक्षण संस्थाएं संचालित हैं। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता। निःस्वार्थ भाव से किया गया परिश्रम मनुष्य को यशस्वी बनाता है।

औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं को लगे पंख

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने 4 दिसम्बर 2019 को सर्किट हाउस स्थित एनेक्सी सभागार में फिक्की व गीडा के संयुक्त त्तवावधान में आयोजित उद्यमी सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि पूर्वांचल में औद्योगिक विकास की अपार सम्भावनाएं हैं। उद्यमी अधिक से अधिक निवेश करें ऐसा माहौल बनाया गया है। उनकी सुरक्षा का बेहतर माहौल है। इस अवसर पर उन्होंने छह उद्यमियों को सम्मानित भी किया। 30 नवम्बर, 1989 को गीडा की स्थापना हुई थी। आज गीडा में अनेक उद्योग स्थापित हुए हैं, जिसमें हजारों नौजवानों को रोजगार से जोड़ा जा रहा है। उन्होंने कहा कि सकारात्मक माहौल विकास को गति प्रदान करता है। प्रदेश सरकार ने उद्योगों के विकास हेतु विभिन्न नीतियां बनायी हैं। उन्होंने उद्यमियों से अपील की कि वे शासन द्वारा निर्धारित नीति-नियम के तहत अपने उद्योग स्थापित करें तथा निर्भीक होकर कार्य करें। प्रदेश सरकार द्वारा फरवरी, 2018 में इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन कराया गया था। अब तक लगभग ढाई लाख करोड़ रुपए से ऊपर निवेश कराने में सफलता मिली है। इसके तहत अनेक उद्योग प्रारम्भ भी हो चुके हैं। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे का तेजी से निर्माण कराया जा रहा है। इस एक्सप्रेस-वे को जनपद गोरखपुर से जोड़ने के लिए गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस-वे का भी निर्माण कराया जाएगा। इस लिंक एक्सप्रेस-वे के दोनों तरफ औद्योगिक गलियारा विकसित किया जाएगा, जिसमें रोजगार के काफी अवसर प्राप्त होंगे। प्रदेश सरकार विकास की ओर निरन्तर अग्रसर है और बिना भेदभाव के कार्य कर रही है। सरकार नगरों की हवाई कनेक्टिविटी सुनिश्चित कर रही है। इस समय उत्तर प्रदेश में सात एयरपोर्ट क्रियाशील हैं। इसके अतिरिक्त, 11 अन्य एयरपोर्ट के विकास का कार्य तेजी से चल रहा है। जेवर और कुशीनगर में अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का निर्माण किया जा रहा है। गोरखपुर से अन्य

महानगरों को भी हवाई सेवाएं प्रदान की गई हैं। बुन्देलखण्ड में स्थायी रोजगार सृजन के लिए डिफेंस कॉरिडोर की आधारशिला रखी गई है। इसके विकसित होने पर बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिलेगा। इसके अलावा, बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस-वे का भी निर्माण किया जा रहा है। मुख्यमंत्री जी ने उद्यमियों से शासन की नीतियों के तहत पूर्वांचल क्षेत्र में निवेश करने का आह्वान किया है। उन्होंने अधिकारियों को उद्यमियों की समस्याओं का समयबद्ध निराकरण तथा उद्योग बन्धु की नियमित बैठकें आयोजित करने के निर्देश दिए हैं।

विकास पथ पर तेजी से बढ़ते गोरखपुर को देखकर सुखद आश्चर्य होता है। तीन वर्ष पूर्व तक बिजली के अभाव में भीषण गर्मी में बिलबिलाती तथा पूरी रात सड़क पर बिताने वाले शहर में आज चौबीस घंटे बिजली है। चौड़ी सड़कें, रोशनी से गुलजार एवं विस्तारित चौराहें, रात को दुधिया रोशनी से जगमगाती सड़कें, स्वच्छ-सुन्दर होता महानगर, परिवर्तन के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता समाज गोरखपुर को एक नयी पहचान देने एवं उसे स्मार्ट-सिटी के रूप में गढ़ने में तल्लीन है।

*****

गोरखपुर की 2019 की विकास यात्रा

क्रमांक	कार्यक्रम/योजना	विवरण
1	2	3
1	गोरखपुर एम्स	जनपद गोरखपुर में एम्स का निर्माण झारखण्डी कूड़ाघाट में हो रहा है। एम्स का निर्माण कुल 149838 वर्ग मीटर में किया जा रहा है, जिसकी लागत रु. 1011.00 करोड़ है। निर्माण कार्य के फेज-1 में आयुष भवन का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया गया है। एम्स के ओ. पी.डी. भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है। जिसे मा. प्रधानमंत्री जी द्वारा फरवरी, 2019 में जनसामान्य के लिए लोकार्पित कर दिया गया। वर्तमान में मरीजों को वहाँ चिकित्सा परामर्श प्रदान किया जा रहा है। शेष निर्माण कार्य अक्टूबर, 2020 तक पूर्ण कर लिया जायेगा।
2	शहीद अशफाक उल्ला खाँ प्राणि उद्यान	जनपद के तारामण्डल में देवरिया बाईपास रोड पर निर्मित हो रहे प्राणि उद्यान रु. 181.82 करोड़ से 121.348 एकड़ क्षेत्रफल में किया जा रहा है। बाड़ों का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया गया है। प्राणि उद्यान का निर्माण कार्य अप्रैल, 2020 में पूर्ण करते हुए जनसामान्य के लिए उपलब्ध होगा जिससे जनपद में पर्यटन को बल मिलेगा।
3	रामगढ़ ताल का सौन्दर्यीकरण	जनपद में स्थित रामगढ़ताल के सौन्दर्यीकरण का कार्य/पर्यटन विकास रु. 18.86 करोड़ से कराया गया है। जिसमें जॉगर्स ट्रैक, ग्रीन ट्रैक, रेलिंग, डिवाइडर, फाउण्टेन का कार्य किया गया। यहां आयोजित होने वाला लाईट एण्ड साउण्ड शो वर्तमान में लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।
4	प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना	योजना के प्रारम्भ वर्ष 2016-17 से वर्ष 2019-20 तक कुल 25738 आवासों का निर्माण कराया जा रहा है। जिसके सापेक्ष अबतक 24207 आवासों को पूर्ण कराते हुए लाभार्थियों को आवासित किया गया है।
5	गोरखपुर-महराजगंज-निचलौल मार्ग (राज्य मार्ग संख्या-81 के चैनेल 13.00 से 21.000 तक चार लेन सी.सी. रोड का निर्माण	कुल रु. 76.38 करोड़ की लागत से 8.00 किलोमीटर लम्बाई में सी. सी. रोड का निर्माण कार्य किया जा रहा है।

6	जंगल कौड़िया से कालेसार फोरलेन बाईपास	इस परियोजना की लागत रु. 531.00 करोड़ है जिसका निर्माण कार्य फरवरी, 2020 तक पूर्ण कर लिया जायेगा। यह कार्य मार्च, 2020 तक पूर्ण कर लिया जायेगा। जिससे नेपाल राष्ट्र एवं सीमावर्ती लोगों के साथ-साथ जनपदवासियों को भी वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं दिल्ली आदि महानगरों को जाने वाले जनसामान्य को निर्बाध सड़क परिवहन सुलभ हो सकेगा।
7	गोरखपुर-वाराणसी फोर-लेन चौड़ीकरण	राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-29 गोरखपुर से वाराणसी को फोर-लेन सड़क में परिवर्तित करने का कार्य रु. 1030.00 करोड़ की लागत से किया जा रहा है। जिसका निर्माण कार्य मार्च, 2021 तक पूर्ण कर लिया जायेगा। जिससे पर्यटन के महत्वपूर्ण स्थान कुशीनगर एवं वाराणसी का आवागमन जनसामान्य के लिए सुविधाजनक हो जायेगा। जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।
8	राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-29 ई	राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-29 ई का निर्माण कार्य रु. 323.36 करोड़ की लागत से गोरखपुर से सोनौली तक किया जाना है जो अगस्त, 2020 तक पूर्ण कर लिया जायेगा। इससे नेपाल राष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्रों से आवागमन की सुविधा अच्छी हो जायेगी।
9	नन्दानगर रेलवे क्रासिंग पर अण्डरपास का निर्माण	गोरखपुर कुशीनगर बाईपास रोड पर नन्दानगर रेलवे क्रासिंग पर अण्डरपास का निर्माण कार्य रु. 19.68 करोड़ की लागत से कराया गया है। जिससे जनपद के एयरपोर्ट, बौद्ध धर्मस्थल कुशीनगर आदि स्थानों पर जाने वाले जनसामान्य को समय की बचत होती है।
10	इण्डेन बॉटलिंग प्लांट	जनपद के औद्योगिक क्षेत्र गीडा में 61000 बॉटलिंग प्रतिदिन क्षमता का प्लांट स्थापित किया गया है।
11	वॉटर स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स, रामगढ़ताल, गोरखपुर	जनपद गोरखपुर में रामगढ़ताल स्थित वॉटर स्पोर्ट्स एक्टिविटी एवं झील मनोरंजन की योजना का कार्य रु. 40.12 करोड़ की लागत से कराया जा रहा है। इससे जनपद एवं प्रदेश के युवक-युवतियों को वॉटर स्पोर्ट्स से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्राप्त हो सकेगा। इसका निर्माण कार्य जुलाई, 2020 तक पूर्ण कर लिया जायेगा।
12	राजकीय पॉलीटेक्निक सहजनवां के आवासीय/ अनावासीय भवन का निर्माण	जनपद के पूर्वी क्षेत्र में स्थित सहजनवां तहसील में रु. 15.78 करोड़ की लागत से पॉलीटेक्निक की स्थापना की जा रही है, जिससे जनपद में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा/प्रोत्साहन मिलेगा।
13	बीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कालेज, गोरखपुर में एस्ट्रो टर्फ हाकी मैदान का निर्माण	जनपद के बीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कालेज में रु. 7.71 करोड़ की लागत से हाकी मैदान में एस्ट्रो टर्फ लगाने का कार्य किया गया है, जिससे हाकी के खिलाड़ियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा हेतु तैयार किया जा सकेगा।

14	पिराईच चीनी मिल	जनपद के पिपराईच विकास खण्ड में पूर्व से स्थापित उ.प्र. राज्य चीनी निगम लि. की बन्द इकाई पिपराईच का पुनः निर्माण कार्य रु. 384.66 करोड़ की लागत से किया गया है। इसके प्रारम्भ हो जाने के कारण जनपद के गन्ना उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा तथा जनपद के किसानों के आय में भी वृद्धि होने से उनके जीवन स्तर में भी सुधार होगा।
15	कान्हा उपवन	जनपद के बेसहारा पशुओं से निजात दिलाने के लिए कान्हा उपवन का निर्माण रु. 8.19 करोड़ की लागत से किया गया है।
16	आई.टी.आई चौरीचौरा	जनपद के चौरीचौरा तहसील में औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण रु. 5.93 करोड़ से कराया गया है, जिससे जनपद एवं आसपास के जनपद के छात्र/छात्राओं को व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा में सुगमता होगी।
17	जनपद गोरखपुर में राप्ती नदी के बायें तट पर स्थित राजघाट का घाट निर्माण कार्य	जपनद गोरखपुर में राप्ती नदी पर पर्यटन एवं धार्मिक भ्रमण के उद्देश्य से रु. 18.69 लाख से घाट का निर्माण कराया जा रहा है। इसका निर्माण कार्य मार्च, 2020 तक पूर्ण कर लिया जायेगा। इस घाट के निर्माण से जनपद में होने वाले धार्मिक स्नान में आने वाले तीर्थयात्रियों को अच्छी सुविधा प्राप्त होगी एवं पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा मिलेगा।
18	बस स्टेशन, नौसड़ एवं कचहरी	जनपद के निवासियों एवं अन्य यात्रियों के दो बस स्टेशनों का निर्माण कार्य क्रमशः रु. 2.85 एवं 2.69 करोड़ की लागत से कराया गया है। नौसड़ बस स्टेशन के निर्माण से जनपद के दक्षिणांचल से आने वाले यात्रियों को गोरखपुर शहर के अन्दर आने से निजात मिलेगी। कचहरी बस स्टेशन के निर्माण से गोरखपुर नगर एवं अन्य शहरी क्षेत्र के लोगों को प्रयागराज, वाराणसी आदि महानगरों के आवागमन सुलभ हो सकेगा।
19	हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (एच.यू.आर.एल.)	जनपद में हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लि. का निर्माण 7085.77 करोड़ से 598 एकड़ में किया जा रहा है। किसानों की सुविधा को ध्यान रखते हुए उर्वरक कारखाना का निर्माण वर्तमान सरकार द्वारा कराया जा रहा है। इस कारखाने के निर्माण से किसानों को उर्वरक की उपलब्धता में सुगमता होगी। जिसकी क्षमता 3850 मी.टन प्रति दिन होगी। इसका निर्माण फरवरी 2021 तक पूर्ण करा लिया जायेगा।

सबका साथ - सबका विकास

साफ नीयत - सही विकास

विकास के नये क्षितिज पर

गोरखपुर

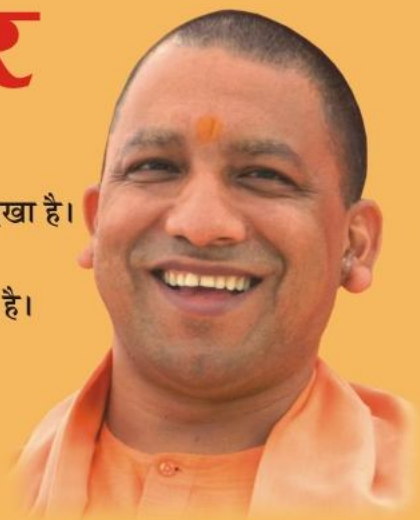

लगभग तीन वर्ष पूर्व का गोरखपुर हमने देखा है।
आज गोरखपुर हम देख रहे हैं।
यह मात्र तीन वर्ष में बदलाव का दृश्य है।

इसे कहते हैं

सोच, कार्य और विकास

आज का गोरखपुर . . .

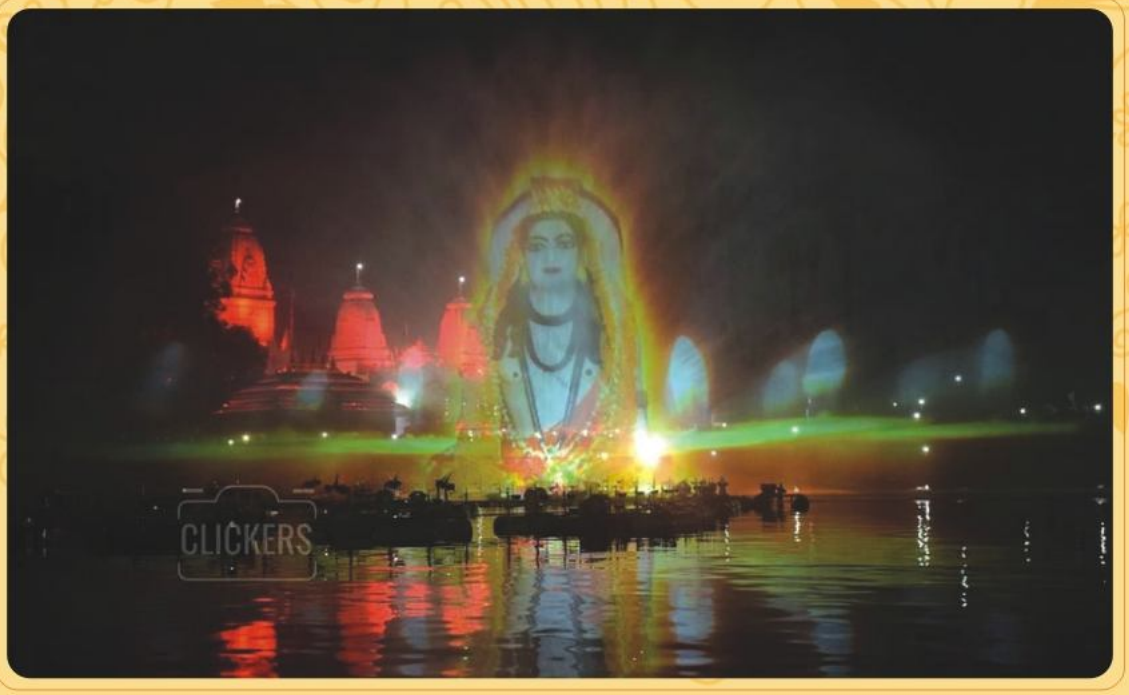

श्री गोरखनाथ मन्दिर में शुरू हो चुका है लाइट एण्ड साउण्ड शो

लखनऊ से गोरखपुर प्रवेश करते समय रात में दुधिया रोशनी से नहाया शहर का प्रवेश मार्ग

आज का गोरखपुर . . .

लखनऊ से गोरखपुर प्रवेश करते समय नौसढ़ से फोरलेन तक शहर के प्रवेश मार्ग का दृश्य

लखनऊ से गोरखपुर प्रवेश करते समय नौसढ़ से फोरलेन तक शहर के प्रवेश मार्ग का दृश्य

आज का गोरखपुर . . .

रामगढ़ ताल के किनारे का खूबसूरत मार्ग

रामगढ़ ताल के किनारे निर्माणाधीन फोरलेन

आज का गोरखपुर . . .

रामगढ़ ताल के किनारे नौकायन

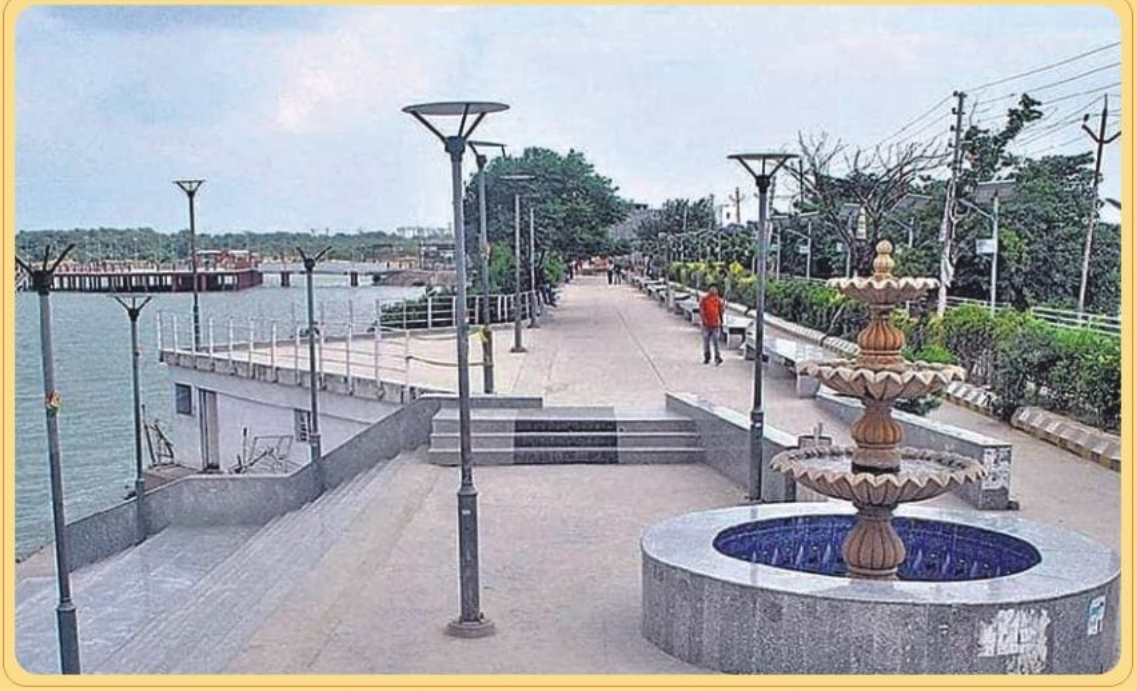

रामगढ़ ताल के किनारे नौकायन के पास विकसित पर्यटन केन्द्र

आज का गोरखपुर . . .

रामगढ़ ताल के किनारे नौकायन के पास विकसित पर्यटन केन्द्र

रामगढ़ ताल के किनारे नौकायन के पास विकसित पर्यटन केन्द्र

आज का गोरखपुर . . .

रामगढ़ ताल में नौकायन केन्द्र का लोकार्पण करते मा. मुख्य मंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

रामगढ़ ताल में नौकायन का लुत्फ उठाती जनता

आज का गोरखपुर . . .

रात्रि में रामगढ़ ताल का अद्‌भुत दृश्य

रामगढ़ ताल का वाटर पार्क

आज का गोरखपुर . . .

गोरखपुर का सर्किट हाउस

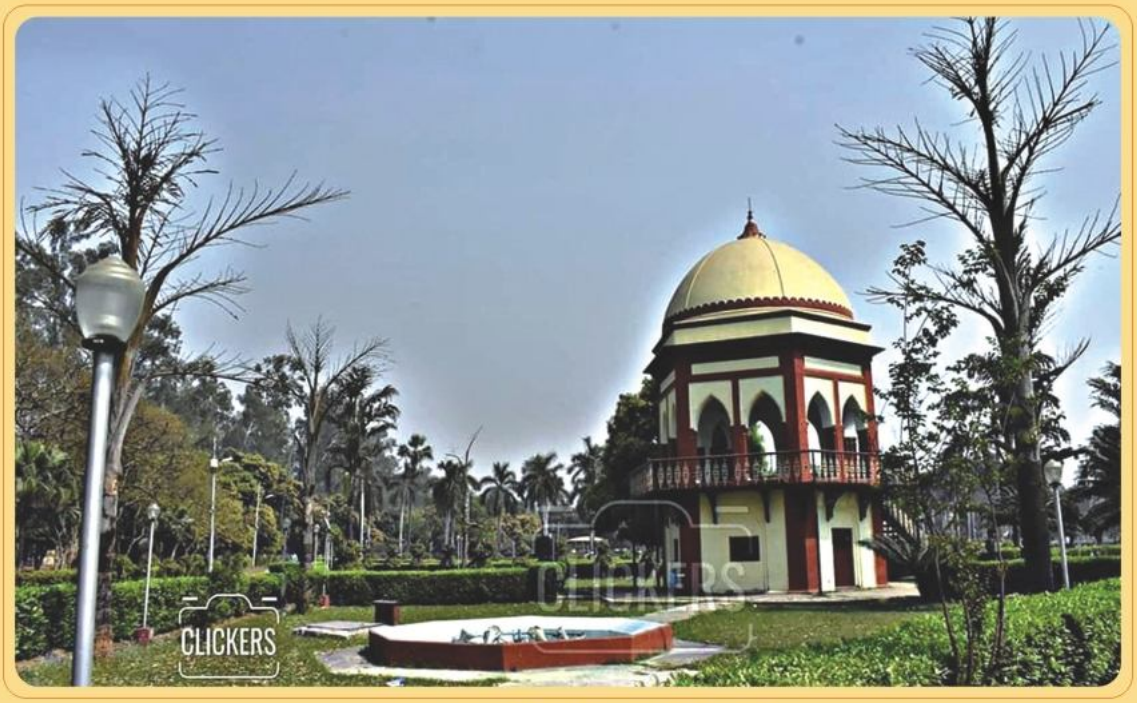

महानगर का प्रतिष्ठित विन्ध्यवासिनी पार्क

आज का गोरखपुर . . .

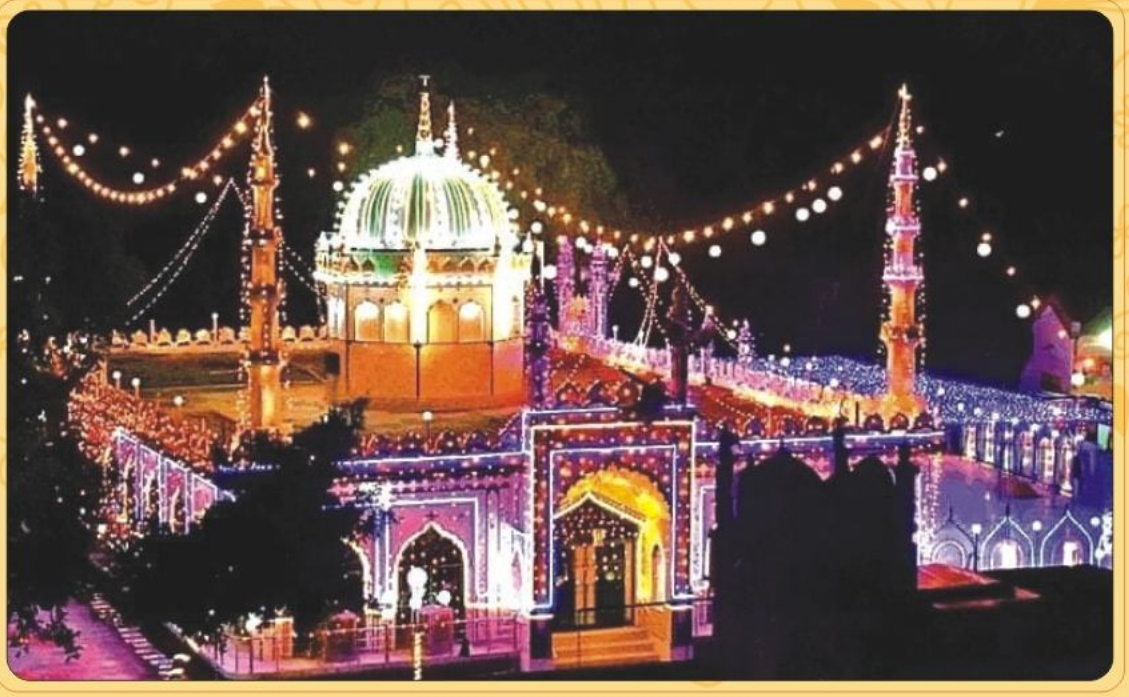

मुबारक खाँ शहीद का आस्ताना

गोरखपुर की सड़कों के किनारे दिवारों को पेण्टिंग से सजाते बच्चे

आज का गोरखपुर . . .

गोरखपुर की सड़कों के किनारे चित्रकारी द्वारा दिवारों को सुन्दर बनाते बच्चे

गोरखपुर की सड़कों के किनारे चित्रकारी द्वारा दिवारों को सुन्दर बनाते बच्चे

आज का गोरखपुर . . .

महाराणा प्रताप इण्टर कालेज की बाहरी दिवार का सुरूचिपूर्ण दृश्य

साफ-सुथरा मेडिकल कालेज

आज का गोरखपुर . . .

महात्मा बुद्ध गौतम द्वार जहाँ से होकर रामगढ़ ताल पर्यटन केन्द्र की ओर हम प्रवेश करते हैं

गोरखपुर में तकनीकी शिक्षा का मन्दिर अपने विकास की गवाही देता

आज का गोरखपुर . . .

महानगर के सुन्दर होते पार्क

विश्वास करिये यह पार्क गोरखपुर का है

आज का गोरखपुर . . .

अपने सौन्दर्य की गवाही देता छात्रसंघ भवन चौराहा

गोरखपुर का बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर चौराहा

आज का गोरखपुर . . .

पैडलेगंज तिराहे पर सम्मान के साथ सजे हुए चबूतरे पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

भारत के यशस्वी पूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री की मूर्ति को अब मिला सम्मान

आज का गोरखपुर . . .

गोरखपुर के इस तिराहे ने भी अपनी भव्यता प्राप्त की

गोरखपुर का एक चौराहा यह भी

आज का गोरखपुर . . .

गोरखपुर की चौड़ी एवं चमचमाती सड़कें

बी.आर.डी. मेडिकल कालेज का विस्तारीकरण का बन रहा भव्य भवन

आज का गोरखपुर . . .

निर्माणाधीन एम्स

निर्माणाधीन फर्टिलाइजर

आज का गोरखपुर . . .

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय का भव्य प्रवेश द्वार जहाँ 100 फीट ऊँचा राष्ट्रध्वज फहरता रहता है

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

रामगढ़ताल में लाइट एण्ड साउण्ड शो में महायोगी गोरखनाथ

रामगढ़ताल में लाइट एण्ड साउण्ड शो का अद्भुत दृश्य

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

नगर निगम में परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण करते हुए मा. मुख्यमंत्री जी

वनटांगिया गांव में दीपावली के अवसर पर मा. मुख्यमंत्री

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

गोलघर गोरखपुर में सरदार बल्लभ भाई पटेल की मूर्ति का अनावरण करते हुए मा. मुख्यमंत्री

बरगदवा स्थित बी.एन. डायर्स में सोलर प्लान्ट का शुभारम्भ

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

एम्स एवं फर्टिलाइजर खाद कारखाने के शिलान्यास के अवसर पर सभा को सम्बोधित करते मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी

राजकीय कन्या इंटर कालेज, हरनामपुर, कैम्पियरगंज का भूमि पूजन

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

बढ़या ठाठर पुल का शुभारम्भ करते हुए मा. मुख्यमंत्री

मण्डलीय रोजगार मेले में नियुक्ति पत्र वितरित करते हुए मा. मुख्यमंत्री

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

वनटांगिया गांव में दीपावली के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए मा. मुख्यमंत्री

वनटांगिया गांव में विभिन्न परियोजनाओ का शिलान्यास

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

वनटांगिया गांव में विभिन्न परियोजनाओ का शिलान्यास

राजकीय कन्या इंटर कालेज, हरनामपुर, कैम्पियरगंज

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त अवसर पर उ.प्र. की मा. राज्यपाल एवं मा. मुख्यमंत्री द्वारा मेधावी छात्रा को पुरस्कार

राजकीय कन्या इंटर कालेज, हरनामपुर, कैम्पियरगंज के शिलान्यास अवसर पर दीप प्रज्वलन करते मा. मुख्यमंत्री

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

पिपराइच चीनी मिल में पेराई सत्र का शुभारम्भ करते हुए मा. मुख्यमंत्री जी

सचल चिकित्सालय वाहन को हरी झण्डी दिखाकर शुभारम्भ करते हुए मा. मुख्यमंत्री

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योकी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर

समेकित केन्द्र (सी.आर.सी.) का शुभारम्भ करते हुए मा. मुख्यमंत्री

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

गोरखपुर में महन्त अवेद्यनाथ राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता के अवसर पर मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र. के मा. मंत्री एवं प्रतिनिधिगण एवं खिलाड़ी गण

गोरखपुर क्लब में विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण शिलान्यास

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

शहरी गरीब परिवारों को नि:शुल्क विद्युत संयोजन की योजना एवं सुगम संयोजन योजना का शुभारम्भ करते हुए मा. मुख्यमंत्री

गोरखपुर के नवीन नगर निगम के नवीन भवन के शिलान्यास के अवसर पर मा. मुख्यमंत्री एवं अन्य जन प्रतिनिधिगण

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

दीपावली के अवसर पर गोरखपुर के वनटांगिया बस्ती में विकास कार्यों के लोकार्पण अवसर पर मा. मुख्यमंत्री एवं अन्य जन प्रतिनिधिगण

राजकीय आजीविका मिशन के अन्तर्गत वैन को रवाना करते हुए मा. मुख्यमंत्री

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

पिपराइच चीनी मिल में परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण करते हुए मा. मुख्यमंत्री जी

भारतीय स्टेट बैंक के कार्यालय के शुभारम्भ के आवसर पर मा. मुख्यमंत्री

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में विभिन्न भवनों का शिलान्यास कार्यक्रम के अवसर पर मा. राज्यपाल एवं मा. मुख्यमंत्री

एम्स एवं फर्टिलाइजर कारखाने के शिलान्यास कार्यक्रम के अवसर पर मा. प्रधानमंत्री, मा. राज्यपाल, मा. मुख्यमंत्री, मा. केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री एवं अन्य मंत्रीगण

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

हिन्दुस्तान उर्वरक रसायन लि. के कार्यों प्रगति की जानकारी लेते हुए

बढ़या ठाठर पुल

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

वनटांगिया गांव में विभिन्न परियोजनाओ का शिलान्यास

बरगदवा स्थित बी.एन. डायर्स में सोलर प्लान्ट का शुभारम्भ

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

नगर निगम में परियोजनाओं का शिलान्यास एंव लोकार्पण करते हुए मा. मुख्यमंत्री जी

वनटांगिया गांव में विभिन्न परियोजनाओ का शिलान्यास

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

रामपति यादव राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान जंगल कौड़िया, गोरखपुर के भवन निर्माण का शिलान्यास

बढ़या ठाठर में विभिन्न परियोजनाओ का शिलान्यास लोकार्पण

गोरखपुर की विकास यात्रा-2019 . . .

पिपराईच चीनी मिल के शिलान्यास के अवसर पर

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत सामूहिक विवाह कार्यक्रम

श्री गोरक्षपीठ, गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

जिनकी भक्ति में भी योग है,
ऐसी साधना स्थली गोरखपुर
को नहीं देखा तो क्या देखा?

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश पर्यटन

यू.पी. नहीं देखा, तो इंडिया नहीं देखा.

www.uptourism.gov.in | Online booking portal: www.uttarpradesh.gov.in| Helpline number: 18601801364

9415282504